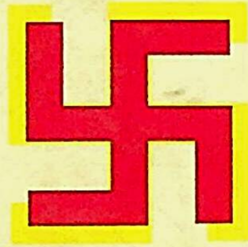
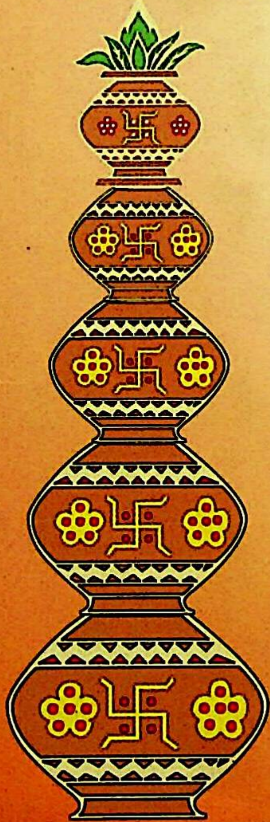
पौरोहित्य-कर्म-प्रशिक्षक













उत्तर-प्रदेश-संस्कृत-संस्थानम्
लखनऊ

श्री अश्वनी कुमार दूबे

द्वारा

सादर समर्पित

ग्रा०-खलीलपुर, पो०-ब्राह्मण पुरा, जिला-मऊ

पौरोहित्य-कर्म-प्रशिक्षक

प्रधान सम्पादक

डॉ. नागेन्द्र पाण्डेय

विशेषज्ञ सम्पादक

आचार्य पं. मातादीन शर्मा

मुख्य सम्पादक

डॉ. सच्चिदानन्द पाठक

सम्पादक

डॉ. चन्द्र कान्त द्विवेदी

डॉ. त्रिवेणी प्रसाद शुक्ल

श्री जगदानन्द झा



उत्तर-प्रदेश-संस्कृत-संस्थानम्

लखनऊ

प्रकाशक :
डॉ. सच्चिदानन्द पाठक,
निदेशक :
उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ

प्राप्ति स्थान :
विक्रय विभाग :
उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, नया हैदराबाद,
लखनऊ-226 007
फोन : 780251
ई-मेल : nidesans@sify.com

प्रथम संस्करण :
वि.सं. 2058 (2002 ई.)
प्रतियाँ : 3000
मूल्य : रु. 100/- (एक सौ रुपये मात्र)

मुद्रक : शिवम् आर्ट्स, निशातगंज, लखनऊ। दूरभाष : 782348, 782172

प्रस्तावना

वेदों की प्राचीनता एवं उनमें गुम्फित ज्ञानराशि की विशेषता सभी विद्वद्-जन स्वीकार करते है। इस ज्ञानराशि का महत्त्व इस बात से स्वतः सिद्ध है कि इसमें समस्त सृष्टि की कल्याण-कामना के साथ ही जीवन की सम्पूर्ण आवश्यकता उपलब्धि और तेजोमय जीवन का मार्ग प्रशस्त रूप में प्रदर्शित है। इसका एक पक्ष भौतिक जीवन को सुख एवं सौन्दर्य प्रदान करता है वहीं पर दूसरा पक्ष ज्ञान से परिपूर्ण कर अनन्त के पथ पर अग्रसर करता है। इस प्रकार वेद व्यष्टि एवं समष्टि दोनों का मधुरिम मार्ग निरुपित करता है।

"ब्रह्मविद् ब्रह्मैव भवति" एवं "सर्वं खल्विदं ब्रह्म", "तत्त्वमसि", "प्रज्ञानं ब्रह्म" इत्यादि श्रुतियों के द्वारा ब्रह्मतत्त्व का निरुपण किया गया है वहीं पर "कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतम् समा" एवं "स्वर्ग कामो यजेत्", "शत्रुवधकामः श्येनयागं यजेत्" इत्यादि श्रुतियों के द्वारा मानवोचित विविधकर्मों की विधि निरूपित की गयी है। इन्हीं दों विषयों के विभाग को ज्ञानकाण्ड तथा कर्मकाण्ड के नाम से जाना जाता है। संक्षेप में कहा जाय तो-विविध दार्शनिकतत्त्वों का विवेचन ज्ञानकाण्ड में एवं विभिन्न कामनाओं की पूर्ति के उपक्रम को कर्मकाण्ड में कहा गया है।

कर्मकाण्ड शब्द का तात्पर्य- "विविध-शास्त्रीय क्रिया कलापों के प्रतिपादक वेद भाग" से है। सामान्यतया इस शब्द का अर्थ विविध कर्मों के द्वारा मनुष्य की इष्टापूर्त्ति और उसके जीवन को सुव्यवस्थित, सुसमृद्ध एवं परिपूर्ण बनाने से है। किसी एक ही कर्म से जीवन की सम्पूर्ण आवश्यकताये पूर्ण नहीं होती हैं इसीलिए विविध काल में विविध प्रकार के कर्मों की आवश्यकता होती है। अतः कर्मों की शाखायें-प्रशाखायें विविध रूपों में वर्णित है। भगवान् मनु ने कहा है- "जन्मना जायते शूद्रः संस्काराद् द्विज उच्यते" अर्थात् प्रत्येक मानव जन्म से ही विशिष्ट गुण सम्पन्न नही होता अपितु सामान्य शिशु के रूप में ही जन्म लेता है और उस समय द्विजत्वादि वर्णभेद नहीं होते है। जब उस शिशु में विशिष्ट संस्कारों का आधान किया जाता है तभी वह सामान्य से विशिष्ट बन जाता है। अतः एव मनुष्य को सर्वाङ्गीण परिपूर्ण बनाने के लिए संस्कार जन्म कर्मों की अनिवार्यता स्वीकार की गई है।

कर्मकाण्ड शब्द कर्म तथ काण्ड इन दो शब्दों के योग से बना है। कर्म का तात्पर्य शास्त्रोक्त शुभाधायक कर्मों से है और काण्ड का अभिप्राय विविध क्षेत्रों एवं अङ्गों में विभक्त तत्तत् शाखाओं के अनुगमन में निहित है। आज आधुनिक वैज्ञानिक कालखण्ड के भारतीय समाज में पाश्चात्य संस्कृति का अतिशय प्रभाव बढ़ा है। वर्णव्यवस्था की

विश्रृंखलता के कारण आजीविका के साधन अनस्थिर हो गये और महानगरों की जीवनशैली प्राचीन परम्परा के विरुद्ध होती जा रही है। परिणामत: जो शिक्षा तथा परम्परा का ज्ञान सहजतया भारतीय बालक एवं बालिकाओं को दादा-दादी, एवं नाना-नानी से प्राप्त हो जाता था वह समाप्त प्राय: हो चुका है। आजकल की महानगरीय संस्कृति के विकास का फल है कि दिन एवं रात्री में भेद नहीं रह गया है और तत्सम्बन्धि विधि-निषेध भी अर्थ-शून्य हो चुके हैं। अब सन्ध्याकाल-उषाकाल, ब्राह्ममुहूर्त-दिनचर्या तथा निशिचर्या का महत्त्व अस्वीकरणीय हो गया है।

इस परिस्थिति में यह सहज प्रश्न उठता है कि हमें क्या करना चाहिए। हम प्राचीन शास्त्रोक्त विधिनिषेध परक परम्परा को तिलाञ्जली दे दें अथवा अपने व्यस्ततम समय में से कुछ समय परम्परा और श्रद्धा को समर्पित करें, पुन: एक यह भी पक्ष उभर कर सामने आता है कि लोक तात्कालिक फल अर्थात् वर्तमान सुख को अधिक महत्त्व देता है। वह किसी अदृश्य, काल्पनिक अथवा परोक्त परम्परा के अनुपालन में सद्य: लाभ न देख कर प्रवृत्त नहीं होता है। फिर वह प्राचीन परम्परा तथा शास्त्रविधान में क्यों प्रवृत्त हो ?

आज कल सहजता से लोक मानस में उपस्थित होता निश्चित ही इस प्रकार के प्रश्नों का तर्क सम्मत समाधान अपेक्षित है अत: इस विषय में विचार करना आवश्यक है। प्रत्येक मानव का लक्ष्य मानसिक-शारीरिक-आर्थिक-पारिवारिक, सामाजिक उन्नति को प्राप्त करना मानव संस्कृति के आरम्भकाल से ही रहा है। हम उत्तम स्वास्थ्य से परिपूर्ण अपने कर्मों के सम्पादन में सक्षम रहते हुये सौ वर्षों का दीर्घायुष्य प्राप्त करें यह कथन पहले भी स्वीकार किया गया है जैसा कि[1] "कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतम् समा" (ईशावास्योपनिषत्) कहा गया है। वैदिक ऋषि कहते हैं कि किसी प्रकार हम सौ वर्षों तक जीवित रहें यह पर्याप्त नहीं है अपितु सौ वर्षों तक दृष्टिक्षमता से युक्त आँखे हों। अभिव्यक्ति में समर्थ वाणी हों। शब्दग्रहण में समर्थ कर्ण हों अर्थात् समस्त इन्द्रियों से समर्थ हमारा सौ वर्ष का जीवन हो। जैसा कि-[2] "तच्चक्षुर्देव हितम्" इत्यादि। पुरुषार्थ चतुष्टय की प्राप्ति का उद्देश्य प्राचीनकाल का सर्वश्रेष्ठ आदर्श रहा है, आज हम यदि धर्म-अर्थ-काम और मोक्ष इन पुरुषार्थ चतुष्टयों में से धर्म और मोक्ष का परित्याग कर दें तब भी अर्थ और काम की आकांक्षा रहेगी ही। आज का वर्तमान मनुष्य जिस भौतिक वातावरण में जी रहा है उसमें अर्थ तथा काम महत्त्वपूर्ण उद्देश्य बने हुये है। निश्चित ही इन दोनो की उपेक्षा नहीं की जा सकती और इनकी प्राप्ति से मनुष्य को

---

1. ईशावस्योपनिषद्
2. यजुर्वेद 36/24

सुख-संतोष तथा प्रसन्नता की अनुभूति होती है। इनके अभाव में मनुष्य का जीवन क्लेशपूर्ण एवं सन्त्रासपूर्ण अवसाद तथा वेदना को उत्पन्न करता है। अत: इन दोनों पदार्थों की प्राप्ति में किसी भी समाज को अथवा किसी भी शास्त्र को आपत्ति नही हो सकती। भेद केवल इन दोनों पदार्थों के प्राप्ति की प्रक्रिया में अन्तर्निहित है। विश्व के इतिहास में हम देखते है कि विभिन्न काल-खण्डों में जो जननेता तथा चिन्तक एवं दार्शनिक हुये उन्होंने मनुष्य समाज को सुख तथा समृद्धि देने के लिए अनेक प्रयोग किये। सभी का उद्देश्य 'सुखमय' जीवन था परन्तु उसको प्राप्त करने की विधियाँ अनेक थीं और कहीं पर तो एक दूसरे के सर्वथा विरुद्ध थीं। उदाहरण के लिए हम देखते है कि प्राचीनकाल में धर्माधारित राज्यव्यवस्था ने समाज को सञ्चालित करने की चेष्टा की। परिणामत: अनेक विरोधी धर्म उत्पन्न हो गये और सुखमय जीवन के लिए भीषण रक्तपात हुआ। यहूदी धर्म, इसाई धर्म, मुस्लिम धर्म तथा बौद्ध धर्म इसके प्रत्यक्ष उदाहरण है। साम्यवाद ने प्रत्येक नर-नारी को सुखमय जीवन प्रदान करने के लिए जिस जीवनदर्शन एवं राज्यव्यवस्था को प्रस्तुत किया उस व्यवस्था ने ही लाखों लोगों का प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप में संहार कर दिया। फिर भी वह अपने उद्देश्य में असफल ही रहा है। इसके विरुद्ध समाजवाद के चिन्तन ने मनुष्य को सुख देने के नाम पर अनगिनत युद्धों के द्वारा सामूहिक नरसंहार में पीछे नही रहा है। अमेरिका द्वारा वियतनाम, इराक एवं अफगानिस्तान इत्यादि पर किये गये आक्रमणों को किस परिपेक्ष्य में देखा जा सकता है।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि हिन्दू चिन्तन के अतिरिक्त सभी प्रयोग, सम्पूर्ण मनुष्यता के हित साधन करने में असमर्थ एवं विफल है। फिर हमें महर्षि व्यास की इस उक्ति पर गम्भीरता से विचार करना हैं कि "हे मनुष्यों धर्म से ही अर्थ तथा काम की प्राप्ति हो सकती है उसे अपने जीवन में उतारों"

उर्ध्ववाहो विरौम्येष न च कश्चिाच्छृणोति माम्।
धर्मादर्थश्च कामश्च स पुन: किन्न सेव्यते।।

और यह धर्म क्या है? मात्र कृपियन्त्र को विधिपूर्वक सञ्चालित करने की क्रिया ही धर्म है जो उसी यन्त्र को सुदीर्धकाल तक क्षमता के साथ प्रयोज्य बनाये रखे, वहीं धर्म है। लोक व्यवहार में स्नान करना धर्म हैं। शुचिता का पालन धर्म है, इन्द्रिय निग्रह, परोपकार, जीवरक्षा प्राणीमात्र में एक ही सत्ता की स्वीकृति इत्यादि धर्म है। कर्मकाण्ड इन धर्मों के पालन का निर्देश करता हैं। सुखमय जीवन के लिए विहित अनुष्ठानों का निर्देश करता है। पञ्चगव्यप्राशन से हमारे शरीर में स्थित अनेक व्याधियों का शमन होना सुप्रमाणित भारतीय कर्मकाण्ड की यह अद्भुत गवेषणा, चन्दन-पुष्प, माला, पल्लव, दूर्वा धूप, इत्र आदि का दर्शन स्पर्श एवं प्रयोग आंशिक आहलाद के लिए इस युग में भी

अनिवार्य पदार्थ हैं। इसी प्रकार दधि, दुग्ध, नैवेद्य, फल, पक्वान्न, क्षीरान्न पञ्चामृत इत्यादि अनुपम भोज्य पदार्थ है जिनका संकलन सुखमय जीवन के लिए अनुपमेय है। पुनश्च संकल्प वाचन के द्वारा अनादिकाल से प्रारम्भ विशाल सृष्टि में स्वयं की सहभागिता अभिप्रेत है। मांगलिक मन्त्रों के पाठ से हमें अपने श्रेष्ठ अभिभावकों से प्राप्त होने वाला कल्याण भाव शुभकामना एवं आशीर्वाद का समुच्चय हैं विविध दैवी मन्त्रों के माध्यम से हम अदृश्य दिव्यशक्ति का स्वयं में आधान करने का प्रयत्न करते है जिसे हम ज्ञात सामान्य साधनों से नहीं प्राप्त कर सकते है। यदि हम इन दिव्य शक्तियों को काल्पनिक स्वीकार कर लें तब भी ये कल्पनायें गणतीय कल्पनाओं के समान यथार्थ तत्त्वों की प्राप्ति में निश्चित ही सहायक है। हमारा मनोबल बढ़ता है और अदृष्ट की प्रार्थना अज्ञात रूप में आत्मबल प्रदान करती है।

इस प्रकार यह सुतराम सिद्ध है कि व्यक्ति में सुख, सन्तोष कर्त्तव्यनिष्ठा तथा "सर्वे भवन्तु सुखिन:" के उदात्त भाव प्रदान करने में हमारे धार्मिक अनुष्ठानात्मक कर्मकाण्ड सर्वथा समर्थ है। आवश्यकता केवल श्रद्धा तथा विश्वासपूर्वक अनुष्ठान करने की है। श्रद्धा हृदय से उत्पन्न वह भाव है जो अनन्य भाव में जागृत होती है और विश्वास तर्क से सुप्रतिष्ठित अनुभूति से परिपूर्ण तथा प्रत्ययकारक होता है जिसको आज का विज्ञान दृढ़ता से प्रमाणित करता जा रहा है। विश्व में इस समय शाकाहार तथा भारतीय औषधियों (हर्बल) का प्रचलन तेजी से बढ़ रहा है। भारतीय खान-पान, आहार-विहार एवं जीवनदर्शन को भी पर्याप्त महत्व दिया जाने लगा है।

दुर्भाग्य से वैदेशिक दासता के कालखण्ड में आरोपित भारतीय परम्परा का उपहास एवं पाश्चात्य दृष्टि के अभिप्रसार से अभिभूत होकर हम भारतीयों ने नवीन को प्रेय तथा प्राचीन को हेय समझना स्वीकार कर लिया, जिसके बदले में पारिवारिक विखण्डन, सामाजिक विभेद, अन्तर्जातीय कलह, पारस्परिक द्वेष के साथ ही आत्महत्या करने जैसी स्थिति प्राप्त हुई है। स्वयं जलने में अथवा दूसरे को जलाने में एवं पशु-पक्षी की निर्ममहत्या से प्रारम्भ कर नर-हत्या तक तथाकथित आत्मसुख के लिए आवश्यक हम समझने लगे है। जिस प्रकार गगनविहारी पक्षी विश्रान्ति के लिए पुन: अपने नीड में वापस आता है उसी प्रकार आज का श्रान्त एवं क्लान्त मानव विश्वगुरु भारत की ओर असहाय दृष्टि से अपलक निहार रहा है। आज के विषम कालखण्ड में क्रूर एवं अशान्त मानव को भारतीय संस्कृति ही पथ प्रदर्शित कर सकती है। अतएव हम प्रत्येक भारतीय नागरिकों का परम कर्त्तव्य है कि अपनी संस्कृति के रहस्यों को ठीक से समझे तथा परिश्रमपूर्वक उसके निर्दिष्ट सूत्रों का अनुपालन करते हुये स्वयं उस मार्ग पर गतिशील होने का संकल्प ले। क्योंकि बहुत वर्षों से हम अपने शास्त्रीय जीवन शैली का परित्याग करते आ रहे है अथवा संकोच के साथ सुविधापूर्वक स्वीकार किये हुये है। कर्मकाण्ड

की विधि में कहा गया है कि-"देवो भूत्वा देवं यजेत्" अर्थात् देवत्व को प्राप्त कर ही हम दैवी शक्ति को प्राप्त कर सकते है। यहाँ पर इसका अभिप्राय स्पष्ट है कि हमारा ज्ञान-विज्ञान, आचार-विचार, व्यवहार जब शुभकर्मानुगामी हो जाएगा तभी हम किसी अन्य को भी शुभकर्म में नियोजित कर सकते है।

मानवसंसाधनमन्त्रालय भारत सरकार को कोटिशः धन्यवाद है कि जन सामान्य को कर्मकाण्ड में प्रशिक्षित करने की उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान लखनऊ की योजना को स्वीकृत कर आर्थिक सहयोग प्रदान किया जिसके फलस्वरूप कर्मकाण्डविषयक यह ग्रन्थ प्रस्तुत किया जा रहा है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि संक्षिप्त रूप में सभी संस्कारों के अनुष्ठान में यह ग्रन्थ सहायक हो सकेगा। निश्चित ही इसके अध्येता एवं प्रयोक्ता अपने उद्देश्यों में सफल होगें। इसके प्रकाशन कार्य में संस्थान के निदेशक **डॉ. सच्चिदानन्द पाठक** एवं सहायक निदेशक **डॉ. चन्द्रकान्त द्विवेदी** को मैं हार्दिक धन्यवाद प्रदान करता हूँ जिन्होंने इस ग्रन्थ के प्रकाशन में तल्लीनतापूर्वक सफल प्रयास किया है। संस्थान के अन्यान्य कर्मचारी भी धन्यवाद के पात्र है जिनका सहयोग इस ग्रन्थ के प्रकाशन में मिलता रहा है। इस ग्रन्थ के सम्पादक पं. मंतादीन शर्मा को मैं विशेष धन्यवाद देना चाहता हूँ जिन्होंने बड़े रुचि के साथ परिश्रमपूर्वक ग्रन्थ को सर्वाङ्गपूर्ण बनाया है। ग्रन्थ को सुन्दर कलेवर के साथ मुद्रण करने वाले शिवम् आर्ट्स कसे द्विवेदी बन्धुओं को भी मैं भूरिशः धन्यवाद करता हूँ।

।। इति शम् ।।

बसन्तपञ्चमी — **आचार्य डॉ. नागेन्द्र पाण्डेय**

संवत्-2058 काशी — अध्यक्ष-उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थानम् लखनऊ

आमुख

भारतीय संस्कृति की संरचना में संस्कारों का शीर्षस्थ महत्त्व रहा है। भारत के तत्त्वदर्शी ऋषियों मनीषियों ने मनुष्य जीवन के लक्ष्य निर्धारित करते हुए पुरुषार्थ चतुष्टय की और जीवन की सार्थकता के लिए आश्रम चतुष्टय की कल्पना की। पुरुषार्थ के प्रथम स्थान पर धर्म और अन्तिम लक्ष्य के रूप में मोक्ष चरम पुरुषार्थ के रूप में स्वीकार किया। प्रारम्भ में धर्म और अन्त में मोक्ष और मध्यगत अर्थ, काम, का क्रम लक्षित करता है कि धर्म नियंत्रित अर्थ और काम ही मानव जीवन के चरम लक्ष्य की प्राप्ति में सहायक होता है। जैसा कि भगवान् कृष्ण ने 'धर्माविरुद्धो भूतेषु कामोऽस्मि भरतर्षभ!' कहकर इस रहस्य की पुष्टि की है। आश्रम चतुष्टय को प्रथमावस्था में धर्मार्जन की सुदृढ़ नींव पर गृहस्थ जीवन में अर्थ और काम का उपभोग करते हुए ब्रह्म प्राप्ति के पथ पर सहज ही अग्रसर होने का मार्ग प्रशस्त हो जाता है। नीतिकारों ने भी प्रकारान्तर से इस तथ्य को स्वीकार किया है

'अजरामरवत् प्राज्ञो विद्यामर्थं च चिन्तयेत्।
गृहीत इव केशेषु मृत्युना धर्ममाचरेत् -।। (हितोपदेश)

आश्रम चतुष्टय और पुरुषार्थ चतुष्टय का सम्यक् समन्वय बना रहे और सामाजिक जीवन की संरचना तथा पारिवारिक परिवेष का समुचित निर्वाह करते हुए मनुष्य अपने चरम लक्ष्य को प्राप्त कर ले इसी उद्देश्य से सैद्धान्तिक और आभ्यासिक पक्षों को जोड़कर भारतीय मनीषियों ने जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त तक के अन्तः बाह्य संस्कारों की सुदृढ़ श्रृंखला की रचना की है। विहित संस्कारों के सम्यक् अनुशीलन से धार्मिक आस्था, सामाजिक परिवेश के विधि-निषेध के पालन में अनुशासन और अतीन्द्रिय शक्तियों के प्रति श्रद्धा का सहज विकास हो जाता है।

मनुष्य सृष्टि की सर्वोत्कृष्ट रचना है। 'न मानुषात् श्रेष्ठतरं हि किंचित्' अतः मनुष्य अपनी अपरमित शक्ति का प्रयोग सृष्टि के कल्याण के लिए करता रहे और प्रकृति की इस पाञ्चभौतिक विभूति को प्रदूषित करके इसकी सृजनशीलता को ध्वंस न कर सके और उसमें आसुरी वृत्तियों का प्राबल्य न हो अपितु कण-कण में चैतन्य की अनुभूति करते हुए सृष्टि का सम्यक् पालन-पोषण करता रहे इसीलिए महाभारतकार ने "आहारनिद्राभयमैथुनञ्च सामान्यमेतत् पशुभिर्नराणाम् धर्मो हि तेषामधिको विशेषः धर्मेणहीना पशुभिः समानाः।

धर्म की रेखा से मनुष्य और मनुष्येतर को विभाजित किया है। धर्म की इस रेखा का सम्मान तभी सम्भव है, जब मनुष्य के जीवन में निरन्तर संस्कारों के माध्यम से

अभ्यास प्राप्त विश्वास और श्रद्धा का सुदृढ़ आधार हो। संस्कारों का मुख्य प्रयोजन स्वर्ग और मोक्ष प्राप्ति था।

'नहि कर्मभिरेव केवलैर्ब्रह्मत्व प्राप्तिः। प्रज्ञानकर्मसमुऽच्चयात् किल मोक्षः। एतैस्तु संस्कृत आत्मोपासनास्वधि क्रियते।-मेधातिथि ज्ञान कर्म के समुच्चय से ही मोक्ष लाभ संभव है। ज्ञान प्राप्ति भी सुसंस्कृत व्यक्ति को ही प्राप्य है। ज्ञान और कर्म एक दूसरे के पूरक हैं। कुमारिलभट्ट ने सार्थक उदाहरण देकर कहा है-

उभाभ्यामेव पक्षाभ्यां खे यथा पक्षिणां गतिः।
तथैव ज्ञानकर्मभ्यां प्राप्यते शाश्वती गतिः।।

उपर्युक्त संक्षिप्त विवेचन से स्पष्ट है कि भारतीय संस्कृति ने आत्मा की अमरता जन्मान्तरवाद की सृदृढ़ धारणा और रिक्त अनुभूतियों के अनुसार मानव जीवन के सर्वाङ्गीण विकास और उसके चरमोत्कर्ष का चिन्तन करते हुए सुदूर अतीत काल से ही विविध अन्तः बाह्य कर्म शृंखला की रचना की है। इसके विविध पक्षों का विवेचन विस्तार वेदों, धर्मसूत्रों, गृह्यसूत्रों, स्मार्त ग्रंथों एवं स्मृतियों, पुराणों में मिलता है। संस्कारों की रचना में लोक संस्कृति और देश काल की स्थिति विशेष का भी सम्यक् संग्रथन किया गया है। संस्कार विशेष की धार्मिक क्रियाओं के द्वारा व्यक्ति के दैहिक, मानसिक, और बौद्धिक परिष्कार इस प्रकार आयोजित किये जायें जिससे वह समाज में पूर्ण सदाचार सम्पन्न नागरिकता प्राप्त कर सके। भारतीयों में यह दृढ़ धारणा थी कि सविधि संस्कारों के अनुष्ठान से संस्कारित व्यक्ति में उत्कृष्ट गुणों का प्रादुर्भाव हो जाता है—आत्मशरीरान्यतरनिष्ठो विहितक्रियाजन्योऽतिशयविशेषसंस्कारः। (वी.मि. 1 पृ. 132।)

संस्कार व्यक्ति में विशेष प्रकार के अभ्यास का आधान करता है। सैद्धान्तिक पक्ष से शिक्षा, उपदेश और विचारों का संक्रमण होता है किन्तु अचेतन में स्थिर अभ्यास व्यक्ति के आभ्यन्तर विकास में सतत सहायक होता है, जिससे उसके दैनिक जीवन के व्यवहार में विधि-निषेध का सहज बोध होता रहता है अतः अभ्यास से ही सैद्धान्तिक आधार सुदृढ़ होता है। इन दोनों कारक तत्वों से सामाजिक नीति के प्रति दृढ़ता और आस्था उत्पन्न होती है। यदि ये तत्त्व सहायक न हों तो न तो कभी समाजीकरण पूरा होता और न परिवार और विवाह जैसी संस्थायें अस्तित्व में आती और न उनका समुचित विकास होता। आज जैसे-जैसे उक्त तत्वों का ह्रास होता जा रहा है सामाजिक, पारिवारिक और दाम्पत्य जीवन विघटित होकर मनुष्य के लिए अभिशाप होते जा रहे हैं।

संस्कार से ही मानव जीवन में पवित्रता और सद्‌गुणों का समावेश होता है। संस्कारों से ही मानव में अनुभूति होती है कि जीवन के विकास में केवल शारीरिक

क्रिया ही नहीं अपितु बुद्धि, भावना और आत्मिक अभिव्यक्ति का भी प्राधान्य है, यदि व्यक्ति इनके प्रति जागरुक न रहे तो जीवन की घटनाओं से कटकर उसमें निराशा, अवज्ञा और अनुशासनहीनता सामाजिक संस्थाओं के लिए अविश्वास उत्पन्न होगा और जीवन आसुरी भावनाओं से आबद्ध होकर नष्ट हो जायेगा। इसीलिए मनु ने-कार्यः शरीरसंस्कारः पावनः प्रेत्यचेह च'' एवं जन्मना जायते शूद्रः संस्कारात् द्विज उच्यते' कहकर संस्कारों की उत्कृष्टतम प्रक्रिया की अनिवार्यता सिद्ध की है।

संस्कारों का प्रयोजन

सामान्यतया संस्कारों को दो प्रकार के प्रयोजनों में विभक्त कर सकते हैं-पहला पारम्परिक सहज विश्वास, सरलता से उद्‌भूत और दूसरा शास्त्रीय और सांस्कृतिक प्रकृति सुलभ व्यवहारों के आधार पर विकसित संस्कारों का उत्तरोत्तर शास्त्रीय परिष्कार होता गया और इस परिष्कार प्रक्रिया में पुरोहितों की प्रमुख भूमिका रहती थी। सामान्य जन अपने पुरोहित में अचल आस्था रखते थे और उनके द्वारा लोक वेद का सम्यक् समन्वय होता रहता है। हिन्दू धर्म में ये एक दूसरे के पूरक होकर आज येन केन व्यवहृत हो रहे हैं।

भारतीयों में यह दृढ़ विश्वास था कि अतिमानुष प्रभावों से सृष्टि घिरी हुई है और उसका सतत प्रभाव होता रहता है अतः वे व्यक्ति जीवन में भला-बुरा हस्तक्षेप कर सकते हैं इसीलिए उनके द्वारा अमङ्गलजनन प्रभावों की शान्ति के लिए उनका स्मरण उनका प्रतीकात्मक अर्चन करते रहते हैं। आज भी अनेक बलि विधान द्वारा ऐसी शक्तियों के शमन का उपाय किया जाता है।

इस प्रकार भूत-प्रेत पिशाचादि की शान्ति के लिए क्षेत्र-पाल बलि आदि दी जाती है और विशेष प्रार्थनायें की जाती हैं।

भौतिक सिद्धियों के लिए भी प्रार्थनायें करने की विधि है जिसमें पशु-धनधान्य, गोत्र की वृद्धि सम्पन्नता-विद्या बुद्धि की वृद्धि आदि के लिए देवों और पितरों से याचना के मंत्रों का संकलन है।

अभीष्ट प्रभावों का आकर्षण

जैसे अशुभ प्रभावों की शान्ति के लिए मंत्र पाठ और बलि आदि का विधान किया जाता था उसी प्रकार अभीष्ट सिद्धि के विभिन्न वनस्पतियों के देवता के मंत्र का पाठ और दिव्य औषधियों का भी प्रयोग किया जाता था। ब्रह्मचारी के हृदय का स्पर्श करके गुरू के द्वारा ऐक्य स्थापना के लिए मंत्र पाठ किया जाता और उसी प्रकार पति-पत्नी के ऐक्य-सम्पादन के लिए पढ़े जाने वाले मंत्रों में दोनों कुलों के संबंधों एवं उनके उत्कर्ष

के लिए प्रार्थना की जाती थी। वर वधू का पाणिग्रहण करते हुए मंत्र पाठ करता है कि मैं तुम्हें सौभाग्य के लिए ग्रहण करता हूँ मेरे लिए तुम्हारी रचना देवताओं ने की है और उन दिव्य शक्तियों ने तुम्हें मुझे दिया है। यहां के मन्त्रों में दिव्य वैज्ञानिक और आध्यात्मिक तत्वों का अद्भुत संयोग है–वर कहता है–**द्यौरहं पृथ्वीत्वं सहरेतो दधावहे-प्रजां प्रजनया वै हि इत्यादि।** स्वयं को आकाश पत्नी को पृथ्वी कहकर 'अग्निषोमात्मम् सृष्टि की प्रक्रिया का संकेत करता है। दृढ़ता के प्रतीक पत्थर का स्पर्श और सप्तपदी के मंत्रों में दृढ़ मैत्री सर्वविधि सम्पन्नता की कामना। उपनयन-समावर्त्तन -विवाह आदि संस्कारों में अनेक प्रतीकात्मक क्रियायें भी सम्मिलित हैं किन्तु जिन दिव्य मन्त्रों का संकलन है उनसे वर-वधू निश्चित नहीं हो पाते और न ही आज का पुरोहित उन मंत्रों के रहस्य का ज्ञाता ही होता है फलत: ये सारी क्रियायें पूर्व से चलते हुए विश्वास के अन्धेरे में छिप जाती हैं। आधुनिक युग इसके रहस्य का सत्य समझना चाहता है।

विवाह की यह व्यवस्था मानव सभ्यता का विकसित रूप था और इस अवसर पर वर को स्नातक मान कर उसे गार्हस्थ्य जीवन के उच्चादर्शों की शिक्षा दी जाती थी। गृहस्थ्य जीवन में किये जाने वाले यज्ञ यागादि के आयोजन सामाजिक कल्याण के लिए आयोजित किये जाते थे क्योंकि 'यज्ञ' शब्द के अर्थ से स्पष्ट है जहां 'देवपूजा, संगतिकरण और दान किया जाय वही यज्ञ श्रेणी में आता है। ये सारी क्रियायें सामाजिक समरसता स्थापित करती थीं और आध्यात्मिक चेतना का संचार करती थीं।

आध्यात्मिक महत्त्व

हिन्दू संस्कारों का प्रबल पक्ष था जीवन में आध्यात्मिकता का आधान। 'देवो भूत्वा देवं यजेत्' जिस देवता की पूजा करों उस समय स्वयं अपने में देवत्व की प्रतिष्ठा करो। बाह्य विधि-विधानों के साथ ही भावना के उद्रेक से उत्कृष्ट वृत्तियों का उदय होकर व्यक्ति में व्यापक अनुभूति होती कि मेरे में एक अद्भुत पवित्रता, शान्ति और आनन्द का संचार हो रहा है। इस प्रकार संसार आध्यात्मिक शिक्षा के सोपान का कार्य करता हैं। व्यक्ति की यह स्वाभाविक अनुभूति होती है कि मेरा जीवन संस्कारमय है और मेरी दैहिक क्रियायें आध्यात्मिक भावों से अनुप्राणित हैं जैसा कि यजुर्वेद कहता है "जो व्यक्ति विद्या तथा अविद्या दोनों को जानता है वह अविद्या से मृत्यु को पारकर विद्या से अमरत्व को प्राप्त कर लेता है"-**विद्याञ्चाविद्याञ्च यस्तद्वेदोभयं सह अविद्यया मृत्युं तीर्त्त्वा विद्ययामृतश्नुते।**

आधुनिक काल की विडम्बना

भारतीय संस्कारों का इतना गहरा प्रभाव पड़ा कि विभिन्न देशों से आने वाले आक्रमक इन संस्कारों की पवित्र धारा में एक रस हो गये। विविध अनात्मवादी चारवाक, बौद्ध, जैन आदि सम्प्रदायों ने भी इन संस्कारों के मूलभूत सिद्धान्तों में कोई फेरबदल करने का साहस नहीं किया। परवर्त्ती काल में आर्य समाज, ब्रह्मसमाज, सनातनधर्मसभा, आदि संस्थाओं ने इसमें परिष्कार करके प्रस्तुत किये किन्तु हिन्दू परिवारों में अभी इनकी धारणा किसी न किसी रूप में जीवित है। सम्पूर्ण भारतवर्ष की एकता अखण्डता का आधार इन्हीं संस्कारों से ही सुरक्षित है किन्तु अब संस्कृत शिक्षा के पठन-पाठन का ह्रास पौराहित्य परम्परा में योग्य विद्वानों का सर्वथा अभाव और पश्चिमी अपसंस्कृति के प्रभाव के कारण आधुनिक उपयोगितावादी दृष्टिकोण से देखने पर संस्कारों के कई अंग असंगत तथा उपहसनीय जान पड़ते हैं। किन्तु जिन्हें प्राचीन जीवन और संस्कृति के सामान्य सिद्धान्तों को समझने की क्षमता, धैर्य-रुचि है उन्हें ऐसा नहीं प्रतीत होगा। क्योंकि पौरोहित्य कर्मकाण्ड न तो जादू टोना पर आधारित है न कपोल कल्पित इसके मूल में गंभीर विज्ञान और आध्यात्मिक तत्वों का समावेश है।

कभी-कभी संस्कारों का बाह्याडम्बर संस्कारों के मूल को ढक लेता है। अति बुद्धिवादी आलोचक उसे मिथ्याचार समझने लगता है। संस्कारों में देश-काल-परिस्थिति के अनुसार अनेक प्रतीकात्मक तत्वों का समावेश हो गया है जो विभिन्न सामाजिक जीवन की प्रतीकात्मकता का सन्देश देते हैं। संस्था भी इन्हीं सामाजिकता और माध्यम का प्रतीक है।

वर्तमान समय में हिन्दू-संस्कारों के लिए सर्वाधिक कठिनाई इस लिए आ गई है कि गांवों में पौरोहित्य संस्थाओं का उच्चाटन हो गया है। पिछले 50 वर्षों में जीवन जीविका का संघर्ष इस वृत्ति के प्रति समर्पण भावना से लोगों को विमुख करता जा रहा है। यद्यपि जनजीवन में संस्कारों के प्रति आस्था-विश्वास में अभी कमी नहीं है। भारतीय परिवारों में शुद्ध संस्कार सम्पन्न पौरोहित्य कराने वाले श्रेष्ठ आचार्यों की अपेक्षा है। संस्कारों की भाषा संस्कृत है और संस्कृत के श्रेष्ठ अध्येता शनैः शनैः घटते जा रहे हैं। उनकी जगह खानापूरी करने वाले संस्कारहीन लोग स्थापित होते जा रहे हैं। अनेक सम्प्रदायों ने भी मनमाने ढंग से संक्षिप्त पद्धतियों का विकास कर लिया है जिसका सामाजिक आयोजनों में धड़ल्ले से प्रयोग किया जा रहा है। ऐसी विषम परिस्थिति में राज्य का भी दायित्व बनता है कि इस संस्था की रक्षा की जाय क्योंकि यह मात्र कर्मकाण्ड ही नहीं है अपितु देश की सांस्कृतिक अखण्डता का एकमात्र सबल तत्त्व है। इसी संदर्भ में यह भी ध्यातव्य है कि बड़ी संख्या में विदेशों में रहने वाले प्रवासी भारतीय संस्कार कराने वाले पुरोहितों के अभाव में चिन्तित हैं, उन्हें भी योग्य विद्वानों की अपेक्षा

है। मानव संसाधन विकास मंत्रलय द्वारा प्रदत्त अनुदान राशि से उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान द्वारा शिविरों का संचालन किया गया है।

प्रशिक्षक और प्रशिक्षणार्थी अध्येताओं के लिए यह अनुभव किया गया कि उन्हें ऐसी पुस्तक उपलब्ध कराई जाय जिसमें सामान्य कर्मकाण्ड की प्रक्रिया, हिन्दू संस्कारों पर संक्षिप्त टिप्पणियां और दैनन्दिन संस्कारों से संबंधित प्राय: सभी मंत्र और प्रक्रिया संकलित हो।

पौरोहित्य कर्म प्रशिक्षक

नित्य, नैमित्तिक, काम्य तथा कुछ प्रमुख संस्कारों की प्रक्रिया दे दी गयी है। परिशिष्ट भाग में संवंधित मंत्रों स्तुतियों का संकलन कर दिया गया है। ज्योतिष के मुहूर्त निश्चित करने के प्राय: सभी संस्कारों के मुहूर्त दे दिये गये हैं। ग्रह मेलापक और अन्य अनेक उपयोगी वस्तुओं का संकलन कर दिया गया है।

प्राय: सभी देवार्चन से पूर्व पञ्चाङ्ग पूजन की विधि है जिसमें पुण्याहवाचन; सांकल्पिक नान्दी श्राद्ध आदि की विधियों के साथ सर्वतोभद्र लिङ्गतोभद्र आदि की पूजा विधि के साथ 'हवन प्रक्रिया' भी यथावत दे दी गयी है। यथा स्थान विधि निषेध भी दिये गये हैं। पूजोपकरण का संकेत भी यथास्थान दिया गया है। संकल्पयोजना के भी प्रकार संलग्न किये गये हैं। ग्रंथ का संकलन करने में कर्मठगुरु, नित्य कर्मविधि, नित्यकर्म प्रयोगमाला और आह्निक ग्रंथों 'हिन्दू संस्कार' का उपयोग किया गया उन सभी विद्वान् लेखकों के प्रति संस्थान की ओर से मैं कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। संस्थान के अध्यक्ष मित्रवर आचार्य नागेन्द्र पाण्डेय जी की प्रेरणा और प्रोत्साहन से इस ग्रंथ के प्रकाशन की योजना चरितार्थ हुई एतदर्थ उनके प्रति एवं रुचिपूर्वक संकलन करने संशोधन आदि में सहयोग करने वाले हमारे संस्थान के विद्वान् निदेशक डॉ. सच्चिदानन्द पाठक, श्री चन्द्र कान्त द्विवेदी आदि बन्धुओं के प्ति भूरिश: आभार व्यक्त करता हूँ। अतिशीघ्रता में किये गये संकलन में यदि कोई त्रुटि रह गयी हो तो उसकी सूचना प्राप्त होने पर यथावसर संशोधन किया जायेगा। आशा है इस प्रयास से प्रशिक्षणार्थी बन्धु एवं हिन्दू संस्कारों से रुचि रखने वालों को भी इस ग्रंथ से लाभ होगा।

पं. मातादीन शर्मा सारस्वत
सुविज्ञ सम्मानित सदस्य

प्राक्कथन

'पुरोहित' शब्द से ही जैसा कि स्पष्ट है पुरोहित, सदैव हित पुरस्सर अर्थात् समाज का हितेच्छु रहा है। प्रागैतिहासिक काल से ही वह भारतीय समाज और संस्कृति का पुरोधा रहा है। वह केवल कर्मकाण्ड का दिशा निर्देशक या धार्मिक कार्यकलाप का संचालक ही न होकर पूरे जीवन को अर्थात् प्रत्येक क्षण को गति एवं दिशा देता रहा है। जन्म होने के पहले गर्भस्थ होने से लेकर मृत्यु के उपरान्त जन्मातरण तक जीवन की हर सामूहिक एवं वैयक्तिक घटना में सच्चे परामर्शदाता एवं पथ प्रदर्शक के रूप में वह व्यक्ति एवं परिवार से सर्वथा-सर्वदा जुड़ा रहा है। इस प्रकार पुरोहित भारतीय समाजिक व्यवस्था का एक अपरिहार्य अंग रहा है। उसका परामर्श केवल आम आदमी के दैनन्दिन कार्यों के लिए ही नहीं बल्कि समूचे राष्ट्रीय जीवन में घटित प्राकृतिक प्रकोप, युद्ध,, महामारी आदि विपदाओं में निराकरण तथा दूसरी ओर शान्तिकाल के बीच समुपलब्ध सुख-समृद्धि तथा न्याय निष्पादन के लिए भी अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका निभाता रहा है।

भारतीय संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता रही है कृतज्ञता की भावना। यह कृतज्ञता मौन निष्क्रियता मात्र नहीं है अपितु वह भारतीय मानस में व्याप्त गहरी संवेदना तथा उस के साथ सक्रिय जीवन-विधा के रूप में परिणत एक आस्था है। इसी सक्रिय भावना का प्रतिफल है, तीनों ऋणों (देव, पितृ तथा ऋषि ऋण), के प्रति भारतीय जीवन की प्रतिबद्धता इसकी निष्कृति के लिए वह अपने गार्हस्थ्य जीवन में देवार्चन लौकिक कर्म; सोद्देश्य सन्तानोत्पत्ति, संस्कार प्रक्रिया; ज्ञानार्जन एवं कर्मकाण्ड आदि कर्म निरन्तर करता है। इसमें पुरोहित की भूमिका अत्यन्त ही प्रभावी हो जाती है। जिस प्रकार गुरु की भूमिका कुछ विशिष्ट प्रयोजनों के लिए है, उसी प्रकार ततोधिक व्यापक भूमिका पुरोहित की होती है। उसका दायित्व विषयविशेष अध्यापक की अपेक्षा कक्षा-अध्यापक जैसा है, जो अपने गुरुकुल के गुरु (आचार्य) तथा कुलगुरु की सारी भूमिकाओं को अपने में समाहित कर लेता है।

भारतीय राजतन्त्र में तो पुरोहित को सचिव, वैद्य, गुरु सभी कुछ माना गया है। राज्य में युद्ध, बीमारी, अकाल आदि किसी संकट में राजपुरोहित का परामर्श जहाँ दिशा निर्देशक रहा है, वहीं शान्ति की स्थिति में राज्य के विस्तार एवं समृद्धि के लिए भी उसकी सदैव निर्णायक भूमिका रही है। सामाजिक कृत्यों, व्रतों, पर्वों तथा विभिन्न कृत्यों के लिए मुहूर्त विनिश्चय और प्रक्रिया के निर्धारण हेतु भी उसका परामर्श अपरिहार्य रूप से लिया जाता रहा है। इस प्रकार पुरोहित हमारे धर्म तन्त्र में सभी नित्य, नैमित्तिक तथा काम्य कर्मों के लिए अग्नि की भांति जीवन में अग्र प्रकाश (मशाल) सदृश रहा है।

भारतीय संस्कृति में संस्कारों के महत्त्व को पुनस्स्थापित करके जीवन को सोद्देश्य कर्मयज्ञ के रूप में प्रतिष्ठापित करने के लिए पुरोहित जैसी संस्था (संवर्ग) को पुष्ट एवं समर्थ बनाना होगा, ताकि वह भारतीय संस्कृति के खण्डहर की बिखरी ईंटों को गारे से जोड़-जोड़ करके उसे पुनः भव्य भवन का रूप दे सके। पौरोहित्य कर्म-संपादन की प्रक्रिया में 'यजमान' के प्रसंग को भी नहीं छोड़ा जा सकता। यजमान शब्द की व्युत्पत्ति में 'यज्' धातु का प्रयोग हुआ है, जो यज्ञ और याग् क्रिया से जुड़ी है। कालान्तर में सम्पूर्ण जीवन को एक यज्ञ के रूप में देखने की दृष्टि विकसित हुयी, जिसके फलस्वरूप यजमान शब्द अपने आप में बड़ा व्यापक हो गया। इसी परिप्रेक्ष्य में महाकवि कालिदास ने अभिज्ञानशाकुन्तलम् के मंगलाचरण में कहा है :-**'यासृष्टिः सृष्टुराद्या वहति विधिहुतं या हविर्या च होत्री।'**

ब्रह्मा की सृष्टि हवि (हविष्यान्न) एवं होत्री अर्थात् 'यज्ञमान' रूप से दो प्रकार की है। वस्तुतः सृष्टि के दो ही प्रमुख अंग उक्त कथन में हैं, हवि और होत्री। साधना के अन्तर्याग के विवरण में गीता में प्राण और अपान के पारस्परिक हवनयाग को जीवन के स्पदंन से जोड़कर इसी दिशा की ओर संकेत किया गया है। कालान्तर में 'यजमान' शब्द का अर्थ किसी प्रकार की सेवा लेने वाले के लिए प्रयुक्त होने लगा और धीरे-धीरे यह शब्द अपने मूल स्वरूप से हटकर अर्थ विस्तार में खो गया। दूसरी ओर पुरोहित शब्द सेवा देने के रूप में संकुचित हो गया। इसका अवमूल्यन होता गया। पौरोहित्य कर्म को जीविका से जोड़े जाने के कारण धीरे-धीरे इसकी प्रतिष्ठा गिर गयी, फलतः विद्वज्जन पौराहित्य से बचने का प्रयास करने लगे। आज जिस प्रकार शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षक के 'गुरु' रूप का गौरव मात्र एक कार्मिक के रूप में सिमट कर मिटने लगा है। उसी प्रकार पुरोहित का कार्य भी परम पुनीत कर्म न रहकर सेवा की एक संविदा के रूप में देखा जाने लगा है।

पौरोहित्य के उक्त उदान्त ध्येय को देखते हुए "पुरोहित" जैसी संस्था की पुनः प्रतिष्ठा आज के युग की बहुत बड़ी माँग है। इसके लिए प्रथमतः प्रतिष्ठित आचार्यों और यज्ञादि में दक्ष विद्वानों की आवश्यकता है। दूसरी ओर आजीविका के रूप में इस कार्य में लगे कुल पुरोहितों, तीर्थ पुरोहितों और कर्म काण्ड से जुड़े तथाकथित पंडितों को सही मन्त्र पाठ एवं श्लोकों के शुद्ध उच्चारण, तथा नियत क्रिया विधि का पूर्ण प्रशिक्षण आवश्यक है। यदि उनकी पद्धति त्रुटित है तो उसको शुद्ध पुनरावृत्ति द्वारा सुधारना अनिवार्य है। इसी उद्देश्य को लेकर मानव संसाधन विकास मंत्रालय के सौजन्य से एवं उत्तर प्रदेश सरकार के माध्यम से उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान द्वारा पौराहित्य कर्म में पहले से लगे हुए तथा पौराहित्य कर्म में रुचि रखने वाले कतिपय चुने हुए लोगों को कर्मकाण्डी के रूप में सम्यक् रूप से तैयार करने की योजना संचालित की गयी है।

इसके प्रथम चरण में पहले से अनुभवी अथवा संस्कृत की योग्यता रखने वाले विद्वानों को प्रशिक्षक के रूप में चयनित करते हुये उन्हें त्रयमासिक प्रशिक्षण शिविरों के संचालन के लिए प्रशिक्षित किया गया है। दूसरे चरण में इन्हीं प्रशिक्षकों द्वारा संचालित प्रशिक्षण शिविरों से न्यूनतम 30 प्रशिक्षार्थियों को प्रशिक्षण देकर पौरोहित्य कर्म की विधिवत् जानकारी दी गयी है। पौरोहित्य कार्य भारतीय समाज के संगठन एवं विकास का आधारभूत कार्य रहा है। इसके द्वारा जन सामान्य के संस्कारों एवं कर्मकाण्डों के माध्यम से सांस्कृतिक चेतना का उदात्तीकरण करते हुए सामाजिक व्यवस्था को नैतिकता की सुदृढ़ नीव प्रदान की गयी है। व्यक्ति के ऐहलौकिक तथा पारलौकिक कल्याण हेतु समाज और व्यष्टि को जोड़ने वाली अतीन्द्रिय चेतना को यहाँ आधार बनाया गया है। चेतना को परिष्कृत करके विस्तृत आयाम तक उसकी पहुंच बनाने के लिए ये संस्कार एक सरणि का कार्य करते हैं।

वस्तुतः मानव के विकास का आधार संस्कार है। संस्कारित मन में ही सद्विकल्प स्फुरित होते हैं। उससे विवेक की शक्ति मिलती हैऔर सन्मार्ग का विनिश्चय होता है। उस पर प्रवृत्त होने पर विकास का फल सहज ही हस्तगत होने लगता है। इस विश्वास को ही प्राचीन काल में हित कहते थे। इस "हित" की जिससे वृद्धि हो, वह पुरोहित कर्म ही पौरोहित्य है।

पौरोहित्य कर्म अन्धविश्वास मूलक पाखण्ड या ढोंग नहीं है, अपितु प्रत्येक क्षेत्र में जीवन को सफल और व्यापक बनाने का, व्यक्ति, समाज किंवा राष्ट्र में विवेकोदय का तथा परम्परा की जीवन्तता, प्रासंगिकता एवं उपयोगिता का मूल मंत्र है। यह किसी एक व्यक्ति, एकजाति, एक समाज अथवा एक राष्ट्र का हित साधन नहीं करता। यह मानव मात्र के विकास का कारक है। क्या संयम-नियम के बिना स्वस्थ जीवन, श्रेष्ठ ज्ञान, सद्गुण गाम्भीर्य, कर्मनिष्ठा एवं सत्प्रवृत्ति संभव हैं ? क्या बिना संस्कार के खान से निकला रत्न मूल्यवान या उपयोगी होता है ? उत्तर -है नहीं। किसी भी देश की खान हो, उससे निकले पत्थर को तराशने पर ही उसकी रत्नसंज्ञा होती है।

अप्याकरसमुत्पन्ना मणिजातिरसंस्कृता।
जातरूपेण कल्याणि! नहि संयोगमर्हति।।

हाँ, तराशने के उपकरण, मलापसारण के साधन या मानव संसाधन देश काल के अनुसार अलग-अलग हो सकते हैं, किन्तु पत्थर को रत्न बनाने का उद्देश्य समान है और फल भी एक जैसा है।

किसी भी कार्य के संपादन में देश (स्थान) और परिस्थितियों के साथ काल का बहुत बड़ा महत्व होता है। सिद्धहस्त व्यक्ति द्वारा भी असमय किये गये कार्य निष्फल

हो जाते हैं, जैसे उर्वरा भूमि, सिंचाई, बीज, उर्वरक आदि की सुविधा के बावजूद असमय बोया हुआ अच्छे से अच्छा बीज भी पनप नहीं पाता। कतिपय कार्य एक निर्धारित समय पर नियमित रूप से करने में ही फलदायी होते हैं। भारतीय समाज में दैनन्दिन जीवन में संपादित किये जाने वाले कार्यों को सूक्ष्म एवं व्यापक चेतना से जोड़ते हुये उन्हें समयवद्ध कियागया है। जनसामान्य के लिये उन्हें नियत समय पर करना अनिवार्य है। यहाँ तक कि सोने के बाद प्रात:काल उठते ही अनेक कृत्य एक विशेष क्रम में निर्दिष्ट अवधि में करने होते है। दिनारंभ से पूर्व ही कतिपय नित्यकर्में को ब्रह्म मुहूर्त में ही करना प्रभावकारी होता है।

नित्य कर्म की भाँति अनेक नैमित्तिक एवं काम्य कर्मों को भी मुहूर्त (निधारित समय) पर ही किया जाना अनिवार्य है। किसी कार्य विशेष को निर्विघ्न रूप से यथासमय संपादित करने हेतु यह 'मुहूर्त' निर्धारण विभिन्न विकल्पों में एक प्रभावी काल की अवधारणा का ही प्रतिफलन है। समय विभाजन में मास वर्ष, वार, दिन, घटी, पल (अथवा घंटा, मिनट) का निर्धारण ज्योतिष शास्त्र की देन है, जिन्हें खगोल विज्ञान के आधार पर परिभाषित किया गया है। प्रत्येक कार्य के संपादन में यह मुहूर्त ब्रह्माण्डीय परिवेश में व्यष्टि एवं समष्टि की चेतना को न केवल प्रभावित करता है, अपितु कार्य के प्राकृतिक संचालन को विनियमित भी करता है। इस दृष्टि से पृथ्वी पर किये जाने वाले कार्यों को ब्रह्माण्डीय प्रभावों से जोड़ने एवं अनुकूल फल प्राप्ति के लिये पृथ्वी के अतिरिक्त अन्य बह्माण्डीय पिण्डों एवं उनके प्रभावक्षेत्रों को देखना अभीष्ट है। इन्हें हम भारतीय ज्योतिष में ग्रह कहते हैं। ग्रहों के अन्तर्गत मंगल, बुध, शुक्र आदि कथित ग्रहों (Planets) के अतिरिक्त सूर्य, चन्द्र तथा क्रान्तिवृत्त एवं चन्द्रपथ के प्रतिच्छेद बिन्दु राहु और केतु जैसे भी ग्रह माने गये हैं, जिनका प्रभाव सूर्य, चन्द्रमा तथा उनके ग्रहण के कारण पृथ्वी पर अत्यन्त महत्त्वपूर्ण माना जाता है। पौरोहित्य कर्म में ज्योतिषशास्त्र की खगोल वैज्ञानिकी मुहूर्त निर्धारण में प्रधान भूमिका निभाती है। भारतीय ज्योतिष में उपर्युक्त विशेषताओं के कारण तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण, लग्न आदि का सूक्ष्म विवेचन किया गया है।

भारतीय पञ्चाङ्ग में ज्योतिष शास्त्र की इसी व्यावहारिक वैज्ञानिकता का सूक्ष्म अनुप्रयोग है। यहाँ किसी भी कार्य को संयोग पर नहीं छोड़ा जाता, अपितु इसके लिये एक विशिष्ट 'योग' एवं मुहूर्त का विधान है। विवाह हेतु वर कन्या की प्रकृति के निर्धारण एवं उसके मिलान (मेलापक) ब्रह्माण्डीय प्रभावों की अनुकूलता हेतु व्रत-अनुष्ठान किया जाता है। किसी भी कार्य के प्रारम्भ (यात्रा आदि) के लिये स्थानीय परिस्थितियों के साथ-साथ ब्रह्माण्डीय प्रभावों का समेकन मुहूर्त एवं ग्रह अनुष्ठान के रूप में प्रचलित हैं। भारतीय ज्योतिष शास्त्र को धर्मशास्त्र से जोड़ा गया है। यह उसकी अपनी अलग

विशेषता है। इसीलिये पौरोहित्य कर्म हेतु भारतीय ज्योतिष का आधारभूत ज्ञान आवश्यक है। इसके अन्तर्गत ज्योतिष-पञ्चाङ्ग मुहूर्त, कुण्डली-मेलापक, तथा वास्तु संबंधी जानकारी आवश्यक है। पुरोहितकर्म को सर्वाङ्गीण बनाने के लिये उक्त सभी क्षेत्रों में जानकारी अपेक्षित है। इतने व्यापक, गम्भीर तथा उत्तरदायित्व पूर्ण कार्य के लिये पौरोहित्य कर्म के प्रशिक्षकों को तथा पौरोहित्य कर्म के जिज्ञासुओं को सम्यक् जानकारी देने के लिये कुछ विषयों को रेखांकित करते हुये मात्र एक पुस्तक यद्यपि पर्याप्त नहीं है, फिर भी भारतीय संस्कृति एवं संस्कृत भाषा से परिचित जनसामान्य को पौरोहित्य विषयक समसामयिक, व्यावहारिक एवं प्रायोगिक बिन्दुओं की भरसक जानकारी देने के लिये यह संकलन प्रस्तुत किया गया है। इसके द्वारा पौरोहित्य कर्म में पहले से लगे पुरोहितों के द्वारा सामान्यत: की जाने वाली त्रुटियों का संशोधन किया जा सकेगा तथा, इस दिशा में जनसामान्य एवं जिज्ञासुओं को आवश्यक जानकारी दी जा सकेगी। इसी प्रारम्भिक प्रयास का प्रतिफल है प्रस्तुत पुस्तक।

पौरोहित्य कर्म की व्यापकता और बहुविधता को देखते हुये, उसके प्रमुख बिन्दुओं की जानकारी देने हेतु इस पुस्तक को क्रमबद्ध रुप में व्यवस्थित करने का प्रयास किया गया है। यह प्रक्रिया जनसामान्य के लिये सहज, बोधगम्य तथा सुलभ हो, इसके लिये सभी प्रमुख निर्देशों तथा प्रक्रियाओं को जहाँ हिन्दी में दिया गया है, वहीं मन्त्रों एवं श्लोकों की मूल विशेषताओं की रक्षा करते हुये, उनके प्रभावी प्रयोग की दृष्टि से उन्हें संस्कृत में भी दे दिया गया है। परिशिष्ट में वेदमंत्रों को स्वरांकन सहित मूल वैदिक भाषा में रखने का प्रयास किया गया है। पूजन, कर्मकाण्ड एवं संस्कारों की प्रक्रिया के सरलीकरण के साथ-साथ मूल मन्त्र की मौलिकता को सुरक्षित रखा गया है, जिससे उनकी प्रभावशीलता में कोई कमी न रहे।

पुरोहित का जीवन अपने यजमान के लिये तथा समाज के लिये अनुकरणीय होता है, इसलिये उसे अपने दैनन्दिन जीवन को सात्विक सदाचार पूर्ण एवं शुद्ध रखना आवश्यक है। प्रथम चरण में प्रशिक्षक को नित्य कर्मविधि की विधिवत जानकारी एवं उसका प्रामाणिक ज्ञान आवश्यक है। भारतीय जीवन पद्धति से जुड़े सभी व्यक्तियों के लिए माता-पिता, गुरु या कुलपुरोहित के माध्यम से नियमित जीवन की दैनन्दिन क्रियाविधि की जानकारी तथा परिवार में उनके अनुप्रयोग का संज्ञान प्राप्त करना आवश्यक है। इसके अन्तर्गत दैनिक उपासना, सत्संकल्प तथा ऋणों के प्रति सक्रिय कृतज्ञता का महत्त्वपूर्ण कार्य समाहित है, साथ ही मनुष्येतर प्राणियों तथा पितरों के लिये पुनीत कर्तव्य निर्वाह एवं पर्यावरण की शुद्धता का ध्यान अभीष्ट है।

उक्त उद्देश्य से पौरोहित्य कर्म प्रशिक्षण के प्रथम खंड में नित्यकर्मविधि के अन्तर्गत दैनिक क्रियाओं, सन्ध्योपासन, बलिवैश्वदेव, नित्यतर्पण आदि स्वयं किये जाने

वाले बिन्दु अनिवार्य विषय में दिये गये हैं। पर्यावरण की पवित्रता, शुद्धता तथा सूक्ष्म चेतना से निरन्तर जुड़े रहने की प्रक्रिया में नित्य-होम का विधान है, जिसे विशिष्ट कर्मकाण्डों के प्रकरण में चतुर्थ खंड में होमविधि के साथ दे दिया गया है।

भारतीय जीवनपद्धति (जैसा कि पहले ही कहा जा चुका है) संस्कारों की अपनी अलग विशेषता है। जीवन में इनकी पग-पग पर अनिवार्यता है। उनके महत्त्व पर इस पुस्तक में संपादकों द्वारा विशेष रुप से प्रकाश डाला गया है। जीवनयात्रा में मील के पत्थरों की भांति संस्कारों की संख्या अलग-अलग रही है। इस विवाद में न पड़कर प्रस्तुत पुस्तक में संस्कारों के प्रारम्भिक परिचय के साथ, प्रमुख संस्कारों का उल्लेख संक्षेप में कर दिया गया है, किन्तु उपनयन, विवाह, अन्त्येष्टि जैसे महत्त्वपूर्ण एवं प्रचलित संस्कारों की प्रस्तुति ग्रन्थ के द्वितीय खण्ड में किंचित विस्तार के साथ की गई है, जिससे इहें संपादित कराने में कोई कठिनाई न हो। यद्यपि जन्मोत्सव संस्कार की भी प्रमुखता नहीं रही फिर भी युग की माँग के अनुरूप उसकी प्रमुखता इन दिनों विशेष रूप से वढ़ती जा रही है, इसलिये इसे भी द्वितीय खंड में अलग से सम्मिलित कर दिया गया है।

विभिन्न कर्मकाण्डों में पूजन प्रक्रिया, संकल्प, स्वस्ति-वाचन, मांगलिक पाठ आदि की बार-बार पुनरावृत्ति देखने को मिलती है। इसलिये पुस्तक के कलेवर को सीमित रखते हुए प्रसंगों में से स्थल उल्लेख सहित कुछ संदर्भ दे दिये गये हैं। प्रयास यह रहा है कि ऐसे संदर्भ पुस्तक में भी उपलब्ध हो जायें।

नैमित्तिक एवं काम्य कर्मों के साथ पूजन विधि की जानकारी आवश्यक है। कभी समयाभाव वश, कभी अज्ञान के कारण, यदा-कदा आलस्यवश, सामान्य पूजन-प्रक्रिया में उपचार अथवा मंत्रों/श्लोकों में अक्षम्य त्रुटियाँ हो जाती हैं, जिन पर सामान्यजन, यजमान और कभी-कभी पुरोहित भी ध्यान नहीं दे पाते। इसलिये ग्रन्थ के तृतीय खंड में देवपूजा के सामान्य परिचय के साथ-साथ सामान्य रूप से प्रयुक्त होने वाले संकल्प, पंचोपचार, षोडशोपचार, कलशस्थापन आदि की विधियाँ दे दी गयी हैं। इसी क्रम में आराध्यदेव विशेष, नैमित्तिक एवं काम्य कार्यों के लिये जन सामान्य द्वारा विशिष्ट देवों के पूजन की विधि एवं प्रक्रिया भी दी गयी है। इसके अन्तर्गत यज्ञ एवं होम प्रकरण हैं जिनमें प्राणप्रतिष्ठा, सर्वतोभद्रस्थापन, लिंगतोभद्र देव विशेष पूजन आदि सम्मिलित हैं। दैनन्दिन जीवन में तथा विशेष अवसरों पर श्रीमद्भागवत जैसे पुराणों का पारायण वाचन/पूजन सत्यनारायण कथाश्रवण आदि कराये जाते हैं। उनकी भी संक्षिप्त रूपरेखा चतुर्थ खंड में अलग से दे दी गयी है। इसी प्रकरण में वास्तु पूजा तथा गृहप्रवेश को भी समाहित किया गया है।

जैसा कि ऊपर के प्रस्तरों में उल्लिखित किया जा चुका है, पौरोहित्य कर्म के अन्तर्गत ज्योतिष शास्त्र का ज्ञान भी आवश्यक है, ताकि विभिन्न कार्यों एवं पर्वों के मुहूर्त की जानकारी पञ्चाङ्ग के माध्यम से दी जा सके। विवाह द्विरागमन आदि के लिये उचित समय अथवा मुहूर्त की अवधारणा वर-कन्या की कुण्डली/गुणों आदि के मिलान की आवश्यकता सामान्य जनजीवन को होती है। कार्यारम्भ (यात्रारंभ) एवं वास्तु प्रकरण में भी ज्योतिष के माध्यम से समय एवं प्रक्रिया के संबंध में उचित परामर्श दिया जाता है। इसलिये पंचम खंड में ज्योतिष एवं मुहूर्त खंड को सामान्य उपयोग हेतु दे दिया गया है।

परिशिष्ट में सामान्य रूप से प्रयुक्त होने वाले वैदिक मन्त्रों, स्तोत्रों, अष्टक आरती, सूक्त आदि को भी यथासाध्य (स्थानाभाव के होते हुये भी) रखने का प्रयास किया गया है। वैदिक मन्त्रों को स्वरांकन सहित उच्चारण की शुद्धता के साथ उद्धृत किया गया है। इसी के अन्तर्गत कतिपय पारिभाषिक शब्दों को संकलित किया गया है, जिससे जनसामान्य को प्रयोग का बोध हो सके। इस प्रकार यह अन्तिम भाग अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। इसका पौरोहित्य कर्म के अन्तर्गत समुचित एवं शुद्ध उपयोग किया जाना आवश्यक है।

इस ग्रन्थ का उद्देश्य रहा है सामान्य एवं विशिष्ट व्यक्तियों को भारतीय पौरोहित्य विधि, आचार, सामान्य उपासनाविधि आदि की जानकारी देना और प्रशिक्षण की निरन्तर प्रक्रिया द्वारा सामान्य रूप से भारतीय आचार पद्धति एवं पूजन विधि का संज्ञान देना। हमारा लक्ष्य है- ऐसे विशिष्ट विद्वानों को तैयार करना, जो समाज में रहते हुये उनकी आवश्यकता के अनुरूप शुद्ध एवं विश्वसनीय प्रक्रिया के संपादन में अग्रणी बन सकें। इस हेतु मानवसंसाधन विकास मन्त्रालय, भारत सरकार की पौरोहित्य कर्म प्रशिक्षण विशेषज्ञ समिति का शुभाशीष ही हमारा दिशा दर्शक रहा है। संस्थान एवं उक्त समिति के अध्यक्ष आदरणीय डॉ. नागेन्द्र पाण्डेय का आमुख इस पुस्तक के विभिन्न प्रकरणों के संयोजन में और ज्योतिष खंड में उनके द्वारा दी जाने वाली जानकारी जहाँ प्रेरणाप्रद है, वहीं इस विषय की विशेषज्ञ-समिति के सम्मानित सदस्य आचार्य मातादीन शर्मा की प्रस्तावना तथा संस्कारों एवं पूजन विधि के संबंध में दिये गये विशेषज्ञता पूर्ण उनके निर्देश इस ग्रन्थ की जीवनी शक्ति हैं। वस्तुतः इस पुस्तक में प्राण प्रतिष्ठा उन्हीं के द्वारा की गयी है। पुस्तक को इस कलेवर में प्रस्तुत करने एवं जनसामान्य के समक्ष पौरोहित्य को बोधगम्य अभिव्यक्ति देने में संस्थान के सहायक निदेशक डॉ. चन्द्रकान्त द्विवेदी एवं विद्वान् सर्वेक्षक डॉ. त्रिवेणी प्रसाद शुक्ल की अद्वितीय भूमिका रही है। इसी प्रकार पुस्तक के नियमों को व्यवस्थित करने एवं प्रूफ संशोधन में सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष श्री जगदानन्द झा का सहयोग अविस्मरणीय है। इसके अतिरिक्त संस्थान के अन्य

कर्मचारियों विशेषकर वैयक्तिक सहायक का इसमें पग-पग पर योगदान रहा है। इस पुस्तक को अल्प अवधि में अच्छी प्रकार से मुद्रित करने में सहयोग प्रदान करने के लिए मेसर्स शिवम् आर्ट्स एवं उनके सहयोगियों के प्रति मैं आभारी हूँ। ये सभी साधुवाद के पात्र हैं। पुस्तक में यत्र तत्र परसवर्ण जैसी त्रुटियाँ समयाभाव वश मुद्रणालय में लिपि अक्षरों की सीमाओं के कारण सहज-दृश्य हैं। शायद समयाभाव, मानव सुलभ त्रुटि तथा इस विषय की व्यापकता को देखते हुए इससे अधिक साङ्गोपाङ्ग शुद्ध पुस्तक सम्भव नहीं थी।

आशा है, सुविज्ञजन इसकी उपादेयता पर विचार करते हुए तथा उपयोगी तथ्यों को ग्रहण करते हुये इसकी कमियों की उपेक्षा कर देंगे। बड़ी त्रुटियों की ओर वे यदि संस्थान के संपादक मंडल का ध्यान आकृष्ट कर सकेंगे तो अगले संस्करण में पुस्तक की उपादेयता में बढ़ोत्तरी की जा सकेगी। अन्त में, इस प्रस्तुति में निमित्त बनने के लिये मैं हृदय से परम पिता परमेश्वर को भाव सुमन अर्पित करता हूँ।

शुभाशंसनाकाङ्क्षी,

महाशिवरात्रि
विक्रम सं. 2058

डॉ. सच्चिदानन्द पाठक
निदेशक

विषय सूची

चतुर्थखण्ड :

विशिष्ट देव पूजन विधि

प्रथम खण्ड : नित्य कर्म विधि

दैनिक क्रियायें

भारतीय आचार पद्धति में नित्यकर्म का बहुत बड़ा महत्व है। सामान्य दैनिक क्रियाओं को नियत समय पर नियत प्रकार से करने पर ही अभीष्ट फल दृष्टिगोचर होता है।

दैनिक क्रिया के क्रम में ब्रह्म मुहूर्त में जग जाना चाहिये। अत्यन्त विवशताओं को छोड़कर अधिक समय तक सोना निषिद्ध है। ब्राह्म मुहूर्त सूर्योदय से चार घड़ी (डेढ़ घन्टे से अधिक) पूर्व का समय धार्मिक क्रियाओं की दृष्टि से भी अत्यन्त प्रभावकारी है।

करावलोकन (कर दर्शन)–प्रातः उठकर अपने दोनों हाथों को सामने फैलाकर निम्न श्लोक पढ़ते हुए दर्शन करना चाहिए।

कराग्रे वसते लक्ष्मीः करमध्ये सरस्वती
करमूले स्थितो ब्रह्मा प्रभाते करदर्शनम्।।

पृथ्वी से क्षमा प्रार्थना–शैय्या से उठकर पृथ्वी पर पैर रखने से पूर्व धरती माँ की वन्दना तथा क्षमा याचना करना अनिवार्य है। इस हेतु यदि सम्भव हो तो भूमि का हाथ से स्पर्श कर प्रणाम करने के उपरान्त ही नाक का जो स्वर प्रभावी हो प्रथमतः वही पैर पहले रखते हुये निम्न श्लोक के माध्यम से अभिवादन तथा क्षमायाचना करना चाहिये–

समुद्रवसने देवि! पर्वतस्तनमण्डले!।
विष्णुपत्नि! नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे।।

स्नान से पहले वरुणप्रार्थना जल सामने रखकर निम्न प्रार्थना करें।

अपामधिपतिस्त्वं च तीर्थेषु वसतिस्तव।
वरुणाय नमस्तुभ्यं स्नानानुज्ञां प्रयच्छ मे।।

हे वरुण ! सारे जल के आप अधिपति हैं और सब तीर्थों में रहते हैं। आप को नमस्कार करता हूँ। स्नान करने की आज्ञा मुझे दीजिये।

तीर्थावाहन एवं स्नान

गंगे! च यमुने चैव गोदावरि! सरस्वति!।
नर्मदे सिन्धो! कावेरि! जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु।।

–हे गंगा, यमुना, गोदावरि, सरस्वति, नर्मदा, सिन्धु, कावेरि आदि पुण्य तीर्थ ! आप इस जल में आकर रहें।

भस्म धारण-निम्नलिखित मंत्र पढ़ते हुए भस्म धारण करें।

ॐ त्र्यंबकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्यो-र्मुक्षीय माऽमृतात्। अग्निरिति भस्म। वायुरिति भस्म। जलमिति भस्म। स्थलमिति भस्म। व्योमेति भस्म। सर्वं ह वा इदं भस्म। मन एतानि चक्षूंषि भस्मानीति।

यदि चंदन धारण करे तो यह मंत्र है-

चन्दनस्य महत्पुण्यं पवित्रं पापनाशनम्।
आपदां हरते नित्यं लक्ष्मीस्तिष्ठति सर्वदा।।

आचमन-'ॐ केशवाय नमः', 'ॐ नारायणाय नमः', 'ॐ माधवाय नमः'

– इन तीनों मन्त्रों को पढ़कर प्रत्येक से एक-एक बार (कुल तीन बार) पवित्र जल से आचमन करे।

ब्राह्मतीर्थ से तीन बार आचमन करने के पश्चात् **'ॐ गोविन्दाय नमः'** यह मन्त्र पढ़कर हाथ धो लें।

यज्ञोपवीत-धारण-मन्त्र-ॐ यज्ञोपवीतमितिमन्त्रस्य परमेष्ठी ऋषिः लिङ्गोक्ता देवता त्रिष्टुप्छन्दः यज्ञोपवीतधारणे विनियोगः।

जनेऊ धोकर मंत्र बोलता हुआ धारण करें।

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।।

जीर्ण-यज्ञोपवीत-त्याग-मन्त्र-पुराने जनेऊ को कंठी कर सिर पर से पीठ की ओर निकाल कर निम्न मंत्र का जप करना चाहिए।

एतावद्दिनपर्यन्तं ब्रह्मत्वं धारितं मया।
जीर्णत्वात्परित्यागो गच्छ सूत्र! यथासुखम्।।

सूर्यार्घ्य

एहि सूर्य सहस्त्रांशो! तेजोराशे! जगत्पते!।
अनुकम्पय मां भक्त्या गृहाणार्घ्यं दिवाकर!।।

श्री गणेश ध्यान

एकदन्तं शूर्पकर्णं गजवक्त्रं चतुर्भुजम्।
पाशाङ्कुशधरं देवं ध्याये सिद्धिविनायकम्।।

–एक दाँत वाले हाथी के मुख, चार हाथों एवं सूप के जैसे कानों वाले तथा पाश और अंकुश को हाथ में लिये हुये सिद्धि देने वाले गणेश जी के परमात्मस्वरूप का मैं ध्यान करता हूँ।

श्री शिव ध्यान

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं
रत्नाकल्पोज्ज्वलांगं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्।
पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं
विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्।।

–हिमालय के समान श्वेतवर्णवाले, सुन्दर चन्द्रकला से युक्त, मणि के समान उज्ज्वल अंगों वाले, चारों हाथों में परशु, हरिण, वरद तथा अभय मुद्रा को धारण करने वाले, प्रसन्न मुख वाले पद्मासन में बैठे हुये, देवगणों द्वारा प्रशंसित, बाघ के चर्म को पहने हुये, पाँच मुख तथा तीन नेत्र वाले, सारे विश्व के आदि कारण, विश्ववन्द्य समस्त भय को नष्ट करने वाले भगवान् महेश्वर का नित्यप्रति ध्यान करे।

श्री देवी ध्यान

सिंदूरारुणविग्रहां त्रिनयनां माणिक्यमौलिस्फुरत्-
तारानायकशेखरां स्मितमुखीमापीनवक्षोरुहाम्।
पाणिभ्यामलिपूर्णरत्नचषकं रक्तोत्पलं बिभ्रतीं
सौम्यां रत्नघटस्थरक्तचरणां ध्यायेत् परामम्बिकाम्।।

–सिंदूर से लाल रंग के शरीर वाली, तीन नेत्र वाली, प्रकाशितमाणिक्य मुकुट पहने हुये, चन्द्रमा को सिर पर धारण किये हुये, मुस्कराते मुख वाली, पुष्ट स्तनों से मण्डित वक्ष:स्थल वाली, एक हाथ में रत्नों से युक्त पूर्णापात्र और दूसरे में लाल कमल धारण किये हुये, रत्नमय घड़े के ऊपर अपने चरणारविन्द को रखे हुये भगवती परब्रह्मस्वरुपिणी अंबिका की सौम्य मूर्ति का ध्यान करे।

श्री विष्णु ध्यान

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम्।

लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्।।

–शान्तरूप, शेषनाग पर सोने वाले, नाभि में कमल वाले, सारे देवताओं के अधिपति, समस्त लोकों के आधार, आकाश के समान व्यापक, बादल के रंग वाले, अच्छे अवयवों वाले, लक्ष्मी के पति, कमल के समान नेत्र वाले, योगियों के ध्येय, संसार रूप दुःख को दूर करने वाले, सारे लोकों के नाथ भगवान् विष्णु को मैं नमस्कार करता हूँ!

श्री राम ध्यान

ध्यायेदाजानुबाहुं धृतशरधनुषं बद्धपद्मासनस्थं
पीतं वासो वसानं नवकमलदलस्पर्धिनेत्रं प्रसन्नम्।
वामाङ्कारूढसीतामुखकमलमिलल्लोचनं नीरदाभं
नानाऽलंकारदीप्तं दधतमुरुजटामण्डलं रामचन्द्रम्।।

–लम्बे बाँहों वाले, धनुष और बाण को धारण किये हुये, पद्मासन में बैठे हुये, पीतांबर पहने हुये, नये कमलदल से भी अधिक सुन्दर नेत्र वाले, प्रसन्न मुख वाले, वाम भाग में स्थित सीता जी के मुखारविन्द के ऊपर दृष्टिपात करते हुये, बादल के समान रंग वाले, अनेक आभूषण व अलंकारों से देदीप्यमान, विशाल जटामण्डल को धारण किये हुये भगवान् रामचन्द्र का ध्यान करे।

श्री कृष्ण ध्यान

करारविन्देन पदारविन्दं मुखारविन्दे विनिवेशयन्तम्।
वटस्य पत्रस्य पुटे शयानं बालं मुकुन्दं मनसा स्मरामि।।

वटपत्र के बीच सोये हुए, अपने हस्तकमल द्वारा पदकमल को मुख कमल प्रवेश कराते हुए, बालक कृष्ण को मन से स्मरण करता हूँ।

श्री गुरु ध्यान

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरूर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवेनमः।।

गुरू ब्रह्मा है, गुरू विष्णु है, गुरू महेश हैं, गुरू साक्षात् ब्रह्म हैं, ऐसे गुरू को प्रणाम है।

सन्ध्योपासन

यज्ञोपवीत एवं कुश धारण पूर्वक किसी पात्र में शुद्ध जल रखकर दायें हाथ के कुश से अपने शरीर पर जल सींचते हुए नीचे लिखे मन्त्र पढ़े –

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।

फिर नीचे लिखे मन्त्र से आसन पर जल छिड़ककर दायें हाथ से उसका स्पर्श करे –

ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्।।

इसके बाद यथारुचि शास्त्रानुकूल भस्म, चन्दन आदि का तिलक करे। तदनन्तर तीन बार आचमन करें।

इसके बाद दो बार अंगूठे के मूल से ओठ को पोछे, फिर हाथ धो लें। अंगूठे का मूल ब्राह्मतीर्थ है। तत्पश्चात् भीगी हुई अंगुलियों से मुख आदि का स्पर्श करे। मध्यमा-अनामिका से मुख्या, तर्जनी-अङ्गुष्ठ से नासिका, मध्यमा-अङ्गुष्ठ से नेत्र, अनामिका-अङ्गुष्ठ से कान, कनिष्ठिका-अङ्गुष्ठ से नाभि, दाहिने हाथ से हृदय, सब अङ्गुलियों से सिर पांचों अङ्गुलियों से दाहिनी बांह का स्पर्श करना चाहिये।

तदनन्तर हाथ में जल लेकर निम्नाङ्कित संकल्प पढ़कर वह भूमि पर गिरा दे–

हरिः ॐ तत्सदद्यैतस्य श्री ब्रह्मणो द्वितीयपरार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे आर्यावर्तैकदेशान्तर्गते पुण्यक्षेत्रे कलियुगे कलिप्रथमचरणे अमुकसंवत्सरे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकगोत्रेत्पन्नः अमुकशर्मा वर्मा गुप्त अहं ममोपात्तदुरितक्षयपूर्वकं श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं प्रातः (सायं अथवा मध्याह्न) संध्योपासनं करिष्ये।

इसके बाद नीचे लिखे विनियोग को पढ़े –

ऋतं चेति त्र्यचस्य माधुच्छन्दसोऽघमर्षण ऋषिरनुष्टुप्छन्दो भाववृत्तं दैवतमपामुपस्पर्शने विनियोगः।

फिर नीचे लिखे मन्त्र से एक बार पढ़कर एक ही बार आचमन करे–

ॐ ऋतञ्च सत्यञ्चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत। ततो रात्र्यजायत। ततः समुद्रो अर्णवः। समुद्रादर्णवादधिसंवत्सरो अजायत। अहोरात्रणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी। सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्। दिवञ्च पृथिवीञ्चान्तरिक्षमथो स्वः। (ऋ. अ. 8 अ. 8 व. 48)

तदन्तर प्रणवपूर्वक गायत्री मन्त्र पढ़कर रक्षा के लिये अपने चारों ओर जल छिड़कें। फिर नीचे लिखे विनियोग को पढ़े –

ॐ कारस्य ब्रह्मा ऋषिर्दैवी गायत्री छन्दः परमात्मा देवता, सप्तव्याहृतीनां प्रजापतिर्ऋषिर्गायत्र्युष्णिगनष्टुब्बृहतीपंक्तिस्त्रिष्टुब्जगत्यश्छन्दांस्यग्निवायुसूर्य बृहस्पतिवरुणेन्द्रविश्वेदेवा देवताः, तत्सवितुरिति विश्वामित्र ऋषिर्गायत्री छन्दः सविता देवता, आपोज्योतिरिति शिरसः प्रजापतिर्ऋषिर्यजुश्छन्दो ब्रह्माग्नि वायुसूर्या देवताः प्राणायामे विनियोगः।

इसके पश्चात् आंखें बन्द करके नीचे लिखे मन्त्र से प्राणायाम करे। उसकी विधि इस प्रकार है-'पहले दाहिने हाथ के अंगूठे से नासिका का दायाँ छिद्र बंद करके बांये छिद्र से वायु को अंदर खींचे, इसके पश्चात् अनामिका और कनिष्ठिका अङ्गुलियों से नासिका के बायें छिद्र को बंद करके श्वास को रोके रहें जबतक कि प्राणायाम-मन्त्र का तीन बार (या शक्ति के अनुसार एक बार) पाठ न हो जाय। प्राणायाम का मन्त्र यह है–

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम् ॐ तत्सवितुवरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम्। (तै. आ.प्र. 10 अ. 27)

हम स्थावर जङ्गम सम्पूर्ण विश्व को उत्पन्न करने वाले उन निरतिशय प्रकाशमय परमेश्वर के भजने योग्य तेज का ध्यान करते हैं, जो कि हमारी बुद्धियों को सत्कर्मों की ओर प्रेरित करते हैं और जो भू, भुवर्, स्वर, महर्, जन, तपः और सत्य नाम वाले समस्त लोकों में व्याप्त हैं तथा जो सच्चिदानन्दस्वरूप जल रूप से जगत् का पालन करने वाले अनन्त तेज के धाम, रसमय, अमृतमय और भूर्भुवः स्वःस्वरूप (त्रिभुवनात्मक) ब्रह्म हैं।'

फिर नीचे लिखा विनियोग पढ़े –

सूर्यश्च मेति नारायण ऋषिः प्रकृतिश्छन्दः सूर्यमन्युमन्युपतयो रात्रिश्च देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः।

तत्पश्चात् निम्नाङ्कित मन्त्र को एक बार पढ़कर एक बार आचमन करे –

ॐ सूर्यश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः पापेभ्यो रक्षन्ताम्। यद्रात्र्या पापककार्ष मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना रात्रिस्तदवलुम्पतु। यत्किञ्च दुरितं मयि इदमहं माममृतयोनौ सूर्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा। (तै. आ. प्र. 10 अ. 25)

उपर्युक्त आचमन-मन्त्र प्रातःकाल की संध्या का है। मध्याह्न और सायंकाल के केवल आचमन-मन्त्र प्रातःकाल से भिन्न हैं। मध्याह्न का विनियोग और मन्त्र इस प्रकार है–

आपः पुनन्त्विति नारायण ऋषिरनुष्टुप्छन्दः आपः पृथिव्री ब्रह्मणस्पतिर्ब्रह्म च देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः।

इस विनियोग को पढ़े। फिर नीचे लिखे मन्त्र को एक बार पढ़कर एक बार आचमन करे –

ॐ आपः पुनन्तु पृथिवीं पृथिवीं पूता पुनातु माम्। पुनन्तु ब्रह्मणस्पतिर्ब्रह्मपूता पुनातु माम्। यदुच्छिष्टमभोज्यं यद्वा दुश्चरितं मम। सर्वं पुनन्तु मामापोऽसतां च प्रतिग्रहँ स्वाहा।। (तै.आ.प्र. 10 अ. 23)

सायंकाल आचमन का विनियोग और मन्त्र इस प्रकार है –

अग्निश्च मेति नारायण ऋषिः प्रकृतिश्छन्दोऽग्निमन्युमन्युपतयोऽहश्च देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः।

इस विनियोग को पढ़े। फिर नीचे लिखे मन्त्र को एक बार पढ़कर एक बार आचमन करे –

ॐ अग्निश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः पापेभ्यो रक्षन्ताम्। यदह्ना पापमकार्षं मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेणा शिश्ना अहस्तदवलुम्पतु। यत्किञ्च दुरितं मयि इदमहं माममृतयोनौ सत्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा।। (तै. आ. प्र. 10 अ. 24)

फिर निम्नाङ्कित विनियोग पढ़ें –

आपो हि ष्ठेति त्र्यृचस्य सिन्धुद्वीप ऋषिर्गायत्री छन्द आपो देवता मार्जने विनियोगः।

इसके पश्चात् निम्नाङ्कित तीन ऋचाओं के नौ चरणों में से सात चरणों को पढ़ते हुए सिर पर ही जल सींचें, आठवें से पृथ्वी पर जल डालें और फिर नवें चरण को पढ़कर सिर पर ही जल सींचे। यह मार्जन तीन कुशों अथवा तीन अङ्गुलियों से करना चाहिये। मार्जन मन्त्र ये हैं –

ॐ आपो हिष्ठा मयो भुवः। ॐ ता न ऊर्जे दधातन। ॐ महे रणाय चक्षसे। ॐ यो वः शिवतमो रसः। ॐ तस्य भाजयतेह नः। ॐ उशतीरिव मातरः। ॐ तस्मा अरं गमाम वः। ॐ यस्य क्षयाय जिन्वथ। ॐ आपो जनयथा च नः। (यजु. अ. 11 मं. 50. 51. 52)

तदनन्तर नीचे लिखे विनियोग को पढ़ें –

द्रुपदादिवेत्यश्विसरस्वतीन्द्रा ऋषयोऽनुष्टुप्छन्द आपो देवताः शिरस्सेके विनियोगः।

फिर हाथ में जल लेकर उसे दाहिने हाथ से ढक ले और नीचे लिखे मन्त्र से अभिमन्त्रित करके उसे सिर पर छिड़क दे –

ॐ द्रुपदादिव मुमुचानः स्विन्नः स्नातो मलादिव। पूर्त पवित्रेणेवाज्यमापः शुन्धन्तु मैनसः। (यजु. अ. 20 मं. 20)

पुनः निम्नाङ्क्ति विनियोग वाक्य पढ़े –

ऋतञ्चेति त्र्यृचस्य माधुच्छन्दसोऽघमर्षण ऋषिरनुष्टुप्छन्दो भाववृत्तं दैवतमघमर्षणे विनियोगः।

फिर दाहिने हाथ में जल लेकर नासिका में लगावे और (यदि सम्भव हो तो श्वास रोककर) नीचे लिखे मन्त्र को तीन बार या एक बार पढ़ते हुए मन ही मन यह भावना करे कि यह जल नासिका के बायें छिद्र से घुसकर अन्तःकरण के पापों को दायें छिद्र से निकाल रहा है, फिर उस जल की ओर दृष्टि न डालकर अपनी बायीं ओर फेंक दें। (अथवा बाम भाग में शिला की भावना करके उस पर पाप को पटककर नष्ट कर देने की भावना करे)।

अघमर्षण-मन्त्र इस प्रकार है –

ॐ ऋतञ्च सत्यञ्चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत। ततो रात्र्यजायत। ततः समुद्रो अर्णवः। समुद्रादर्णवादधिसंवत्सरो अजायत। अहोरात्रणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी। सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्। दिवञ्च पृथिवीञ्चान्तरिक्षमथो स्वः।। (ऋ. अ. 8 अ. 8 व. 48)

इसके पश्चात् नीचे लिखे विनियोग-वाक्य का पाठ करे–

अन्तश्चरसीति तिरश्चीन ऋषिरनुष्टुप्छन्दः आपो देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः।

फिर निम्नाङ्क्ति मन्त्र को एक बार पढ़कर एक बार आचमन करे –

ॐ अन्तश्चरसि भूतेषु गुहायां विश्वतोमुखः।
त्वं यज्ञस्त्वं वषट्कार आपो ज्योती रसोऽमृतम्।। (कात्यायनपरिशिष्टसूत्र)

तदनन्तर नीचे लिखे विनियोग वाक्य का पाठ मात्र करे –

ॐ कारस्य ब्रह्म ऋषिर्दैवी गायत्री छन्दः परमात्मा देवता, तिसृणां महाव्याहृतीनां प्रजापतिर्ऋषिर्गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दांस्यग्निवायुसूर्या देवताः, तत्सवितुरिति विश्वामित्र ऋषिर्गायत्री छन्दः सविता देवता सूर्यार्घ्यदाने विनियोगः।

फिर सूर्य के सामने एक चरण की एँड़ी (पिछला भाग) उठाये हुए अथवा एक पैर से खड़ा होकर या एक पैर के आधे भाग से खड़ा हो ॐकार और व्याहृतियों सहित गायत्री-मन्त्र को तीन बार पढ़कर पुष्प मिले जल से सूर्य को तीन बार अर्घ्य दें। प्रातःकाल और मध्याह्न का अर्घ्य जल में देना चाहिये। यदि जल न हो तो स्थल को भलीभांति जल से धोकर उसी पर अर्घ्य का जल गिरावें। परंतु सायंकाल का अर्घ्य कदापि जल में न दे। खड़ा होकर अर्घ्य देने का नियम केवल प्रातः और मध्याह्न की सन्ध्या में है; सायंकाल में तो बैठकर भूमि पर ही अर्घ्य जल गिराना चाहिये। मध्याह्न की सन्ध्या में एक ही बार अर्घ्य देना चाहिये और प्रातः एवं सायं-संध्या में तीन-तीन बार सूर्यार्घ्य देने का मन्त्र (अर्थात् प्रणवव्याहृतिसहित गायत्री-मन्त्र) इस प्रकार है –

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

इस मन्त्र को पढ़कर 'ब्रह्मस्वरूपिणे सूर्यनारायणाय इदमर्घ्यं दत्तं न मम' ऐसा कहकर प्रातःकाल अर्घ्य समर्पण करे –

तदनन्तर नीचे लिखे वाक्य को पढ़कर विनियोग करे –

उद्वयमिति प्रस्कण्व ऋषिरनुष्टुपछन्दः सूर्योदेवता, उदुत्यमिति प्रस्कण्व ऋषिर्निचृद्गायत्री छन्दः सूर्यो देवता, चित्रमिति कुत्साङ्गिरस ऋषिस्त्रिष्टुपछन्दः सूर्यो देवता, तच्चक्षुरिति दध्यङ्ङाथर्वण ऋषिरेकाधिका ब्राह्मी त्रिष्टुपछन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः।

तदनन्तर प्रातःकाल में खड़ा होकर और सायंकाल में बैठे हुए ही अञ्जलि बांधकर तथा मध्याह्नकाल में खड़ा हो दोनों भुजाएं ऊपर उठाकर (यदि सम्भव हो तो) सूर्य की ओर देखते हुए 'उद्वयम्' इत्यादि चार मन्त्रों को पढ़कर उन्हें प्रणाम करे। फिर अपने स्थान पर ही सूर्यदेव की एक बार प्रदक्षिणा करते हुए उन्हें नमस्कार करके बैठ जाय। (मध्याह्नकाल में गायत्री-मन्त्र, विभ्राट्-अनुवाक्, पुरुषसूक्त, शिवसंकल्प और मण्डलब्राह्मण का भी यथासम्भव पाठ करना चाहिये।)

ॐ उद्वयं तमसस्परि स्वः पश्यन्त उत्तरम्। देवं देवता सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम्। (यजु. अ. 20 मं. 21)

ॐ उदुत्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः। दृशे विश्वाय सूर्यम्।। (यजु. अ. 7 मं. 41)

ॐ चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः।
आप्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्ष सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च।। ***(यजु. अ. 7 मं. 42)***

ॐ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतं श्रृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्।। (यजु. अ.36 मं. 24)

इसके बाद-**तेजोऽसीति धामनामासीत्यस्य च परमेष्ठी प्रजापतिर्ऋषिर्यजुटुस्त्रिष्टुबृगुष्णिहौ छन्दसी सविता देवता गायत्र्यावाहने विनियोगः।**

इस विनियोग को पढ़कर निम्नाङ्क्ति मन्त्र से विनयपूर्वक गायत्रीदेवी का आवाहन करे –

ॐ तेजो ऽसि शुक्रमस्यमृतमसि। धामनामासि प्रियं देवानामनाधृष्टं देवयजनमसि।। (यजु. अ.1।31)

फिर नीचे लिखे विनियोग-वाक्य को पढ़े –

गायत्र्यसीति विवस्वान् ऋषिः स्वराण्यमहापङ्क्तिश्छन्दः परमात्मा देवता गायत्र्युपस्थाने विनियोगः।

तत्पश्चात् नीचे लिखे मन्त्र से गायत्री को प्रणाम करे –

ॐ गायत्र्यस्येकपदी द्विपदी त्रिपदी चतुष्पद्यपदसि न हि पद्यसे नमस्ते तुरीयाय दर्शताय पदाय परोरजसेऽसावदो मा प्रापत्।। (बृहदारण्यक. 5।14।7)

इसके अनन्तर नीचे लिखे विनियोग वाक्य को पढ़े –

ॐकारस्य ब्रह्म ऋषिर्दैवी गायत्री छन्दः परमात्मा देवता, तिसृणां महाव्याहृतीनां प्रजापतिर्ऋषिर्गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दांस्यग्निवायुसूर्या देवताः, तत्सवितुरिति विश्वामित्रऋषिर्गायत्री छन्दः सविता देवता जपे विनियोगः।

फिर नीचे लिखे अनुसार गायत्री-मन्त्र का कम से कम 108 बार माला आदि से गिनते हुए जप करे। अधिक जहां तक हो अच्छा है। जप के समय गायत्री के तेजोमय स्वरूप का ध्यान और मन्त्र के अर्थ का अनुसंधान होता रहे तो बहुत ही उत्तम है।

गायत्री-मन्त्र इस प्रकार है –

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॐ। (यजु. अ. 36 मं. 3)

'हम स्थावर-जङ्गमरूप सम्पूर्ण विश्व को उत्पन्न करने वो उन निरतिशय प्रकाशमय परमेश्वर के भजने योग्य तेज का ध्यान करते हैं, जो हमारी बुद्धियों को सत्कर्मो की ओर प्रेरित करते हैं तथा जो भूर्लोक, भुवर्लोक और स्वर्लोक रूप सच्चिदानन्दमय परब्रह्म हैं।

तदनन्तर नीचे लिखे विनियोग -वाक्य का पाठ करे –

विश्वतश्चक्षुरिति भौवन ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो विश्वकर्मा देवता सूर्यप्रदक्षिणायां विनियोगः।

फिर नीचे लिखे मन्त्र से अपने स्थान पर खड़े होकर सूर्यदेव की एक बार प्रदक्षिणा करे –

ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतोबाहुरुत विश्वतस्पात्। सम्बाहुभ्यां धमति सम्पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन् देव एकः। (यजु. अ.17 मं. 19)

इसके पश्चात् बैठकर निम्नांकित विनियोग का पाठ करे –

ॐ देवा गातुविद इति मनसस्पतिर्ऋषिर्विराडनुष्टुप्छन्दो वातो देवता जपनिवेदने विनियोगः।

पुनः-**ॐ देवा गातुविदो गातुं वित्त्वा गातुमित मनसस्पत इमं देव यज्ञँ स्वाहा वाते धाः।** (यजु. अ. 2 मं. 21)

'हे यज्ञवेत्ता देवताओं ! आप लोग हमारे इस जपरूपी यज्ञ को पूर्ण हुआ जानकर अपने गन्तव्य मार्ग को पधारे। हे चित्त के प्रवर्तक परमेश्वर ! मैं इस जप-यज्ञ को आप के हाथ में अर्पण करता हूँ। आप इसे वायुदेवता में स्थापित करे।'1

इस मन्त्र को पढ़कर नमस्कार करने के अनन्तर –

अनेन यथाशक्ति कृतेन गायत्रीजपाख्येन कर्मणा भगवान् सूर्यानारायणः प्रीयतां न मम।

यह वाक्य पढ़े। इसके बाद -

उत्तमे शिखरे इति वामदेव ऋषिरनुष्टुछन्दः गायत्री देवता

गायत्रीविसर्जने विनियोगः।

इस विनियोग को पढ़कर –

ॐ उत्तमे शिखरे देवी भूम्यां पर्वतमूर्धनि।
ब्राह्मणेभ्योऽभ्यनुज्ञाता गच्छ देवि यथासुखम्।। (तै. आ. प्र. 10 प्र. 30)

'हे गायत्री देवि ! अब तुम अपने उपासक ब्राह्मणों के पास से उनकी अनुमति लेकर भूमि पर स्थित जो मेरु नामक पर्वत है, उसकी चोटी पर विद्यमान जो सुरम्य शिखर है, वही तुम्हारा वासस्थान है, उसमें निवास करने के लिये सुखपूर्वक जाओ।'

इस मन्त्र को पढ़कर गायत्री देवी का विसर्जन करे, फिर निम्नाङ्कित वाक्य पढ़कर यह संध्योपासनकर्म परमेश्वर को समर्पित करे –

अनेन संध्योपासनाख्येन कर्मणा श्रीपरमेश्वरः प्रीयतां न मम। ॐ तत्सद् ब्रह्मार्पणमस्तु।

फिर भगवान् का स्मरण करे –

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्।।
श्री विष्णवे नमः।। श्री विष्णवे नमः।।

इति

बलिवैश्वदेव

पवित्र आसन पर पूर्वाभिमुख बैठकर आचमन और प्राणायाम करके दायें हाथ की अनामिका अङ्गुली में **'ॐपवित्रे स्थो वैष्णव्यौ.'** इस मन्त्र से कुश की पवित्री धारण करे। तत्पश्चात् निम्नाङ्कित संकल्प पढ़े। (यह संकल्प मानसिक भी किया जा सकता है।)

हरिः ॐ तत्सत्3.... अद्य शुभपुण्यतिथौ मम गृहे पञ्चसूनाजनितकलदोषपरिहारपूर्वकं नित्यकर्मानुष्ठानसिद्धिद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं बलिवैश्वदेवाख्यं कर्म करिष्ये।

इसके बाद लौकिक अग्नि प्रज्वलित करके अग्निदेव का निम्नाङ्कित मन्त्र पढ़ते हुए ध्यान करे।

ॐ चत्वारि शृङ्गा त्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो अस्य। त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महादेवो मर्त्यां आविवेश। (ऋ.अ.3 अ. 8 व. 10)

फिर नीचे लिखे मन्त्र को पढ़कर अग्निदेव को मानसिक आसन दे –

ॐ एषो ह देवः प्रदिशोऽनु सर्वाः पूर्वो ह जातः स उ गर्भे अन्तः। स एव जातः स जनिष्यमाणः प्रत्यङ्जनास्तिष्ठति सर्वतोमुखः।। (यजु. 32। 4)

---

1. भोजन के लिए जो हविष्यान्न घर में पकाया जाता है उसी से बलिवैश्वदेव करना चाहिए। यदि पकाया अन्न सुलभ न हो तो साग, पत्ता, फल-फूल से यदि यह भी उपलब्ध न हो तो जल से ही बलिवैश्वदेव करना चाहिए। (वीरमित्रोदय, आ.प्र./शंखलिखित)
कोदो, चना, उड़द, मसूर, कुल्थी ये अन्न निषिद्ध हैं। (स्मृत्यन्तर)

तत्पश्चात् अग्निदेवको नमस्कार करके एक पात्र में बिना लवण का पका हुआ अनाज रख ले और यज्ञोपवीत को सव्यभाव में रखे हुए ही दायें घुटने को पृथ्वी पर टेककर अन्न की पाँच आहुतियाँ नीचे लिखे पाँच मन्त्रों को क्रमशः पढ़ते हुए बारी-बारी से अग्नि में छोड़े। (अग्नि के अभाव में एक पात्र में जल रखकर उसी में आहुतियाँ छोड़ सकते हैं।)

(1) देवयज्ञ

1- ॐ ब्रह्मणे स्वाहा, इदं ब्रह्मणे न मम।

2- ॐ प्रजापतये स्वाहा, इदं प्रजापतये न मम।

3- ॐ गृह्याभ्यः स्वाहा, इदं गृह्याभ्यो न मम।

4- ॐ कश्यपाय स्वाहा, इदं कश्यपाय न मम।

5- ॐ अनुमतये स्वाहा, इदमनुमतये न मम।

पुनः अग्नि के पास ही पानी से एक चौकोना चक्र बनाकर उसका द्वार पूर्व की ओर रखे ओर उसी में बतलाये जाने वाले स्थानों पर क्रमशः वीस ग्रास अन्न देना चाहिय। एक-एक मन्त्र पढ़कर एक-एक ग्रास अर्पण करना चाहिये।

अग्निस्थान पूर्व अन्नपात्र
7
2 3 1
20
13
उत्तर 10 17 15 12 दक्षिण
18 8
6 16 14 11 4
9
19 5
पश्चिम

(2) भूतयज्ञ

1- ॐ धात्रे नमः, इदं धात्रे न मम।

2- ॐ विधात्रे नमः, इदं विधात्रे न मम।

3- ॐ वायवे नमः, इदं वायवे न मम।

4- ॐ वायवे नमः, इदं वायवे न मम।

5- ॐ वायवे नमः, इदं वायवे न मम।

6- ॐ वायवे नमः, इदं वायवे न मम।

7- ॐ प्राच्यै नमः, इदं प्राच्यै न मम।

8- ॐ अवाच्यै नमः, इदमवाच्यै न मम।

9- ॐ प्रतीच्यै नमः, इदं प्रतीच्यै न मम।

10- ॐ उदीच्यै नमः, इदमुदीच्यै न मम।

11- ॐ ब्रह्मणे नमः, इदं ब्रह्मणे न मम।

12- ॐ अन्तरिक्षाय नमः, इदमन्तरिक्षाय न मम।

13- ॐ सूर्याय नमः, इदं सूर्याय न मम।

14- ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः, इदं विश्वेभ्यो देवेभ्यो न मम।

15- ॐ विश्वेभ्यो भूतेभ्यो नमः, इदं विश्वेभ्यो भूतेभ्यो न मम।

16- ॐ उषसे नमः, इदमुषसे न मम।

17- ॐ भूतानां पतये नमः, इदं भूतानां पतये न मम।

(3) पितृयज्ञ

यज्ञोपवीत को दाहिने कंधे पर रखकर दक्षिणाभिमुख हो बायाँ घुटना पृथ्वी पर टेके।

18- ॐ पितृभ्यः स्वधा नमः, इदं पितृभ्यः स्वधा न मम।

निर्णेजनम्-पूरब की ओर मुख कर सव्य होकर दाहिना घुटना टेके। अन्नपात्र को धोकर वह जल 19वें अङ्क की जगह मन्त्र पढ़कर छोड़े।

19- ॐ यक्ष्मैतत्ते निर्णेजनं नमः, इदं यक्ष्मणे न मम।

(4) मनुष्ययज्ञ

यज्ञोपवीत को माला की भांति कण्ठ में करके उत्तराभिमुख हो पक्व अन्न 20वें अङ्क पर मंत्र छोड़ दें।

20- ॐ हन्त ते सनकादिमनुष्येभ्यो नमः, इदं हन्त ते सनकादिमनुष्येभ्यो न मम।

(1) गोबलि

इसके बाद निम्नाङ्क्कित मन्त्र पढ़ते हुए सव्यभाव से ही गौओं के लिये बलि अर्पण करे–

ॐ सौरभेय्यः सर्वहिताः पवित्रः पुण्यराशयः।
प्रतिगृह्णन्तु मे ग्रासं गावस्त्रैलोक्यमातरः।
इदं गोभ्यो न मम।

(2) कुक्कुर बलि

फिर यज्ञोपवीत कण्ठ में माला की भांति करके कुत्तों के लिये ग्रास दे। मन्त्र यह है –

ॐ द्वौ श्वानौ श्यामशबलौ वैवस्वतकुलोद्भवौ।
ताभ्यामन्नं प्रदास्यामि स्यातामेतावहिंसकौ।।

इदं श्वभ्यां न मम

(3) काकबलि

पुनः यज्ञोपवीत को अपसव्य करके नीचे लिखे मन्त्र को पढ़ते हुए कौओं के लिये भूमि पर ग्रास दे।

ॐ ऐन्द्रवारुणवायव्या याम्या वै नैर्ऋतास्तथा।
वायसाः प्रतिगृह्णन्तु भूमौ पिण्डं मयोज्झितम्।।
इदं वायसेभ्यो न मम।

(4) देवादिबलि

फिर सव्यभाव से निम्नाङ्क्ति मन्त्र पढ़कर देवता आदि के लिए अन्न अर्पण करे–

ॐ देवा मनुष्याः पशवो वयांसि सिद्धाः सयक्षोरगदैत्यसङ्घाः।
प्रेताः पिशाचास्तरवः समस्ता ये चान्नमिच्छन्ति मया प्रदत्तम्।।
इदमन्नं देवादिभ्यो न मम।

(5) पिपीलिकादिबलि

इसी प्रकार निम्नाङ्क्ति मन्त्र से चीटीं आदि के लिये अन्न दे –

ॐ पिपीलिकाः कीटपतङ्गाद्या बुभूक्षिताः कर्मनिबन्धबद्धाः।
तेषां हि तृप्त्यर्थमिदं मयान्नं तेभ्यो विसृष्टं सुखिनो भवन्तु।।
इदमन्नं पिपीलिकादिभ्यो न मम।

इसके बाद सव्यभाव से पूर्वाभिमुख होकर पवित्र भूमि पर थोड़ा अन्न तथा जल रखकर हाथ जोड़ निम्नाङ्क्ति श्लोकों को पढ़े –

देवा मनुष्याः पशवो वयांसि
सिद्धाः सयक्षोरगभूतसङ्घाः।
प्रेताः पिशाचास्तरवः समस्ता
ये चान्नमिच्छन्ति मया प्रदत्तम्।।
पिपीलिकाः कीटपतङ्गकाद्या
बुभुक्षिताः कर्मनिबन्धबद्धाः।
प्रयान्तु ते तृप्तिमिदं मयान्नं
तेभ्यो विसृष्टं सुखिनो भवन्तु।।
भूतानि सर्वाणि तथान्नमेत-
दहं च विष्णुर्न ततोऽन्यदस्ति।
तस्मादहं भूतनिकायभूत-
मन्नं प्रयच्छामि भवाय तेषाम्।।
चतुर्दशो भूतगणो य एष
तत्र स्थिता येऽखिलभूतसङ्घाः।
तृप्यर्थमन्नं हि मया विसृष्टं
तेषामिदं ते मुदिता भवन्तु।।

तदन्तर हाथ धोकर भस्म लगावे और निम्नाङ्कित मन्त्र से अग्नि का विसर्जन करे–

ॐ यज्ञ यज्ञं गच्छ यज्ञपतिं गच्छ स्वां योनिं गच्छ स्वाहा।
एष ते यज्ञो यज्ञपटे सहसूक्तवाकः सर्ववीरस्तं जुषस्व स्वाहा।। (यजु. सं. 8। 22)

तत्पश्चात् कर्म में न्यूनता की पूर्ति के लिए निम्नाङ्कित श्लोकों को पढ़ते हुए भगवान् से प्रार्थना करे –

ॐ प्रमादात्कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्।
स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः।।
यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्।।

फिर नीचे लिखे वाक्य को पढ़कर यह कर्म भगवान् को अर्पण करे।

अनेन वैश्वदेवाख्येन कर्मणा श्रीयज्ञनारायणस्वरूपी
परमेश्वरवासुदेवः प्रीयतां न मम।

इति

नित्य तर्पण[1]

तर्पण-विधि-आचारादर्शादि ग्रन्थों में लिखा है कि घर में अमावस्या, पितृपक्ष, विशेष तिथि श्राद्ध के दिन तिल से तर्पण करें। किन्तु अन्य दिनों में घर में तिल से तर्पण न करें।

तर्पण का फल सूर्योदय से आधे पहर तक अमृत एक पहर तक मधु, डेढ़ पहर तक दूध और साढ़े तीन पहर तक जल रूप से पितरों को प्राप्त होता है। इसके उपरान्त का दिया हुआ जल राक्षसों को प्राप्त होता है।

अग्रैस्तु तर्पयेद्देवान् मनुष्यान् कुशमध्यतः।
पितृंस्तु कुशमूलाग्रैर्विधिः कौशो यथाक्रमम्।।

कुशा के अग्र भाग से देवताओं का, मध्य भाग से मनुष्यों का और मूल अग्र भाग से पितरों का तर्पण करें।

संकल्प-तीन कुशाओं को बाँधकर ग्रन्थी लगाकर कुशाओं का अग्रभाग पूर्व में रखते हुए दाहिने हाथ में जलादि लेकर संकल्प पढ़ें।

ॐ विष्णुः...............'श्रुति-स्मृति-पुराणोक्त-फलप्राप्त्यर्थं पितृतर्पणं करिष्ये'

तदनन्तर एक ताबे अथवा चांदी के पात्र में श्वेत चन्दन, चावल, सुगन्धित पुष्प और तुलसीदल रखें, फिर उस पात्र के ऊपर एक हाथ या प्रादेशमात्र लम्बे तीन कुश रखें जिनका अग्रभाग पूर्व की ओर रहे। इसके बाद उस पात्र में तर्पण के लिए जल भर दें। फिर उसमें रखे हुए तीनों कुशों को तुलसी सहित सम्पुटाकार दायें हाथ में लेकर बायें हाथ से ढक लें और निम्नाङ्कित मंत्र पढ़ते हुए देवताओं का आवाहन करें। **ॐ विश्वेदेवास ऽआगत श्रृणुता म ऽइम हवम्। एदं बर्हिनिंषीदत।।** (शु. यजु. 7।34)

विश्वेदेवाः शृणुतेम हवं मे ये ऽअन्तरिक्षे य उप द्यवि ष्ठ।
येऽअग्निजिह्वाऽउत वा यजत्राऽआसद्यास्मिन्वर्हिषि मादयद्ध्वम्।। (शु. यजु. 33।53)

आगच्छन्तु महाभागा विश्वेदेवा महाबलाः।
ये तर्पणेऽत्र विहिताः सावधाना भवन्तु ते।।

---

1. तर्पण में सोना, चांदी, तांबा अथवा कांसे का पात्र होना चाहिये मिट्टी का नहीं। देवताओं को एक-एक, मनुष्यों को दो-दो और पितरों को तीन-तीन अञ्जलि जल देना चाहिये। स्त्रियों में माता, पितामही, और प्रपितामही आदि को तीन-तीन, सौतेली मां और आचार्य-पत्नी को दो-दो तथा अन्य सब स्त्रियों को एक-एक अञ्जलि जल देना चाहिये।

इस प्रकार आवाहन कर कुश का आसन दें और उन पूर्वाग्र कुशों द्वारा दायें हाथ की समस्त अङ्गुलियों के अग्रभाग अर्थात् देवतीर्थ से ब्रह्मादि देवताओं के लिए पूर्वोक्त पात्र में से एक-एक अञ्जलि चावल मिश्रित जल लेकर दूसरे पात्र में गिरावें और निम्नाङ्कित रूप से उन-उन देवताओं के नाम मन्त्र पढ़ते रहें -

देवतर्पण

ॐ ब्रह्मा तृप्यताम्। ॐ विष्णुस्तृप्यताम्। ॐ रुद्रस्तृप्यताम्। ॐ प्रजापतिस्तृप्यताम्। ॐ देवास्तृप्यन्ताम्। ॐ छन्दांसि स्तृप्यन्ताम्। ॐ वेदास्तृप्यन्ताम्। ॐ ऋषयस्तृप्यन्ताम्। ॐ पुराणाचार्यास्तृप्यन्ताम्। ॐ गन्धर्वास्तृप्यन्ताम्। ॐ इतराचार्यास्तृप्यन्ताम्। ॐ संवत्सरः सावयवस्तृप्यताम्। ॐ देव्यस्तृप्यन्ताम्। ॐ अप्सरसस्तृप्यन्ताम्। ॐ देवानुगास्तृप्यन्ताम्। ॐ नागास्तृप्यन्ताम्। ॐ सागरास्तृप्यन्ताम्। ॐ पर्वतास्तृप्यन्ताम्। ॐ सरितस्तृप्यन्ताम्। ॐ मनुष्यास्तृप्यन्ताम्। ॐ यक्षास्तृप्यन्ताम्। ॐ रक्षांसि तृप्यन्ताम्। ॐ पिशाचास्तृप्यन्ताम्। ॐ सुपर्णास्तृप्यन्ताम्। ॐ भूतानि तृप्यन्ताम्। ॐ पशवस्तृप्यन्ताम्। ॐ वनस्पतयस्तृप्यन्ताम्। ॐ ओषधयस्तृप्यन्ताम्। ॐ भूतग्रामश्चतुर्विधस्तृप्यताम्।

ऋषितर्पण-इसी प्रकार निम्नाङ्कित मन्त्रवाक्यों से मरीचि आदि ऋषियों को भी एक-एक अञ्जलि जल दें-

ॐ मरीचिस्तृप्यताम्। ॐ अत्रिस्तृप्यताम्। ॐ अङ्गिरास्तृप्यताम्। ॐ पुलस्त्यस्तृप्यताम्। ॐ पुलहस्तृप्यताम्। ॐ क्रतुस्तृप्यताम्। ॐ वसिष्ठस्तृप्यताम्। ॐ प्रचेतास्तृप्यताम्। ॐ भृगुस्तृप्यताम्। ॐ नारदस्तृप्यताम्।।

दिव्यमनुष्यतर्पण-इसके बाद जनेऊ को माला की भांति गले में धारण करके (अर्थात् निवीती हो) पूर्वोक्त कुशों हो दायें हाथ की कनिष्ठिका के मूल-भाग में उत्तराग्र रखकर स्वयं उत्तराभिमुख हो निम्नाङ्कित मन्त्र वचनों को दो-दो बार पढ़ते हुए दिव्य मनुष्यों के लिए दो-दो अञ्जलि यवसहित जल प्राजापत्यतीर्थ (कनिष्ठिका के मूल-भाग) से अर्पण करें।

ॐ सनकस्तृप्यताम्।।2।। ॐ सनन्दनस्तृप्यताम्।।2।। ॐ सनातनस्तृप्यताम्।।2।। ॐ कपिलस्तृप्यताम्।।2।। ॐ आसुरिस्तृप्यताम्।।2।। ॐ वोढुस्तृप्यताम्।।2।। ॐ पञ्चशिखस्तृप्यताम्।।2।।

दिव्य पितृतर्पण-तत्पश्चात् उन कुशों को द्विगुण भुग्न करके उनका मूल और अग्रभाग दक्षिण की ओर किये हुए ही उन्हें अंगूठे और तर्जनी के बीच में रखे और स्वयं दक्षिणाभिमुख हो बायें घुटने को पृथ्वी पर रखकर अपसव्यभाव से (जनेऊ को दायें कंधे पर रखकर) पूर्वोक्त पात्रस्थ जल में काला तिल मिलाकर पितृतीर्थ से (अंगूठा और तर्जनी के मध्य भाग से) दिव्य पितरों के लिए निम्नाङ्कित मन्त्र-वाक्यों को पढ़ते हुए तीन-तीन अञ्जलि जल दें –

ॐ कव्यवाडनलस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं (गङ्गाजलं वा) तस्मै स्वधा नमः।3।। ॐ सोमस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं (गङ्गाजलं वा) तस्मै स्वधा नमः।।3।। ॐ यमस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं (गङ्गाजलं वा) तस्मै स्वधा नमः।3।। ॐ अर्यमा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं (गङ्गाजलं वा) तस्मै स्वधा नमः।3।। ॐ अग्निष्वात्ताः पितरस्तृप्यन्ताम् इदं सतिलं जलं (गङ्गाजलं वा) तेभ्यः स्वधा नमः।3।। ॐ सोमपाः पितरस्तृप्यन्ताम् इदं सतिलं जलं (गङ्गाजलं वा) तेभ्यः स्वधा नमः।3।। ॐ बर्हिषदः पितरस्तृप्यन्ताम् इदं सतिलं जलं (गङ्गाजलं वा) तेभ्यः स्वधा नमः।3।।

यमतर्पण-इसी प्रकार निम्नलिखित मन्त्र-वाक्यों को पढ़ते हुए चौदह यमों के लिये भी पितृतीर्थ से ही तीन-तीन अञ्जलि तिल सहित जल दें –

ॐ यमाय नम :।।3।।ॐ धर्मराजाय नम :।।3।। ॐ मृत्युवे नमः।।3।। ॐ अन्तकाय नम :।।3।। ॐ वैवस्वताय नम :।।3।। ॐ कालाय नमः।।3।। ॐ सर्वभूतक्षयाय नम :।।3।। ॐ औदुम्बराय नम :।।3।। ॐ दध्नाय नमः।।3।। ॐ नीलाय नम :।।3।। ॐ परमेष्ठिने नम :।।3।। ॐ वृकोदराय नम :।।3।। ॐ चित्राय नम :।।3।। ॐ चित्रगुप्ताय नम :।।3।।

दक्षिण की ओर बैठकर आचमन कर बायाँ घुटना मोड़ जनेऊ तथा उत्तरीय को दाहिने कंधे पर कर पितृतीर्थ तर्जनी के मूल तथा कुशा के अग्र भाग और मूल से तिल सहित प्रत्येक नाम से दक्षिण में तीन-तीन अंजलि देवें। पवित्री दाहिने तथा तीन को बायें हाथ की अनामिका में धारण करें।

मनुष्य पितृ तर्पण

आवाहन (तीर्थों में नहीं करे)

ॐ उशन्तस्त्वा निधीमह्युशन्तः समिधीमहि।
उशन्नुशत आवाह पितृन्हविषे अत्तवे।। (यजु. 19। 70)
ॐ आयन्तु नः पितरः सोम्यासोऽग्निष्वात्ताः पथिमिर्देवयानैः।
अस्मिन् यज्ञे स्वधया मदन्तोऽधिब्रुवन्तु तेऽवन्त्वस्मान्। (शुक्ल. मज. 19।58)

तदन्तर अपने पितृगणों का नाम-गोत्र आदि उच्चारण करते हुए प्रत्येक के लिए पूर्वोक्त विधि से तीन-तीन अञ्जलि तिलसहित जल दे। यथा-

अमुकगोत्रः अस्मत्पिता (बाप) अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं (गङ्गा जलं वा) तस्मै स्वधा नमः।।3।। अमुकगोत्रः अस्मत्पितामहः (दादा) अमुकशर्मा रुद्ररूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं (गङ्गाजलं वा) तस्मै स्वधा नमः।।3।। अमुकगोत्रः अस्मत्प्रपितामहः (परदादा) अमुकशर्मा आदित्यरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं (गङ्गाजलं वा) तस्मै स्वधा नमः।।3।। अमुकगोत्रा अस्मन्माता अमुकी देवी वसुरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः।।3।। अमुकगोत्रा अस्मत्पितामही (दादी) अमुकी देवी रुद्ररूपा तृप्यताम् इदं सतिलं तलं तस्यै स्वधा नमः।।3।। अमुकगोत्रा अस्मत्प्रपितामही (परदादी) अमुकी देवी आदित्यरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः।।3।। अमुकगोत्रा अस्मत्सापत्नमाता (सौतेली मां) अमुकी देवी वसुरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः।।2।।

इसके बाद निम्नाङ्कित नौ मन्त्रों को पढ़ते हुए पितृतीर्थ से जल गिराता रहे-

ॐ उदीरतामवर उत्परास उन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः।
असुं यऽ ईयुरवृका ऋतज्ञास्ते नोऽवन्तु पितरो हवेषु।। (यजु. 19। 49)

अङ्गिरसो नः पितरो नवग्वा ऽअथर्वाणो भृगवः सोम्यासः।
तेषां वयं सुमतौ यज्ञियानामपि भद्रे सौमनसे स्याम।। (यजु. 19। 50)

आयन्तु नः पितरः सोम्यासोऽग्निष्वात्ताः पथिभिर्देवयानैः।
अस्मिन्यज्ञे स्वधया मदन्तोऽधिब्रुवन्तु तेऽवन्त्वस्मान्।। (यजु. 19। 58)

ऊर्जं वहन्तीरमृतं घृतं पयः कीलालं परिस्रुतम्।
स्वधास्थ तर्पयत मे पितॄन्। (यजु. 2। 34)

पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः प्रतिपतामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः।
अक्षन्पितरोऽमीमदन्त पितरोऽतीतृपन्त पितरः पितरः शुन्धध्वम्। (यजु. 19। 36)

ये चेह पितरो ये च नेह यांश्च विद्म यॉं 2 ।। उ च न प्रविद्म त्वं वेत्थ यति ते जातवेदः स्वधाभिर्यज्ञँ सुकृतं जुषस्व।। (यजु. 19। 67)

ॐ मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः।।(यजु. 13। 28)

ॐ मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवꣳ रजः। मधु द्यौरस्तु न पिता।। (यजु. 13। 28)

ॐमधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँऽ2अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः।। (यजु. 13। 29)

ॐ मधु। मधु। मधु। तृप्यध्वम्। तृप्यध्वम्। तृप्यध्वम्।

फिर नीचे लिखे मन्त्र का पाठमात्र करे –

ॐ नमो वः पितरो रसाय नमो वः पितरः शोषाय नमो वः पितरो जीवाय नमो वः पितरः स्वधायै नमो वः पितरो घोराय नमो वः पितरो मन्यवे नमो वः पितरः पितरो नमो वो गृहान्नः पितरो दत्त सतो वः देष्मैतद्वः पितरो वास आधत्त। (यजु. 2। 32)

द्वितीय गोत्रतर्पण–इसके बाद द्वितीय गोत्र मातामह आदि का तर्पण करे, यहाँ भी पहले की ही भांति निम्नलिखित वाक्यों को तीन-तीन बार पढ़कर तिलसहित जल की तीन-तीन अञ्जलियाँ पितृतीर्थ से दे। यथा –

अमुकगोत्रः अस्मन्मातामहः (नाना) अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं (गङ्गाजलं वा) तस्मै स्वधा नमः।।3।। अमुकगोत्रः अस्मत्प्रमातामहः (परनाना) अमुकशर्मा रुद्ररूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः।।3।। अमुकगोत्रः अस्मद्वृद्धप्रमातामहः (बूढ़े परनाना) अमुकशर्मा आदित्यरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः।।3।। अमुकगोत्रा अस्मन्मातामही (नानी) अमुकी देवी वसुरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः।।3।। अमुकगोत्रा अस्मत्प्रमातामही (परनानी) अमुकी देवी रुद्ररूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः।।3।। अमुकगोत्रा अस्मद्वृद्धप्रमातामही (बूढ़ी परनानी) अमुकी देवी आदित्यरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः।।3।।

पत्न्यादितर्पण

अमुकगोत्रा अस्मत्पत्नी (भार्या) अमुकी देवी वसुरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः।।1।। अमुकगोत्रः अस्मत्सुतः (बेटा) अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः।।3।। अमुकगोत्रा अस्मत्कन्या (बेटी) अमुकी देवी वसुरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः।।1।। अमुकगोत्रः अस्मत्पितृव्यः (पिता के भाई) अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः।।3।। अमुकगोत्राः अस्मन्मातुलः (मामा) अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः।।3।। अमुकगोत्राः अस्मद्भ्राता (अपना भाई) अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः।।3।। अमुकगोत्रः अस्मत्सापत्नभ्राता (सौतेला भाई) अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः।।3।। अमुकगोत्रा

अस्मत्पितृभगिनी (बूआ) अमुकी देवी वसुरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः।। अमुकगोत्रा अस्मन्मातृभगिनी (मौसी) अमुकी देवी वसुरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधानमः ।। 1।। अमुकगोत्रा अस्मदात्मभगिनी (अपनी बहिन) अमुकी देवी वसुरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः।।1।। अमुकगोत्रा अस्मत्सापत्नभगिनी (सौतेली बहिन) अमुकी देवी वसुरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः।।1।। अमुकगोत्रः अस्मच्छ्वशुरः (श्वसुर) अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः।।3।। अमुकगोत्रः अस्मद्गुरुः अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः।।3।। अमुकगोत्रा अस्मदाचार्यपत्नी अमुकी देवी वसुरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः।।2।। अमुकगोत्रः अस्मच्छिष्यः अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः।।3।। अमुकगोत्रः अस्मत्सखा अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः।।3।। अमुकगोत्रः अस्मदाप्तपुरुषः अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः।।3।।

इसके बाद सव्य होकर पूर्वाभिमुख हो नीचे लिखे श्लोकों को पढ़ते हुए जल गिरावे –

देवासुरास्तथा यज्ञा नागा गन्धर्वराक्षसाः ।
पिशाचा गुह्यकाः सिद्धाः कूष्माण्डास्तरवः खगाः ।।
जलेचरा भूनिलया वाय्वाधाराश्च जन्तवः ।
प्रीतिमेते प्रयान्त्वाशु मद्दत्तेनाम्बुनाखिलाः ।।
नरकेषु समस्तेषु यातनासु च ये स्थिताः ।
तेषामाप्यायनायैतद् दीयते सलिलं मया ।।
येऽबान्धवा बान्धवा वा येऽन्यजन्मनि बान्धवाः ।
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु ये चास्मत्तोयकाङ्क्षिणः ।।
ॐ आब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं देवर्षिपितृमानवाः ।
तृप्यन्तु पितरः सर्वे मातृमातामहादयः ।।
अतीतकुलकोटीनां सप्तद्वीपनिवासिनाम् ।
आब्रह्मभुवनाल्लोकादिदमस्तु तिलोदकम् ।।
येऽबान्धवा बान्धवा वा येऽन्यजन्मनि बान्धवाः ।
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु मया दत्तेन वारिणा ।।

वस्त्र-निष्पीडन

तत्पश्चात् वस्त्र को चार आवृत्ति लपेटकर जल में डुबावे और बाहर ले आकर निम्नाङ्कित मन्त्र को पढ़ते हुए अपसव्य-भाव से अपने बायें भाग में भूमि पर उस वस्त्र

को निचोड़े। (पवित्रक को तर्पण किये हुए जल में छोड़ दे। यदि घर में किसी मृत पुरुष का वार्षिक श्राद्ध आदि कर्म हो तो वस्त्र-निष्पीडन को नहीं करना चाहिये।) वस्त्र-निष्पीडन का मन्त्र यह है –

ये चास्माकं कुले जाता अपुत्रा गोत्रिणो मृताः।
ते गृह्णन्तु मया दत्तं वस्त्रनिष्पीडनोदकम्।।

भीष्मतर्पण

इसके बाद दक्षिणाभिमुख हो पितृतर्पण के समान ही जनेऊ अपसव्य करके हाथ में कुश धारण किये हुए ही बालब्रह्मचारी भक्तप्रवर भीष्म के लिए पितृतीर्थ से तिलमिश्रित जल के द्वारा तर्पण करें। उनके तर्पण का मन्त्र निम्नाङ्क्ति है –

वैयाघ्रपदगोत्राय साङ्कृतिप्रवराय च।
गङ्गापुत्राय भीष्माय प्रदास्येऽहं तिलोदकम्।
अपुत्रय ददाम्येतत्सलिलं भीष्मवर्मणे।।

अर्घ्यदान-फिर शुद्ध जल से आचमन करके प्राणायाम करे। तदनन्तर यज्ञोपवीत बायें कंधे पर करके एक पात्र में शुद्ध जल भरकर उसके मध्यभाग में अनामिका से षड्दल कमल बनावे और उसमें श्वेत चन्दन, अक्षत, पुष्प तथा तुलसीदल छोड़ दे। फिर दूसरे पात्र में चन्दन से षड्दल-कमल बनाकर उसमें पूर्वादि दिशा के क्रम से ब्रह्मादि देवताओं का आवाहन-पूजन करे तथा पहले पात्र के जल से उन पूजित देवताओं के लिये अर्घ्य अर्पण करे। अर्घ्यदान के मन्त्र निम्नाङ्क्ति हैं –

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो ब्वेनऽआवः।
स बुध्न्या ऽउपमा ऽअस्य व्विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च व्विवः।। (शु. य. 13।3)
ॐ ब्रह्मणे नमः। ब्रह्माणं पूजयामि।।
ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्।
समूढमस्यपाँ सुरे स्वाहा।।(शु.य. 5।15)
ॐ विष्णवे नमः। विष्णुं पूजयामि।।
ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव ऽउतो त ऽइषवे नम :।
बाहुभ्यामुत ते नमः।। (शु. य. 16।1)
ॐ रुद्राय नमः। रुद्रं पूजयामि।।
ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्।। (शु.य. 36।3)
ॐ सवित्रे नमः। सवितारं पूजयामि।।
ॐ मित्रस्य चर्षणीधृतोऽवो देवस्य सानसि। द्युम्नं चित्रश्रवस्तमम्।। (शु. य. 11।62)
ॐ मित्राय नमः। मित्रं पूजयामि।।

ॐ इमं मे व्वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय। त्वामवस्युराचके।। (शु. य. 21।1)
ॐ वरुणाय नमः। वरुणं पूजयामि।।

सूर्योपस्थान-इसके बाद निम्नाङ्क्त मन्त्र पढ़कर सूर्योपस्थान करे -

ॐ अदृश्रमस्य केतवो विरश्मयो जनाँ।। 2।। अनु। भ्राजन्तो ऽअग्नयो यथा। उपयामगृहीतोऽसि सूर्याय त्वा भ्राजायैष ते योनिः सूर्याय त्वा भ्राजाय। सूर्य भ्राजिष्ठ भ्राजिष्ठस्त्वं देवेष्वसि भ्राजिष्ठोऽहमनुष्येषु भूयासम्।। (शु. य. 8।40)
ॐ हꣳ सः शुचिषद्द्वसुरन्तरिक्षसद्धोता व्वेदिषदतिथिर्दुरोणसत्। नृषद्द्वरसदृतसद्व्योमसदब्जा गोजा ऽऋतजा ऽअद्रिजा ऽऋतं वृहत्।। (शु. य. 10।24)

इसके पश्चात् दिग्देवताओं को पूर्वादि क्रम से नमस्कार करे -

ॐ इन्द्राय नमः' प्राच्यै।। 'ॐ अग्नये नमः' आग्नेय्यै।। 'ॐ यमाय नमः' दक्षिणायै।। 'ॐ निर्ऋतये नमः'
नैर्ऋत्यै।। 'ॐ वरुणाय नमः' पश्चिमायै।। 'ॐ वायवे नमः' वायव्यै।। ॐ सोमाय नमः' उदीच्यै।।
ॐ ईशानाय नमः' ऐशान्यै।। 'ॐ ब्रह्मणे नमः' ऊर्ध्वायै।। 'ॐ अनन्ताय नमः' अधरायै।।

इसके बाद जल में नमस्कार करें -

ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ अग्नये नमः। ॐ पृथिव्यै नमः। ॐ ओषधिभ्यो नमः। ॐ वाचे नमः। ॐ वाचस्पतये नमः। ॐ महद्भ्यो नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ अद्भ्यो नमः। ॐ अपाम्पतये नमः। ॐ वरुणाय नमः।।

मुखमार्जन-फिर नीचे लिखे मन्त्र को पढ़कर जल से मुंह धो डालें-

ॐ संवर्चसा पयसा सन्तनूभिरगन्महि मनसा सँ शिवेन।
त्वष्टा सुदत्रे व्विदधातु रायोऽनुमार्ष्टु तन्वो यद्विलिष्टम्।। (शु.य. 2।24)

विसर्जन-नीचे लिखे मन्त्र पढ़कर देवताओं का विसर्जन करें-

ॐ देवा गातुविदो गातुं वित्त्वा गातुमित।
मनसस्पत ऽइमं देव यज्ञँ स्वाहा व्वाते धाः।। (शु. य. 2।21)

समर्पण-निम्नलिखित वाक्य पढ़कर यह तर्पण-कर्म भगवान् को समर्पित कर करें-

अनेन यथाशक्तिकृतेन देवर्षिमनुष्यपितृतर्पणाख्येन कर्मणा भगवान् मम समस्तपितृस्वरूपी जनार्दनवासुदेवः प्रीयतां न मम।

ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः।

।। इति।।

द्वितीय खण्ड : प्रचलित प्रमुख संस्कार

संस्कार परिचय

संस्कार शब्द सम् पूर्वक कृञ्-धातु से घञ् प्रत्यय करके निष्पन्न होता है। संस्कार शब्द का प्रयोग अनेक अर्थों में किया जाता है। संस्कृत वाङ्मय में इसका प्रयोग शिक्षा, संस्कृति, प्रशिक्षण, सौजन्य पूर्णता, व्याकरण संबंधी शुद्धि, संस्करण, परिष्करण, शोभा आभूषण, प्रभाव, स्वरूप, स्वभाव, क्रिया, फलशक्ति, शुद्धि क्रिया, धार्मिक विधि विधान, अभिषेक, विचार भावना, धारणा, कार्य का परिणाम, क्रिया की विशेषता आदि व्यापक अर्थों में किया जाता है। अतः संस्कार शब्द अपने विशिष्ट अर्थ समूह को व्यक्त करता और उक्त सम्पूर्ण अर्थ इस शब्द में समाहित हो गये हैं। अतः संस्कार, शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक शुद्धि के लिए किये जाने वाले अनुष्ठानों का श्रेष्ठ आचार है। इस अनुष्ठान प्रक्रिया से मनुष्य की बाह्याभ्यन्तर शुद्धि होती है जिससे वह समाज का श्रेष्ठ आचारवान् नागरिक बन सके।

हिन्दू संस्कारों में अनेक वैचारिक और धार्मिक विधियां सन्निविष्ट कर दी गयी हैं जिससे बाह्य परिष्कार के साथ ही व्यक्ति में सदाचार की पूर्णता का भी विकास हो सके। सविधि संस्कारों के अनुष्ठान से संस्कृत व्यक्ति में विलक्षण तथा अवर्णनीय गुणों का प्रादुर्भाव हो जाता है–

आत्मशरीरान्यतरनिष्ठो विहित क्रियाजन्योऽतिशय विशेषः संस्कारः
–वीर मित्रोदय पृ. 191

कार्यः शरीरसंस्कारः पावनः प्रेत्य चेह च – म. स्मृ. 2/26

संस्कारों की संख्या-संस्कारों के शास्त्रीय प्रयोग के सम्बन्ध में गृह्यसूत्रों को ही प्रमाण माना गया है। प्राचीन गृह्य सूत्रों में पारस्कर गृह्य सूत्र, अश्वलायन गृह्य सूत्र, बोधायन गृह्य सूत्र विशेष रूप से प्रामाणिक रूप से संस्कारों के अनुष्ठानों का विवरण, महत्त्व और मंत्रों का विवरण प्रस्तुत करते हैं। इनके अतिरिक्त पुराण सहित्य और विभिन्न स्मृतियां भी संस्कारों के आचार के संबंध तथा उनके महत्त्व का प्रतिपादन करती हैं। धर्म सूत्रों और धर्मशास्त्रों में भी इनके समन्वित रूपों का प्रतिपादन किया गया है। विभिन्न गृह्यसूत्रों एवं स्मृतियों में संस्कारों की संख्या में मतैक्य नहीं हैं तदपि परवर्ती काल में संस्कारों की संख्या का निर्धारण कर दिया गया। इन संस्कारों में जन्मपूर्व से लेकर बाल्यकाल के 10 संस्कार और शेष 6 शैक्षणिक तथा अन्त्येष्टि पर्यन्त के संस्कार परिगणित हैं –

1.	गर्भाधान	2.	पुंसवन
3.	जात कर्म	4.	सीमन्तोन्नयन
5.	नामकरण	6.	चूड़ाकरण
7.	निष्क्रमण	8.	अन्नप्राशन
9.	कर्णवेध	10.	विद्यारम्भ
11.	उपनयन	12.	वेदारंभ
13.	केशान्त	14.	समावर्तन
15.	विवाह	16.	अन्त्येष्टि

कालक्रमानुसार प्राप्तभेद से अनुष्ठान पद्धतियों की रचना हो गई है। श्री दयानन्द सरस्वती के अनुयायियों एवं अन्य मतावलम्बियों ने भी अपने सम्प्रदायानुसार पद्धतियां बना ली हैं किन्तु देशज प्रक्रिया में भिन्नता रहते हुए भी शास्त्रीय विधि और मंत्र प्रयोग यथावत् मिलते हैं। अनेक संस्कार काल वाह्य भी हो गये हैं तदपि उनकी कौल परम्परा अभी जीवित है। अत: इन संस्कारों का संक्षिप्त रूप से विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है। हिन्दू संस्कारों के समय मुहूर्त निर्धारण में ज्योतिष की भी मुख्य भूमिका रहती है अत: प्रत्येक संस्कार के लिए नक्षत्र योग के अनुसार ज्योतिष शास्त्र में मुहूर्तों का निर्धारण कर दिया है प्रचलित पञ्चाङ्गों में चक्रानुक्रम से उसका विवरण उपलब्ध रहता है। ज्योतिष के संक्षिप्त संकलन ग्रंथ भी इसमें सहायक हैं। संस्कारों के मुहूर्तों से सम्बन्धित सारिणी भी संलग्न कर दी जा रही है जिसमें संक्षेप में मुहूर्तों का विवरण है। मनु ने 'जन्मना जायते शूद्रः संस्काराद्द्विज उच्यते' कहकर संस्कार की महत्ता का प्रतिपादन कर दिया है। संस्कार से ही द्विजत्व प्राप्त होता है। इसी वाक्य को आधार मानकर आर्य समाज के अधिष्ठाता स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सम्पूर्ण आर्य जाति को संस्कार से द्विजत्व प्राप्ति का सिद्धान्त प्रतिपादित किया। षोडश संस्कारों के सबंध में संक्षिप्त परिचय, शास्त्रीय विधान का विवरण दिया जा रहा है विशेष विवरण विभिन्न पद्धतियों से जानना चाहिये।

प्रमुख संस्कार

1. प्राक् जन्म संस्कार

गृह्य सूत्र गर्भाधान के साथ ही संस्कारों का प्रारंभ करते हैं क्योंकि जीवन का प्रारम्भ इसी संस्कार से शुरू होता है -

निषिक्तो यत्प्रयोगेण गर्भः संधार्यते स्त्रिया।
तद् गर्भालम्भनं नाम कर्म प्रोक्तं मनीषिभिः। वीर मित्रोदय।

स्त्री-पुरुष के संयोग रूप इस संस्कार की विस्तृत विवेचना शास्त्रों में मिलती है जिसमें अनेक विधि-निषेधों की चर्चा है जो मानव जीवन के लिए और आगे आने वाले संतति परम्परा की शुद्धि के लिए अत्यावश्यक है। दिव्य सन्तति की प्राप्ति के लिए बताये गये शास्त्रीय प्रयोग सफल होते हैं सन्तति-निग्रह भी होता है।

(2) पुंसवन

गर्भधारण का निश्चय हो जाने के पश्चात् शिशु को पुंसवन नामक संस्कार के द्वारा अभिषिक्त किया जाता था। इसका अभिप्राय-पुं-पुमान् (पुरुष) का सवन (जन्म हो)।

पुमान् प्रसूयते येन कर्मणा तत् पुंसवनमीरितम् - बीरमित्रोदय

गर्भधारण का निश्चय हो जाने के तीसरे मास से चतुर्थ मास तक इस संस्कार का विधान बताया जाता है। अधिकांश स्मृतिकारों ने तीसरा माह ही गृहीत किया है।

तृतीये मासि कर्तव्यं गृष्टेरन्यत्र शोभनम्।
गृष्टे चतुर्थमासे तु षष्ठे मासेऽथवाष्टये। -वीरमित्रोदय

यह संस्कार चन्द्रमा के पुरुष नक्षत्र में स्थित होने पर करना चाहिए। सामान्य गणेशार्चनादि करने के बाद गर्भिणी स्त्री की नासिका के दाहिने छिद्र में गर्भ-पोषण संरक्षण के लिए लक्ष्मणा, बटशुङ्ग, सहदेवी आदि औषधियों का रस छोड़ना चाहिए। सुश्रत नें सूत्र स्थान में कहा है-

"सुलक्ष्मणा-वटशुङ्ग, सहदेवी विश्वदेवानाभिमन्यतमम् क्षीरेणाभिद्युष्टय त्रिचतुरो वा विन्दून दद्यात् दक्षिणे-नासापुटे"-सुश्रत संहिता।

उपर्युक्त प्रक्रिया से जाहिर है कि इस संस्कार में वैज्ञानिक विधि का आश्रय है जिससे शिशु की पूर्णता प्राप्त हो और सर्वाङ्ग रक्षा हो।

(3) सीमन्तोन्नयन

गर्भ का तृतीय संस्कार सीमतोन्नयन था। इस संस्कार में गर्भिणी स्त्री के केशों (सीमन्त) को ऊपर करना" सीमन्त उन्नीयते यस्मिन् कर्मणि तत् सीमन्तोन्नयनम्-वी.मि.

विधि-किसी पुरुष नक्षत्र में चन्द्रमा के स्थित होने पर स्त्री-पुरुष को उस दिन फलाहार करके इस विधि को सम्पन्न किया जाता है। गणेशार्चन, नान्दी, प्राजापत्य आहुति देना चाहिए। पत्नी अग्नि के पश्चिम आसन पर आसीन होती है और पति गूलर के कच्चे फलों का गुच्छ, कुशा, साही के कांटे लेकर उससे पत्नी के केश संवारता है -महाव्याहृतियों का उच्चारण करते हुए।

अयभूर्ज्ज स्वतो वृक्ष ऊर्ज्ज्वेव फलिनी भव - पा.गृ. सूत्र

इस अवसर पर मंगल गान, ब्राह्मण भोजन आदि कराने की प्रथा थी।

बाल्यावस्था के संस्कार

(4) जातकर्म

जातक के जन्मग्रहण के पश्चात् पिता पुत्र मुख का दर्शन करे और तत्पश्चात् नान्दी श्राद्धावसान जातकर्म विधि को सम्पन्न करे-

जातं कुमारं स्वं दृष्ट्वा स्नात्वाऽनीय गुरुम् पिता।
नान्दी श्राद्धावसाने तु जातकर्म समाचरेत्

विधि-पिता स्वर्णशलाका या अपनी चौथी अंगुली से जातक को जीभ पर मधु और घृत महाव्याहृतियों के उच्चारण के साथ चटावे। गायत्री मन्त्र के साथ ही घृत बिन्दु छोड़ा जाय। आंयुर्वेद के ग्रंथों में जातकर्म-विधि का विधान चर्चित है कि पिता बच्चे के कान में दीर्घायुष्य मंत्रों का जाप करे। इस अवसर पर लग्नपत्र बनाने और जातक के ग्रह नक्षत्र की स्थिति की जानकारी भी प्राप्त करने की प्रथा है और तदनुसार बच्चे के भावी संस्कारों को भी निश्चित किया जाता है।

(5) नामकरण

नामकरण एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण संस्कार है जीवन में व्यवहार का सम्पूर्ण आधार नाम पर ही निर्भर होता है –

नामाखिलस्य व्यवहारहेतुः शुभावहं कर्मसु भाग्यहेतुः
नाम्नैव कीर्तिं लभेत मनुष्यस्ततः प्रशस्तं खलु नामकर्म।-बी.मि.भा. 1

उपर्युक्त स्मृतिकार बृहस्पति के वचन से प्रमाणित है कि व्यक्ति संज्ञा का जीवन में सर्वोपरि महत्त्व है अतः नामकरण संस्कार हिन्दू जीवन में बड़ा महत्त्व रखता है।

शतपथ ब्राह्मण में उल्लेख है कि –

तस्माद् पुत्रस्य जातस्य नाम कुर्यात्
पिता नाम करोति एकाक्षरं द्व्क्षरंत्र्यक्षरम् अपरिमिताक्षरम् वेति-वी.मि.
द्व्क्षरं प्रतिष्ठाकामश्चतुरक्षरं ब्रह्मवर्चसकामः

प्रायः बालकों के नाम सम अक्षरों में रखना चाहिए। महाभाष्यकार ने व्याकरण के महत्व का प्रतिपादन करते हुए नामकरण संस्कार का उल्लेख किया –

याज्ञिकाः पठन्ति-"दशम्युतरकालं जातस्य नाम विदध्यात्
घोष बदाद्यन्तरन्तस्थमवृद्धं त्रिपुरुषानुकम नरिप्रतिष्ठितम्।

तद्धि प्रतिष्ठितमं भवति। द्व्क्षरं चतुरक्षरं वा नाम कुर्यात् न तद्धितम् इति। न चान्तरेण व्याकरणकृतस्तद्धिता वा शक्या विज्ञातुम्।-महाभाष्य

उपर्युक्त कथन में तीन महत्त्वपूर्ण बातों का उल्लेख है-

(1) शब्द रचना (2) तीन पुस्त के पुरखों के अक्षरों का योग (3) तद्धितान्त नहीं होना चाहिए अर्थात् विशेषणादि नहीं कृत् प्रत्यान्त होना चाहिए।

विधि-विधान-गृह्य सूत्रों के सामान्य नियम के अनुसार नामकरण संस्कार शिशु के जन्म के पश्चात् दसवें या बारहवें दिन सम्पन्न करना चाहिए -

द्वादशाहे दशाहे वा जन्मतोऽपि त्रयोदशे।
षोडशैकोनविंशे वा द्वात्रिंशेवर्षतः क्रमात्।।

संक्रान्ति, ग्रहण, और श्राद्धकाल में संस्कार मंगलमय नही माना जाता। गणेशार्चन करके संक्षिप्त व्याहृतियों से हवन सम्पन्न कराकर कांस्य पात्र में चावल फैलाकर पांच पीपल के पत्तों पर पांच नामों का उल्लेख करते हुए उनका पञ्चोपचार पूजन करे। पुनः माता की गोद में पूर्वाभिमुख बालक के दक्षिण कर्ण में घरके बड़े पुरुष द्वारा पूजित नामों में से निर्धारित नाम सुनावे। हे शिशो ! तव नाम अमुक शर्म-वर्म गुप्त दासाद्यस्ति" आशीर्वचन निम्न ऋचाओं का पाठ-

"ॐ वेदोऽसि येन त्वं देव वेद देवेभ्यो वेदोभवस्तेन मह्यां वेदो भूयाः। ॐ अङ्गादङ्गात्संभवसि हृदयादधिजायते आत्मा वै पुत्र नामासि सञ्जीव शरदः शतम्'। गोदान-छाया दान आदि कराया जाय। लोकाचार के अनुसार अन्य आचार सम्पादित किये जायें।

बालिकाओं के नामकरण के लिए तद्धितान्त नामकरणकी विधि है। बालिकाओं के नाम विषमाक्षर में किये जायें और वे आकारान्त या ईकारान्त हों। उच्चारण में सुखकर, सरल, मनोहर मङ्गलसूचक आशीर्वादात्मक होने चाहिए।

स्त्रीणां च सुखमक्रूरं विस्पष्टार्थं मनोहरम्।
मङ्गल्यं दीर्घवर्णान्तमाशीर्वादाभिधानवत्। - वी.मि.

(6) निष्क्रमण

प्रथम बार शिशु के सूर्य दर्शन कराने के संस्कार को निष्क्रमण कहा गया है।

ततस्तृतीये कर्तव्यं मासि सूर्यस्य दर्शनम्।
चतुर्थे मासि कर्तव्य शिशोश्चन्द्रस्य दर्शनम्

अनेक स्मृतिकारों ने चतुर्थ मास स्वीकार किया है। इस संस्कार के बाद बालक को निरन्तर बाहर लाने का क्रम प्रारंभ किया जाता है।

विधि-भलीभांति अलंकृत बालक को माता गोद में लेकर बाहर आये और कुल देवता के समक्ष देवार्चन करे। पिता पुत्र को-तच्चक्षुर्देव ....आदि मंत्र का जाप करके सूर्य का दर्शन करावे -

ततस्त्वलंकृता धात्री बालकादाय पूजितम्।
बहिर्निष्कासयेद् गेहात् शङ्ख पुण्याहनिः स्वनैः। - विष्णुधर्मोत्तर

आशीर्वाद - अप्रमत्तं प्रमत्तं वा दिवारात्रावथापि वा।
रक्षन्तु सततं सर्वे देवाः शक्र पुरोगमाः।।

गीत, मंगलाचरण और बालक के मातुल द्वारा भी आशीर्वाद दिलाया जाय।

(7) अन्नप्राशन

विधिपूर्वक बालक को प्रथम भोजन कराने की प्रथा अत्यन्त प्राचीन है। वेदों और उपनिषदों में भी एतत् सम्बन्धी मंत्र उपलब्ध होते हैं। माता के दूध से पोषित होने वाले बालक को प्रथम बार अन्नप्राशन कराने का प्रचलन प्रायः प्राचीन काल से ही है जो एक विशेष उत्सव के रूप में सम्पन्न किया जाता है।

जन्मतो मासि षष्ठे स्यात सौरेणोत्तममन्नदम्
तदभावेऽष्टमे मासे नवमे दशमेऽपि वा।
द्वादशे वापि कुर्वीत प्रथमान्नाशनं परम्
संवत्सरे वा सम्पूर्णे केचिदिच्छन्ति पण्डिताः।। - नारद, वी.मि.
षण्मासञ्चैनमन्नं प्राशयेल्लघु हितञ्च - सुश्रुत (शं. स्थान)

विधि-विधान-अन्नप्राशन संस्कार के दिन सर्वप्रथम यज्ञीय भोजन के पदार्थ वैदिक मन्त्रों के उच्चारण के साथ पकाये जायें। भोजन विविध प्रकार के हों तथा सुस्वादु हों। मधु-घृत-पायस से बालक को प्रथम कवल (ग्रास) दिया जाय। पद्धतियों में एतत् संबंधी मंत्र उपलब्ध हैं। गणेशार्चन करके व्याहृतियों से आहुति देकर एतत् संबंधी ऋचाओं से हवन करके तत्पश्चात् बालक को मंत्रपाठ के साथ अन्नप्राशन कराया जाय पुनः यथा लोकाचार उत्सव सम्पन्न किया जाय।

(8) चूड़ाकरण (मुण्डन)

मुण्डन संस्कार के संदर्भ में वैदिक ऋचाओं, गृह्यसूत्रों एवं स्मृतियों में मंत्र, विधि प्रयोग, समय निर्धारण के सम्बन्ध में व्यापक चर्चा मिलती है। पद्धतियों में इसका समावेश किया गया है। तदपि लोकाचार कुलाचार से अनेक भेद दिखाई देते हैं। अनेक कुलों में मनौती के आधार पर मुण्डन किये जाते हैं किन्तु मुहूर्त निर्णय के लिए सभी ज्योतिष का आधार प्रायः स्वीकार करते हैं। मुण्डन में विधि पूर्वक शास्त्रीय आचार

केवल उपनयन कराने वाले कुलों में उसी समय किया जाता है जबकि शास्त्रीय विधान दूसरे वर्ष से बताया गया है यथा -

प्राङ्वासवे सप्तमे वा सहोपनयनेन वा। (अश्वलायन)
तृतीये वर्षे चौलं तु सर्वकामार्थसाधनम्।
सम्बत्सरे तु चौलेन आयुष्यं ब्रह्मवर्चसम्। - वी. मि.
पञ्चमे पशुकामस्य युग्मे वर्षे तु गर्हितम्

निषिद्ध काल-गर्भिण्यां मातरि शिशोः क्षौर कर्म न कारयेत्-इसके अतिरिक्त भी मुहूर्त निर्णय के समय-निषिद्ध काल को त्यागना चाहिए।

शिखा की व्यवस्था

मुण्डन संस्कार के कौल और शास्त्रीय आचार तो किये जाते हैं किन्तु शिखा रखने की प्रथा का प्रायः उच्चाटन होता जा रहा है। जबकि शिखा का वैज्ञानिक महत्त्व है और शास्त्रों में शिखाहीन होना गंभीर प्रायश्चित्त कोटि में आता है –

शिखा छिन्दन्ति ये मोहात् द्वेषादज्ञानतोऽपि वा।
तप्तकृच्छ्रेण शुध्यन्ति त्रयो वर्णा द्विजातयः-लघुहारित

चूड़ाकरण का शास्त्रीय आधार था दीर्घायुष्य की प्राप्ति। सुश्रुत ने (जो विश्व के प्रथम शीर्षशल्य चिकित्सक थे) इस सम्बन्ध में बताया है कि -

(11) मस्तक के भीतर ऊपर की ओर शिरा तथा सन्धि का सन्निपात है वहीं रोमावर्त में अधिपति है। यहां पर तीव्र प्रहार होने पर तत्काल मृत्यु संभावित है। शिखा रखने से इस कोमलांग की रक्षा होती है।

-मस्तकाभ्यन्तरोपरिष्टात् शिरासम्बन्धिसन्निपातो
रोमावर्त्तोऽधिपतिस्तत्रापि सद्यो मरणम्-सुश्रुत श. स्थान

विधि-विधान-गणेशार्चन अग्निस्थापन-पञ्चवारूणीहवन-नन्दी के बाद पिता केशों का संस्कार यथाविधि करके स्वयं मंत्र पाठ करता हुआ केश कर्तन करता है और उनका गोमयपिन्ड में उत्सर्ग करता है पुनः दही उष्णोदक शीतोदक से केशों को भिगोता और छुरे को अभिमन्त्रित करके नापित को वपन (मुण्डन) का आदेश देता है। क्रमशः

ॐ यत् क्षुरेण मज्जयता सुपेशसावप्त्वा वापयति केशाञ्छिन्धिशिरो माऽस्यायुः प्रमोषी।।1।।

ॐ अक्षण्वं परिवप।।2।।

येना वपत् सविता क्षुरेण सोमस्य राज्ञो वरुणस्य विद्वान्। तेन ब्रह्मणो वपतेदमस्यायुष्यं जरदष्टिर्यथासत्।।3।।

येन भूरिश्चरा दिवंज्योक् च पश्चाद्धि सूर्यम्। तेन ते वपामि ब्रह्मणा जीवातवे जीवनाय सुलोक्याय स्वस्तये।।4।।

(9) कर्ण वेध

आभूषण पहनने के लिए विभिन्न अंगों के छेदन की प्रथा संपूर्ण संसार की असभ्य तथा अर्द्धसभ्य जातियों में प्रचलित है। अतः इसका उद्भव अति प्राचीन काल में ही हुआ होगा। - हिन्दू संस्कार पृ. 129

आभूषण धारण और वैज्ञानिक रूप से कर्ण छेदन का महत्त्व होने के कारण इस प्रक्रिया को संस्कार रूप में स्वीकारा गया होगा। कात्यायन सूत्रों में ही इसका सर्वप्रथम उल्लेख मिलता है। सुश्रुत ने इसके वैज्ञानिक पक्ष में कहा है कि कर्ण छेद करने से अण्डकोष वृद्धि, अन्त्र वृद्धि आदि का निरोध होता है अतः जीवन के आरंभ में ही इस क्रिया को वैद्य द्वारा सम्पादित किया जाना चाहिए।

शङ्खो परि च कर्णान्ते त्यक्त्वा यत्नेन सेवनीयम्
व्यत्यासाद्वा शिरां विध्येद् अन्त्रबृद्धि निवृत्तये-सुश्रुत चि. स्थान

भिषग् वामहस्तेन-विध्येत्-सुश्रुत संहिता में षष्ठ अथवा सप्तम मास में शुक्ल पक्ष में शुभ दिन में वैद्य द्वारा माता की गोद में मधुर खाते बालक का अत्यन्त निपुणता से कर्ण वेध करना चाहिए। जब कि वृहस्पति जन्म से 10-12-16वें दिन करने को कहते हैं।

विधि विधान-वर्तमान बालिकाओं का कर्णवेध तो आभूषण धारण के लिए अनिवार्यतः होता है किन्तु पुरुष वर्ग के वेध का प्रतीकात्मक ही संस्कार हो पाता है।

गणेशार्चन, हवन आदि करके निम्न मंत्रों से क्रमशः दक्षिण-वाम कर्णों की वेध की प्रक्रिया सम्पन्न की जाती है - ॐ भद्रं कर्णेभिः.............आदि मंत्रों से सम्पन्न किया जाय।

(10) विद्यारंभ या अक्षरारंभ

इस महत्त्वपूर्ण संस्कार के संबंध में गृह्य सूत्रों में काफी स्पष्ट उल्लेख नहीं मिलता और न ही किसी विशेष विधि-विधान की चर्चा ही मिलती है। किन्तु अनेक आकर ग्रंथों, प्राचीन काव्य नाटकों में इसका स्पष्ट उल्लेख आता है। कौटिल्य का अर्थशास्त्र रघुवंश, उत्तररामचरित आदि में इसकी चर्चा है इससे स्पष्ट है कि उपनयन और वेदारंभ के पूर्व अक्षरों का सम्यक् ज्ञान अपेक्षित था और अक्षर ज्ञान के समय कुलाचार के अनुसार विधि-विधान किये जाते थे।

विधि-परवर्ती संग्रह ग्रंथों में इसकी विधि व्यवस्था प्राप्त है।

उत्तरायण सूर्य होने पर ही शुभ मुहूर्त में गणेश-सरस्वती-गृह देवता का अर्चन करके गुरु के द्वारा अक्षरारंभ कराया जाय।

द्वितीय जन्मतः पूर्वामारभेदक्षरान् सुधीः।

-बी.मि. (बृहस्पति)

"पञ्चमे सप्तमेवाब्दे"-संस्कारप्रकाश-भीमसेन

तण्डुल प्रसारित पट्टिका पर-

श्री गणेशाय नमः, श्री सरस्वत्यै नमः, गृह देवताभ्योनमः श्री लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः लिखकर उसका पूजन कराया जाय और गुरु पूजन किया जाय और गुरु स्वयं बालक का दाहिना हाथ पकड़कर पट्टिका पर अक्षरारंभ करा दे। गुरु को दक्षिणा दान किया जाय।

(11) उपनयन [1]

भारतीय मनीषियों ने जीवन की समग्र रचना के लिए जिस आश्रम व्यवस्था की स्थापना की जिससे मनुष्य को सहज ही पुरुषार्थ चतुष्टय की प्राप्ति हो, किया गया प्रतीत होता है। ब्रह्मचर्य काल में धर्म का अर्जन एवं गृहस्थ जीवन में अर्थ-काम का उपभोग गीता के शब्दों में 'धर्माविरुद्धो भूतेषु कामोऽस्मि भरतर्षभ" धर्म-नियंत्रित अर्थ और काम तभी संभव था जब प्रारंभ में ही धर्म-तत्वों से मनुष्य दीक्षित हो जाय। इसके बाद जीवन के चरम लक्ष्य मोक्ष प्राप्त करने के लिए भी यौवन काल में अभ्यस्त धर्म ही सहायक होता है। इस प्रकार पुरुषार्थ चतुष्टय और आश्रम चतुष्टय में अन्योन्याश्रय प्रतीत होता है या दोनों आधाराधेय भाव से जुड़े हैं।

वर्तमान युग में उपनयन संस्कार प्रतीकात्मक रूप धारण करता जा रहा है। विरल परिवारों में यथाकाल विधि-व्यवस्था के अनुरूप उपनयन संस्कार हो पाते हैं। एक ही दिन कुछ घण्टों में चूड़ाकरण, कर्णवेध, उपनयन, वेदारंभ और केशान्त कर्म के साथ समावर्तन संस्कार की खानापूरी करदी जाती है। बहुसंख्य परिवारों में विवाह से पूर्व उपनयन संस्कार कराकर वैवाहिक संस्कार करा दिया जाता है जबकि गृह्यसूत्रों के अनुसार विभिन्न वर्णों के लिए आयु की सीमा का निर्धारण किया गया है-

ब्रह्मवर्चसकामस्य कार्यं विप्रस्य पञ्चमे
राज्ञो बलार्थिनः षष्ठे वैश्यस्येहार्थिनोऽष्टमे। -मनुस्मृति 2 अ. 37

1. इस संस्कार को विधिवत् कराने के लिए इसी खण्ड के 'उपनयन संस्कार' को देखें।

सत्रहवीं शताब्दी के निबन्धकारों ने परिस्थितियों के अनुरूप ब्राह्मण का 24 क्षत्रिय का 33 और वैश्य का 36 तक भी उपनयन स्वीकार कर लेते हैं। - बी.मि.भा. 1 (347)

यौवन के पदार्पण करने के पूर्व किशोरावस्था में संस्कारित और दीक्षित करने का अनुष्ठान सार्वकालिक और विश्वजनीन है। सभी सम्प्रदायों में किसी न किसी रूप में दीक्षा की पद्धति चलती है और उसके लिए विशेष प्रकार के विधि विधानों के कर्मकाण्ड आयोजित किये जाते हैं। इन विधि-विधानों के माध्यम से संस्कारित व्यक्ति ही समाज में श्रेष्ठ नागरिक की स्थिति प्राप्त कर सकता है। इसी उद्देश्य से उपनयन संस्कार की परम्परा भारतीय मनीषा में स्थापित की थी।

'हिन्दू संस्कार'-वास्तव में उपनयन संस्कार आचार्य के समीप दीक्षा के लिए अभिभावक द्वारा पहुंचना ही इस संस्कार का उद्देश्य था। इसी लिए इसके कर्मकाण्ड में कौपीन; मौञ्जी, मृगचर्म और दण्ड धारण करने का मंत्रों के साथ संयोजन है। सावित्री मंत्र धारण द्विज को अपने ब्रह्मचारी वेष में अपनी माता से पहली भिक्षा और फिर समाज के सभी वर्ग से भिक्षाटन करने का अभ्यास इस संस्कार का वैशिष्ट्य है। इस व्यवस्था से ब्रह्मचारी को व्यष्टि से समष्टि और परिवार से बृहत् समाज से जोड़ा जाता था जिससे व्यक्ति अपनी सत्ता को समष्टि में समाहित करें और अपनी विद्या बुद्धि शक्ति का प्रयोग समाज की सेवा के लिए करें।

वास्तव में यज्ञोपवीत के सूत्र धारण करने को ब्रतवंध कहते हैं जिससे ब्रह्मचारी की पहचान और उसको धारण करने वाले को अपनी दीक्षा संकल्प का सदा स्मरण रहे। सूत्र धारण कराकर उत्तरीय रखने की अनिवार्यता बताई गई है।

विधि विधान-उपनयन संस्कार से संबंधित प्रान्तीय और विभिन्न सम्प्रदायों के स्तर पर उपनयन पद्धतियां प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं तदनुसार उनका आश्रय लेकर संस्कारों का संयोजन सम्पादन करना चाहिए।

(12) वेदारंभ

वेदारंभ उपनयन संस्कार के बाद किया जाता है जो अब प्रतीकात्मक ही रह गया है। वास्तव में यह संस्कार मुख्य रूप से वेद की विभिन्न शाखाओं की रक्षा के लिए उसके अभ्यास की परम्परा से जुड़ा है। अपनी कुल परम्परा के अनुसार वेद, शाखा सूत्र आदि के स्वाध्याय की पद्धति थी। जिसे अनिवार्य रूप से द्विजातियों को उसका अभ्यास करना पड़ता था। कालान्तर में मात्र पुरोहितों के कुलों में सीमित हो गई और अब उसका प्रायः लोप हो गया है। यही कारण है कि वेद की वहुत सी शाखायें उपलब्ध नहीं हैं क्योंकि श्रुति परम्परा से ही इसकी रक्षा की जाती थी। महर्षि पतञ्जलि ने भी महाभाष्य में इसकी चर्चा करते हुए कहा है कि अनेक शाखा-सूत्रों का लोप हो गया है।

वर्तमान पद्धतियों में चतुर्वेदों के मंत्रों का संग्रह कर दिया गया है जिसे उपनयंन के बाद सावित्री-सरस्वती-लक्ष्मी गणेश की अर्चना के बाद उपनीत बटु से उसका औपचारिक उच्चारण मात्र करा दिया जाता है। अतः अब यह संस्कार उपनयन का अंगभूत भाग रह गया है।

(13) केशान्त

केशान्त का अर्थ लम्बी अवधि तक केशधारण करने वाले युवा ब्रह्मचारी का केशवपन। विधि पूर्वक मंत्रोच्चारण के साथ यह गोदान के साथ सम्पन्न होता था। इस संस्कार के बाद ही 'युवक' को गृहस्थ जीवन के योग्य शारीरिक और व्यावहारिक योग्यता की दीक्षा दी जाती थी। आगोदानकर्मणः-ब्रह्मचर्यम्-भा. यू.सू.

(14) समावर्त्तन

समावर्त्तन का अर्थ है विद्याध्ययन प्राप्त कर ब्रह्मचारी युवक का गुरुकुल से घर की ओर प्रत्यावर्त्तन।

तत्र समावर्त्तनं नाम वेदाध्यनानन्तरं गुरुकुलात्

स्वगृहागमनम्-वीर मित्रोदय

विष्णुस्मृति के अनुसार-कुब्ज, वामन, जन्मान्ध, बधिर, पंगु तथा रोगियों को यावज्जीवन ब्रह्मचर्य में रहने की व्यवस्था है-

कुब्जवामनजात्यन्धक्लीब पङ्वार्त रोगिणाम्
ब्रतचर्या भवेत्तेषां यावज्जीवमनंशतः।

समावर्त्तन संस्कार गृहस्थ जीवन में प्रवेश की अनुमति देता है। उपनयन संस्कार से प्रारंभ होने वाली शिक्षा की पूर्णता के बाद ब्रह्मचर्य का कठोर जीवन व्यतीत करने वाले संस्कारित युवक को इस संस्कार के माध्यम से गार्हस्थ्य जीवन जीने की शिक्षा दी जाती थी। ऐसे संस्कारित युवक की स्नातक संज्ञा थी। स्नातक तीन प्रकार के होते थे (1) विद्या स्नातक (2) व्रत स्नातक (3) विद्याव्रत स्नातक। इनमें तीसरे प्रकार के स्नातक को ही गृहस्थ जीवन में प्रवेश का अधिकार मिलता था। क्योंकि ऐसा ही ब्रह्मचारी विद्या की पूर्णता के साथ ब्रह्मचर्य्य व्रत की भी पूर्णता प्राप्त कर लेता था। वर्तमान काल में भले 10-12 वर्ष के बालक का उपनयन संस्कार किया जाता हो किन्तु उसे तत्काल समावर्त्तन का अधिकारी बना दिया जाता है।

आश्रमहीन रहना दोषपूर्ण होता है अतः समावर्त्तन के बाद गृहस्थ बनना अथ च दारपरिग्रह अपरिहार्य है, अन्यथा प्रायश्चित्त होता है।

आश्रमेण नतिष्ठेत्तु क्षणमेकमपि द्विज
आश्रमेण बिना तिष्ठन् प्रायश्चित्तीयते हि सः - दक्षसस्मृति (1)

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि समावर्त्तन संस्कार अति महत्वपूर्ण आचार प्रक्रिया थी जिससे संस्कारित और दीक्षित होकर युवक एक श्रेष्ठ गृहस्थ की योग्यता प्राप्त करता था। वर्तमान काल में उपनयन संस्कार के साथ ही कुछ घंटों में इसकी भी खानापूरी कर दी जाती है। इसके विधि विधान का विवरण उपनयन पद्धतियों से यथा प्राप्त सम्पन्न कराना चाहिए।

(15) विवाह [1]

विवाह संस्कार हिन्दू संस्कार पद्धति का अत्यन्त महत्वपूर्ण संस्कार है। प्राय: सभी सम्प्रदायों में इसका महत्वपूर्ण स्थान है। विवाह शब्द का तात्पर्य मात्र स्त्री-पुरुष के मैथुन सम्बन्ध तक ही सीमित नहीं है अपितु सन्तानोत्पादन के साथ-साथ सन्तान को सक्षम आत्मनिर्भर होने तक के दायित्व का निर्वाह और सन्तति परम्परा को योग्य लोक शिक्षण देना भी इसो संस्कार का अंग है। शास्त्रों में अविवाहित व्यक्ति को अयज्ञीय कहा गया है और उसे सभी प्रकार के अधिकारों के अयोग्य माना गया है-

अयज्ञियो वा एष योऽपत्नीकः-वै.प्रा.

मनुष्य जन्म ग्रहण करते ही तीन ऋणों से युक्त हो जाता है, ऋषि ऋण, देव ऋण, पितृऋण और तीनों ऋणों से क्रमश: ब्रह्मचर्य, यज्ञ, सन्तानोत्पादन करके मुक्त हो पाता है-जायमानो ह वै ब्राहणस्त्रिऋर्णवान् जायते-ब्रह्मचर्येण ऋषिभ्यो, यज्ञेन देवेभ्य: प्रजया पितृभ्य:-तै. सं. 6-3

गृहस्थाश्रम सभी आश्रमों का आश्रम है। जैसे वायु प्राणिमात्र के जीवन का आश्रय है, उसी प्रकार गार्हस्थ्य सभी आश्रमों का आश्रम है -

यथा वायुं समाश्रित्य वर्त्तन्ते सर्वजन्तवः
तथा गृहस्थमाश्रित्य वर्तन्ते सर्व आश्रमाः।
यस्मात् त्रयोऽप्याश्रमिणो ज्ञानेनान्नेन चान्वहम्
गृहस्थेनैव धार्यन्ते तस्मा ज्येष्ठाश्रमो गृही। -मनुस्मृति (3)

विवाह अनुलोम रीति से ही करना चाहिए-प्रातिलोम्य विवाह सुखद नहीं होता अपितु परिणाम में कष्टकारी होता है -

---

1. इस संस्कार को कराने की विधि इसी खण्ड के 'विवाह संस्कार' प्रकरण को देखे।

त्रयाण्यमानुलोम्यं स्यात् प्रातिलोम्यं न विद्यते
प्रातिलौम्येन यो याति न तस्मात् पापकृत्तरः। द. स्मृ. (9)
अपत्नीको नरो भूप कर्मयोग्यो न जायते।
ब्राह्मणः क्षत्रियो वापि वैश्यः शूद्रोऽपि वा नरः।

विवाह के प्रकार

प्राचीन काल से ही यौन सम्बन्धों में विविधता के वृत्त प्रचुर मात्र में उपलब्ध हैं अतः स्मृतियों ने इस प्रकार के विवाहों को आठ भागों में विभक्त किया है।

(1) ब्राह्म (2) दैव (3) आर्ष (4) प्राजापत्य (5) आसुर (6) गान्धर्व (7) राक्षस (8) पैचाश।

इनमें प्रथम चार प्रशस्त और चार अप्रशस्त की श्रेणी में रखे गये हैं। प्रथम चार में भी ब्राह्म विवाह सर्वोत्तम और समाज में प्रशंसनीय था शेष तरतम भाव से ग्राह्य थे। किन्तु दो सर्वथा अग्राह्य थे।

अप्रशस्त - निन्दनीय

(1) पैशाच-सोती रोती कन्या का बलात् अपहरण।
(2) राक्षस-अभिभावकों को मारपीट कर बलात् छीनकर रोती बिलखती कन्या का अपहरण इस कोटि का निन्दनीय विवाह था।
(3) गान्धर्व-जब कन्या और वर कामवश होकर स्वेच्छापूर्वक परस्पर संयोग करते हैं तो ऐसा विवाह गान्धर्व विवाह होता है। म. स्मृति (3)
(4) जिस विवाह में कन्या के पक्ष को यथेष्ट धन-सम्पत्ति देकर स्वच्छन्दतापूर्वक कन्या से विवाह किया जाता है ऐसा विवाह आसुर संज्ञक है।
(5) वर स्वयं प्रस्ताव करके कन्या के पिता से विवाह का निवेदन करता और सन्तानोत्पादन के लिए विवाह स्वीकार किया जाता। ऐसा विवाह प्राजापत्य कोटि का था।
(6) आर्ष विवाह में कन्या का पिता वर से यज्ञादि कर्म के लिए दो गो मिथुन प्राप्त करके धर्म कार्य सम्पन्न कर लेता था और उसके बदले में कन्यादान करता था।
(7) दैव विवाह में पिता कन्या को अलंकृत करके आरब्ध यज्ञ में आचार्य को दक्षिणा रूप में कन्या को समर्पित करता था।
(8) ब्राह्म विवाह सबसे श्रेष्ठ प्रशंसनीय विधि मानी जाती है जिसमें कन्या का पिता योग्य वर को सब प्रकार सुसज्जित यथाशक्ति अलंकृत कन्या को गार्हस्थ्य जीवन की समस्त उपयोगी वस्तुओं के साथ समर्पित करता था।

आच्छाद्य चार्चयित्वा च श्रुतिशीलवते स्वयम्
आहूय दानं कन्याया ब्राह्मो धर्मः प्रकीर्तितः। मनु. (3)

सक्षेप में विवाह संस्था के उद्देश्य और उसके प्रकार का विवरण दिया गया है। विवाह के विविध-विधान के लिए देश-काल-प्रान्तभेद से पद्धतियां उपलब्ध हैं तदनुसार वैवाहिक संस्कार सम्पन्न किया जाना चाहिए।

(16) अन्त्येष्टि

हिन्दू जीवन के संस्कारों में अन्त्येष्टि ऐहिक जीवन का अन्तिम अध्याय है। आत्मा की अमरता एवं लोक परलोक का विश्वासी हिन्दू जीवन इस लोक की अपेक्षा पारलौकिक कल्याण की सतत कामना करता है। मरणोत्तर संस्कार से ही पारलौकिक विजय प्राप्त होती है -

जात संस्कारेणेमं लोकमभिजयति
मृतसंस्कारेणामुं लोकम् - वी.मि. 3-1

विधि-विधान, आतुरकालिक दान, वैतरणीदान, मृत्युकाल में भू शयनव्यवस्था मृत्युकालिक स्नान, मरणोत्तर स्नान, पिण्डदान, (मलिन षोडशी) के 6 पिण्ड दशगात्रयावत् तिलाञ्जलि, घटस्थापन दीपदान, दशाह के दिन मलिन षोडशी के शेष पिण्डदान एकादशाह के षोडश श्राद्ध, विष्णुपूजन शैय्यादान आदि। सपिण्डीकरण, शय्यादान एवं लोक व्यवस्था के अनुसार उत्तर कर्म आयोजित कराने चाहिए। इन सभी कर्मों के लिए प्रान्त देशकाल के अनुसार पद्धतियां उपलब्ध हैं तदनुसार उन कर्मों का आयोजन किया जाना चाहिए।

षोडश संस्कारों के अतिरिक्त निम्नांकित संस्कारों के विधि-विधान जानना आवश्यक है -

(1) गृहारंभ (शिलान्यास)
(2) गृह प्रवेश
(3) जन्मोत्सव-गण्डान्त शान्ति
(4) व्रतोद्यापन विविध शान्ति कर्म और काम्य अनुष्ठान

इनकी संक्षिप्त विधि कर्मठगुरु में भी दी गई है तदनुसार अनुष्ठीत करना चाहिए।

जन्मोत्सव संस्कार

यह संस्कार भी आजकल अत्यधिक प्रचलित हो गया है। इसे कराने की विधि इसी खण्ड में 'जन्मोत्सव संस्कार' को देखें।

उपनयन संस्कार

उपनयन के दिन प्रातः कुमार के पिता शुभ आसन पर पूरब की ओर बैठकर, आचमन, प्राणायाम कर दक्षिण हाथ में अक्षत, फूल लेकर 'आ नो भद्रादि' मङ्गल मंत्र को तथा 'सुमुखश्चैकदन्तश्च' आदि श्लोक का पाठ करें।

तत्पश्चात् हाथ में फल अक्षत जल और द्रव्य लेकर देशकाल आदि का नाम लेते हुए संकल्प करें। **ॐ विष्णु..................अमुक गोत्रः शर्माऽहं मम अस्य कुमारस्य (अनयोः कुमारयोः, वा एषां कुमाराणां) श्वः, अद्य वा करिष्यमाणोपनयन-विहितं स्वस्ति-पुण्याहवाचनं मातृकापूजनं, वसोर्द्धारा-पूजनम् आयुष्यमन्त्रजपं, साङ्कल्पिकेन विधिना नान्दीश्राद्धं चाऽहं करिष्ये। तत्रादौ निर्विघ्नतासिद्ध्यर्थं गणेशाऽम्बिकयोः पूजनमहं करिष्ये।**

ऐसा बोलकर पृथ्वी पर जल छोड़े।

(नोटः-गौरी-गणेश पूजन, कलश स्थापन एवं पूजन आदि कृत्य की प्रक्रिया "सामान्य पूजन विधि" शीर्षक के अनुसार यथाविधि सम्पन्न कर आगे दिये विधि को करें।)

यदि उपनयन का समय बीत गया हो, तो प्रायश्चित्त रूप गोदान करे।वह इस प्रकार है-दाहिने हाथ में जल लेकर, 'देशकालौ संकीर्त्य0' से लेकर 'दातुमहमुत्सृजे' तक संकल्प-वाक्य पढ़े- **देशकालौ सङ्कीर्त्य, गोत्रः शर्माऽहम् अस्य बटुकस्य (अनयोः बटुकयोः, एषां बटुकानां वा उपनयन कालातिक्रमदोष- परिहारार्थं प्राजापत्यत्रयं गोनिष्क्रयभूतं द्रव्यं रजतं चन्द्रदैवतं नानानामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो विभज्य दातुमहमुत्सृजे।** भूमि में जल छोड़ दे।

उसके बाद यज्ञोपवीत के दिन कुमार-पिता अथवा आचार्य पूर्वाभिमुख हो आचमन प्राणायाम कर हाथ में जल लेकर 'देशकालौ संकीर्त्य0, से 'दातुमहमुत्सृजे' तक संकल्प पढ़े। **'देशकालौ सङ्कीर्त्य, गोत्र शर्माऽहं मम अस्य बटुकस्य (अनयोः बटुकयोः, वा एषां बटुकानाम्) उपनयन-कर्मानधिकारिता-प्रयोजक-कायिकादि-निखिल-पापक्षयार्थ 'तत्राऽधिकारसिद्धिद्वाराश्रीपरमेश्वर-प्रीत्यर्थ कृच्छ्रत्रयात्मक-प्रायश्चित्तं गोनिष्क्रयभूतं द्रव्यं रजतं चन्द्र-दैवतं यथानामगोत्रेभ्यो ब्राहणेभ्यो विभज्य दातुमहमुत्सृजे।'**

इसी प्रकार बटु (कुमार) भी आचमन, प्राणायाम कर हाथ में जल लेकर 'देशकालौ संकीर्त्य0' से 'दातुमहमुत्सृजे' पर्यन्त संकल्प-वाक्य पढ़े। **'देशकालौ सङ्कीर्त्य, गोत्रः बटुकोऽहं मम कामचार-कामवाद-कामभक्षणादिदोषनिरसन-पूर्वकोपनयन-**

वेदारम्भ-समावर्तनेष्वधिकारसिद्धि-द्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं कृच्छ्रत्रयात्मकं प्रायश्चित्तं गोनिष्क्रयभूतं द्रव्यं रजतं चन्द्रदैवतं यथायथा-नामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो विभज्य दातुमहमुत्सृजे' ऐसा बोलकर भूमि पर जल छोड़ दे।

उसके बाद कुमार-पिता या आचार्य हाथ में जल लेकर 'देशकालौ संकीर्त्य0' से 'ब्राह्मणद्वाराऽहं कारयिष्ये' तक संकल्प-वाक्य पढ़े। **'देशकालौ सङ्कीर्त्य, गोत्र शर्माऽहम् अस्य बटुकस्य (अनयोः बटुकयोः, वा एषां बटुकानां) गाय युपदेशाऽधिकारसिद्धिद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं द्वादशोत्तरसहस्त्र-सङ्ख्याक-गायत्रीजपं ब्राह्मणद्वाराऽहं कारयिष्ये।'** पुनः 'अस्मिन् गायत्रेजपकर्मणि0' से 'त्वामहं वृणे' तक उच्चारण करें भूमि में जल छोड़ दे। **'अस्मिन् गायत्रीजपकर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैरमुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणं द्वादशोत्तरसहस्र-गायत्रीजपार्थं त्वामहं वृणे।'** ब्राह्मण भी, **'वृतोऽस्मि'** इस प्रकार कहे।

पुनः आचार्य, हाथ में जल लेकर 'अस्य बटुकस्य0' से 'ब्राह्मणत्रयं भोजयिष्ये' तक पढ़कर संकल्प करे। **'अस्य बटुकस्य (अनयोः बटुकयोः, वा एषां बटुकानाम्) उपनयनपूर्वाङ्गतया विहितं ब्राह्मणत्रयं भोजयिष्ये।** और उस पंक्ति में बटुक को भी कुछ मिष्ठान्न खिलावे। पुनः हाथ में जल लेकर 'अस्य बटुकस्य0' से 'वपनं कारयिष्ये' एवं 'अस्मिन्नुपनयनाख्ये कर्मणि0' से 'अग्निस्थापनं च करिष्ये' तक संकल्प-वाक्य पढ़ें। **'अस्य बटुकस्य (अनयोः बटुकयोः, वा एषां बटुकानाम्) उपनयन-पूर्वाङ्गभूतं वपनं कारयिष्ये।' एवम् 'अस्मिन्नुपनयनाख्ये कर्मणि पञ्चभूसंस्कारपूर्वकं समुद्भवनामाऽग्निस्थापनं च करिष्ये।'** भूमि में जल छोड़ दे।

पञ्चभू संस्कार

इसके बाद आचार्य मुट्ठी भर कुशा हाथ में लेकर वेदी को झाड़े और उस कुशा को ईशान कोण में फेंक दे। उस वेदी को गोबर और जल से लीपे, पुनः स्रुवा के मूल से वेदी में तीन रेखा करे, रेखा के क्रम से अनामिका अँगुलि एवं अँगुठे द्वारा रेखा की मिट्टी को उठावे, पुनः रेखा पर जल छिड़के। काँसे के पात्र (थाली) में अग्नि अपने मुख की ओर करके वेदी में स्थापन करे।

उसके बाद आचार्य, अथवा कुमार-पिता हाथ में जल लेकर 'अस्य बटुकस्य0' से 'उपनयनमहं करिष्ये' तक संकल्प-वाक्य उच्चारण करे। **'अस्य बटुकस्य (अनयोः बटुकयोः, वा एषां बटुकानां) ब्राह्मण्याभिव्यक्ति-द्विजत्वसिद्ध्यर्थं वेदाध्ययनाधिकारार्थं चोपनयनमहं करिष्ये'** भूमि में जल छोड़ दे।

उसके बाद ब्राह्मण एवं बटुक को भोजन कराकर क्षौर किये एवं मङ्गल स्नान किये हुए, तथा सिर पर रोरी द्वारा स्वस्तिक चिह्न से अंकित, अक्षत, फल हाथ में लिये

हुए बटुक को आचार्य के समीप ले आवे। और अग्नि के पीछे पूर्वाभिमुख बटुक को बैठाकर आचार्य 'ॐ मनो जूति:0' से 'प्रतिष्ठ' तक मन्त्र पढ़े।

मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ ँ समिमं दधातु। विश्वेदेवास ऽइह मादयन्तामों प्रतिष्ठ।।

तत्पश्चात् आचार्य कुमार से **'ब्रंह्मचर्यमागामि'** इस प्रकार कहे। पुनः आचार्य कुमार से **'ब्रह्मचार्यसानि'** इस प्रकार कहे।

उसके बाद आचार्य **ॐ येनेन्द्राय बृहस्पतिर्वासः पर्यदधादमृतम्। तेन त्वा परिदधाम्यायुषे दीर्घायुत्वाय बलाय वर्चसे।।** तक मन्त्र पढ़कर कुमार को वस्त्र पहनावे। पुनः बटुक को आचमन करावे। निम्न मन्त्र पढ़कर बटुक को खड़ाकर आचार्य उसकी कमर में मेखला बाँधे। **ॐ इयं दुरूक्तं परिबाधमाना वर्णं पवित्रं पुनती म आगात्। प्राणापानाभ्यां बलमादधाना स्वसा देवी सुभगा मेखलेयम्।।**

तत्पश्चात् आचार्य बटुक को बैठाकर आचमन करावे और बटुक हाथ में जल लेकर अष्टभाण्ड (आठ पुरवा या गिलास) में चावल, यज्ञोपवीत एवं द्रव्य रखकर संकल्प करे। **'देशकालौ सङ्कीर्त्य, गोत्रः बटुकोऽहं स्वकीयोपनयन-कर्मविषयक-सत्संस्कारप्राप्त्यर्थं तथा च द्विजत्वसिद्धि-वेदाध्ययनाधिकारार्थं यज्ञोपवीतधारणार्थं च श्रीसवितृसूर्य नारायणप्रीतये इमान्यष्टौ भाण्डानि स-यज्ञोपवीत-फलाक्षतदक्षिणसहितानि यथायथा-नामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो दातुमह-मुत्सृजे'**।

यज्ञोपवीत संस्कार

आचार्य निम्नलिखित तीन मंत्रों को पढ़कर यज्ञोपवीत का प्रक्षालन करें। **ॐ आपो हिष्ठामयो भुवस्ता न ऽउर्ज्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे।।1।। ॐ यो वः शिवतमोरसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः।।2।। ॐ तस्मा ऽअरङ्गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः।।3।।**

उसके बाद आचार्य पुनः **ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन ऽआवः। स बुध्न्या ऽउपमा ऽअस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः।।1।। ॐ इदं विणुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य ँ सुरे स्वाहा।।2।। ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव ऽउतो त ऽइषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः।।3।।** तीन मन्त्रों से हाथ के दोनों अँगूठे द्वारा यज्ञोपवीत को घुमावे।

तदनन्तर उस यज्ञोपवीत को कसोरे में रखकर यज्ञोपवीत के नवतन्तुओं में देवताओं का न्यास करे। वह इस प्राकर है-बाँयें हाथ में अक्षत लेकर, दाहिने हाथ से **ॐकारं**

प्रथमतन्तौ न्यसामि।।1।। ॐ अग्निं द्वितीयतन्तौ न्यसामि।।2।। ॐ नागांस्तृतीयतन्तौ न्यसामि।।3।। ॐ सोमं चतुर्थतन्तौ न्यसामि।।4।। ॐ इन्द्रं पञ्चमतन्तौ न्यसामि।।5।। ॐ प्रजापतिं षष्ठतन्तौ न्यसामि।।6।। ॐ वायुं सप्तमतन्तौ न्यसामि।।7।। ॐ सूर्यमष्टमतन्तौ न्यसामि।।8।। ॐ विश्वेदेवान् नवमतन्तौ न्यसामि।।9।। उच्चारण कर यज्ञोपवीत के नवतन्तुओं में अक्षत चढ़ावे।

तथा **ॐ उपयामगृहीतोऽसि सवित्रेऽसि चनोधाश्चनाधा ऽअसि चनो मयि धेहि। जिन्वि यां जिन्व यज्ञपतिं भगाय देवाय त्वा सवित्रे।।** मन्त्र पढ़कर यज्ञोपवीत को सूर्य की ओर दिखावे। पुनः यज्ञोपवीत को बाँयें हाथ की हथेली में रख, उसे दाँयें हाथ की हथेली से ढँककर दश बार गायत्री का जप करे। फिर हाथ में जल लेकर **'यज्ञोपवीतमि' त्यस्य परमेष्ठी ऋषिः, त्रिष्टुप्-छन्दः, लिङ्गोक्ता देवता, नित्य-नैमित्तिक-कर्मानुष्ठानफल-सिद्ध्यर्थे यज्ञोपवीत-धारणे विनियोगः'** पढ़कर भूमि पर जल छोड़ दे और **ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतर्यत्सहजं पुरस्तात्। आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।। यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वा यज्ञोपवीतेनोपनह्यामि।।** तक मन्त्र पढ़कर कुमार को यज्ञोपवीत धारण करावे एवं कुमार से दो बार आचमन भी करावे।

उसके बाद आचार्य **ॐ मित्रस्य चक्षुर्द्धरुणं बलीयस्तेजो यशस्वि स्थविर ँ समिद्धिम्। अनाहनस्यं वसनं जरिष्णु परीदं वाज्यजिनं दधेऽहम्।।** मन्त्र उच्चारण कर कुमार को चुपचाप अजिन (मृगचर्म) धारण करावे और उससे दो बार आचमन भी करावे। पुनः आचार्य **ॐ यो मे दण्डः परा-पतद्वैहायसोऽधिभूम्याम्। तमहं पुनरादद आयुषे ब्रह्मणे ब्रह्मवर्चसाय।।** मन्त्र पढ़कर बटुक के केशपर्यन्त पलाश दण्ड चुपचाप दे और कुमार भी उस दण्ड को ग्रहण करे।

तत्पश्चात् आचार्य अपनी अंजलि में जल भरकर बटुक की अंजलि में जल दे। और 'ॐ आपो हिष्ठा0' से 'आपो जनयथा च नः' पर्यन्त तीन मन्त्रों से बटुक उस जलको ऊपर की ओर उछाल दे।

ॐ आपो हिष्ठामयो भुवस्ता न ऽउर्ज्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे।।1।। ॐ यो वः शिवतमोरसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः।।2।। ॐ तस्मा ऽअरङ्गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः।।3।।

उसके बाद 'सूर्यमुदीक्षस्व' अर्थात् सूर्य को देखो, इस प्रकार आचार्य की आज्ञा के बाद कुमार **ॐ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शत ँ श्रृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्।।** मन्त्र उच्चारण कर सूर्य की ओर देखे।

पुनः आचार्य माणवक के दाहिने कन्धे पर से अपने दाहिने हाथ द्वारा **ॐ मम व्रते ते हृदयं दधामि। मम चित्तमनुचित्तं ते अस्तु। मम वाचमेकमना जुषस्व। बृहस्पतिष्ट्वा नियुनक्तु मह्यम्।।** मन्त्र पढ़कर उसके हृदय का स्पर्श करे।

तत्पश्चात् आचार्य बटुक के दाहिने हाथ को पकड़कर उससे पूछते हैं **को नामाऽसि ?** 'तुम्हारा क्या नाम है ?' कुमार भी **'अमुकशर्माऽहं भोः !'** इस प्रकार प्रत्युत्तर देता है। **कस्य ब्रह्मचर्यसि** 'तुम किसके ब्रह्मचारी हो ?' इस प्रकार आचार्य के कहने पर कुमार **'भवतः'** अर्थात् आपका ही, इस प्राकर प्रत्युत्तर देता है। पुनः आचार्य **ॐ इन्द्रस्य ब्रह्मचार्यस्यग्निराचार्यस्तवाहमाचार्यः 'श्रीअमुकशर्मन्'।** कुमार से मन्त्र कहते हैं।

पुनः आचार्य **ॐ प्रजापतये त्वा परिददामि, इति प्राच्याम्।।1।। ॐ देवाय त्वा सवित्रे परिददामि इति दक्षिणस्याम् ।।2।। ॐ अद्भ्यस्तत्त्वौषधीभ्यां परिददामि, इति प्रतीच्याम्।।3।। ॐ द्यावापृथिवीभ्यां त्वा परिददामि, इत्युदीच्याम्।।4।। ॐ विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यः परिददामि, इत्यधः।। 5।। ॐ सर्वेभ्यस्त्वा परिददामि, इत्यूर्ध्वम्।** मन्त्र पढ़कर कुमार से सभी दिशाओं में उपस्थान (प्रणाम) करावे। उसके बाद अग्नि की प्रदक्षिणाकर आचार्य की दाहिनी ओर माणवक बैठे।

ब्रह्मवरण-पुनः आचार्य पुष्प, चन्दन, ताम्बूल एवं वस्त्र आदि वरण-सामग्री हाथ में लेकर **'अद्य कर्तव्योपनयन-होमकर्मणि कृताऽकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्मकर्तुम् अमुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणमेभिः पुष्प-चन्दन-ताम्बूल-वासोभिः ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे।** उच्चारण कर ब्रह्मा का वरण करें। ब्रह्मा भी **'वृतोऽस्मि'** इस प्रकार कहें।

नोटः-अग्नि स्थापन के बाद शेष कुशकण्डिका एवं स्विष्टकृद् होम तक की विधि होम प्रकरण से करावें।

उसके बाद संश्रव प्राशन आचमन कर **ॐ सुमित्रिया नऽआपऽओषधय सन्तु** कहकर प्रणीता के जल से अपने ऊपर मार्जन करें।

दाहिने हाथ मे जल लेकर **'अद्य कृतस्योपनयनहोमकर्मणोऽङ्गतया विहितम् इदं पूर्णपात्रं प्रजापतिदैवतममुकगोत्रायाऽमुकशर्मणे ब्राह्मणाय ब्रह्मणे दक्षिणां तुभ्यमहं सम्प्रददे।'** संकल्प-वाक्य उच्चारण कर भूमि में जल छोड़ दे। ब्रह्मा भी, **'स्वस्ति'** तथा **ॐ द्यौस्त्वा ददातु पृथिवी त्वा प्रतिगृह्णातु।** इस मन्त्र भाग का उच्चारण करें।

अग्नि के पश्चिम भाग या ईशान कोण में **ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः।।** इस आधे मन्त्र को पढ़कर प्रणीतापात्र भूमि पर उलट दे।

उसके बाद उपयमन कुशाओं से **ॐ आपः शिवाः शिवतमाः शान्ताः शान्ततमास्तास्ते कृण्वन्तु भेषजम्।।** इस मन्त्र भाग को पढ़कर भूमि पर गिरे हुए प्रणीता का जल यजमान के मस्तक पर सिंचन करे (छिड़के) और उन उपयमन कुशाओं को अग्नि में छोड़ दे।

आचार्य कुमार का अनुशासन करते हैं। वह इस प्रकार है-आचार्य कहे **ब्रह्मचार्यसि।** ब्रह्मचारी कहे **भवामि**। आचार्य-**आपोऽशान**। ब्रह्मचारी-**अशानि**। आचार्य-**कर्म कुरू**। ब्रह्मचारी-**करवाणि**। आचार्य-**दिवा मा सुषुप्स्व**। ब्रह्मचारी-**न स्वपानि**। आचार्य-**वाचं यच्छ**। ब्रह्मचारी-**यच्छानि**। आचार्य-**अध्ययनं सम्पादय**। ब्रह्मचारी-**सम्पादयामि**। आचार्य-**समिधमाधेहि**। ब्रह्मचारी-**आदधामि**। आचार्य-**आपोऽशान**। ब्रह्मचारी-**अशानि**। इस प्रकार आचार्य कुमार का अनुशासन करे।

गायत्री उपदेश-अग्नि के उत्तर की ओर पश्चिमाभिमुख बैठे हुए आचार्यके चरण एवं उनको (आचार्य को) ब्रह्मचारी भली-भाँति देखे। आचार्य भी बटुक को देखते हुए मांगलिक शंख तथा अन्य बाजे आदि को बन्द कर शुभ समय में आचार्य गायत्री का उपदेश करे। सर्व-प्रथम काँसेकी थाली में चावल फैलाकर सोने की शलाका से ॐकार पूर्वक गायत्री मन्त्र लिखे और संकल्प के साथ गायत्री आदि का पूजन करे। वह इस प्रकार है-

ब्रह्मचारी दाहिने हाथ में जल लेकर **'अद्य पूर्वोच्चारित-ग्रहगुण-गणविशेषण-विशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ, गोत्रः शर्माऽहं मम ब्रह्मवर्चससिद्ध्यर्थं वेदाध्ययनाधिकारार्थं च गायत्र्युपदेशाङ्गविहितं गायत्री-सावित्री-सरस्वती'पूर्वकमाचार्यपूजनं करिष्ये।'** संकल्प-वाक्य पढ़कर भूमि पर जल छोड़ दे।

चावल फैले हुए काँसे की थाली में तीन सोपारी रखकर हाथ में चावल ले **ॐता ꣡ सवितुर्वरेण्यस्य चित्रमहं वृणे सुमतिं विश्वजन्याम्। यामस्य कण्वो ऽअदुहत्प्रपीना ꣡ सहस्रधारा पयसा महीं गाम्।।1।।** पर्यन्त मन्त्र तथा 'ॐ गायत्र्यै नमः, गायत्रीमावाहयामि' तक पढ़कर पहली सोपारी पर अक्षत छिड़के। **सवित्रा प्रसवित्रा सरस्वत्या वाचा त्वष्ट्रा रूपैः पूष्णा पशुभिरिन्द्रेणास्मे बृहस्पतिना ब्रह्मणा वरुणेनौजसाऽग्निना तेजसा सोमेन राज्ञा विष्णुना दशम्या देवताया प्रसूतः प्रसर्पामि।। 'ॐ सावित्र्यै नमः,** सावित्रीमावाहयामि' कहकर दूसरी सोपारी पर अक्षत छोड़े। **ॐ पावका नः सरस्वती व्वाजेभिर्वाजिनीवती। यज्ञं व्वष्टु धियावसुः।।** और **'ॐ सरस्वत्यै नमः, सरस्वतीमावाहयामि'** उच्चारण कर तीसरी सोपारी पर अक्षत छिड़के।

पुनः **ॐ बृहस्पते ऽअति यदर्यो ऽअर्हाद्द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऽऋतप्रजा तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्।। ॐ गुरवे नमः,**

गुरुमावाहयामि।। 4।। पढ़कर आचार्य के ऊपर अक्षत छोड़े। फिर हाथ में अक्षत लेकर **'ॐ मनो जूतिः0'** इस मन्त्र से गायत्री आदि पर अक्षत छिड़क कर प्रतिष्ठा करें। और गायत्री, सावित्री, सरस्वती तथा गुरु का पंचोपचार से पूजन करे।

इस गायत्री मन्त्र के तीन भाग करे। प्रथम में केवल **ॐकार** का उच्चारण करे। द्वितीय भाग में आधा मन्त्र एवं तृतीय भाग में समस्त गायत्री का उपदेश करे। गायत्री मन्त्र-**ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात् ॐ।।** इसी प्रकार तीन बार गायत्री मन्त्र का बटुक के दाहिने कान में उपदेश करे। इस गायत्री मन्त्र के पहले और अन्त में प्रणव **(ॐ)** पूर्वक 'स्वस्ति' का उच्चारण करे।

इसी प्रकार आचार्य क्षत्रिय कुमार को त्रिष्टुप् सवित्र गायत्री का, ओर वैश्य कुमार को जगती नाम की गायत्री का अथवा ब्राह्मण, क्षत्रिय ओर वैश्य तीनों को ब्रह्मगायत्री का उपदेश करें। इस प्रकार गायत्री उपदेश समाप्त।

उसके बाद ब्रह्मचारी आचार्य के दक्षिण एवं अग्नि के पश्चिम भाग में बैठकर घी में डुबोये हुए सूखे गोबर के कण्डे द्वारा पाँचों मन्त्रों से हवन करे।

ॐ अग्ने सुश्रवः सुश्रवसं मा कुरु ।।1।। ॐयथा त्वमग्ने सुश्रवः सुश्रवा ऽअसि ।।2।। ॐ एवं माᳫं सुश्रवः सौश्रवसं कुरु।।3।। ॐ यथा त्वमग्ने देवानां यज्ञस्य निधिपा ऽअसि।।4।। ॐ एवमहं मनुष्याणां वेदस्य निधिपो भूयासम्।। 5।।

उसके बाद जल द्वारा अग्नि के चारों ओर प्रदक्षिणा करे अर्थात् जल घुमावे। पुनः बटुक उठाकर घी लगे हुए तीन पलाश की समिधा (लकड़ी) लेकर **ॐ अग्नये समिधमाहार्यं बृहते जातवेदसे। यथा त्वमग्ने समिधा समिध्यस एवमहमायुषा मेधया वर्चसा प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेन जीवपुत्रो ममाचार्यो मेधाव्यहमसान्यनिराकरिष्णुर्यशस्वी तेजस्वी ब्रह्मवर्चस्यन्नादो भूयासᳫं स्वाहा।।** पढ़कर पहली समिधा अग्नि में छोड़ दे।

तथा उक्त मन्त्र से ही दूसरी एवं तीसरी समिधा का भी अग्नि में हवन करें।

पुनः घी में डुबाये हुए सूखे कण्डे से **ॐ अग्ने सुश्रवः सुश्रवसं मा कुरु ।।1।। ॐयथा त्वमग्ने सुश्रवः सुश्रवा ऽअसि ।।2।। ॐ एवं माᳫं सुश्रवः सौश्रवसं कुरु।।3।। ॐ यथा त्वमग्ने देवानां यज्ञस्य निधिपा ऽअसि।।4।। ॐ एवमहं मनुष्याणां वेदस्य निधिपो भूयासम्।। 5।।** पाँच मन्त्र पढ़कर अग्नि में हवन करे।

उसके बाद अग्नि के चारों ओर जल घुमाकर दोनों हाथों की हथेली अग्नि में तपाकर **ॐ तनूपा अग्नेऽसि तन्वं मे पाहि।। 1।। ॐ आयुर्दा अग्नेऽस्यायुर्मे देहि।।2।। ॐ वर्चोदा अग्नेऽसि वर्चो मे देहि।। 3।। ॐ अग्ने यन्मे तन्वा ऊनं तन्म ऽआपृण।।4।। ॐ मेधां मे देवः सविता आदधातु।।5।। ॐ मेधां मे देवी सरस्वती आदधात।। 6।। ॐ मेधामश्विनौ देवावाधत्तां पुष्पकरस्त्रजौ।।7।।** सात मन्त्र द्वारा अपने मुख का स्पर्श करे।

पुनः **'ॐ अङ्गानि च मऽआप्यायन्ताम्'** इस मन्त्र से दोनों हाथों की हथेली का मस्तक से लेकर पैर पर्यन्त सभी अंगों का स्पर्श करे। तदनन्तर दाहिने हाथ की पाँचों अँगुलियों के अग्रभाग से **ॐ वाक्च म ऽआप्यायताम्। इति मुखालम्भनम्। ॐ प्राणश्च म आप्यायताम्। इति नासिकयोरालम्भनम्। ॐ चक्षुश्च म ऽआप्यायताम्।**

इति चक्षुषी युगपत्। ॐ श्रोत्रं च म ऽआप्यायताम्। इति श्रोत्रयोः मन्त्रावृत्या। ॐ यशोबलं च म ऽआप्यायताम्। इति बाह्वोरुपस्पर्शनम्। पर्यन्त मन्त्र उच्चारण कर मुख, दोनों नासिका के अग्रभाग, दोनों नेत्र, दोनों कान और दोनों भुजाओं का स्पर्श करे।

त्र्यायुषकरण-स्रुवा के मूलभाग से वेदी का भस्म लेकर त्र्यायुष करे। वह इस प्रकार है-**'ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः' इति ललाटे। 'ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषम्' इति ग्रीवायाम्। 'ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषम्' इति दक्षिणबाहुमूले। 'ॐ तन्नो ऽअस्तु त्र्यायुषं मे इति हृदि।** मन्त्र पढ़कर मस्तक, ग्रीवा, दाहिने बाहु मूल और हृदय में भस्म लगावे।

तत्पश्चात् बटुक सीधे दोनों हाथ से पृथ्वी का स्पर्श करते हुए गोत्र, प्रवर, नाम पूर्वक वैश्वानरादि का अभिवादन करे। वह इस प्रकार है-**अमुकसगोत्रः अमुकप्रवरान्वितः अमुकशर्माऽहं भो वैश्वानर ! त्वामभिवादये। अमुकसगोत्रः अमुकप्रवरान्वितः अमुकशर्माऽहं भो वरुण ! त्वामभिवादये। अमुकसगोत्रः अमुकप्रवरान्वितः अमुकशर्माऽहं भो सूर्य ! त्वामभिवादये। अमुकसगोत्रः अमुकप्रवराऽन्वितः अमुकशर्माऽहं भो आचार्य !, भो अध्यापक !, भो गुरो! त्वामभिवादये।** वाक्य कहकर बटुक वैश्वानर (अग्नि), वरुण, सूर्य एवं आचार्य को अभिवादन (प्रणाम) करे। आचार्य भी, **अभिवादयस्व आयुष्मान् भव सौम्य श्रीअमुकशर्मन्!।** पर्यन्त वाक्य कहे।

भिक्षाचर्यचरण (भिक्षा माँगना)-बाँयें कन्धे पर पीले वस्त्र की झोली लटका कर सव से पहले माता के पास जाकर **'भवति भिक्षां देहि'** (अर्थात् आप मुझे भिक्षा दें) यह वाक्य कहकर भिक्षा ग्रहण करे। भिक्षा लेने के बाद ब्रह्मचारी बटुक **'ॐ स्वस्ति'**

इस प्रकार कहे। क्षत्रिय-कुमार भिक्षा ग्रहण के समय **'भिक्षां देहि भवति'** यह वाक्य कहे। माता के द्वारा दी हुई सभी भिक्षा आचार्य को प्रदान करे। उसी प्रकार अन्य कुटुम्बी जनों (चाचा, चाची, मामा, मामी, बुआ आदि को) से भिक्षा ग्रहण करे। आचार्य द्वारा 'भिक्षा ग्रहण करो' इस प्रकार आज्ञा प्राप्त होने पर अन्य कुटुम्बी जनों की भिक्षा बटुक ग्रहण करे। किन्हीं आचार्यों के मत में भिक्षा ग्रहण के पश्चात्प्रथम वेदी में पूर्णाहुति का विधान है।

नियमोपदेश-उसके बाद आचार्य ब्रह्मचारी बटुक को **अधःशायी स्यात्। अक्षारलवण-शी स्यात्। दण्डकृष्णाजिनं च धारणम्। अरण्यात् स्वयं प्रशीर्णाः समिध आहरणम्। सायंप्रातः सन्ध्योपासनपूर्वकं परिसमूहनादि-त्र्यायुषकरणान्तं यथोक्तं कर्म कर्तव्यम्। गुरुशुश्रूषा कर्तव्या। सायं प्रातर्भोजनार्थे जनसन्निधाने वारद्वयं भिक्षाचरणं कर्तव्यम्। मधुमांसाऽशनं न कर्तव्यम्। मज्जनं न कर्तव्यम्।**

कुशासनोपरि मसूरिकादि उपधानं कृत्वा नोपविशेत्। स्त्रीणां मध्ये अवस्थानं न कर्तव्यम्। अनृतं न वक्तव्यम्। अदत्तं न गृह्णीयात्। स्मृत्यन्तरोक्ता यम-नियमा अनुष्ठेयाः। परिधानवस्त्रं क्षालनं विना न दधीत। भग्नं सुसंल्लग्नितं विकृतं वस्त्रं न दधीत। उदयास्तसमये भास्करावलोकनं न कुर्यात्। शुष्कवदनं परिवादादि वर्जयेत्। पर्युषितमन्नं च न भक्षयेत्। कांस्या-ऽऽयस-वङ्ग-मृत्पात्रे भोजनं तेन पानं च न कुर्यात्। ताम्बूलभक्षणं न कुर्यात्। अभ्यङ्गमक्ष्णोरञ्ज-नमुपानच्छत्रदर्शं च वर्जयेत्। ब्रह्मचारी के नियम पालन करने का उपदेश दे। भूमि पर शयन करना। खारी एवं चटपटी (चाट, पकौड़ी) आदि वस्तु सेवन न करे। दण्ड एवं मृगचर्म धारण करे। जंगल से स्वयं गिरी हुई समिधा ग्रहण करे। सायंकाल एवं प्रातः समय परिसमूहन लेकर त्र्यायुष पर्यन्त वेदी के समस्त कार्य सम्पादित करे। गुरु की सेवा करे। सायंकाल एवं प्रातः समय अपने भोजन निमित्त गृहस्थ के घर से दो बार भिक्षा माँग ले आवे। मद्य-मांस आदि सेवन न करें जल को उछाल कर स्नान न करे।

कुश के आसन पर रूई के गद्दे आदि बिछाकर न बैठे। स्त्रियों के मध्य न बैठे। मिथ्या भाषण न करे। बिना दिये हुए दूसरे की वस्तु ग्रहण न करे। धर्मशास्त्र के अनुसार यम-नियम-निदिध्यासन आदि नियमों का पालन करे। पहने हुए वस्त्र को दूसरे दिन बिना धोये धारण न करे। फटे, दूसरे वस्त्र से जोड़े (पिंउदा लगे) हुए, और निकृष्ट वस्त्र (बिना कच्छके लुंगी आदि) धारण न करे। उदय और अस्त के समय सूर्य को न देखे। बासी एवं सड़े हुए अन्न भोजन न करे। काँसे, लोहे, राँगे एवं मिट्टी के बरतन में भोजन न

करे तथा भोजन किये हुए पात्र में जल न पीये। पान न खाये। उबटन, आँख में अंजन, जूता, छाता और शीशा का परित्याग करे। इतने नियम ब्रह्मचारी को करना चाहिए।

उस दिन ब्रह्मचारी मौन होकर दिन बितावे। उसके बाद सायंकाल की सन्ध्या कर वेदी की अग्नि में प्रातः कालीन कृत्य के समान पर्युक्षण एवं परिसमूहन कार्य कर मौन का परित्याग करे। (परिसमूहन के वाद अग्नि में सूखी लकड़ी डाल दे) तथा प्रतिदिन सन्ध्या वन्दनादि कार्य (जब तक ब्रह्मचर्य व्रत धारण करे तब तक) नियम पूर्वक करें। अथवा कम से कम तीन दिन तक ब्रह्मचारी ब्रह्मचर्य के नियमों का पालन करें। **कृतस्योपनयनकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं दशसंख्याकान् ब्राह्मणान् भोजयिष्ये।**

पुनः हाथ में जल लेकर **कृतस्योपनयन-कर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थम् आचार्याय दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे। भूयसी-दक्षिणां च दातुमहमुत्सृजे।** संकल्प वाक्य पढ़कर भूमि में जल छोड़ दें।

यह श्लोक पढ़कर क्षमा प्रार्थना करें।

प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्।
स्मरणादेव तद्-विष्णोः सम्पूर्ण स्यादिति श्रुतिः।।

विवाह संस्कार

ज्योतिषशास्त्रोक्त वर-वरण के शुभ मुहूर्त में, कन्या का भाई या पिता, अपने वन्धु-बान्धवों तथा ब्राह्मणों के साथ वर के घर पर जाकर, वहां पर मण्डप या आँगन में स्वयं पश्चिम मुख बैठकर वर को स्वच्छ आसन पर पूर्वाभिमुख बैठावे। पश्चात् कन्या का भाई (या पिता) और वर दोनों **ॐ केशवाय: नम:, ॐ नारायण नम:, ॐ माधवाय नम:'** यह पढ़कर आचमन एवं दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली में कुश-पवित्री धारण कर प्राणायाम करें तथा हाथ में जल लेकर **"ॐ अपवित्र: पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा। य: स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तर: शुचि:।।"** इस मन्त्र से अपने शरीर तथा पूजन-सामग्री पर जल छिड़कें।

बाद में अक्षत एवं पुष्प को लेकर **'ॐ आ नो भद्रा:.'** इत्यादि स्वस्तिवाचक वैदिक मन्त्रों एवं माङ्गलिक श्लोकों को पढ़ें। स्वस्तिवाचन एवं माङ्गलिक श्लोक इस ग्रन्थ के **'सामान्य पूजन विधि'** में दी गई है। तदनुसार पाठ करे।

तदनन्तर कन्या का भाई या पिता दाहिने हाथ में जल, अक्षत, पुष्प, सोपारी और द्रव्य लेकर **'मास-पक्षाद्युच्चार्य, अमुकगोत्र: अमुकशर्माऽहम् अमुकगोत्राया: अमुकनाम्न्या: भगिन्या: (कन्याया वा) करिष्यमाण-विवाह कर्मणि वरपूजनपूर्वकं वरवरणं च करिष्ये। तदङ्गत्वेन कलशस्थापनं पूजनं च करिष्ये।** सङ्कल्प वाक्य पढ़कर वरवरण का संकल्प करे। एवं पुन: जल लेकर **'आदौ निर्विघ्नता-सिद्ध्यर्थ गणेशाऽम्बिकयो: पूजनं करिष्ये** से गणेशाम्बिका के पूजन का संकल्प करे। तत्पश्चात् वर भी दाहिने हाथ में जल, अक्षत, पुष्प एवं द्रव्य को लेकर **'देश-काल-सङ्कीर्तनपूर्वकं अमुकगोत्र: अमुकशर्माऽहं भविष्योद्वाह कर्मणि वरवृत्तिग्रहणं करिष्ये" तदङ्गत्वेन कलशस्थापनं पूजनं च करिष्ये। तत्रादौ निर्विघ्नतसिद्ध्यर्थं। 'गणेशम्बिकयो: पूजनं च करिष्ये'** तक पढ़कर अपने-अपने नाम-गोत्र का उच्चारण कर, क्रमश: वरवृत्तिग्रहण, कलशस्थापन-पूजन और गौरी गणेश पूजन का संकल्प करे। पुन: कन्या का भाई (या पिता) और वर षोडशोपचार से गौरी-गणेशादि देवों का स-विधि पूजन करें। गौरी-गणेश पूजन एवं कलश स्थापन इस पुस्तक के **सामान्य पूजन विधि अध्याय** के अनुसार करायें।

तदनन्तर कन्या का भाई (या पिता) **'ॐ विरोजो दोहोऽसि विराजो दोहमशीय मयि पाद्यायै विराजो दोह:।।** इस मन्त्र से वर के दोनों पैरों को धोवे तथा **युञ्जन्ति ब्रध्नमरुषं चरन्तं परि तस्थुष:। रोचन्ते रोचना दिवि।। युञ्जन्त्यस्य काम्या हरी विपक्षसा रथे। शोणा धृष्णू नृवाहसा।।** मन्त्र से वर के ललाट पर रोली या चन्दन लगावे।

'ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यवप्रिया अधूषत। अस्तोात स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती योजान्विन्द्र ते हरी।।' मन्त्र से चन्दन के ऊपर अक्षत लगा दे और **'ॐ या आहरज्जमदग्निः श्रद्धायै कामायेन्द्रियाय। सा अहं प्रतिगृह्णामि यशमा च भगेन च।।'** इस मन्त्र से हाथ में माला लेकर **'ॐ यद्यशोऽप्सरसामिन्द्रश्चकार विपुलं पृथु। तेन सङ्ग्रथिताः सुमनस आबध्नामि यशो मयि।।"** इस मन्त्र से वर के गले में माला पहनावे।

वर-पूजन के बाद कन्या का भाई या पिता वर-वरण का द्रव्य अपने हाथ में लेकर **अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहम् अमुक गोत्रायाः अमुकनान्या भगिन्याः (कन्याया वा) करिष्यमाणविवाहकर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैर्गन्धाऽक्षत- पुष्पताम्बूल- नारिकेलहरिद्रा-दूर्वा- माङ्गलिकसूत्र-द्रव्य- भाजन- वासोभिरमुकगोत्रममुक- शर्माणं वरं कन्याप्रतिगृहीतृत्वेन त्वामहं वृणे।'** 'संकल्प-वाक्य पढ़कर वर के हाथ में दे दे। वर भी **'वृतोऽस्मि'** या **'द्यौस्त्वा ददातु पृथ्वी त्वा प्रतिगृह्णातु'** कहकर वरण सामग्री को ग्रहण करे। पुनः **'ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाऽऽप्नोति दक्षिणाम्। दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते।।'** इस मन्त्र को पढ़े। तदनन्तर कन्या का भाई (या पिता) और वर हाथ में जल लेकर **कृतस्य वरवृत्तिकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तन्मध्ये न्यूनातिरिक्तदोष-परिहारार्थममुकाऽमुक-गोत्रेभ्यो ब्राह्मभ्यो विभज्य यथोत्साहं भूयसीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे'**। पढ़कर भूयसी दक्षिणा का संकल्प करे। पुनः वर हाथ में जल लेकर **कृतस्य वरवृत्तिग्रहणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं यथासङ्ख्याकान् ब्राह्मणान् भोजयिष्ये।** तक पढ़कर ब्राह्मण-भोजन का संकल्प करे।

इसके बाद कन्या का भाई (या पिता) और वर हाथ में अक्षत लेकर

यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मामकीम्।
इष्टकाम-समृद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च।।

तक पढ़कर गणपत्यादि स्थापित देवताओं का विसर्जन एवं

प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्।
स्मरणादेव तद्-विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः।।
यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपो-यज्ञ-क्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतां यातु सद्यो वन्दे तमच्युतम्।।

पढ़कर गणपत्यादि स्थापित देवताओं एवं बड़ों को नमस्कार करे। इस प्रकार वर-वरण विधान समाप्त।

मण्डप-स्थापन-पूजन

अग्नि कोण से आरम्भ कर क्रम से चारों कोण में निम्नलिखित विधि से कन्या के हाथ से चार-चार हाथ दूरी पर चार हरित (हरे) बाँस के खम्भों को गाड़कर सबके बीच में एक सुडौल स्तम्भ एवं हरिस आदि देशचार तथा कुलाचार के अनुसार गाड़े। **ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्।।** इस मन्त्र से खन्ती या खुरपी को लेकर **ॐ इदम् ह ७ रक्षसां ग्रीवा अपि कृन्तामि।।** इस मन्त्र से गड्ढा के ऊपर रेखा करे। **'ॐ मा वो रिषत्खनिता यस्मै चाऽहं खनामि वः। द्विपाच्चतुष्पादस्माकठं. सर्वमस्त्वनातुरम्।।** इस मन्त्र से गड्ढा खोदे। **'ॐ सिञ्चन्ति परिषिञ्चन्त्युत्सिञ्चन्ति पुनन्ति च। सुरायै बभ्रै मदे किन्त्वो वदति किन्त्वः।।** इस मन्त्र से गड्ढे में जल छिड़के।

इसी प्रकार **'ॐ यवोऽसि यवयास्मद्द्वेषो यवयारातीः।।** इस मन्त्र से गड्ढे में यव (जौ) एवं **'ॐ काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि। एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च।** इस मन्त्र से चुपचाप दूब, **'ॐ दधिक्राब्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभि नो मुखा करत्प्रण आयूंषि तारिषत्** इस मन्त्र से दधि एवं **'ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः। बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्व७ हसः।।** इस मन्त्र से गड्ढे में सोपारी छोड़े। तथा **'ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्। स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम'** इस मन्त्र से गड्ढे में द्रव्य छोड़कर **'ॐ उच्छ्रयस्व वनस्पत ऊर्ध्वो मा पाह्यच७ हस आस्य यज्ञस्योदृचः।'** इस मन्त्र से गाड़ने के लिए बाँस को दोनों हाथों से उठावे और **'ॐ ऊर्ध्व ऊ षु ण ऊतये तिष्ठा देवो न सविता। ऊर्ध्वो वाजस्य सनिता यदञ्जिभिर्वाघद्भिर्वि ह्वयामहे।'** इस मन्त्र से गाड़ दे। और **'ॐ स्थिरो भव वीड्वङ्ग आशुर्भव वाज्यर्वन् पृथुर्भव सुषदस्त्वमग्नेः पुरीषवाहणः।'** इस मन्त्र को पढ़कर स्थिर कर दे।

इसके बाद उन स्तम्भों में अग्निकोण से आरम्भकर क्रमशः **'ॐ नन्दिन्यै नमः' नन्दिनीमावाहयामि। 'ॐ नलिन्यै नमः' नलिनीमावाहयामि। ॐ मैत्रायै नमः' मैत्रामावाहयामि। 'ॐ उमायै नमः' उमामावाहयामि। 'ॐ पशुवर्द्धिन्यै नमः' पशुवर्द्धिनीमावाहयामि** तक पढ़कर अक्षत छोड़े। **'ॐ मनो जूति0'** इस से नन्दिन्यादि पाँच मात्रिकाओं की प्रतिष्ठा एवं आवाहन कर एक तन्त्र से षोडशोपचार अथवा पञ्चोपचार पूजन करे।

पूजन करने के बाद हाथ में जल लेकर **'अनया पूजया नन्दिन्यादि मण्डपमातरः प्रीयन्ताम्'** इस वाक्य को पढ़कर भूमि पर जल छिड़क दे। पुनः हाथ में जल लेकर

'कृतैतत् मण्डपपूजनकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं दश-सङ्ख्याकान् ब्राह्मणान् भोजयिष्ये' तक पढ़कर दश ब्राह्मण भोजन का संकल्प करे। पुनः **प्रमादात् कुर्वतां0 यस्य स्मृत्या0** पढ़ते हुए हाथ जोड़कर मण्डप-मातृकाओं की प्रार्थना करे।

इस प्रकार मण्डप-स्थापन तथा पूजन-विधि समाप्त।

हरिद्रालेपन-इसके बाद वर अपने घर में आसन पर पूर्वाभिमुख बैठकर आचमन और प्राणायाम करके **'ॐ अपवित्रः पवित्रो वा0** इससे अपने ऊपर एवं पूजा-सामग्री के ऊपर जल छिड़के और हाथ में अक्षत, पुष्प लेकर **'आ नो भद्रा0'** इत्यादि एवं **'सुमुखचैकदन्तश्च'** मङ्गल श्लोकों को पढ़े। पुनः हाथ में अक्षत लेकर- **'देशकाल-सङ्कीर्तन पुरस्सरममुकगोत्रोऽमुकशर्माऽहं मम विवाहङ्गभूतं हरिद्रालेपनं करिष्ये'**। पढ़कर हरिद्रा लेपन का संकल्प करे।

इसी प्रकार कन्या भी, अपने घर पर मण्डप में बैठकर आचमन, प्राणायाम एवं शरीर प्रोक्षण कर, हाथ में जल, अक्षत लेकर **'देशकालौ सङ्कीर्त्य अमुक-गोत्र-अमुकनाम्नी कन्याऽहं स्वकीय-विवाहङ्गभूतं हरिद्रालेपनं करिष्ये।'** पढ़कर संकल्प करे। तथा पुनः दोनों हाथ में जल, अक्षत लेकर **'तदङ्गत्वेन कलशस्थानं पूजनं च करिष्ये। तत्रादौ 'निर्विघ्नतासिद्ध्यर्थं गणेशऽम्बिकयोः पूजनमहं करिष्ये।'** इस वाक्य को पढ़कर गणेशादि देवों का पूर्वोक्त प्रकार से पूजन करके नीचे लिखे अनुसार हरिद्रालेपन करे।

'ॐ काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि। एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्त्रेण शतेन च।।' मन्त्र से पात्र आदि में रखे (सरसो) तेल मिश्रित हरिद्रा को दूर्वा से उठाकर गणेशादि देवताओं से स्पर्श कराकर लेपन करे। **'ॐ युञ्जन्ति ब्रध्नमरुषं चरन्तं परि तस्थुषः। रोचन्ते रोचना दिवि।। युञ्जन्त्यस्य काम्या हरी विपक्षसा रथे। शोणा धृष्णूनृवाहसा।।'** इस मन्त्र से ललाट में रोली लगावे। **'ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रिया अधूषत। अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती योजान्विन्द्र ते हरी।।'** इस मन्त्र द्वारा अक्षत लगा दे, और **'ॐ यदाबध्नन् दाक्षायणाहिरण्य७ शतानीकाय सुमनस्यमानाः। तन्म आबध्नामि शतशारदायायुष्मान् जरदष्टिर्यथासम्।।'** इससे अपने अपने देशाचार के अनुसार कङ्कण अथवा मौली वर के दक्षिण हाथ में और कन्या के वाम हाथ में बाँधे।

इसके पश्चात् हाथ में जल लेकर **कृतैतद्-हरिद्रालेपनकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थमाचार्याय मनसेप्सितां दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे'** तक संकल्प-वाक्य पढ़कर आचार्य की दक्षिणा का संकल्प करे। पुनः हाथ में जल लेकर **'हरिद्रालेपने कर्मणि न्यूनातिरिक्त-दोष-परिहारार्थं नाना नामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो विभज्य,**

भूयसी दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे।' इस संकल्प-वाक्य को पढ़कर भूयसी दक्षिण का तथा पुनः हाथ में जल लेकर **'कृतैतद्-हरिद्रालेपनकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं दशसङ्ख्याकान् ब्राह्मणान् भोजयिष्ये'** से दस ब्राह्मण भोजन का संकल्प करें तथा **प्रमादात् कुर्वतां0। यस्य स्मृत्या0** पढ़कर प्रणाम करे।

मातृका-पूजन (पञ्चाङ्ग पूजन)-वर और कन्या के पिता अपने-अपने घर में पूर्व मुख बैठकर आचमन एवं प्राणायाम कर **'ॐ अपवित्रः पवित्रो वा0'** इस मन्त्र से अपने शरीर और पूजन-सामग्री की शुद्धि करके हाथ में गन्ध, अक्षत एवं पुष्प लेकर पहले **'आ नो भद्रा0'** इत्यादि स्वस्तिवाचन मन्त्रों तथा **'समुखश्चैकदन्तश्च'** इत्यादि मङ्ल-श्लोकों को पढ़े। पश्चात् जल, अक्षत और द्रव्य लेकर **'अमुकगोत्रः अमुकशर्मासपत्नीकोऽहं स्वकीयपुत्रस्य विवाहाङ्गभूतं (अथवा स्वकीय-कन्यायाः विवाहाङ्गभूतं) स्वस्तिपुण्याहवाचनं, मातृकापूजनं, वसोर्द्धारापूजनम्, आयुष्यमन्त्रजपं, साङ्कल्पिकविधिना नान्दीश्राद्धम्, आचार्यादिवरणं च करिष्ये।'** पढ़कर मातृका-पूजन आदि का संकल्प करे।

पुनः हाथ में जल लेकर **'निर्विघ्नता-सिद्ध्यर्थं गणेशम्बिकयोः पूजनमहं करिष्ये'** यह पढ़कर गणेश-पूजन का संकल्प करे। तदनन्तर ग्रहपूजन से लेकर पुण्याहवाचन पर्यन्त कर्म करे। उपर्युक्त समस्त पूजन इस ग्रन्थ के **सामान्य पूजन विधि** शीर्षक में दिया है।

मातृभाण्डस्थापन एवं पूजन-एक चार छिद्र वाले नये चूल्हे पर चार भाण्डों को स्थापित कर, उन चारों को तण्डुल (चावल) और गुड़ से भर दे। इसी को मातृभाण्ड कहते हैं। यह देशाचार के अनुसार होता है।

अपने पितरों का आवहान-इसके बाद किसी पात्र में पान का पत्ता रखकर अक्षत-पुंज (ढेरी) के ऊपर सोपारी रखकर, अपने पितरों का आवाहन कर किसी दूसरे पात्र से ढंक कर, उड़द की पिट्ठी ले उसके छिद्रों को मूँद कर रख दे। उसी प्रकार सम्पुटित दूसरे पात्र में भी पूर्वोक्त रीति से वायु आदि देवताओं का आवाहन करके पात्र से ढँक कर, उसके छिद्रों को उड़द की पिट्ठी से ढँक कर रख दे। एवं सिन्दूर, लेपन द्वारा लेप कर अच्छी तरह उसे सुशोभित कर उस पात्र को हाथ में लेकर कोहबर में जाये।

द्वारमातृकाओं का पूजन- कोहबर के दरवाजे के दक्षिण भाग में जयन्ती आदि तीन देवियों को कुंकुम आदि से बनावे और द्वार के वाम भाग में आनन्द-वर्धिनी आदि दो देवियों को बनावे।

इसके बाद द्वार के दक्षिण तरफ **1. ॐ जयन्त्यै नमः, जयन्तीमावाहयामि।' 2. 'ॐ मङ्गलायै नमः, मङ्गलामावहयामि।' 3. 'ॐ पिङ्गलायै नमः,**

पिङ्गलामावाहयामि।' तक पढ़कर इन देवियों का पञ्चोपचार से पूजन करे। पुनः इसी प्रकार द्वार के वाम भाग में भी **ॐ आनन्दवर्द्धिन्यै नमः, आनन्दवर्द्धिनीमावाहयामि'। 'ॐ महाकाल्यै नमः, महाकालीमावाहयामि** पढ़कर आवाहन पूर्वक पूजन करे।

द्वारपूजा-कन्या के द्वार पर बारात पहुंचने पर सवारी से उतर कर वर पूर्वाभिमुख और कन्या का पिता पश्चिमाभिमुख आसन पर बैठ जाय। आचमन एवं प्राणायाम कर दोनों **'ॐ अपवित्रः पवित्रो वा0'** इस मन्त्र से अपने ऊपर तथा पूजन-सामग्री के ऊपर जल छिड़कें। तथा दोनों ही हाथ में अक्षत और पुष्प लेकर **'ॐ आ नो भद्रा0'** इत्यादि स्वस्ति वाचन मन्त्रों तथा माङ्गलिक मन्त्रों को पढ़ें।

इसके पश्चात् कन्या का पिता दाहिने हाथ में जल अक्षत एवं द्रव्य लेकर **'अमुकगोत्रः अमुकनामाऽहम् अमुकगोत्रायाः अमुकनाम्न्याः कन्याया विवाहाङ्गभूतं द्वारमागतस्य सुपूजितस्य वरस्य अर्चनं करिष्ये।'** हाथ में पुनः जल लेकर **'गणेशम्बिका-पूजनपूर्वकं कलशस्थापनं तत्पूजनं च करिष्ये।'** तक कहकर भूमि पर जल को छोड़ दे।

तदनन्तर पूजन-सामग्री द्वारा पूर्वोक्त प्रकार से गणपत्यादि पूजन पूर्वक कलश-स्थापन एवं पूजन करे।

इसके पश्चात् निम्नलिखित प्रकार से वर का पूजन करे। सर्व-प्रथम **'ॐ विराजो दोहोऽसि विराजो दोहमशीय मयि पाद्यायै विराजो दोहः।।'** इस मन्त्र को पढ़कर वर का दाहिना पैर धोकर **'ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्।।'** इस मन्त्र से वर के ललाट में रोरी एवं **ॐ अक्षन्नमी मदन्त ह्यव प्रिया अधूषत। अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती योजान्विन्द्र ते हरी।।'** इस मन्त्र से अक्षत और **'ॐ या आहरज्जमदग्निः श्रद्धायै कामायेन्द्रियाय। सा अहं प्रतिगृह्णामि यशसा च भगेन च।।'** इस मन्त्र से वर के गले में माला पहनावे।

पुनः हाथ में जल लेकर **'कृतैतत् वरपूजनकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं मनसोष्टिां दक्षिणाममुकगोत्राय अमुकशर्मणे वराय तुभ्यमहं सम्प्रददे।** पढ़कर वर के दाहिने हाथ में जल एवं द्रव्य-दक्षिणा प्रदान करे।

इसके बाद पुनः हाथ में जल लेकर, **'कृतैतत् वरपूजनकर्मणः साङ्तासिद्ध्यर्थं तन्मध्ये न्यूनातिरिक्तदोष-परिहारार्थं नानानामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो विभज्य भूयसी दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे।'** पढ़कर भूयसी दक्षिणा का संकल्प कर उपस्थित सभी ब्राह्मणों को भूयसी दक्षिणा प्रदान करे।

अनन्तर हाथ में अक्षत लेकर **यान्तु देवगणाः0** श्लोक पढ़कर गणपत्यादि सभी देवों पर अक्षत छींटकर विसर्जन करे। तदनन्तर **प्रमादात् कुर्वतां0। यस्य स्मृत्या0** श्लोक पढ़कर सभी देवताओं को प्रणाम करे। इस प्रकार द्वारपूजन समाप्त।

विवाह-विधान

वर पक्ष की ओर से वस्त्र, आभूषण आदि समस्त देय वस्तु को लाकर **'ॐ मनोजूति0** मन्त्र पढ़कर उन सभी वस्तुओं पर अक्षत छिड़के और उनको गणेशादि देवों का स्पर्श कराकर नाउन द्वारा कोहबर में भिजवा दे।

तत्पश्चात् कन्या को मण्डप में लाकर एवं उसके हाथ में जल देकर **देशकालौ सङ्कीर्त्य अमुकगोत्रयाः अमुकनाम्न्याः कन्यायाः स्वकीय-विवाहङ्गभूतं गणेश-ॐ कार-लक्ष्मी-कुबेराणां यथोपचारेण पूजनमहं करिष्ये।'** इस प्रकार संकल्प कर **ॐ गणेशाय नमः, गणेशमावाहयामि। ॐ काराय नमः, ॐ कारमावाहयामि। ॐ लक्ष्म्यै नमः, लक्ष्मीमावाहयामि। ॐ कुबेराय नमः, कुबेरमावाहयामि।'** तक पढ़कर गणेश आदि से लेकर कुबेर तक सभी देवताओं का पूजन कन्या द्वारा करावे।

शालाविधान अर्थात् **वर के जूते का परित्याग**

इसके पश्चात् वर का बड़ा भाई कन्या के हाथ में अंजलि से पांच बार अक्षत एवं फल देकर तागपाट पहना दे और हाथ में अक्षत लेकर **'ॐ दीर्घायुस्त ओषधे खनिता यस्मै च त्वा खनाम्यहम्। अथो त्वं दीर्घायुर्भूत्वा शतवल्शाभिरोहतात्।।'** पर्यन्त मन्त्र पढ़कर कन्या के मस्तक पर आशीर्वाद रूप में छिड़के। उसके बाद कन्या कोहबर में जाये।

कन्या के कोहबर में चले जाने के बाद वर अपने हाथ में चौमुखा दीपक लेकर मण्डप के पास आवे। उसके बाद कन्या का पिता उसके हाथ से दीपक को लेकर मण्डप में रख दे।

अनन्तर कन्या का पिता अक्षत लेकर **'अथ वरमाह उपनहौ उपमुञ्चतु अग्नौ हविर्देयो घृतकुम्भप्रवेशः। तत्र स्थितो वरहोम्यः दूरेधताद् विसम्भ्रमः तस्माद्-वरमाह उपानहौ उपमुञ्चते। ॐ अथ वाराह्य उपानहौ उपमुञ्चते। अग्नौह वै देवा घृतकुम्भं प्रवेशयाञ्चक्रुस्ततो वराहः सम्बभूव तस्माद्वराहो गावः सञ्जानते ह्यमेद्यैतदशमभिसञ्जाते स्वमेवै तत्पशूनामेहो तत्प्रतिष्ठन्ति तस्माद्वाराह्य उपानहौ उपमुञ्चते।।** तक मंत्र पढ़कर वर के उपानह पर अक्षत छिड़क कर जूतों को निकलवा दे।

तत्पश्चात् पीढ़े पर पांच जगह अक्षत की ढेरी रखकर दाता और वर दोनों ही पीढ़े को पकड़कर मण्डप-स्थित गणेशादि देवताओं एवं कलश का स्पर्श करावे।

अनन्तर **'ॐ षडर्घ्या भवन्त्याचार्य ऋत्विग्-वैवाह्यौ राजा प्रियः स्नातक इति प्रतिसंवत्सरा नर्हयेयुर्यक्ष्यमाणास्तृत्विज आसनमाहार्याह।'** पढ़कर आसन के पीछे खड़े वर के प्रति कन्या का पिता **'ॐ साधु भवानास्ताम् अर्चयिष्यामो भवन्तम्।** इस प्रकार कहे। तथा वर **'अर्चय'** ऐसा कहे।

तदनन्तर कन्या का पिता वर का दाहिना हाथ पकड़कर उसको पीढ़े पर बैठावे और स्वयं भी अपने आसन पर बैठ जाये। पश्चात् कन्या का पिता आचमन और प्राणायाम करके हाथ में अक्षत, जल लेकर संकल्प करें **"देशकालौ सङ्कीर्त्य, अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽम् अमुकगोत्रायाः अमुकनाम्न्याः कन्याया अद्य विवाहं करिष्ये। तत्र गृहागताय स्नातकाय वराय कन्यादानाङ्गभूतं मधुपर्क च करिष्ये।"** तत्पश्चात् प्रथम विष्टर लेकर **'ॐ विष्टरो विष्टरो विष्टरः'** ऐसा पुरोहित के कहने पर कन्या का पिता **'विष्टरः प्रतिगृह्यताम्'** इस प्रकार वर से कहे। वर भी **'ॐ विष्टरं प्रतिगृह्णामि'** ऐसा कहे। और दाता के हाथ से कुशरूप विष्टर को लेकर **'ॐ वर्ष्मोऽस्मि समानानामुद्यतामिव सूर्यः। इमं तमभितिष्ठामि यो मा कश्चाभिदासति।।'** मन्त्र पढ़कर उसे पीढ़े पर उत्तराग्र रखकर वर बैठ जाये।

अनन्तर दाता अञ्जलि में पाद्यपात्र लेकर **'पाद्यं पाद्यं पाद्यं प्रतिगृह्यताम्'** इस प्रकार कहे। वर भी, **'पाद्यं प्रतिगृह्णामि'** ऐसा कहकर दाता के अञ्जलि से पाद्यपात्र को लेकर **'ॐ विराजो दोहोऽसि विराजो दोहमशीय मयि पाद्यायै विराजो दोहः।।'** मन्त्र पढ़कर अपने दाहिने पैर को धोये। यदि ब्राह्मण हो तो पहले दाहिने चरण में, बाद में बायें पैर में जल स्पर्श करें। और क्षत्रिय आदि हों तो पहले बायें पैर और पश्चात् दाहिने पैर पर स्वयं जल छोड़े।

इसके बाद कन्या का पिता भी, **'ॐ विराजो दोहोऽसि'**, इस मन्त्र को पढ़कर वर का पाद प्रक्षालन करे (धोवे) और **'ॐ युञ्जन्ति ब्रध्नमरुषं चरन्तं परि तस्थुषः। रोचन्ते रोचना दिवि। युञ्जन्त्यस्य काम्या हरी विपक्षसा रथे। शोणा धृष्णू नृवाहसा।।'** मन्त्र एवं

**'कस्तूरीतिलकं ललाटपटले वक्षस्थले कौस्तुभम्।
नासाग्रे वरमौक्तिकं करतले वेणुः करे कङ्कणम्।।1।।
सर्वाङ्गे हरिचन्दनं सुललितं कण्ठे च मुक्तावली।
गोपस्त्रीपरिवेष्टितो विजयते गोपालचूडामणिः।।2।।'**

श्लोक को पढ़कर वर के ललाट में चन्दन लगाये।

'ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यवप्रिया अधूषत। अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्टया मती योजनान्विन्द्र ते हरी।।' मन्त्र पढ़कर अक्षत लगाये तथा **'ॐ या आहरज्जमदग्निः श्रद्धायै मेधायै कामायेन्द्रियाय। ता अहं प्रतिगृह्णामि यशसा च भगेन च।।'** मन्त्र पढ़कर पुष्प-माला हाथ में लेकर **'ॐ यद्यशोऽप्सरसामिन्द्रश्चकार विपुलं पृथु। तेन संग्रथिताः सुमनस आबध्नामि यशो मयि।।'** मन्त्र पढ़कर वर के गले में माला पहना दे।

पुनः वर अमन्त्रक द्वितीय विष्टर को लेकर पीढे के ऊपर उत्तराग्र रखे। इसके बाद दाता दूर्वा, अक्षत, फल, पुष्प एवं चन्दन सहित अर्घ्यपात्र अपने हाथ में लेकर **'ॐ अर्घोऽर्घोऽर्घः प्रतिगृह्यताम्'** ऐसा कहे। वर भी, **'अर्घं प्रतिगृह्णामि'** ऐसा कहकर दाता के हाथ से अर्घ्य पात्र लेकर **'ॐ आपःस्थ युष्माभिः सर्वान् कामानवाप्नवानि।।'** से अर्घ्यस्थ अक्षत को अपने शिर पर छोड़कर **'ॐ समुद्रं वः प्रहिणोमि स्वां योनिमभिगच्छत। अरिष्टाऽस्माकं वीरा मा पराऽसेचिं मत्पयः।।'** मन्त्र पढ़कर अर्घ्यपात्रस्थ जल को ईशान कोण की ओर छोड़ दे।

पश्चात दाता आचमनी से जल लेकर, **'आचमनीयमाचमनीयमाचमनीयं प्रतिगृह्यताम्'** इस प्रकार कहे। वर भी **'आचमनीयं प्रतिगृह्णामि'** ऐसा कहकर दाता के हाथ से उसको लेकर **'आमाऽगन्यशसा सठं. सृज वर्चसा। तं मा कुरु प्रियं प्रजानामधिपतिं पशूनामरिष्टिं तनूनाम्।।'** मन्त्र पढ़कर एक बार आचमन करे और दो बार बिना मन्त्र के आचमन करे।

तदनन्तर दाता कांसे की कटोरी में दधि, मधु एवं घृत को रखकर उसे दूसरी कटोरी से ढंक कर तीन बार मधुपर्को मधुपर्को **'मधुपर्कः.'** ऐसा कहते हुए **'मधुपर्कः प्रति गृह्यताम्,** ऐसा कहे। वर भी, **'मधुपर्कः प्रतिगृह्णामि'** ऐसा कहकर **'ॐ मित्रस्य त्वा चक्षुषा प्रतीक्षे'** ऐसा पढ़कर दाता के हाथ में रखे हुए उस मधुपर्क का निरीक्षण करे। और **'ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्यां प्रतिगृह्णामि।'** पढ़कर यजमान के हाथ से उस मधुपर्क को, दोनों हाथों में लेकर पुनः उसको बायें हाथ में रखकर **'ॐ नमः श्यावास्यायान्नशने यत्त आबिद्धं तत्ते निष्कृन्तामि।'** पढ़कर अनामिका अंगुलि से तीन बार आलोडन कर पुनः अनामिका और अंगुष्ठ से उस मधुपर्क का कुछ भाग पृथ्वी पर छिड़क दे, पुनः उसी प्रकार पूर्वोक्त मन्त्र से दो बार पृथ्वी पर छिड़के। तत्पश्चात् **यन्मधुनो मधव्यं परमठं. रूपमन्नाद्यम्। तेनाऽहं मधुनोमधव्येनपरमेण रूपेणाऽन्नाद्येन परमोमधव्योऽन्नादोऽसानि।।'** पर्यंत मन्त्र तीन बार पढ़कर उक्त मधुपर्क का तीन बार प्राशन करे। पश्चात् उस मधुपर्क को निर्जन अथवा कलश और वर के मध्य में रख दे।

पुनः वर दो बार आचमन कर **'ॐ वाङ्मऽआस्येऽतु'** पढ़कर पांचो अंगुलि से मुख का, **'ॐ नसोर्मे प्राणोऽस्तु'** कहकर कानी अंगुलि के बगल बाली अंगुलि एवं अंगुष्ठ से नासिका का, उसी प्रकार, **'ॐ अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु'** ऐसा पढ़कर अनामिका अंगुष्ठ से दोनो नेत्रों का, **'ॐ कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु'** पढ़कर दाहिने हाथ से दानों कानों का तथा **'ॐ बाह्वोर्मे बलमस्तु'** से दोनों हाथों द्वारा भुजाओं एवं **'ॐ ऊर्बोर्मे ओजोऽस्तु'** से दोनों घुटनों का तथा **'ॐ अरिष्टानि मेऽङ्गानि तनूस्तन्वा मे सह सन्तु'** पढ़कर दोनों हाथों से समस्त अपने अङ्ग का स्पर्श करे।

इसके बाद दाता दोनों हाथों से कुशा लेकर **'ॐ गौर्गौर्गौः'** इस प्रकार कहे। वर **'माता रुद्राणां दुहिता वसूना ७, स्वसाऽऽदित्यानाममृतस्य नाभिः। प्र नु वोचं चिकितुषे जनाय मा गामनागादितुं बधिष्ट।।'** मन्त्र पढ़कर **'मम चाऽमुकशर्मणो यजमानस्योभयोः पाप्मा हतः'** पढ़कर अनामिका अंगुलि से उस कुशा को तोड़ दे। **'ॐ उत्सृजत तृणान्यत्तु'** ऐसा कहकर उस कुशा को फेंक दे।

अनन्तर वर हाथ में जल लेकर **'देशकालौ सङ्कीर्त्य, अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहम् अस्मिन् विवाहकर्मणि पञ्चभूसंस्कारपूर्वकं योजकनामाऽग्निस्थापनं करिष्ये।'** पढ़कर भूमि पर जल छोड़ दे। पुनः पञ्चभूसंस्कार पूर्वक अग्निस्थापन करे, जो इस प्रकार है–

एक हाथ की चौकोनी बेदी बनाकर, उसको कुशा से परिमार्जन कर, उस कुशा को ईशान कोण में फेंककर जल मिश्रित गोबर से लीपकर, स्त्रुवा के मूल भाग से उस वेदी पर तीन रेखा कर, उस उभरी हुई मृत्तिका को अनामिका अंगुष्ठ द्वारा हटाकर, पुनः जल छिड़कर कांस्यपात्र में अग्नि रखकर **'ॐ अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुपब्रुवे। देवाँ 2।। आसादयादिह।।'** मन्त्र पढ़कर वेदी पर अपने सम्मुख अग्नि स्थापन करे।

कन्यापूजनम्

तदनन्तर वर अपने हाथ में जल लेकर **'अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहम् अस्मिन् पुण्याहे धर्माऽर्थ-काम-प्रजा-सन्तत्यर्थं दारपरिग्रहणं करिष्ये'** पढ़कर भूमि पर जल छोड़ दे तथा कोहबर से कन्या को मण्डप में लाकर दाता वर को चार वस्त्र प्रदान करे। उन वस्त्रों में से वर कन्या को दो वस्त्र देकर, शेष दो वस्त्र स्वयं धारण करे।

तत्पश्चात् दाता गन्ध, पुष्प, अक्षत आदि लेकर कन्या का पूजन करे। **'ॐ जरां गच्छ परिधत्स्व वासो भवाऽऽकृष्टीनामभिशस्तिपावा। शतं च जीव शरदः सुवर्चा रयिं च पुत्राननु संव्ययस्वाऽऽयुष्मतीदं परिधत्स्व वासः'** तक मन्त्र पढ़कर कन्या वस्त्र धारण करे। **'ॐ या ऽकृतन्नवयन् याऽअतन्वत। याश्च देवीस्तन्तूनभितो ततन्थ। तास्त्वा देवीजरसे संव्ययस्वाऽऽयुष्मतीदं परिधत्स्व वासः।।'** पढ़कर

कन्या उत्तरीय वस्त्र (ओढ़नी) धारण करे। तदनन्तर वर भी **'ॐ परिधास्यै यशोधास्यै दीर्घायुत्वाय जरदष्टिरस्मि। शतं च जीवामि शरदः पुरूर्चीं रायस्पोषमभि संव्ययिष्ये।।'** मन्त्र उच्चारण कर स्वयं वस्त्र धारण करे।

तदनन्तर आचमन कर **'ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्। आयुष्यमग्र्चं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।।'** पढ़कर यज्ञोपवीत धारण कर, पुनः आचमन कर **'ॐ यशसा मा द्यावापृथिवी यशसेन्द्रावृहस्पतिः। यशो भगश्च माऽविदद्यशो मा प्रतिपद्यताम्।।'** मन्त्रोच्चारण कर वर स्वयं उत्तरीय वस्त्र (दुपट्टा) धारण करे। पुनः वर और कन्या दोनों दो-दो बार आचमन करें।

तत्पश्चात् **'ॐ समञ्जन्तु विश्वेदेवाः समापो हृदयानि नौ। सं मातरिश्वा सन्धाता समुद्रेष्ट्री दधातु नौ।।'** मन्त्र पढ़कर वर और कन्या परस्पर एक दूसरे की ओर देखें। पश्चात् दाता और उसकी पत्नी का गठबन्धन करें।

गोत्रोच्चार

पश्चात् दोनों पक्ष के ब्राह्मण पुरोहित वर-कन्या का गोत्रोच्चार करें। वह इस प्रकार है-एक-एक दोनिया में द्रव्य या चावल भरकर वर और कन्या के हाथ में रखकर सर्वप्रथम **ॐ गणानां त्वा गणपति ꣳ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति ꣳ हवामहे निधीनां त्वा निधिपति ꣳ हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्।।** वैदिक मन्त्र तथा **गौरीनन्दन-गौरवर्णवदनः श्रृङ्गारलम्बोदरः सिन्दूरार्चित-दिग्गजेन्द्र-वदनः पादौ रणन्नूपुरौ। कर्णौ लम्ब-विलम्ब-गण्ड-विमलौ कण्ठे च मुक्तावली, श्रीविघ्नेश्वर-विघ्न-भञ्जनकरो कुर्यात् सदा मङ्गलम्।।1।।** आदि माङ्गलिक श्लोकों को पढ़कर **अस्मिन् दिवसे वा अस्यां रात्रवस्मिन् मङ्गल-मण्डपाभ्यन्तरे स्वस्ति-श्रीमद्विविध-विद्या-विचार-चातुरी-विनिर्जित-सकलवादि-वृन्दोपरि-विराजमान-पद-पदार्थ-साहित्य-रचनामृतायमान- काव्यकौतुक-चमत्कार-परिणत-निसर्ग- सुन्दर-सारस्वत-सहजानुभाव-गुणनिकर-गुम्फितयशः सुरभीकृतमङ्गलमण्डपस्य स्वस्ति-श्रीमतः शुक्लयजुर्वेदान्तर्गत-वाजसनेय-माध्यन्दिनीशाखाध्यायिनः अमुकगोत्रस्या-ऽमुकप्रवरस्या-ऽमुकशर्मणः प्रपौत्रः, एवं शुक्लयजुर्वेदा0 शर्मणः पौत्रः, तथा शुक्लयजु0 शर्मणः पुत्रः, प्रयतपाणिः शरणं प्रपद्ये, स्वस्ति संवादेषूभयोर्वृद्धिः, वरकन्ययोर्मङ्गलमास्तां वरश्चिरञ्जीवी भवतात्, कन्या च सावित्री भूयात्"** इति वरपक्षे प्रथम-शाखोच्चारः।।1।।

ॐ पुनस्त्वाऽऽदित्या रुद्रा वसवः समिन्धतां पुनर्ब्रह्माणो वसुनीथ यज्ञैः। घृतेन त्वं तन्वं वर्द्धयस्व सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः।। ईशानो गिरिशो

मृडः पशुपतिः शूली शिवः शङ्करो, भूतेशः प्रमथाधिपः स्मरहरो मृत्युञ्जयो धूर्जटिः। श्रीकण्ठो वृषभध्वजो हरभवो गङ्गाधरस्त्र्यम्बकः, श्रीरुद्रः सुरवृन्द-वन्दितपदः कुर्यात् सदा मङ्गलम्।। अस्मिन् दिवसे वा अस्यां रात्रवस्मिन् मङ्गल-मण्डपाभ्यन्तरे स्वस्तिश्रीमद्विविध-विद्यालङ्कार-शरद्विमल-रोहिणी-रमण-रमणीयोदार-सुन्दर-दामोदर-पाद-मकरन्द- वृन्द-शेखर-प्रचण्डाखण्ड-मण्डल-पूर्णपूरेन्दुनन्दन-चरणकमल-भक्तितदुपरि-महानुभाव-सकल-विद्याविनीत-निजकुलकमल-कलिका-प्रकाशनैकभास्कर-सदाचार-सच्चरित-सकल-सत्प्रतिष्ठा- श्रेष्ठ-विशिष्ट- वरिष्ठस्य स्वस्ति-श्रीमतः शुक्लयजुर्वेदान्तर्गतवाजसनेय-माध्यन्दिनीयशाखाऽध्येतुः अमुकगोत्रस्या-ऽमुकप्रवरस्याऽमुक शर्मणः प्रपौत्री, शुक्लयजुर्वेदान्त-र्गतवाज0 शर्मणः पौत्री, शुक्लयजुर्वेदानतर्गतवाज0 शर्मणः पुत्री, प्रयतपाणिः शरणं प्रपद्ये स्वस्ति संवादेषूभयोर्वृद्धिर्वर-कन्ययोर्मङ्गलमास्तां वरश्चिरञ्जीवी भवतात् कन्या च सावित्री भूयात्। इति कन्यापक्षे प्रथम-शाखोच्चारः।।1।।

एवं द्विरपरं वर-कन्यापक्षे च पठेत्। मङ्गलमन्त्र-श्लोकाश्च-ॐ यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः ब्रह्म राजन्याभ्या७ शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च। प्रियो देवानां दक्षिणायै दातुरिह भूयासमयं मे कामः समृद्ध्यतामुप मादो नमतु।। गौरी श्रीरदितिश्च कद्रु सुभगाः भूतिः सुपर्णा शुभा, सावित्री तु सरस्वती वसुमती सत्यव्रताऽरुन्धती। स्वाहा जाम्बवती च रुक्मभगिनी दुःस्वप्न-विध्वंसिनी, बेला चाऽम्बुनिधेः स-मीन-मकराः कुर्वन्तु वो मङ्गलम्।। 'अस्मिन् दिवसे.' इत्यारम्भ 'कन्या च सावित्री भूयात्' इति पर्यन्तं पठेत्। इति वरपक्षे द्वितीय-शाखोच्चारः।।2।।

ॐ आयुष्यं वर्चस्य७, रायस्पोषमौद्भिदम्। इद७, हिरण्यं वर्चस्व जैत्रायाऽऽविशतादु माम्।। नेत्राणां त्रितयं शिवं पशुपतेरग्नित्रयं पावनं, यद्वद्-विष्णुपदत्रयं त्रिभुवने ख्यातं च रामत्रयम्। गङ्गावाहपथत्रयं सुविमलं देवत्रयं त्रिस्वरं सन्ध्यानां त्रितयं द्विजैरभिहितं कुर्वन्तु वो मङ्गलम्।। 'अस्मिन् दिवसे.' इत्यारम्भ 'कन्या च सावित्री भूयात्' इत्यन्तं पठेत्। इति कन्यापक्षे द्वितीयशाखेच्चारः।।2।।

ॐ यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति। दूरंगमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु।। अश्वत्थो वटवृक्षचन्दनतरुर्मन्दार-कल्पद्रुमौ, जम्बू-निम्ब-कदम्ब-चूत-सरला वृक्षाश्च ये क्षीरिणः। सर्वे ते फलमिश्रिताः प्रतिदिनं विभ्राजिता सर्वतो, रम्यं चैत्ररथं स-नन्दनवनं कुर्वन्तु

वो मङ्गलम्।। 'अस्मिन् दिवसे.' इत्यारम्भ, 'कन्या च सावित्री भूयात्' इति पर्यन्तं पठेत्। इति वरपक्षे तृतीय-शाखोच्चारः।।3।।

ॐ ब्रह्म यज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः। स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः शतश्च योनिमसतश्च विवः।। ब्रह्मा वेदपतिः शिवः पशुपतिः सूर्यश्च चक्षुष्पतिः, शुक्रो देवपतिर्यमः पितृपतिः स्कन्दश्च सेनापतिः। यक्षो वित्तपतिर्हरिश्च जगतां वायुः पतिः प्राणिनाम्, अन्ये ये पतयो वसन्ति सततं कुर्वन्तु वो मङ्गलम्'।।

'अस्मिन् दिवसे.' इत्यारभ्य, 'कन्या च सावित्री भूयात्' इत्यन्तं पठेत्। इति कन्यापक्षे तृतीय-शाखोच्चारः।।3।।

सस्वर सुन्दर ढङ्ग से उच्चारण कर गोत्रोच्चार करें।

कन्यादानम्

तदनन्तर कन्या का पिता या भाई शंख स्थित दूर्वा, अक्षत, पुष्प, फल, चन्दन एवं जल लेकर वर के दाहिने हाथ पर कन्या का दाहिना हाथ रखकर, देश-काल का उच्चारण कर **अमुकगोत्रः अमुकशर्मा, सपत्नीकोऽहम् अस्याः कन्यायाः अनेन वरेण धर्म-प्रजया उभयोर्वंश-वृद्ध्यर्थम्, एवं मम समस्त-पितृणां निरतिशयानन्द-ब्रह्मलोकावाप्त्यादि-कन्यादान-कल्पोक्तफल-सिद्ध्यर्थमनेन वरेणाऽस्यां कन्यायामुत्पादयिष्यमाण-सन्तत्या दशपूर्वान् दशापरान् मां चैकविंशतिपुरुषानुद्धर्तुकामः श्रीलक्ष्मीनारायणप्रीतये च ब्राह्मविवाहविधिना कन्यादानमहं करिष्ये'।** संकल्प बोलकर भूमि पर जल छोड़ दे। उसके बाद दाता **'कन्यां कनक-सम्पन्नां कनकाभरणैर्युताम्। दास्यामि विष्णवे तुभ्यंब्रह्मलोकजिगीषया।।1।। विश्वम्भरः सर्वभूताः साक्षिण्यः सर्वदेवताः। इमां कन्यां प्रदास्यामि पितृणां तारणाय च।।2।।**

श्लोक पढ़कर कन्या की प्रार्थना करे।

कन्यादान का प्रधान संकल्प-दाता दाहिने हाथ में जल, गन्ध, पुष्प और तुलसीदल लेकर **'ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्री मद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयप्रहरार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भूर्लोके भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्त्तैक-देशान्तर्गताऽमुकक्षेत्रे भागीरथ्या अमुकभागे अमुकसंवत्सरे अमुकायने श्रीसूर्ये अमुकऋतौ अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे, अमुकगोत्रस्याऽमुकप्रवरस्य शुक्लयजुर्वेदान्तर्गत-वाजसनेय-**

माध्यन्दिनीय-शाखाध्यायिनोऽमुकशर्मणः प्रपौत्रय, अमुकगोत्रस्याऽमुकप्रवरस्य शुक्लयजुर्वेदान्तर्गत-वाजसनेय-माध्यन्दिनीय शाखाध्यायिनोऽमुकशर्मणः पौत्राय, अमुकगोत्रस्याऽमुकप्रवरस्य शुक्लयजुर्वेदान्तर्गत-वाजसनेय-माध्यन्दिनीयशाखाध्यायिनोऽमुकशर्मणः पुत्राय, अमुकगोत्रयाऽमुकप्रवराय शुक्लयजुर्वेदानतर्गत वाजसनेय-माध्यन्दिनीय-शाखाध्यायिनेऽमुकशर्मणे वराय, अमुकशर्माऽहम् अमुकगोत्राम् अमुकप्रवराम् अमुकनाम्नीम् इमां कन्यां सुस्नातां यथाशक्त्यलङ्कृतां गन्धाद्यर्चितां वस्त्रयुगचछन्नां प्रजापतिदैवत्यांशतगुणीकृत-ज्योतिष्टोमातिरात्र-शतफलप्राप्तिकामः अमुकशर्मणे श्रीधरस्वरूपिणे वराय पत्नीत्वेन तुभ्यमहं सम्प्रददे।' 'ॐ द्यौस्त्वा ददातु पृथ्वी त्वा प्रतिगृहणातु' एवं **'ॐ स्वस्ति'** कहे। तदनन्तर दाता वर से कहे-**कन्यापक्षे तु-प्रपौत्रीम्, पौत्रीम्, पुत्रीम्, एवं गोत्रप्रवरपूर्वकं प्रपितामहादिनाम कन्या-वरनामान्तमुपर्युक्तं वारत्रयं पठित्वा, अमुकगोत्रः अमुकप्रवरः** संकल्प-वाक्य पढ़कर वर के दाहिने हाथ में जल को छोड़ दे।

तथा वर भी **'ॐ द्यौस्त्वा ददातु पृथ्वी त्वा प्रतिगृहणातु'** एवं **'ॐ स्वस्ति'** कहे। तदनन्तर दाता वर से-इस प्रतिज्ञा-वाक्य कहे **'यस्त्वया धर्मश्चरितव्यः सोऽनया सह, धर्मे चाऽर्थे च कामे च त्वयेयं नाऽतिचरितव्या।'** और वर भी, **'नाऽतिचरामि'** कहकर, उसका उत्तर देते हुए **'कोऽदात् कस्माऽअदात् कामोऽदात् कामायादात्। कामो दाता कामः प्रतिगृहीता कामैतत्ते।।'** मन्त्र तीन बार पढ़े।

कन्या-प्रार्थना

तत्पश्चात् दाता

ततो-दाता-गौरीं कन्यामिमां विप्र! यथाशक्ति-विभूषिताम्।
गोत्राय शर्मणे तुभ्यं दत्ता विप्र ! समाश्रय।।1।।
कन्ये ! ममाऽग्रतो भूयाः कन्ये मे देवि ! पार्श्वयोः।
कन्ये ! मे पृष्ठतो भूयास्त्वद्दानान्मोक्षमाप्नुयात्।।2।।
मम वंशकुले जाता यावद्-वर्षाणि पालिता।
तुभ्यं विप्र ! मया दत्ता पुत्र-पौत्र-प्रवर्धिनी'।।3।।

उक्त तीन श्लोकों को पढ़कर कन्या की प्रार्थना करे।

कन्यादान साङ्गता-हाथ में जलतथा सुवर्णरूप दक्षिणा लेकर **'कृतैतत् कन्यादानकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थम् इदं सुवर्णं दक्षिणाद्रव्यं गोमिथुनं च वराय तुभ्यमहं सम्प्रददे'** पढ़कर वर के दाहिने हाथ में उक्त गोदानरूप द्रव्य प्रदान करे।

गो प्रार्थना- **'यज्ञसाधनभूता या विश्वस्याऽघौघनाशिनी।**
विश्वरूपधरो देवः प्रीयतामनया गवा।।'

श्लोक पढ़कर दाता गौ की प्रार्थना करे।

भूयसीदक्षिणा संकल्प-कन्या-दाता दाहिने हाथ में जल लेकर देश-काल उच्चारणपूर्वक **कृतस्य कन्यादानकर्मणः साङ्गतासिद्धयर्थं तन्मध्ये न्यूनातिरिक्त-दोषपरिहारार्थं यथोत्साहं भूयसीं दक्षिणां नानानामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो विभज्य दातुमहमुत्सृजे'** इस संकल्प द्वारा उपस्थित ब्राह्मणों को भूयसी दक्षिणा देवे।

तत्पश्चात् **'ॐ प्रमादात्0। यस्य स्मृत्या0** ऐसा कहकर विष्णु को प्रणाम करें। पुनः-**'ॐ विष्णवे नमः। 'ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः।'** पढ़कर भगवान् विष्णु की प्रार्थना करे।

तत्पश्चात् वर कन्या का हाथ पकड़कर **ॐ यदैषि मनसा दूरं दिशोऽनु पवमानो वा हिण्यपर्णो वैकर्णः स त्वां मन्मनसां करोतु।।** मंत्र पढ़ता हुआ कन्या का नाम लेकर निकले।

दृढ़कलश स्थापन-तदनन्तर वेदी के दक्षिण ओर मौन धारण किये हुए मनुष्य के कन्धे पर जल से पूर्ण कलश अभिषेक पर्यन्त रखे। तत्पश्चात् कन्या का पिता वर से **'परस्परं समीक्षेथाम्'** 'आप लोग परस्पर एक-को-एक देख लें' इस प्रकार कहे।

वर भी **'ॐ अघोरचक्षुरपतिघ्न्येधि शिवाः पशुभ्यः सुमनाः सुवर्चाः। वीरसूर्देवकामाः स्योना शं नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे।।1।।**

सोमः प्रथमो विविवदे गन्धर्वो विविद ऽउत्तरः। तृतीयोऽग्निष्टे पतिस्तुरीयस्ते मनुष्यजाः।।2।। सोमोऽददद् गन्धर्वाय गन्धर्वोऽददग्नये। रयिं च पुत्राश्चादादग्निर्मह्यमथोऽइमाम्।।3।। सा नः पूषा शिवतमामैरय सा नऽउरू उशती विहर। यस्यामुशन्तः प्रहराम शेषं यस्मामु कामा बहवो निविष्टयै।।4।। तक चार मन्त्र पढ़कर परस्पर एक-दूसरे का निरीक्षण करें।

तदनन्तर कन्या और वर दोनों अग्नि की प्रदक्षिणा करके आसन पर पहले वर अपना दाहिना पैर रख अपनी दाहिनी ओर कन्या को बैठाकर स्वयं भी बैठ जाय। पुनः वर हाथ में जल लेकर 'देशकालौ संकीर्त्य.' **अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहं कन्याग्रहणदोषनिवृत्त्यर्थं शुभफलप्राप्त्यर्थं च इदं गोनिष्क्रयभूतं द्रव्यं रजतं चन्द्रदैवतं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे।'** यह संकल्पवाक्य पढ़कर कन्या-ग्रहणदोष-निवृत्ति के लिए गोदान करे।

आचार्य वरण–अनन्तर वर हाथ में जल लेकर देश-काल संकीर्तन पुरस्सर **'अद्य कर्तव्य-विवाह-होमकर्मणि आचार्यकर्मकर्त्तुम् एभिर्वरणद्रव्यैः अमुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणम् आचार्यत्वेन त्वाहहं वृणे'**। तक पढ़कर आचार्य के हाथ में जल देकर आचार्य का वरण कर **आचार्यस्तु यथा स्वर्गे शक्रादीनां बृहस्पतिः। तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन्नाचार्यो भव सुव्रत !।।** पढ़ता हुआ उनकी प्रार्थना करे।

ब्रह्मवरण-पुनः हाथ में जल लेकर **'अद्य कर्तव्य-विवाह-होमकर्मणि कृताऽकृताऽवेक्षणरूप-'ब्रह्मकर्मकर्तुमुकगोत्रममुकशर्माण ब्राह्मणं ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे।'** तक पढ़कर भूमि पर जल छोड़ते हुए ब्रह्मा का वरण करे। ब्रह्मा भी 'ब्रतोऽसिम' ऐसा कहें। पश्चात् वर भी **यथा चतुर्मुखो ब्रह्मा सर्वलोकपितामहः। तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन् ब्रह्मा भव द्विजोत्तम !।।** श्लोक एवं **ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाऽऽप्नोति दक्षिणाम्। दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते।।** इत्यादि मंत्र पढ़ता हुआ **'यथा-विहितं कर्म कुरु'** ऐसा प्रार्थना-पुरःसर कहे। 'यथाज्ञानं करवावः' इस प्रकार ब्रह्मा-आचार्य दोनों कहें।

कुशकण्डिका

नोटः–कुशकण्डिका, महाव्याहृति होम, सर्वप्रायश्चित्त संज्ञक पञ्चवारुण होम इस पुस्तक के चतुर्थ खण्ड के कुशकण्डिका एवं हवन प्रकरण में दिया गया है। वहाँ तक यह विधि कराकर आगे की विधि कराऐं।

अधोलिखित बारह आहुति प्रायश्चित्त संज्ञक हैं।

राष्ट्रभृत्होम–तत्पश्चात् ब्रह्मा के स्पर्श बिना घृत द्वारा **ॐ ऋताषाड् ऋतधामाग्निर्गन्धर्व स न इदं ब्रह्म क्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट्। इदमृतासाहे ऋतघाम्नेऽग्नये गन्धर्वाय न मम।।1।। ॐ ऋताषाड् ऋतधामाऽग्नि-र्गन्धर्वस्तस्यौषधयोऽप्सरसो मुदो नाम ताभ्यः स्वाहा। इदमोषधिभ्योऽप्सरोभ्यो मुद्भयश्च न मम।।2।। ॐ स७ हितो विश्वसामा सूर्यो गन्धर्वः स न इदं ब्रह्म क्षत्रं पातु तस्मै स्वहा वाट्। इदं स७ हिताय विश्वसाम्ने सूर्याय गन्धर्वाय न मम।।3।। ॐ स७ हितो विश्वसामा सूर्यो गन्धर्वस्तस्य मरीचयोऽप्सरस ऽआयुषो नाम ताभ्यः स्वाहा। इदं मरीचिभ्योऽसरोभ्य ऽआयुभ्यो न मम।।4।। ॐ सुषुम्णः सूर्यरश्मिश्चन्द्रमा गन्धर्वः स न इदं ब्रह्म क्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट्। इदं सुषुम्णाय सूर्यरश्मये चन्द्रमसे गन्धर्वाय न मम।।5।। ॐ सुषुम्णः सूर्य रश्मिश्चन्द्रमा गन्धर्वस्तस्य नक्षत्रण्यप्सरसो भेकुरयो नाम**

ताभ्यः स्वहा। इदं नक्षत्रेभ्योऽप्सरोभ्यो भेकुरिभ्यो न मम।।6।। ॐ इषिरो विश्वव्यचा वातो गन्धर्वः स न इदं ब्रह्म क्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट्। इदमिषिराय विश्वव्यचसे वाताय गन्धर्वाय न मम।।7।। ॐ इषिरो विश्वव्यचा वातो गन्धर्वस्तस्यापो ऽप्सरस ऽऊजों नाम ताभ्यः स्वहा। इदमद्भयोऽप्सरोभ्य ऽऊग्भ्यों न मम।।8।। ॐ भुज्युः सुपर्णो यज्ञो गन्धर्वः स न इदं ब्रह्म क्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट्। इदं भुज्यवे सुपर्णय यज्ञाय गन्धर्वाय न मम।।9।। ॐ भुज्युः सुपर्णो यज्ञो गन्धर्वस्तस्य दक्षिणाऽप्सरसस्तावा नाम ताभ्यः स्वाहा। इदं दक्षिणाभ्योऽप्सरोभ्यस्तावाभ्यो न मम।।10।। ॐ प्रजापतिर्विश्वकर्मा मनो गन्धर्वः स न इदं ब्रह्म क्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट्। इदं प्रजापतये विश्वकर्मणे मनसे गन्धर्वाय न मम।।11।। ॐ प्रजापतिर्विश्वकर्मा मनो गन्धर्वस्तस्य ऋक्सामान्यप्सरस ऽएष्टयो नाम ताभ्यः स्वाहा। इदमृक्सामभ्योऽप्सरोभ्य एष्टिभ्यो न मम।।12।। मन्त्र पढ़कर आहुति देकर प्रोक्षणीपात्र में स्रुवावशिष्ट घृत का परित्याग करें।

जयाहोम-इसके बाद स्रुवा में घृत लेकर ॐ चित्तं च स्वाहा। इदं चित्ताय न मम।। 1।। ॐ चित्तिश्च स्वाहा। इदं चित्त्यै न मम।। 2।। ॐ आकूतं च स्वाहा। इदमाकूताय न मम।।3।। ॐ आकूतिश्च स्वहा। इदमाकूत्यै न मम ।। 4।। ॐ विज्ञातं च स्वाहा। इदं विज्ञाताय न मम।।5।। ॐ विज्ञातिश्च स्वाहा। इदं विज्ञात्यै न मम।। 6।। ॐ मनश्च स्वाहा। इदं मनसे न मम।। 7।। ॐ शक्वरीश्च स्वाहा। इदं शक्वरीभ्यो न मम।। 8।। ॐ दर्शश्च स्वाहा। इदं दर्शाय न मम।। 9।। ॐ पौर्णमासं च स्वाहा। इदं पौर्णमासाय न मम।। 10।। ॐ बृहच्च स्वाहा। इदं बृहते न मम।। 11।। ॐ रथन्तरं च स्वहा। इदं रथन्तराय न मम।। 12।। ॐ प्रजापतिर्जयानिन्द्राय वृष्णे प्रायच्छदुग्रः पृतनाजयेषु। तस्मै विशः समनमन्त सर्वाः स उग्रः स इ हव्यो बभूव स्वाहा।। इदं प्रजापयते जयानिन्द्राय न मम।।13।। कह तेहर आहुति प्रदान कर प्रोक्षणीपात्र में स्रुवा के बचे हुए घृत का परित्याग करे।

अभ्यातान हवन-पुनः ॐ अग्निर्भूतानामधिपतिः स माऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या७ स्वाहा। इदमग्नये भूतानामधिपतये न मम।।1।। ॐ इन्द्रो ज्येष्ठानामधिपतिः स माऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षेत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या७ स्वाहा। इदमिन्द्राय ज्येष्ठानामधिपतये न मम।। 2।। ॐ यमः पृथिव्या अधिपतिः स माऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां

पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या७ स्वाहा। इदं यमाय पृथिव्या अधिपतये न मम।। 3।।(अत्र प्रणीतोदकस्पर्शः)

ॐ वायुरन्तरिक्षस्याधिपतिः स माऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या७ स्वाहा। इदं वायवेऽतरिक्षस्याधिपतये न मम।। 4।। ॐ सूर्यो दिवोऽधिपतिः स माऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या७ स्वाहा। इदं सूर्याय दिवोऽधिपये न मम।। 5।। ॐ चन्द्रमा नक्षत्रणामधिपतिः स माऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या७ स्वाहा। इदं चन्द्रमसे नक्षत्रणामधिपतये न मम।। 6।। बृहस्पतिब्रह्मणोऽधिपतिः स माऽवत्वास्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पूराधिायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्यार्ठ. स्वाहा। इदं ब्रहस्पतये ब्रह्मणोऽधिपतये न मम।। 7।। ॐ मित्रः सत्याना-मधिपतिः स माऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्यार्ठ. स्वाहा। इदं मित्रय सत्यानामधिपतये न मम।।8।। ॐ वरुणोऽपामधिपतिः स माऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या७ स्वाहा। इदं वरुणायाऽपा-मधिपतये न मम।। 9।। ॐ समुद्रः स्त्रोत्यानामधिपतिः स माऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या७ स्वाहा। इदं समुद्राय स्त्रोत्यानामधिपतये न मम।। 10।।

ॐ अन्न७ साम्राज्यानामधिपतिस्तस्माऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या७ स्वाहा। इदमन्नाय साम्राज्यानामधिपतये न मम।।11।। ॐ सोम ओषधी-नामधिपतिः स माऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्याꣳ स्वाहा। इदं सोमाय ओषधी नामधिपतये न मम।। 12।। ॐ सविता प्रसवानामधिपतिः स माऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्याꣳ स्वाहा। इदं सवित्रे प्रसवाना-मधिपतये न मम।।13।। ॐ रुद्रः पशूनामधिपतिः स माऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्याꣳ स्वाहा। इदं रुद्राय पशूनामधिपतये न मम।।14।।

(अत्र प्रणीतोदकस्पर्शः) ॐ त्वष्टा रूपाणामधिपति स माऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्याꣳस्वाहा।

इदं त्वष्ट्रे रूपणामधिपतये न मम।।15।। ॐ विष्णुः पर्वतानामधिपतिः स माऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देहहूत्याᳫं स्वाहा। इदं विष्णवे पर्वतानामधिपतये न मम।।16।। ॐ मरुतो गणनामधिपतयस्ते माऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्याᳫं स्वाहा।

इदं मरुद्भयो गणनामधिपतिभ्यो न मम।।17।। ॐ पितरः पितामहाः परेऽवरे ततामहाः। इह माऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्याᳫं स्वाहा। इदं पितृभ्यः पितामहेभ्यः परेभ्योऽवरेभ्यस्ततेभ्यस्ततामहेभ्यो न मम।।18।। अठारह मन्त्र पढ़कर आहुति प्रदान कर स्रुवावशिष्ट घृत का प्रोक्षणीपात्र में परित्याग करे।

पञ्चाहुति-तत्पश्चात् स्रुवा में घी लेकर **ॐ अग्निरैतु प्रथमो देवतानाᳫं सोऽस्यै प्रजां मुञ्चतु मृत्युपाशात्। तदयᳫं राजा वरुणोऽनुमन्यतां यथेयं स्त्री पौत्रमघं न रोदात् स्वाहा। इदमग्नये न मम।।1।। इमामग्निस्त्रायतां गार्हपत्यः प्रजामस्यै नयतु दीर्घमायुः। अशून्योपस्था जीवतामस्तु माता पौत्रमानन्दमभिविबुद्ध्यतामियᳫं, स्वाहा। इदमग्नये न मम।।2।। ॐ स्वस्ति नोऽअग्ने दिव आ पृथिव्या विश्वानि धेह्ययथा यजत्र यदस्यां महि दिवि जातं प्रशस्तं तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रᳫं स्वाहा। इदमग्नये न मम।।3।। ॐ सुगन्नु पन्थां प्रदशिन्न एहि ज्योतिष्मद्धे ह्यजरन्न आयुः। अपैतु मृत्युरमृतं न ऽआगाद् वैवस्वतो नो ऽअभयं कृणोतु स्वाहा। इदं वैवस्वताय न मम।।4।।** मन्त्र पढ़कर चार आहुतियाँ प्रदान कर, वर-कन्या के मध्य वस्त्र से आड़कर **ॐ परं मृत्यु अनु परेहि पन्थां यस्ते अन्य इतरो देवयानात्। चक्षुष्मते शृण्वते ते ब्रवीमि मा न प्रजाᳫरीरिषो मोत वीरान् स्वाहा। इदं मृत्येव न मम।। 5।।** मन्त्र पढ़कर पांचवी आहुति देकर प्रोक्षणीपात्र में स्रुवावशिष्ट घृत का परित्याग करता हुआ प्रणीता के जल को अपने नेत्रों में स्पर्श करे।

लाजाहोम-तदनन्तर वर-वधू पूर्वाभिमुख खड़े होकर वधू को आगे कर, वर की अञ्जलि पर वर वधू की अञ्जलि रखकर उसमें वधू के भाई द्वारा चार मुट्ठी घृत एवं शमी पलाश-मिश्रित लावा से **ॐ अर्यमणं देवं कन्या ऽअग्निमयक्षत। स नो ऽअर्यमा देवः प्रेतो मुञ्चतु मा पतेः स्वाहा। इदमर्यमणे न मम।।1।।**

मन्त्र उच्चारण कर अञ्जलि स्थित लावा में से तृतीयांश लावा अग्नि में हवन करे।

ॐ इयं नार्युपब्रूते लाजानावपन्तिका। आयुष्मानस्तु मे पतिरेधन्तां ज्ञातयो मम स्वाहा। इदमग्नये न मम।।2।। ॐ इमाँल्लाजानावपाम्यग्नौ समृद्धिकरणं

तव। मम तुभ्यं च संवननं तदग्निरनुमन्यतामियꣳ स्वाहा। इदमग्यने न मम।।3।।

पुनः **इयं नार्युपब्रूते से इदमग्नये न मम** मन्त्र पढ़कर अवशिष्ट तृतीयांश लावा में से अर्धांश लावा का अग्नि में हवन करे। फिर '**ॐ इमाँल्लाजानावपाम्यग्नौ.**' से इदमग्नये न मम' तक मन्त्र उच्चारण कर समग्र लावा होम कर दे।

बध्वङ्गुष्ठग्रहण

वर द्वारा बधू के अंगूठे का ग्रहण-इसके बाद बर बधू के दाहिने हाथ के अंगूठे को अपने दाहिने हाथ में पकड़कर अधोलिखित चार मंत्रों को पढ़े।

ॐ गृभ्णामि ते सौभगत्वाय हस्तं मया पत्या जरदष्टिर्यथाऽऽसः। भगो ऽअर्यमा सविता पुरन्धिर्मह्यं त्वा ऽदुर्गार्हपत्याय देवा।।1।। ॐ अमोऽहमस्मि सा त्वꣳ सा त्वमस्यमो ऽअहम्। सामोऽहमस्मि ऋक् त्वं द्यौरहं पृथिवी त्वम्।।2।। ॐ तावेहि विवहावहै सह रेतो दधावहै। प्रजां प्रजनयावहै पुत्रान् विन्द्यावहै बहून्।।3।। ॐ ते सन्तु जरदष्टयः संप्रियौ रोचिष्णू सुमनस्यमानौ। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतꣳ श्रृणुयाम शरदः शतम्।।4।।

वर द्वारा वधू के अंगूठे का ग्रहण-तदनन्तर वर वधू के दाहिने हाथ के अँगूठे को अपने दाहिने हाथ से पकड़ कर तक चार मन्त्रों को पढ़ें।

अश्मारोहण-उसके बाद अग्नि के उत्तर पूर्वाभिमुख बैठी हुई वधू का पहले से वहां रखी हुई सिल पर दाहिना पैर रखवाये **ॐ आरोहेममश्मानमश्मेव त्वꣳ स्थिरा भव। अभितिष्ठ पृतन्यतोऽवबाधस्व पृतनायतः।।** मन्त्र वधू पढ़े। इसके बाद वर भी **ॐ सरस्वति प्रेदमव सुभगे वाजिनीवति। यां त्वा विश्वस्य भूतस्य प्रजायामस्याग्रतः। यस्यां भूतꣳ समभवद्यस्यां विश्वमिदं जगत्। तामद्य गाथां गास्यामि या स्त्रीणामुत्तमं यशः।।** पर्यन्त मन्त्रोच्चारण करे और वर वधू को अपने आगे कर प्रणीता और ब्रह्मा सहित **ॐ तुभ्यमग्ने पर्यवहन्त्सूर्या वहतु ना सह। पुनः पतिभ्यो जायां दाऽग्ने प्रजया सह।।** मन्त्र पढ़कर अग्नि की परिक्रमा करे।

तदनन्तर वेदी के पीछे खड़े होकर लाजा होम, अँगूठे के हाथ हस्त ग्रहण, अश्मारोहण, गाथागान तथा वर और वधू दोनों अग्नि की प्रदक्षिणा करें। इसी प्रकार तीन बार प्रदक्षिणा करने से नव लाजाहुति, तीन बार वधू का हस्त ग्रहण, तीन बार अश्मारोहण एवं तीन बार गाथागान पूरा होता है—इस तरह नव लाजाहुति सम्पन्न हुई।

पुनः कन्या के भाई द्वारा प्रदत्त अंजलि के बचे हुए लावा को वधू सूप के कोने से '**ॐ भगाय स्वाहा इदं भगाय न मम्**' मन्त्र पढ़कर अग्नि में हवन करे।

पुनः वधू को पीछे कर बिना मन्त्र के चौथी प्रदक्षिणा करे। तथा वर बैठकर कुशा द्वारा ब्रह्मा से स्पर्श कर 'ॐ प्रजापतये स्वहा' कहकर घी से आहुति देवे। और 'इदं प्रजापतये' कहकर स्रुवा में बचे हुए घी को प्रोक्षणीपात्र में छोड़ दे।

सप्तपदी-तदनन्तर सात जगह अक्षत-पुंज (अक्षत-ढेरी) पर, सुपारी या पान रखकर वर वधू के अंगूठे द्वारा क्रम से **ॐ एकमिषे विष्णुस्त्वा नयतु।।1।। द्वितीये-ॐ द्वे ऊर्ज्जे विष्णुस्त्वा नयतु।।2।। तृतीये-ॐ त्रीणि रायस्पोषाय विष्णुस्त्वा नयतु।।3।। चतुर्थे-चत्वारि मायोभवाय विष्णुस्त्वा नयतु।।4।। पञ्चमे-ॐ पञ्च पशुभ्यो विष्णुस्त्वा नयतु।।5।। षष्ठे-ॐ षड्-ऋतुभ्यो विष्णुस्त्वा नयतु।।6।। सप्तमे-ॐ सखे सप्तपदा भव सा मामनुव्रता भव विष्णुस्त्वा नयतु।।7।।**मन्त्र पढ़कर सात बार स्पर्श कराकर उस ढेरी को हटावे।

पुराणोक्त सप्तपदी श्लोक

पुराणोक्त सप्तपदी शलोक सर्वप्रथम कन्या वर से सात श्लोकों द्वारा कहती हैं **लब्धोऽसि त्वं मया भर्तः ! पूण्यैश्च विविधैः कृतैः। देवी सम्पूजिता नित्यं वन्दनीयोऽसि मे सदा।।** कन्या ने कहा-हे पतिदेव ! मैने श्रद्धा-भक्ति पूर्वक अनेक पुण्य कर्म किये तथा देवी का पूजन भी किया, इसी से आप पति रूप में हमें प्राप्त हुए हैं। आप निरन्तर हमसे पूजनीय हैं।

सुख-दुःखानि कर्माणि गृहस्थस्य भवन्ति हि।
भव सौम्य ! सदैव त्वं कन्या एकमिषे वदेत्।। 1।।

गृहस्थाश्रम में सदा सुख-दुःख आते जाते रहते हैं, उसमें आप सदा शान्तचित्त रहें, यह आपसे मेरी पहली मांग है। ।।1।।

वापी-कूप-तडागानि यज्ञ-यात्रा-महोत्सवान्।
नाऽऽरम्भेदननुज्ञाय द्वे ऊर्ज्जेऽपि तथा वदेत्।। 2।।

हे स्वामिन् ! अब से आप बावली, कूप, तालाब आदि का निर्माण, यज्ञ, यात्रा, उत्सवादि समस्त कार्य मेरी अनुमति के बिना न करें। इस प्रकार कन्या अंगूठे से दूसरी सुपारी हटाकर कहे।। 2।।

व्रतोद्यापन-दानानि स्त्रीणां भावाः स्वभावजाः।
कृत्यभङ्गो न ते कार्यस्त्रीणि रायस्तथा वदेत्।। 3।।

हे पतिदेव ! व्रत, उद्यापन, दान आदि करना स्त्रियों का स्वाभाविक धर्म है, इस मेरे कार्य में आप कभी बाधा न डालें। यह मैं आपसे तीसरी मांग करती हूँ।।3।।

स्वकर्मणाऽर्जितं वित्तं पशु-धान्य-धनागमम्।
सर्वं निवेदयेन्मह्यं चत्वारीति तथा वदेत्।4।।

हे स्वामिन् ! आप अपने पुरुषार्थ द्वारा जो भी धन कमाकर लावें तथा बैल, गाय आदि पशु या अन्न, द्रव्य सभी मुझे समर्पित करें। यह चौथी मांग कन्या ने की।।4।।

गजा-ऽ-श्वादि-पशूनां च हेयोपादेय-कारणम्।
अनापृच्छय न कर्त्तव्यं पञ्च पश्विति संवदेत्।।5।।

हे पतिदेव ! आज से आप हाथी, घोड़े आदि पशुओं का खरीदना या बेचना बिना हमसे पूछे न करें। कन्या इस पांचवें वाक्य द्वारा ऐसा कहती है। 5।।

भूषणानि विचित्राणि रत्न-धातुमयानि च।
दद्यान्न प्रतिगृह्णणीयात् षड्-ऋतावपि संवदेत्।।6।।

हे पतिदेव ! समय-समय पर जो आप हमको रत्न और सोने-चांदी धातुओं से बने अनेक प्रकार के आभूषणों एवं चित्र-विचित्र वस्त्रों को दें, उनको पुनः आप लेने का लोभ न करें-यह कन्या अपने छठे वाक्य में कहे।। 6।।

गीत-वादित्र-माङ्ल्यं बन्धूनां च गृहे सदा।
अनाहूता गमिष्यामि तदा मां प्रतिपालयेत्।।7।।

हे स्वामिन् ! अपने भाई-बन्धुओं के घर (एवं मैके में) जब भी मांगलिक कार्य होगा और गाना-बजाना होगा, उस समय मैं बिना बुलाये ही चली जाऊँगी, उस समय आप मुझे अपमानित न करेंगे। अर्थात् उसमें आप बाधा न पहुंचायेंगे। यह कन्या अपने सातवें वाक्य में कहे।।7।।

पञ्चवाक्यानि वरोक्तानि

इसी प्रकार वर भी पांच श्लोक कन्या से कहे -

क्रीडा-शरीर-संस्कार-समाजोत्सव-दर्शनम्।

हास्यं परगृहे यानं त्यजेत् प्रोषितभर्तृका।।1।।

हे प्रिये ! मेरे घर पर न रहने से समय क्रीडा (हंसी-मजाक), पाउडर, लिपिस्टिक आदि से शरीर सजाना, सामाजिक कार्य, देवदर्शन आदि, हास-परिहास, दूसरे के घर जाना आदि पति के परदेश चले जाने पर आने तक, पतिव्रता स्त्री को नहीं करना चाहिए। इसलिए मैं भी तुमको उपर्युक्त नियमों का पालन करने हेतु सदा सचेष्ट रहने के लिए उपदेश देता हूँ।।1।।

विष्णुर्वैश्वानरः साक्षी ब्राह्मण-ज्ञाति-बान्धवाः।

पञ्चमं ध्रुवमालोक्य स-साक्षि त्वं ममागताः।।2।।

हे देवि ! तुम्हारे साथ इस मेरे विवाह में भगवान् विष्णु, अग्नि, ब्राह्मणगण,

बन्धु-बान्धव और पांचवें ध्रुव नक्षत्र साक्षी के रूप में हैं। इनके साक्षित्व में आज से तुम मेरी पत्नी हुई हो।। 2।।

तव चित्तं मम चित्तं वाचा वाच्यं न लोपयेत्।

व्रते मे सर्वदा देयं हृदयं स्वं वरानने !।।3।।

हे वरानने ! तुम इस समय से अपना चित्त मेरे चित्त के अनुसार रखना और हमारी उचित आज्ञा का उल्लङ्घन नहीं करना। तथा मैं जो कुछ भी तुमसे कहूं, उसे अपने मन में ही रखना और मेरे नियम के अनुकूल अपने हृदय को रखना।।3।।

मम तुष्टिश्च कर्तव्या वन्धूनां भक्तिरादरात्।

ममाऽऽज्ञा परिपाल्यैषा पातिव्रतपरायणे !।।4।।

हे पतिव्रते ! तुम्हारा परम कर्तव्य है कि, जिस प्रकार मुझे सन्तोष हो, उसी प्रकार कार्य करना और भाई-बन्धुओं के विषय में आदरपूर्वक भक्तिभाव रखना, एवं सदा मेरे आदेश का पालन करना।। 4।।

विना पत्नी कथं धर्म आश्रमाणां प्रवर्त्तते।

तस्मात् त्वं मम विश्वस्ता भव वामाङ्गामिनी।।5।।

हे सुमुखि ! पत्नी के बिना गृहस्थाश्राम धर्म का पालन नहीं हो सकता, अतः तुम मेरी विश्वासपात्र वामाङ्गी एवं सहधर्मिणी बनो। इन पांचों श्लोकों को वर अथवा उसके आचार्य कहें।। 5।।

वरकृत अभिषेक

तत्पश्चात् अग्नि के पीछे बैठकर वर दृढ़ पुरुष के कन्धे पर रखे कलश-जल को लेकर आम के पल्लवों से **ॐ आपः शिवाः शितमाः शान्ताः शान्ततमास्तास्ते कृण्वन्तु भेषजम्।** मन्त्र पढ़कर वधू के मस्तक पर छिड़के। पुनः उसी कलश के जल से **ॐ आपो हिष्ठा मयोभुवस्ता न ऽऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे।। 1।। ॐ यो वः शिवतमो रसस्तस्य भजयतेह नः। उशतीरिव मातरः।। 2।। ॐ तस्मा ऽअरङ्गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः।।3।।** तीन ऋचाओं द्वारा अपने ऊपर जल का सिंचन करे।

दिवालग्न में सूर्यदर्शन

इसके बाद यदि दिन का लग्न हो, तो वर वधू से **'सूर्यमुदीक्षस्व'** ऐसा कहे और **ॐ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतꣳ शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्।।** मन्त्र का पाठ करे।

रात्रिलग्न में ध्रुवदर्शन

यदि रात्रि का लग्न हो, तो वर वधू से **'ध्रुवमुदीक्षस्व'** ऐसा कहकर **ॐ ध्रुवमसि ध्रुवं त्वा पश्यामि ध्रुवैषि पोष्ये मयि मह्यं त्वा ऽअदात्। बृहस्पतिर्मया पत्या प्रजावती सञ्जीव शरदः शतम्।।** मन्त्र पढ़े।

हृदयालम्भन

तदनन्तर वर वधू के दाहिने कन्धे से अपना हाथ ले जाकर **ॐ मम व्रते ते हृदयं दधामि। मम चित्तमनुचित्तं ते ऽअस्तु। मम वाचमेकमना जुषस्व। प्रजापतिष्ट्वा नियुनक्तु मह्यम्।** मन्त्र उच्चारण कर उसके हृदय का स्पर्श करे।

सिन्दूरदान

पुनः वर अपनी अनामिका अंगुली को वधू के मस्तक पर रखकर **ॐ सुमङ्गलीरियं वधूरिमा समेत पश्यत। सौभाग्यमस्यै दत्वा याथाऽस्तं विपरेत न।।** मन्त्र पढ़कर वधू के मांग में सिन्दूर भरे। तथा वधू को अपने बायें भाग में बैठावे। एवं उपस्थित चार सौभाग्यवती स्त्रियां वधू के मांग में **'अखण्ड सौभाग्यवती भव'** कहकर भलीभांति सिन्दूर लगावें। इसी को सिन्दूर बहोरना कहते हैं।

ग्रन्थिबन्धन

तदनन्तर वर-कन्या का ग्रन्थिबन्धन आचार्य **ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाऽऽप्नोति दक्षिणाम्। दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते।।** मन्त्र पढ़कर करें। पश्चात् वर-वधू दोनों कोहवर में जाकर लाल बैल के चमड़े पर या कुशासन पर **ॐ इह गावो निषीदन्त्विहाश्वा ऽइह पूरुषाः। इह सहस्त्रदक्षिणो यज्ञऽइह पूषा निषीदन्तु।।** मन्त्र पढ़कर बैठ जायें।

स्विष्टकृद्धोम

पुनः 'दोनों ही मण्डप में आकर कुश से ब्रह्मा का स्पर्श करते हुए **'ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा'** से एक आहुति देकर **'इदमग्नये स्विष्टकृते न मम'** कहकर प्रोक्षणी पात्र में स्रुवावशिष्ट घृत को प्रक्षेप करे। तथा प्रोक्षणी में छोड़े हुए घृत का प्राशन करें और आचमन करे। **'ॐ सुमित्रिया नआपऽओषधयः सन्तु'** इस मन्त्र को पढ़कर प्रणीता पात्र के जल को कुशा द्वारा अपने शिर पर छिड़कता हुआ उन कुशों को अग्नि में छोड़ दे।

तदनन्तर वर दाहिने हाथ में जल लेकर **ॐ अद्य कृतैतद्-विवाह-होमकर्मणि कृताऽकृतावेक्षणरूपकर्मप्रतिष्ठार्थम् इदं पूर्णपात्रं स-दक्षिणाकं प्रजापतिदैवतम् अमुकगोत्रायाऽमुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।।** संकल्प पढ़कर पूर्णपात्र

ब्रह्मा को प्रदान करे और ब्रह्मा भी **'स्वस्ति'** ऐसा कह दें। इसी प्रकार संकल्प द्वारा आचार्य को भी दक्षिणा दे।

पुनः कुशनिर्मित ब्रह्मा की ग्रन्थी को खोल दे, तथा **ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः। इति न्युब्जीकरणम्। तत उपयमनकुशैर्मार्जयेत्।** इस मन्त्र से प्रणीता पात्र को उलट दे। उपयमन कुशा से **ॐ आपः शिवाः शिवतमाः शान्ताः शान्ततमास्तास्ते कृण्वन्तु भेषजम्।** मन्त्र पढ़कर प्रणीतापात्र से गिरे हुए जल से मार्जन कर उपयमन कुशाओं को अग्नि में प्रक्षेप कर दे।

त्र्यायुषकरण

तदनन्तर स्रुवा से भस्म लेकर अनामिका अंगुलि से **'ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः' इति ललाटे। 'ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषम्' इति ग्रीवायाम्। 'ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषम्' इति दक्षिणबाहुमूले। 'ॐतन्नो अस्तु त्र्यायुषम्'** मन्त्र पढ़कर ललाट, ग्रीवा, दक्षिण बाहुमूल एवं हृदय में लगाये। उसी प्रकार वधू को भी भस्म लगाये। यहां विशेषता यह है कि, 'तन्नो अस्तु' के स्थान पर 'तत्ते अस्तु' ऐसा कहे।

अभिषेक

इसके बाद दृढ़ पुरुष के कन्धे से घड़े का जल लेकर आम्रपल्लव द्वारा आचार्य **गणाधिपो रविर्विधुः धरासुतो बुधो गुरुः कविः शनिर्विधुन्तुदश्च केतुरित्यमी ग्रहाः। धराम्बुतेजसस्तथा सुगामरालयौ सदा दिने बिने प्रतिक्षणं भवन्तु मङ्गलाय वः।।1।। अजो-ऽज-युग्म-कर्कटे सुतुण्डकन्यका तुला परे तथाऽलि-चाप-नक्र-कुम्भ-मीनराशयः। जया च भद्रसंज्ञिका तु पूर्णरिक्तनन्दिका दिने दिने प्रतिक्षणं भवन्तु मङ्गलाय वः।।2।। अशेष-लेख-रञ्जिनी सुरारिदर्प-गञ्जिनी निशुम्भ-शुम्भ-भञ्जिनी धराधरेन्द्र-नन्दिनी। समस्त-जाड्य-खण्डिनी नितान्त-लोकमण्डिनी दिने दिने प्रतिक्षणं भवन्तु मङ्गलाय वः।। गजासनः खगासनः प्रफुल्ल-पङ्कजासनो हुताशनः शरासनो हरेस्तु पन्नागासनः। वृषासनः सुरासनः सुरारिदर्पनाशनो दिने दिने प्रतिक्षणं भवन्तु मङ्गलाय वः।।4।। प्रयाग-पुष्कर-प्रभास-बिन्दु-मानसादयो-ऽविमुक्त-युक्त-कोशलामला गया त्ववन्तिका। पुरी मधोश्च नैमिषास्य दर्दरश्च कान्तिका दिने दिने प्रतिक्षणं भवन्तु मङ्गलाय वः।।5।। वसिष्ठ-वामदेव-धौम्य-नारदा-ऽत्रि-अङ्गिरा- स्त्वगस्त्य-शक्ति-कौशिकाऽसिताः सनन्दनादयः। शुकोऽथ कण्व-बालखिल्य-याज्ञवल्क्य-कश्यपाः दिने दिने प्रतिक्षणं भवन्तु मङ्गलाय वः।।6।। पृथुः पुरूरवा नृगो दधीचिरिन्द्रहारको भगीरथो तमध्रुवांशुमान् सहस्त्रबाहवः। रघुर्नलो ययाति-धुन्धुमार-सव्यसाचिनो दिने**

दिने प्रतिक्षणं भवन्तु मङ्गलाय वः।।7।। वियन्नदी सरस्वती कलिन्द-नन्दिनी सई शशिप्रभा च गण्डकी च गोमती ककुद्मती। असी च वामतो हि नर्मदा च सप्तसागराः दिने दिने प्रतिक्षणं भवन्तु मङ्गलाय वः।।8।। सरस्वती रमा सती ह्यरुन्धती महीसुता पृथा सुदक्षिणा शकुन्तला च द्रौपदी क्षमा दिने दिने प्रतिक्षणं भवन्तु मङ्गलाय वः।।9।। हिमालयः सुरालयास्तथा च शङ्करालयो महेन्द्र-विन्ध्य-ऋष्य-मूक-कूट-मन्दरादयः। सुबेल-गन्धमादनोदयाद्रि-भूधराश्च ये दिने दिने -प्रतिक्षणं भवन्तु मङ्गलाय वः।।10।। युधिष्ठिरोऽथ विक्रमार्क-शालिवाहनो नृपो विदूरथो-ऽभिनन्दनो-ऽर्जुनश्च नागयुक् सदा। इमे च कल्किसंयुताश्च षट् शकप्रवर्तकाः दिने दिने प्रतिक्षणं भवन्तु मङ्गलाय वः।।11।। अथर्व-ऋग्-यजूंषि सामसंज्ञकोष्टसिद्धयः प्रमत्त-दिग्गजा बलि-र्महेन्द्र-वाहनादयः। वटोऽक्षयश्च केतुकल्प-भूरूहादि-भूरुहा दिने दिने प्रतिक्षणं भवन्तु मङ्गलाय वः।।12।। बाहर श्लोकों को पढ़कर वर-वधू दोनों का मार्जन करें।

इस प्रकार आचार्य वर-वधू को अभिषिंचित कर **'स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः'** अथवा **'स्वस्तिस्तु या विनाशाख्या.'** मन्त्र एवं श्लोकों को पढ़कर वर का तिलक लगाये।

वर-वधु द्वारा गणेश पूजन

तत्पश्चात् वर **'सुमुखश्चैकदन्तश्च.'** इत्यादि मंगल श्लोकों को पढ़कर हाथ में जल लेकर 'देशकालौ सङ्कीर्त्य.' 'पूजनं करिष्ये' संकल्प पढ़कर यथाविहित सामग्री से मण्डपस्थ गणेशादि देवों का पूजन करे।

वर पुनः हाथ में जल लेकर **'अद्य कृतैतद्-विवाहकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थम् आचार्याय मनसोद्दिष्टां दक्षिणां तथा तन्मध्ये न्यूनातिरिक्तदोष-परिहारार्थं नानानामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो भूयसीं दक्षिणां विभज्य दातुमहमुत्सृजे।'** संकल्प पढ़कर आचार्य-दक्षिणा तथा उपस्थित ब्राह्मणों को भूयसी दक्षिणा दे।

इसके पश्चात वर **प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्। स्मरणादेव तद्-विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः।।1।। यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपो-यज्ञ-क्रियादिषु। न्यूनं सम्पूर्णतां यातु सद्यो वन्दे तमच्युतम्।।2।।** दो श्लोक पढ़कर देवताओं को नमस्कार करते हुए **'ॐ विष्णवे नमः, ॐ विष्णवे नमः, ॐ विष्णवे नमः।'** ऐसे तीन बार कहकरभगवान् विष्णु की प्रार्थना करे।

चतुर्थी कर्म

तदनन्तर विवाह के चौथे दिन, वर-वधू दोनों स्नान कर पूर्वाभिमुख आसन पर

बैठकर आचमन एवं प्राणायाम करके **'ॐ अपवित्रः पवित्रो वा.'** मन्त्र से अपने ऊपर तथा पूजन-सामग्री पर जल छिड़क कर हाथ में अक्षत, पुष्प लेकर **'आ नो भद्रा.'** इत्यादि माङ्गलिक मन्त्रों को पढ़कर हाथ में जल लेकर **'देशकालौ सङ्कीर्त्य, गोत्रः शर्मा सपत्नीकोऽहं मम अस्याः भार्यायाः सोम-गन्धर्वा-ऽग्न्युपभुक्तदोष-परिहारद्वारा विवाहाच्चतुर्थ्यामपररात्रे चतुर्थीकर्म करिष्ये।'** संकल्प-वाक्य उच्चारण कर जल को भूमि पर छोड़ दे। पुनः हाथ में जल लेकर **'अस्मिन् चतुर्थी कर्मणि पञ्चभूसंस्कारपूर्वकमग्निस्थापनं करिष्ये'** तक संकल्प-वाक्य पढ़कर अग्निस्थापन का सङ्कल्प करे।

अग्निस्थापन का क्रम इस प्रकार है-एक हाथ चौकोरे वेदी का निर्माण कर, उसे कुशा से संमार्जित कर, गोबर-मिश्रित जल से लीपकर स्रुवा से उस पर तीन रेखाकार, अनामिका और अंगूठे से उन तीनों रेखाओं से कुछ मिट्टी निकाल कर बाहर फेंक दे, पुनः जल छिड़क कर **'ॐ अग्निदूतं पुरो दधे हव्यवाहमुप ब्रुवे। देवाँ।।2।। आसादयादिह।।'** इस मन्त्र से वेदी पर अग्नि-स्थापन करे।

पुनः वर हाथ में जल एवं वरण-सामग्री लेकर **देश-कालौ सङ्कीर्त्य, अस्यां रात्रौ कर्तव्यचतुर्थीहोमकर्मणि कृता-ऽकृता-ऽवेक्षणरूप-ब्रह्मकर्मकर्तुम् अमुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणम् एभिः पुष्प-चन्दन-ताम्बूल-वासोभिर्ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे।'** संकल्प पढ़कर ब्रह्मा का वरण करे। तथा वरण-सामग्री उनको दे दे। ब्रह्मा भी, **'वृतोऽस्मि'** ऐसा कह दें। पुनः वर ब्रह्मा से **'यथाविहितं कर्म कुरु'** ऐसा कहे। ब्रह्मा भी, **'यथाज्ञानं करवाणि'** इस प्रकार कहें।

तत्पश्चात् दक्षिण की ओर ब्रह्मा को स्थापित कर, उसके उत्तर भाग में जलपूर्ण घट को स्थापित करे। उसके बाद वेदी पर चरु (चावल) पकावे, तथा कुशकण्डिका कर **'ॐ प्रजापतये स्वाहा, इदं प्रजापतये न मम। ॐ इन्द्राय स्वाहा, इदं इन्द्राय न मम। ॐ अग्नये स्वाहा, इदमग्नये न मम। ॐ सोमाय स्वहा, इदं सोमाय न मम।'** आधार और आज्यभाग संज्ञक इन देवों की घृत से आहुति करें।

इसके बाद **ॐ अग्ने प्रायश्चिते त्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि ब्राह्मणस्त्वा नाथकाम उपधावामि याऽस्यै पतिघ्नी तनुस्तामस्यै नाशय स्वाहा। इदमग्नये न मम।।1।। उदपात्रे त्यागः। ॐ वायो प्रायश्चित्ते त्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि ब्राह्मणस्त्वा नाथकाम उपधावामि याऽस्यै प्रजाघ्नी तनुस्तामस्यै नाशय स्वाहा। इदं वायवे न मम।।2।। (उदपात्रे त्यागः) ॐ सूर्यप्रायश्चित्ते त्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि ब्राह्मणस्त्वा नाथकाम उपधावामि याऽस्यै पशुघ्नी तनूस्तामस्यै नाशय स्वाहा। इदं सूर्याय न मम।।3।। (उदपात्रे त्यागः) ॐ चन्द्र प्रायश्चित्ते**

त्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि ब्राह्मणस्त्वा नाथकाम उपधावामि याऽस्यै गृहघ्नी तनूस्तामस्यै नाशय स्वाहा। इदं चन्द्रमसे न मम।।4।। (उदपात्रे त्यागः)। ॐ गन्धर्व प्रायश्चित्ते त्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि ब्राह्मणस्त्वा नाथकाम उपधावामि याऽस्यै यशोघ्नी तनूस्तामस्यै नाशय स्वाहा। इदं गन्धर्वाय न मम।।5।। पांच मन्त्र पढ़कर प्रायश्चित्त संज्ञक पांच देवों के लिए घी से हवन कर जलपात्र में **'न मम'** कहकर स्रुवा से बचे हुए घृत का प्रक्षेप करे।

तदनन्तर स्थालीपाक (धृतमिश्रित पके हुए चावल), एक कसोरे में थोड़ा निकाल कर **'ॐ प्रजापतये स्वाहा'** कहकर स्थालीपाक से हवन कर **'इदं प्रजापतये न मम'** कह स्रुवा से बचे हुए घृत का प्रोक्षणीपात्र में परित्याग कर कसोरे में रखे हुए अवशिष्ट चावल का खड़े होकर कुशा ले ब्रह्मा का स्पर्श करते हुए, **'ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा'** पढ़कर अग्नि में आहुति देकर **'इदमग्नये स्विष्टकृते न मम'** कहकर स्रुवा से बचे हुए घृत को प्रोक्षणीपात्र में प्रक्षेप करे।

तत्पश्चात् **तत आज्येन भूरादिनवाहुतीर्दद्यात्। ॐ भूः स्वाहा। इदमग्नये न मम।।1।। ॐ भुवः स्वाहा। इदं वायवे न मम।।2।। ॐ स्वः स्वाहा। इदं सूर्याय न मम।।3।। ॐ त्वं नो अग्ने वरुणस्य विद्वान्देवस्य हेडो अवयासिसीष्ठाः। यजिष्ठो बह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषाँ सि प्रमुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा। इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम।।4।। ॐ स त्वं नो अग्नेवमो भवोतीनेदिष्ठो अस्या 'उपसो व्युष्टौ। अवयक्ष्व नो वरुणꣳ रराणो वीहि मृडीकꣳ सुहवो न एधि स्वाहा। इदमग्नीवरुणभ्यां न मम।।5।। ॐ अयाश्चाग्नेस्यनभिशस्ति याश्च सत्यमित्वमया असि अयानो यज्ञं वहास्ययानो धेहि भेषजꣳ स्वाहा। इदमग्नये अयसे न मम।।6।। ॐ ये ते शतं वरुणं ये सहस्त्रियं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः। तेभिर्न्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा। इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भयः स्वर्केभ्यश्च न मम।।7।। ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमं श्रथाय। अथा वयमादित्य व्रते तावनागसो अदितये स्याम स्वाहा। इदं वरुणायाऽऽदित्यायादितये न मम।।8।। ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये न मम।।9।।** पर्यन्त बोल कर घृत से नव आहुति देवे और **'इदं न मम'** कहकर स्रुवावशिष्ट घृत को प्रोक्षणीपात्र में छोड़ दे।

पुन 'प्रोक्षणीपात्रस्थ घृत को अनामिका और अंगुष्ठ से सूंघकर, आचमन कर **'ॐ सुमित्रिया न.'** इस मन्त्र से प्रोक्षणीपात्रस्थित कुशा से अपने को मार्जन करते हुए उन कुशाओं को अग्नि में छोड़ दे।

पुनः वर हाथ में जल लेकर **देशकाल** का उच्चारण करते हुए, **'अस्यां रात्रौ कृतैतच्चतुर्थीहोमकर्मणोऽङ्गतया विहितं पूर्णपात्रमिदं प्रजापतिदैवतममुकगोत्रायाऽमुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।'** कहकर ब्रह्मा को पूर्णपात्र प्रदान करे। ब्रह्मा भी, **'ॐ स्वस्ति'** ऐसा कह दे। तथा **'ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः।।'** यह मन्त्र पढ़कर ईशान कोण में प्रणीतापात्र को उलट दे।

ॐ या ते पतिघ्नी प्रजाघ्नी पशुघ्नी गृहघ्नी यशोघ्नी निन्दिता तनूर्जारघ्नी तत एनां करोमि सा जीर्य्यत्वं मया सह।। मंत्र पढ़कर वधू के मस्तक का सिञ्चन करें।

ॐ प्राणैस्ते प्राणान् सन्दधामि।।1।। ॐ अस्थिभिरस्थीनि सन्दधामि।।2।। ॐ मांसैस्ते मांसानि सन्दधामि।।3।। ॐ त्वचा ते त्वचं सन्दधामि ।।4।। मंत्र पढ़कर प्रत्येक मन्त्र के बाद चार बार वधू को स्थाली पाक के चरु का बधू को प्राशन कराये (खिलावे) उसी प्रकार बधू भी बर को इन चार मन्त्रों को पढ़कर चार बार खिलाये।

उसके बाद वर वधू का हृदय छूकर निम्न मंत्र पढ़े -

ॐ यत्ते सुशीम हृदयं दिवि चन्द्रमसि स्थितम्। वेदाहं तन्मां तद्-विदद्यात्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः ७ श्रृणुयाम शरदः शतम्।।

तत्पश्चात् देशाचार के अनुसार परस्पर एक दूसरे का कङ्गन देवताओं के सामने खोलकर, पुरोहित स्रुवा से भस्म लेकर **'ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः'** से **'यद्देवेषु त्र्यायुषम्'** पर्यन्त मन्त्र उच्चारण कर वर-वधू के ललाट दक्षिण बाहु मूल एवं ग्रीवा में लगावे। पुनः वर सङ्कल्पपूर्वक उपस्थित ब्राह्मणों को भूयसी दक्षिणा प्रदान करे। और उनसे आशीर्वाद ले। बाद में **'प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्.'** तथा **'यस्य स्मृत्या च नामोक्तया.'** इन दो श्लोकों को पढ़कर **'ॐ विष्णवे नमः'** ॐ विष्णवे नमः ॐ विष्णवे नमः कहकर भगवान् विष्णु को प्रणाम करे।

इति

विवाह संस्कार पूर्ण।

अन्त्येष्टि संस्कार

मृत्यु समय निकट देखकर पुत्र अथवा सम्बन्धी लोग भक्ति का उपदेश, भगवान के नामों का उच्चारण, गायत्री मंत्र का जाप, ॐकार का जाप, गंगा, राम, कृष्ण का स्मरण करवायें या जिसकी मृत्यु निकट आ गयी हो उसे गीता, विष्णु सहस्त्र नाम, गंगा सहस्त्रनाम का पाठ सुनावें जिससे अन्तकाल में प्राणी भगवान के नाम को स्मरण अथवा श्रवण कर मुक्त हो सके। प्राण प्रयाण के समय मृतक के मुख में गंगाजल, तुलसीदल, सुवर्ण अथवा पंचरत्न भी देना चाहिये इस समय कुटुम्बीजन जमीन गोबर से लीपकर तिल बिखेर देवे कुशा डालकर उसके ऊपर ऊर्णवस्त्र बिछाकर उसके ऊपर मरणासन्न व्यक्ति को लिटा देवे। यदि सुवर्ण न हो तो सुवर्ण के अभाव में मुख में घृत की बूंद भी दे सकते हैं।

दशदान

पुत्र पिता या माता की मृत्यु निकट जानकर उससे पहले दश दान शान्ति हेतु इस ग्रन्थ के चतुर्थ खण्ड में विभिन्न दान संकल्प प्रकरण में पदत्त संकल्पों से दशदान एवं गोदान संकल्प पूर्वक करा देवे।

गोभूतिल हिरण्याज्यवासोधान्य गुडानिच।
रौप्यं लवणमित्याहु दशदानानि पण्डिताः।।

विष्णु देवता के निमित भूमि-**भूमि सर्वाश्रया च या वराहेण समुद्धृता।**
अनन्त पुण्य फलदा शान्तिदानात्प्रच्छतु।।

पुनः विष्णु देवता के लिए तिल-**महर्षे गोत्र सम्भूताः कश्यपस्य तिला स्मृता।**
तस्मादेषां प्रदानेन सर्वपापं व्यपोहतु।।

अग्निदेवता के लिए सोना-**हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसो।**
अनन्तं पुण्यं फलदमतः शान्ति प्रयच्छ मे।।

विष्णु देवता के लिए घी-**कामधेनु समुद्भूतं सर्व यज्ञेषु संस्थितम्।।**
देवनामाज्यमाहारोदानेनास्या सुखं स्थिरम्।।
शीतवातोष्णसंत्राणं लज्जाया रक्षकं परम्।
देहालंकरणं वस्त्रं दानेनास्यास्तु मे सुखम्।।

प्रजापति के लिए धान्य-**सर्वदेवमयं धान्यं सर्वोत्पत्ति करं परम्।**
प्राणिनांजीवनोपायो दानादस्य सुखं मम।।

सोम देवता के लिए गुड़-**गुडमिक्षुरसोद्भूतं मंत्राणां प्रणवोयथा।**
दानेनास्य सदाशान्तिर्भवत्वीश प्रसाादतः।।

चन्द्रदेवता के लिए रौप्य-**रजतः प्रीतिश्च पितॄणां विष्णुशंकरयोस्तथा।**
शिवनेत्रेतद्भवरौप्यमस्य दानेन मे सुखम्।।

सोमदेवता के लिए नमक-**यस्मादन्ये रसाः सर्वे नोत्कृष्टाः लवणं बिना।**
सोमः प्रीतिकरा यस्माद्दानेनास्य सदा सुखम्।।

गोदान-धेनुदान-पाप धेनुदान, ऋण धेनुदान, प्रायाश्चित्त धेनुदान तथा वैतरणी धेनु दान चार गाय दान पुत्र, पिता माता से करवाये। मरण समय उक्त पापों को दूर करने के लिए इन धेनुदान को करे, धेनु के अभाव में यथाशक्ति गाय का मूल्य रखकर मुंह पूर्व या उत्तर की ओर कर पृथक्-पृथक् संकल्प करें-1-पापधेनुदान-पाप धेनवे नमः सम्पूज्य श्वेत गाय का पूजन कर ब्राह्मण का पूजन कर लेवे। फिर संकल्प करें-अद्येत्यादि0 अमुकोऽहं मम सर्व क्षय पाप पूर्वकं स्वर्गलोकावाप्तये इमां सुपूजितां श्वेतां गां रुद्र दैवतां वा तन्निष्क्रयीभूतद्रव्यं चन्द्रादिदैवतं अमुकगोत्राय अमुकशर्म्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यं सम्प्रददे नमम।

पुनः गाय की प्रार्थना करे-**आजन्मोपार्जितं पापं मनोवाक् कायकर्मभिः।**
तत्सर्वनाशमायातु पापधेनुप्रदानतः।।

2-ऋण धेनुदान-ऋण धेनवे नमः सम्पूज्य। रक्त गौ का पूजन कर फिर ब्राह्मण पूजन कर संकल्प करे-**अद्येत्यादि. अमुकोऽहं अनेकजन्मार्जितपापप्रशमन पूर्वकसद्गतिप्राप्तये सूपूजितामिमाऋणधेनुरक्तांब्रह्मदैवतां अमुकगोत्राय अमुक शर्म्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यं सम्प्रददे।**

पुनः प्रार्थना- **ऐहिकामुष्मिकं यच्च सप्तजन्मार्जितं मम।**
विजयं तदॄणं यातु गामेतां प्रदतो मम।।

3-प्रायश्चित धेनुदान-प्रायश्चित धेनवे नमः-गाय का पूजन कर ब्राह्मण का पूजन कर लेवें। पुनः संकल्प-**अद्येत्यादि अमुकोऽहं सप्तजन्मार्जितज्ञाताज्ञात अनेकविधप्रायश्चित्तोपयोगीसमस्तदुरितदूरीकरणीपूर्वकसद्गतिप्राप्तये इमां सुपूजितां प्रायश्चित्तधेनुम् अमुक गोत्रया अमुक शर्म्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यं सम्प्रददे।**

प्रार्थना-**प्रायश्चित्ते समुत्पन्ने निष्कृतिर्न कृता मया।**
सर्वपाप शान्त्यर्थं धेनुर्येषार्पिता मया।।

4- वैतरणी धेनुदान-वैतरणी धेनवे नमः-कृष्ण गाय का पूजन कर ब्राह्मण का पूजन करे।

पुनः संकल्प-**अद्येत्यादि. अमुकोऽहं ममजन्मजन्मान्तर्जितपापापनोदन पूर्वकशतयोजनविस्तृर्णां वैतरणीनदीं तर्तुकामाय सुपूजितां वैतरणीय-धेनुमिमां यमराजदेवतां अमुकगोत्राय अमुकशर्म्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यं सम्प्रददे।**

प्रार्थना- **यमद्वारे पथे घोरे घोरां वैतरणीनदीम्।**

तर्तुकामः प्रयच्छामि कृष्णां वैतरणीं चगाम्।।

मोक्ष धेनुदानम्-गो पूजन-आवाहन-

आवाहयाम्यहं देवीं गां त्वां त्रयलोक्यमातरम्।
यस्या स्मरणमात्रेण सर्वपापैः प्रमुच्यते।।1।।
त्वं देवी त्वं जगन्माता त्वमेवासि वसुन्धरा।
गायत्री त्वं च सावित्री गंगा त्वं च सरस्वती।।2।।
तृणानि भक्ष्यसे नित्यं अमृतं स्त्रवसे प्रभो।
भूतप्रेत पिशाचांश्च पितृदेवर्षि मानुषान्।।3।।
सर्वास्तारयते देवीनरकात्पापसंकटात्।।

गाय का पूजन गन्ध, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, दक्षिणा से कर ब्राह्मण पूजन कर. फिर संकल्प करें-**अद्येत्यादि. अमुकोऽहं मम ज्ञाताज्ञात मनोवाक्काय कर्मजन्य पाप प्रशमन पूर्वकं मुक्ति हेतवे सुपूजितां कपिलां मोक्षधेनुमिमां रुद्रदेवतां मोक्षप्राप्तये अमुकगोत्राय अमुकब्राह्माणाय तुभ्यं सम्प्रददे।**

प्रार्थना- **मोक्षं देहि जगन्नाथ! मोक्षं देहि जनार्दनः।**
मोक्षधेनुप्रदानेन श्री विष्णुः प्रीयतां मम।।

प्राण प्रयाणान्तर-पिता आदि की मृत्यु के बाद कर्मकर्ता दक्षिण मुख हो मुण्डन करावे, स्नान कर शुद्ध सफेद वस्त्र पहन लेवे तथा मृतक के शरीर को शुद्ध जल या गंगाजल से स्नान करा वस्त्र पहनाकर गोपीचन्दन का तिलक तथा शरीर में सुगन्धित द्रव्य लगाकर पुष्पों की माला पहना देवे। अरथी बनाकर पैर आगे, सिर पीछे रख अरथी उठाकर श्मशान के लिए प्रस्थान करे।

पिण्डदान-जौ के आटे में तिल घी मिलाकर गंगाजल से राधकर छः पिण्ड बना लेवें। पहला पिण्ड मृतक स्थान में अपसव्य होकर जल तिलकुश सहित (स्थान पिण्ड) देवें ब्राह्मण संकल्प कहे -1. **अद्य अमुकगोत्रः शवनामप्रेतमृतस्थाने एष ते पिण्डो मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।** पिण्ड को कर्मकर्ता मृतक के हाथ में अंगूठे की ओर से देवें पिण्ड के ऊपर तिल और जल डाल दें। तिलकुश जल सब पिण्डों के साथ रखकर संकल्प करें।

2. **द्वार पिण्ड-अद्यामुकगोत्रः अमुक प्रेतद्वार देशे पान्थनिमित्त एषते पिण्डो मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।**

पहले जैसे ही पिण्ड मृतक के हाथ में रखकर तिल जल छोड़ दें।

3. **चौराहे पर-अद्य अमुक गोत्रः अमुकप्रेतचत्वरे खेचर निमित्त एष ते पिण्डो मयादीयते तपोपतिष्ठताम्।**

पूर्ववत् पिण्ड के ऊपर तिलजल छोड़कर रख देवें।

4. विश्राम स्थान पर या जहां से श्मशान नजर आए-**अद्य अमुक गोत्रः अमुकप्रेत विश्रान्तो भूतनाम्ना एषते पिण्डो मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।।**

मृतक के हाथ में पिण्ड रखकर तिल जल डाल देवे।। यहां से मृतक की अरथी का सिर बदल देवें अर्थात् मृतक का सिर आगे और पैर पीछे कर दें। श्मशान में चिता वनाकर-5. पांचवा पिण्ड मुर्दे को चिता में रखकर दें। संकल्प-**अद्यामुकगोत्रः साधकनामप्रेतः एषः चित्रगुप्तदैवतः चितापिण्डस्ते मयादीयते तवोपतिष्ठताम्।** 6. कर्मकर्ता शव के दक्षिण में बैठकर पूर्ववत् संकल्प लेकर पिण्ड को शव के हाथ (या अस्थि संचय के समय) में दे-**अद्येत्यादि अमुकगोत्रः अमुकप्रेतशवहस्ते प्रेतदेवतो एषपिण्डो मयादीयते तवोपतिष्ठताम्।।**

पुनः अवनेजन (जल तिल) पिण्ड पर डाल दें। पश्चात् शव के मस्तक की दूसरी तरफ भूमि को शुद्ध कर पंच भू संस्कार कर क्रव्यादान नाम से अग्नि को जलावें पूजन कर निम्न आहुति देवें -

ॐ लोमेभ्यः स्वाहा।।1।। **ॐ त्वग्भ्यः स्वाहा।।2।।**

ॐ लोहिताय स्वाहा।।3।। **ॐ मेदेभ्यः स्वाहा।।4।।**

ॐ मांसेभ्य स्वाहा।।5।। **ॐ स्नायुभ्यः स्वाहा।।6।।**

ॐ अस्थिभ्यः स्वाहा।।7।। **ॐ मज्जाभ्यः स्वाहा।।8।।**

ॐ रेतसे स्वाहा।।9।। **ॐ पायवै स्वाहा।।10।।**

ॐ आयासाय स्वाहा।।11।। **ॐ प्रायासाय स्वाहा।।12।।**

ॐ संयासाय स्वाहा।।13।। **ॐ वियासाय स्वाहा।।14।।**

ॐ उद्यासाय स्वाहा।।15।। **ॐ शुचे स्वाहा।।16।।**

ॐ शोचते स्वाहा।।17।। **ॐ शोचमानाय स्वाहा।।18।।**

ॐ शोकाय स्वाहा।।19।। **ॐ तपसे स्वाहा।।20।।**

ॐ तप्यते स्वाहा।।21।। ॐ तप्यमानाय स्वाहा।।22।।

ॐ तप्ताय स्वाहा।।23।। ॐ धर्म्माय स्वाहा।।24।।

ॐ निष्कृत्यै स्वाहा।।25।। ॐ प्रायश्चित्यै स्वाहा।।26।।

ॐ भेषजाय स्वाहा।।27।। ॐ यमाय स्वाहा।।28।।

ॐ अन्तकाय स्वाहा।।29।। ॐ मृतवे स्वाहा।।30।।

ॐ ब्रह्मणे स्वाहा।।31।। ॐ ब्रह्महत्यायै स्वाहा।।32।।

ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा।।33।।ॐ द्यावापृथिभ्यां स्वाहा।।34।।

हवन के बाद जलती हुई अग्नि हाथ में लेकर मुंह दक्षिण रख ये मंत्र कहें -

ॐकृत्वासुदुष्कृतं कर्म जानता वाप्यजानता।
मृत्यु कालवशं प्राप्य नर पंचत्वमागतः।।
धर्माधर्मसमायुक्तः लोभमोहसमावृतः।
देहेयं सर्वगात्रणि दिव्यान् लोकान् सगच्छतु।।

हाथ की अग्नि को लेकर चिता की परिक्रमा कर सिर की तरफ से चिता में अग्नि लगा देवे।

कपाल क्रिया-शव के अर्धदग्ध होने पर कर्मकर्ता बांस के डंडे से कपाल बेधन कर घी को उसमें डाले शव पूर्ण जल जाने पर सब लोग जलाशय नदी में स्नान करें। चाहे तो स्नान के पूर्व कर्मकर्ता अस्थि संचय करे चिता को गो दुग्ध से ठंडी कर अस्थि संचय करना श्रेष्ठ है कोई लोग अस्थिसंचय के निमित्त एकोद्दिष्ट समान श्राद्ध भी करते हैं।

यह भी मत है कि यदि दाह गंगा या उसकी सहायक नदियों में किया हो तो अस्थि संचय न करें क्योंकि गंगा तो सबको पवित्र करने वाली है।

अस्थि संचय कर्म-प्रथम दिन से दस दिन के अन्दर मृतक की अस्थियों को गंगा आदि तीर्थों में छोड़ दे। चिता भस्म को ठंडी होने के बाद पहले या तीसरे दिन एक मटकी या ताम्बे के बर्तन को शुद्ध कर ले, अपसव्य होकर कर्मकर्ता अनामिका अगुष्ठ से मृतक की अस्थियों को चुने (छठवां पिण्ड पहले न दिया हो तो दे देवें)। पिण्ड देकर अस्थियों को गंगाजल व दूध से धोकर कलश में रखें, रेशमी वस्त्र से ढककर तीर्थ में भेजने की व्यवस्था करें अथवा बाद में भेजना हो तो अस्थि कलश को सुरक्षित स्थान में रख देवें।

पुनः चिता की भस्म को बहाकर अन्य लोग (पुत्र आदि बान्धव) दक्षिण मुखकर मुण्डन कर लें। अर्थि ले जाने वाले स्नान कर दक्षिणमुख कर अपसव्य हो (सगोत्री)

तिलाञ्जलि दें-ॐ **अद्यामुकगोत्रामुकप्रेततच्चिता दाहोपशमनार्थ एणा तिलतोयाञ्जलिस्ते मयादीयते तवोपतिष्ठताम्।।**

पुनः घर के लिए प्रस्थान करे अर्ध मार्ग में कांटे को रखकर उसका उलंघन करे घर में गोमूत्र आदि का स्पर्श कर अन्य सम्बन्धी अपने घर जायें, कर्मकर्ता ब्रह्मचर्य हो एक समय भोजन कर पृथ्वी पर सोये। दशगात्र में गरुड़ पुराण की कथा श्रवण करें जिससे मृतक की आत्मा को शांति पहुंचे।

कर्मकर्ता घर आकर नीम के पत्ते दांतों से काटे ऐसा भी प्रचलन है। सायंकाल मृतक स्थान में बारहवें दिन तक दीपक जलावें।

दशगात्र विधि-दशगात्र की सामग्री लेकर ग्राम के बाहर पीपल वृक्ष के पास नदी तालाब के समीप श्राद्ध भूमि बनाकर पिण्डदान की व्यवस्था कर कर्मकर्ता शिखा खोलकर स्नान के लिए संकल्प करें। अपसव्य हो कुश तिल जल हाथ में रखें-

अद्येत्यादि अमुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य (स्त्री हो तो) गोत्रायाः प्रेतायाः ऐसा हर जगह संकल्प में कहें) **प्रेतत्वनिवृत्तये उत्तमलोकप्राप्त्यर्थं च करिष्यमाण प्रथमदिनकृत्यर्थं (जितना दिन हो वैसा कहे) स्नानमहं करिष्ये।** स्नान के बाद तिलाञ्जलि देवें-**अद्येत्यादि. अमुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य चितादाहजनिततापशमनार्थं प्रथमदिनसमन्धि एष तिलतोयाञ्जलिर्मयादीयते तवोपतिष्ठताम्।**

(तिलतोय अंजलि दश दिन तक प्रत्येक दिन एक एक अंजली बढ़ाकर देवें) अंजलि के पश्चात् चतुर्दश यम तर्पण, कर देवें।

चतुर्दश यम तर्पण-ॐ यमाय नमः 3 ॐ धर्मराजाय नमः 3 ॐ मृत्युवे नमः 3 ॐ अन्तकाय नमः 3 ॐ वैवश्वताय नमः 3 ॐ कालाय नमः 3 ॐ सर्वभूतक्षयाय नमः 3 ॐ औदुम्बराय नमः 3 ॐ दध्नाय नमः 3 ॐ नीलाय नमः 3 ॐ परमेष्ठिने नमः 3 ॐ वृकोदराय

नमः 3 ॐ चित्राय नमः 3 ॐ चित्रगुप्ताय नमः 3 इस प्रकार अपसव्य हो कुशतिल सहित यम तर्पण देवें।

चितानल विधि-यह कार्य प्रथम दिन से दश दिन तक का है। जहां पिण्ड देना हो वहां भूमि लेपन कर यव का चूर्ण लेकर उसमें तिल डालकर पिण्ड बना देवे यह कार्य चतुर्थ दिन से दशम दिन तक करना है, यदि चौथा दिन हो तो चार अथवा जितने दिन मृतक के हो गये हो उतने ही पिण्ड का निर्माण करे। सिर्फ दसवें दिन उड़द की दाल के चूर्ण का पिण्ड बनाना।

घण्ट दीप-यथा सम्भव पीपल वृक्ष की शाखा पर शरीर की संकल्पना करते हुए जल पूर्ण मिट्टी का घड़ा लटका कर घड़े में नीचे छिद्र कर ऐसी व्यवस्था करे, जिससे जल बूंद-बूंद टपकता रहे। घट के ऊपर दीपक स्थापित करें। अथवा त्रिकाष्ट के ऊपर घट को स्थापित कर उसमें दूध और जल डाल दें-जिसकी जल धारा नीचे रखे चीता भष्म अथवा कुश के बनाये प्रेत पर बूँ-बूँद पड़ती रहे-

घट पूजन- **अकामेतु निरालम्बो वायुभूत निराश्रय।**
प्रेतघंटो मयादत्तस्तवैष उपतिष्ठताम्।।
चितानल प्रदग्धोऽसि परित्यक्तोऽसिबान्धवैः।
इदं नीरमिदं क्षीरं अत्र स्नाहि इदं पिब।।

प्रेत स्थापित करने के लिए पूर्व से पश्चिम दिशा में वेदी बनायें। कर्मकर्ता कुशा के आसन पर बैठे, कर्मकर्ता के ब्राह्मण गंगा की मिट्टी से ललाट, हृदय, नाभि, कंठ, पृष्ठ, दोनों भुजा पीठ, दोनों कानों, मस्तक पर तिलक लगा लेवें। ब्राह्मण मंत्र भी बोले।

तिलकं च महत्पुण्यं पवित्रं पापनाशनम्।
आपदां हरते नित्यं ललाटे हरिचन्दनम्।।

अव कर्मकर्ता दो कुशा की पवित्री दाहिने हाथ की अनामिका तथा तीन कुशा की पवित्री बायें हाथ की अनामिका में पहन लें। नीवी बन्धन कर ले शिखा तथा आसन में भी कुशा रख ले, आचमन शिखाबन्धन प्राणायाम कर बांये हाथ में जल लेकर **ॐ अपवित्रः0** मन्त्र से शरीर में छीटें देवें-

भूमि पूजन अव जल लेकर कर्मकर्ता श्राद्ध हेतु संकल्प करें-

देशकालौ सङ्कीर्त्य अमुकवासरे अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य प्रेतत्व विमुक्तये सद्गतिप्राप्त्यर्थे प्रथमदिवसादारम्य दशमाह्निक-श्राद्धमहं करिष्ये।

चितानल पूजन हेतु संकल्प करे- **अद्येत्यादि. अमुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य चितादाहोपशमनार्थं प्रेतत्वविमुक्तये दशगात्रनिष्पत्यर्थंञ्च प्रथमदिन सम्बन्धि रौरवनामनरकोत्तारणाय विष्णुस्वरूपचितानलपूजनं करिष्ये।।**

कर्मकर्ता पूर्व मुंह हो हाथ जोड़ के पितृगायत्री का स्मरण करे-

ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च।
नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमोनमः।।

अपसव्य होकर बांया घुटना मोड़कर दातुन हाथ में लेकर दक्षिण मुंह हो घड़े में डाल दें-**ॐ अद्यामुकगोत्रामुकप्रेतशौचार्थे प्रथमदिनसम्बन्धितदन्तधावनं काष्ठमेतन्मयादीयते तवोपतिष्ठताम्।**

थोड़ी मिट्टी भी घड़े में छोड़ दें। सव्य होकर चितानल का पूजन कर दें-**विष्णुस्वरूप-चितानलाय नमः गन्धाक्षतं पुष्पाणि धूपदीपनैवेद्यं दक्षिणा च समर्पयामि। ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधानिदधे पदम्। समूढमस्य पा ँ सुरे स्वाहा। विष्णवे नमः।**

पूजन कर प्रार्थना कर दें-**ॐ अनादि निधनो देव शंखचक्र गदाधरः।**
अक्षय पुण्डरीकाक्ष प्रेतमोक्ष प्रदोभव।।
ॐ अयोध्या मथुरा माया काशी काञ्ची अवन्तिका।
पुरी द्वारावती ज्ञेया सप्तैता मोक्ष दायिकाः।।

प्रार्थना कर अपसव्य होकर दक्षिण मुख कर बांया घुटना टेककर तिल जल से घड़े के ऊपर तर्पण दें- **ॐ यमाय नमः 3 ॐ धर्मराजाय नमः 3 ॐ मृत्युवे नमः 3 ॐ अन्तकाय नमः 3 ॐ वैवस्वताय नमः3 ॐ कालाय नमः 3 सर्वभूतक्षयाय नमः 3 ॐ औदुम्बराय नमः 3 दध्ने नमः 3 ॐ नीलाय नमः 3 ॐ परमेष्ठिने नमः 3 ॐ वृकोदराय नमः3 ॐ चित्राय नमः 3 ॐ चित्रगुप्ताय नमः 3।।** चितानल पूजन कर पिण्ड बेदी के पास आ जाये।

पिण्डदान (मलिनषोडशी)

प्रेत शरीर पिण्ड निर्माण प्रक्रिया के दौरान 10 दिन के अशौचकाल में जो पिण्डदान/श्राद्ध कर्म अनिवार्यतः किये जाते है, वह मलिन षोडशी के अन्तर्गत किया जाता है। वह सभी मृतकों के लिए अनिवार्य है। इसी के द्वारा प्रेत के पिण्ड निर्माण के दश गात्र के रूप में सम्पूर्ण दश पिण्ड से पिण्ड शरीर निर्माण को सम्पन्न कराये। कर्म पात्र स्थापित कर उसमें जल दूध आदि निम्नलिखित मन्त्रों से छोड़े।

जल-**ॐ शन्नोदेवि रभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये शंयोरभिस्त्रवन्तु नः।**

दूध-**ॐ पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्।।**

तिल-**ॐ तिलोसि सोमदैवत्यो गोसवो देव निर्मितः। प्रत्नमद्भि पृक्तः स्वधयापितृलोकान्प्रीणाहि नः।।**

यव- **ॐ यवोऽसियवयास्मद्द्वेशोयवयारातीः**

कुश-ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यो सवितुर्वः प्रसवः।। उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुनेतच्छकेयम्।।

कुशा से जल को हिला लेवे-**ॐ यद्देवादेवहेडनं देवाशश्चकृमाव्ययम्।**
अग्निर्मा तस्मादेनसो विश्वान् मुञ्चत्वँ हसः।।1।।
यदि दिवा यदिनक्तमेनांसि च कृमा वयम्।
वायुर्मा तस्मादेनसो विश्वान मुञ्चत्वँ हसः।।2।।
यदि जाग्रद्यपि स्वप्न एनांसि च कृमा वयम्।
सूर्यो मा तस्मादेनसो विश्वान मुञ्चत्वंँहसः।।3।।

इस जल से कुशा के द्वारा सब सामग्री पर छीटा देकर संकल्प करें, तिल जल कुशा हाथ में लेवें।

अद्येत्यादि. अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य प्रेतत्वविमुक्तये प्रथमदिन सम्बन्धि रौरवनाम नरकोत्तारणाय मूर्धावयवनिष्पत्यै शिरः पूरक पिण्ड दानंकरिष्ये।

अपसव्य होकर बांये पैर को जमीन पर टेक कर दक्षिण मुंह हो तिल जल हाथ में लेकर संकल्प करे- **अद्यामुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य प्रथमदिनसम्बन्धि शिरः पूरक पिण्डस्थाने इदमासनं मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।**

प्रेत के लिए एक कुश पर गांठ बांध कर प्रेत को स्थापित करे-

गतोऽसि दिव्यलोकांस्त्वं कर्मणा प्राप्त सत्पथः।
मनसा वायु रूपेण कुशे त्वां विनियोजये।।

प्रेत के पैर धोने के लिए कर्म कर्ता जल तीन बार देवे-**एतत्ते पाद्यं पदावनेजनं पादयोः। पादप्रक्षालनम्।**

एक पत्ते में जल लेकर दूध, तिल, पुष्प से अर्घ्यपात्र बनाये कुशा की चट पर डालें। **अमुक गोत्रस्य अमुकप्रेतस्य इदं हस्तार्घ्यमुपतिष्ठताम्।**

स्नान के लिए जल चढ़ावें- **स्नानमुपतिष्ठताम्।।**

तीन सूत का तागा चढ़ावें-**एतत्ते वासः उपतिष्ठताम्।।**

ऊर्ण सूत्र चढ़ावे-**एतत्ते ऊर्णसूत्रः उपतिष्ठताम्।।**

तर्जनी अंगुली से चन्दन चढ़ावे-**चन्दनमुपतिष्ठाम्।।**

तिल अक्षत-**एतानि अक्षतानि उपतिष्ठताम्।।**

राल का धूप दे एवं दीप दिखावे-**एतत्ते धूपमुपतिष्ठाम्।**

एतत्ते दीपमुपतिष्ठाम्।।

नैवेद्य चढ़ा देवे- **नैवेद्यमुपतिष्ठताम्।**

दक्षिणा चढ़ा देवे- **दक्षिणामुपतिष्ठताम्।**

ताम्बूल चढ़ा देवे- **ताम्बूलमुपतिष्ठताम्।**

जल चढ़ा देवें- **पिण्डस्थाने अवनेजनं तवोपतिष्ठताम्।**

पहले दिन का पिण्ड तिल कुश जल के साथ हाथ में लेकर संकल्प-

अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य शिरः पूरकः एषः।
प्रथमदिवसीयः पिण्डोमयादीयते तवोपतिष्ठताम्।।

ऐसा कहकर अंगूठे की तरफ से पिण्ड को वेदी के कुश के ऊपर रख दें। फिर एक दोने में जल लेकर पिण्ड के ऊपर अंगूठे की ओर से जल धारा दें-

अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य तेऽवनेजनं मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।।

पिण्ड पूजन-पिण्ड के ऊपर पूजन के लिए निम्न सामग्री चढ़ा दे-

स्नानीय जल- **पिण्डोपरि स्नानीयजलं उपतिष्ठताम्।**

कार्पास सूत्र-**पिण्डिोपरि कार्पाससूत्रं उपतिष्ठताम्।**

ऊर्ण सूत्र- **पिण्डोपरि ऊर्णसूत्रंम् उपतिष्ठताम्।**

चन्दन- **पिण्डोपरि चन्दन उपतिष्ठताम्।**

तिलाक्षत- **पिण्डोपरि तिलाक्षतम् उपतिष्ठताम्।**

पुष्प- **पिण्डोपरि पुष्पम् उपतिष्ठताम्।**

भृंगराजपत्र- **पिण्डोपरि भृगराजम् दीयते तवोपतिष्ठताम्**

रालधूप- **पिण्डोपरि रालधूपमुपतिष्ठताम्।**

दीप- **दीपमुपतिष्ठताम्।**

नैवैद्य -**एतत्ते नैवेद्यमुपतिष्ठताम्।**

दक्षिणा- **दक्षिणाचोपतिष्ठाताम्।**

हल्दि- **चर्मपूरक हरिद्राग्रन्थिः तवोपतिष्ठताम्।**

मजीठ- **रक्तपूरितं मंजिष्ठा तवोपतिष्ठताम्।**

खस- **नासाजालोत्पादकं खशं तवोपतिष्ठताम्।**

कमलगट्टा-**षट्चक्रपूरकं कमलबीजं तवोपतिष्ठताम्।**

आंवला- **वीर्यपूरकधात्रीफलं तवोपतिष्ठताम्।**

शतावरी- **दन्तोत्पादकानिशतावरीमूलानि उपतिष्ठताम्।**

तिलतोय पात्र हाथ में लेकर निम्न मंत्र से पिण्ड के ऊपर देवे-

अमुकगोत्रः अमुकप्रेतः चितादाहजनितशतापतृषोपशमनाय प्रथमदिन-सम्बन्धित एतत् तिलतोयं मद्दतं तवोपतिष्ठताम्।

तिलतोयाञ्जलि प्रथम दिन एक-दूसरे दिन दो के क्रम से दें।

प्रार्थना- **ॐ अनादि निधनो देवः शंखचक्र गदाधरः।**
अक्षय पुण्डरीकाक्षः! प्रेतमोक्ष प्रदोभव।।
ॐ अतसी पुष्प संकाशं पीतवास समन्वितम्।
धर्मराज! नमस्तुभ्यं प्रेतमोक्षप्रदो भव।।

पिण्ड देकर कर्मकर्ता 'प्रेताप्यायनमस्तु' कहकर पिण्ड जल में डालकर स्नान कर ले और घर आकर स्वयं भोजन बनाकर तीन बलि अपसव्य होकर दक्षिणमुख हो देवे-

कागग्रास- **काकोसि यम दूतोसि गृहाण बलिमुत्तमाम्।**
ममद्वारगतं प्रेतं त्वमाप्यायितुमर्हसि।।

गोग्रास- **सौरभे या सर्वहिता पवित्रा पुण्यराशयः।**
प्रतिगृहणन्तु में ग्रासं गावस्त्रैलोक्य मातरः।।

श्वानग्रास- **द्वौ श्वानौ श्यामशबलौ वैवश्वतकुलोद्भवौ।।**
ताभ्यामन्नं प्रदास्यामि स्यातामेतावहिंसकौ।।

तीनों ग्रास देकर जल छोड़ दें। अब कमकर्ता स्वयं भी भोजन कर ले सायंकाल को मृतक के लिए एक दीप जलाकर कहे-**अद्यामुकगोत्रस्य अमुकनामप्रेतस्य प्रथमदिननिमित्त- प्रेतलोकादित्यवद् द्योतनकामः इमं दीपं विष्णु दैवतं न मम।।**

दीप देकर प्रार्थना करे-

ॐ शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं
विश्वाधारं गगन सदृशं मेघवर्ण शुभाङ्गम्।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यम्
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्।।

इस प्रकार प्रथम दिन का पिण्ड, चितानल पूजन पूर्ण हुआ, दसवें दिन तक इसी क्रम में पिण्ड दान देना है प्रत्येक दिन पिण्ड देने में असुविधा हो तो यह कार्य दशवें दिन ही किया जा सकता है, ऐसा विद्वानों का मत है। दूसरे दिन से शरीर पूरक तथा नरक तारण के लिए संकल्प अलग-अलग है। दूसरे दिन से दस दिन तक के संकल्प इस प्रकार है। अलग-अलग दे रहें है। जितना दिन हो उसका संकल्प पिण्डदान में कहे-

दूसरे दिन से दस दिन के पिण्डदान संकल्प

2. अद्यामुकगोत्रस्य अमुकनामप्रेतस्य द्वितीयदिने योनिपुंसनाम नरकोत्तारणाय चक्षुश्रोत्रनासिकासम्भूत्यै एषः पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।।

3. अद्यामुकगोत्रस्य अमुकनाम प्रेतस्य तृतीयदिने महारौरव नाम नरकोत्तारणाय भुजवक्षोग्रीवामुखावयव निष्पत्यर्थं एषः पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

4. अद्यामुकगोत्रस्य अमुकनामप्रेतस्य चतुर्थदिने तामिस्त्र नाम नरकोत्तारणाय उदरनाभि गुदवस्थि मेढ्‌च सम्भूत्यै एषः पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

5. अद्यामुकगोत्रस्य अमुकनामप्रेतस्य पंचमदिने अन्धतामिस्त्र नाम नरकोत्तारणाय गुल्फउरुजानुजंघाचरणसम्भूत्यै एषः पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

6. अद्यामुकगोत्रस्य अमुकनामप्रेतस्य षष्ठे दिने संभ्रमनामनरकोत्तारणाय सर्वमर्म सम्भूत्यै एषः पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

7. अद्यामुकगोत्रस्य अमुकनामप्रेतस्य सप्तमे दिने अमेढ्‌चक्रमीनाम नरकोत्तारणाय अस्थिमज्जाशिरा पूरणाय एषः पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

8. अद्यामुकगोत्रस्य अमुकनामप्रेतस्य अष्टमे दिने पुरीषभक्षणनामनरकोत्तारणाय नखदन्तरोमकेशपूर्णाय एषः पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

9. अद्यामुकगोत्रस्य अमुकनामप्रेतस्य नवमे दिने स्वमांसभक्षणनामनरकोत्तारणाय वीर्य्यपूर्णाय एषः पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

10. उड़द पिण्ड-अद्यामुकगोत्रस्य अमुकनामप्रेतस्य दशमे दिने कुम्भीपाकनामनरकोत्तारणाय क्षुत्पिपासापूर्णाय एषः पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

घट आदि का विसर्जन-दसवें दिन का कार्य पूर्ण होने पर दशगात्र के पहने हुए वस्त्र, यज्ञोपवीत कर्मकर्ता छोड़ कर नये वस्त्र पहन लें कुम्भ तथा वेदी, पिण्ड को जल में विसर्जन कर दे। अपने देशाचार द्वारा कर्मकर्ता पुनर्मुण्डन भी करा लेवे घर की शुद्धि भी कर दें दधि दुर्वा का स्पर्श करे तथा कर्म कर्ता ब्राह्मण हो तो अग्नि का, क्षत्रिय

हो तो वाहन या आयुध का, वैश्य हो तो सोने का, तथा शूद्र हो तो वृषभ का स्पर्श कर लें।

एकादशाह-शास्त्र प्रमाण के अनुसार एकादशाह को दम्पती पूजन, शय्यादान, गोदान, कुम्भदान, वृषोत्सर्ग करने के बाद एकादशाह का पिण्ड श्राद्ध करें। जैसे जिनके यहाँ प्रचलन हो वैसा भी करना श्रेयस्कर है। हम यहाँ पर निम्न प्रमाण के अनुसार एकादशाह कर्म लिख रहे हैं-**आदौ च दम्पती पूज्यौ शय्या देया ततः परम्।**

पश्चाच्च कपिला देया उद्कुम्भांस्तथैव च।।

वृषोत्सर्गस्ततः कार्यः पश्चादेकादशाहिकम्।।

एकादशाह के दिन कर्मकर्ता प्रातः काल उठकर स्नान कर एकादशाह की सामग्री रखकर पूर्व मुख या उत्तर मुख हो सव्य से द्विजदम्पती का पूजन करे हाथ में तिल जल कुश लेकर संकल्प करे-**अद्येत्यादि अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य प्रेतत्वनिवृत्तिपूर्वकं अक्षयस्वर्गप्राप्तर्थं द्विजदम्पत्योः पूजनमहं करिष्ये**। द्विज दम्पति के अभाव में कुश वट का पूजन कर ले गन्ध अक्षत पुष्प धूप दीपक नैवद्य तथा दक्षिणा भी चढ़ा देवे।

शय्यादान-प्रेत के लिए उपयुक्त शय्या दक्षिण उत्तर रख शिर की तरफ कुम्भ रख दें, आभूषण आदि रखकर चतुर्मुख दीप जला देवें शय्या के ऊपर सप्तधान्य रख उसकें ऊपर सुवर्ण की प्रतिमा (कांचन पुरुष) को पंचामृत से धोकर स्थापित कर दें शय्या के ऊपर सुवर्ण (कांचन पुरुष) की प्रतिमा का पूजन कर तथा चारों दिशाओं का पूजन कर परिक्रमा करें पूजन कुश वट ब्राह्मण का भी करके तिलकुश जल हाथ में लेकर संकल्प करे-**अद्येत्यादि अमुकगोत्रस्य अमुकनामप्रेतस्य सकलनरकयातना शीतादिबाधा याम्य पुरुष प्रहार निवृत्ति पूर्वक अनेकानेककल्पान्तपुरन्दरादि सकललोकप्रात्यर्थं घृतकुंभजलकलशताम्बूलदीपिकापादुकाछत्र आसनचामरनानाविधिभोजनसुवर्णाभूणणाऊर्णकार्पासवस्त्र हैममयकांचनपुरुषप्रतिमायुतामिमां शय्याप्रजापतिदैवतां युवाभ्यां सम्प्रददे।**

दक्षिणा संकल्प-**अद्यकृतस्य शय्यादानस्य प्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं इदं निष्क्रय द्रव्यं वा युवाभ्यां सम्प्रददे।**

प्रार्थना- **प्रेतस्य प्रतिमा सैषा विष्णुसानिध्यदायिनी।**
स्यातामस्याः प्रदानेन सन्तुष्टौ द्विजदम्पती।।

।। इति शय्यादान।।

कपिलादान-गाय के लिए स्वर्णसींग, चांदी के खुर, ताम्र पीठ, कांस्य पात्र दुहने के लिए, माला आदि रख संकल्प करे-**अद्येत्यादि अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य प्रेतत्वनिवृत्तिपूर्वकतदङ्गत्वेन गवादिपूजनं च करिष्ये**। गो का पूजन गन्ध अक्षत

वस्त्र फूल धूप दीप से कर नैवेद्य देवें गाय का मुंह धो दे, दक्षिणा भी देवे पूजन कर कुश तिल जल हाथ में लेकर संकल्प करे-**अद्येत्यादि. अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य प्रेतत्वनिवृत्तिपूर्वकउत्तमलोकप्राप्तर्थं इमां कपिलागां रुद्रदैवतां यथालंकारैः अलंकृतां यथानामगोत्राय अमुकशर्म्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यं सम्प्रददे।।**

प्रतिष्ठा देकर गाय की प्रार्थना भी कर लें-

कपिले सर्व देवानां पूजनीयासि रोहिणी।
अर्थधेनुमयी यस्माद्दत्तः शान्ति प्रयच्छ मे।।

गाय ब्राह्मण को देकर कर्मकर्त्ता गाय की परिक्रमा कर लें।

उदकुम्भदान-जितने दिन वर्ष में होते हैं उतने घड़े जल के और अधिक मास वर्ष के अन्दर आ जाय तो तीस घट अधिक रख, घट का पूजन गन्ध, अक्षत, पुष्प से कर के तथा इस संख्या के बराबर दीप दान तथा दन्त धावन को रखकर पूर्व मुख ब्राह्मण का पूजन कर संकल्प करें-**अद्येत्यादि. अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य मरण-दिनमारभ्य तिथिवृद्धिचान्द्रमानेन संवत्सरपूर्तिपर्यन्तं जायमान प्रात्यहिक क्षुतपिपासानिवृत्यर्थं षष्ठ्यधिकत्रिंशतसंख्याकान् सान्तान् सदीपान् सदन्तधावनान् उद्कुम्भान् ब्राह्मणाय दास्ये।**

वृषोत्सर्ग-प्रायः आजकल एक आध ही लोग वृषोत्सर्ग करते है तथापि क्रिया का लोप न हो इसलिए वृषोत्सर्ग क्रिया वर्णित है। वृषोत्सर्ग में बछड़ा बछड़ी का पूजन कर त्याग करने का विधान है। यदि न हो सके तो मेनफल को ही नाला बांधकर कुशा लपेट कर सात फेरे करवाकर सूर्य चन्द्रमा की पूजा कर दें। विद्वानों ने वृषोत्सर्ग से पूर्व ग्रहशान्ति विधान के अनुसार गणपति का पूजन करने का विधान बताया है। विस्तृत विधि श्राद्ध विवेक प्रेत मञ्जरी के अनुसार करावें। अतः गणपति पूजन[1] स्मरण कर के तिलकुशजल लेकर यह संकल्प करे-**अद्येत्यादि. अमुकमासे अमुकपक्षे तिथौ वासरे अमुकगोत्रस्य अमुकनामप्रेतस्य विमुक्तिपूर्वकाक्षयस्वर्गलोक प्राप्तिकामः एकादशेऽहनि वृषोत्सर्ग कर्माहं करिष्ये।**

नारायण बलि (मध्यमषोडशी)

मध्यमषोडशी नारायण बलि का अंग है। यह षोडशी अपमृत्यु की स्थिति (महामारी, संदिश, दुर्घटनामृत्यु, पञ्चकमृत्यु, आत्महत्या में षोडशी की जाती रही है किन्तु आजकल जिनके लिए नारायण बलि अपेक्षित नहीं है उनके लिए आजकल की प्रक्रिया

1. गणपति पूजन सामान्य पूजन विधि में दिया गया है।

में **'शतार्धिमेलयेत'** इस वाक्य के अनुसार कहीं-कहीं सभी के लिए मध्यम षोडशी कराई जा रही है।

ग्यारहवें दिन कर्मकर्ता स्नान कर शुद्ध वस्त्र पहनकर श्राद्ध भूमि को गोबर से लीप कर मध्यमषोडशी के लिए वेदी का निर्माण कर तिल के तेल से दीपक जलाकर पूर्व मुख हो कुश पवित्री धारण कर के आचमन प्राणायाम कर ले। कर्मपात्र में जलभर गन्ध, पुष्प, जौ, तीन कुशा उसमें डालकर बाँये हाथ में जल लेकर दाहिनें हाथ की अनामिका अंगुष्ठ से उसको हिलावे।

शेष कृत्य प्रेतमञ्जरी श्राद्धविवेक के अनुसार सम्पादित करें।

उत्तम षोडशी

यह कर्म पन्द्रहवे दिन से लेकर वार्षिक श्राद्ध तक का है परन्तु वर्ष भर के बन्धन अथवा मनुष्य की अनेक प्रकार की परेशानियों को देखते हुए पूर्वाह्ण में यह श्राद्ध द्वादश दिन को करने का भी विधान मानते हैं।

15वे दिन पाक्षिक, 30वे दिन मासिक, 45वें दिन त्रैपाक्षिक, 60वें दिन द्विमासिक, 90वें दिन त्रिमासिक, 120वें दिन चतुर्थ मासिक, 150वें दिन पञ्चमासिक, 165वें दिन उनृषाण्मासिक, 180वें दिन षाण्मासिक, 210वें दिन सप्त मासिक, 240वें दिन अष्टम मासिक, 270वें दिन नवम मासिक, 300वें दिन दशममासिक, 330वें दिन एकादशमासिक, 345वें दिन उनाब्दिक, 360वें दिन एक तन्त्रेण[1] भी किया जाता है।

कर्मकर्ता श्राद्ध के लिए भूमि साफ कर पूर्व में विष्णु भगवान की पूजा के लिए वेदी बनाकर उसके ऊपर तीन कुशाओं में गाँठ लगाकर विष्णु भगवान की कल्पना करे, घी का दीपक भी जला दें। एक बड़ी वेदी बनाकर 16 चट स्थापित करे प्रेत के लिए वेदी बनाकर (दक्षिण में) तेल का दीपक भी जला दे पिण्ड के लिए खीर की व्यवस्था कर पूजन, सामग्री रख श्राद्ध कर्म प्रारम्भ करे-

आचमन प्राणायम कर बायें हाथ में जल ले दक्षिण व बाँये हाथों में पवित्री पहन कर अनामिका अंगुठा से **ॐ अपवित्रः0** मंत्र द्वारा जल अभिमंत्रित करे-

आसन, शिखा में कुशा रख कर्मकर्ता बाँये हाथ में कुशा सुपारी पैसा रख भूमि का पूजन करें-

श्राद्धस्थलभूम्यै नमः। भगवते गयायै नमः। भगवते गदाधराय नमः।

---

1. एक तन्त्रेण संकल्प पूर्वक करें।

तिल सरसों दिशाओं में बिखरे दे-

ॐ नमो नमस्ते गोविन्द! पुराण पुरुषोत्तम !।
इदं श्राद्धं ऋषिकेश ! रक्षतां सर्वतो दिशः।।

दीपक को भी गंध अक्षत-चढ़ाकर ब्राह्मण का भी पूजन कर ले-

नमोस्त्वनंताय सहस्त्रमूर्तये सहस्त्रपादाक्षशिरोरुवाहवे
सहस्त्रनाम्ने पुरुषाय सास्वते सहस्त्रकोटीयुगधारिणे नमः।।

ब्राह्मण भी कर्मकर्ता को तिलक कर दे।

कर्मकर्ता अपसव्य हो संकल्प करे-

अद्यामुकगोत्रस्य अमुकनामप्रेतस्य प्रेतत्वविमुक्तये सद्गति प्राप्तये अक्षयस्वर्गलोक गमनकामनया षोडशश्राद्धान्तर्गतपञ्चदशदिवसीयाद्य श्राद्धमारभ्यवार्षिकश्राद्धपर्यन्तं षोडशाहश्राद्धमहं करिष्ये।

सव्य हो पूर्व मुंह कर पितृगायत्री का स्मरण तीन बार करे-

देवताभ्यपितृभ्यश्च महायोगीभ्य एव च।
नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः।।

विष्णु भगवान का पूजन कर लेवें-

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्।
समूढमस्य पाꣳसुरे स्वाहा।।

भगवान विष्णु को गन्ध अक्षत पुष्प धूप दीप नैवेद्य दक्षिणा चढ़ा देवे। दक्षिण में प्रेत वेदी के ऊपर कुश रख प्रेत का आवाहन भी कर लें।

आवाहान

इहलोकं परित्यज्य गतोऽसि परमांगतिम्।
मनसावायु रूपेण चटेत्वाहं निमंत्रये।।

प्रेत पूजन हेतु अपसव्य होकर प्रार्थना करे-

अनादि निधनो देव शंखचक्र गदाधरः!।
अक्षयः पुण्डरीकाक्ष ! प्रेतमोक्षप्रदोभव।

अब कर्मकर्ता किसी ताम्र पात्र में जल दूध एवं कुशा डालकर कुशा से उन्हें हिलाता जाये।

मंत्र- **ॐ यद्देवा देव हेडनं देवासश्च कृमावयम्।**
आग्निर्मा तस्मादेनसो विश्वान् मुंचन्त्वꣳहसः।।1।।
ॐ यदि दिवा यदि नक्तमेनांꣳसिचकृमा वयम्।
वायुर्मा तस्मादेनसो विश्वान् मुंचन्त्वꣳहसः।।2।।
ॐ यदि जाग्रद्यदि स्वप्न एनांसि चकृमा वयम्।
सूर्यो मा तस्मादेनसो विश्वान् मुंचत्वꣳहसः।।3।।

जब श्राद्ध सामग्री पर कुशा से जल के छींटे देवें-

स्वानादि दुष्ट दृष्टि निपातात् दूषितं पाकादि पूतंभवत्वित्युक्त्वा तेन पाकं प्रोक्षयेत्।।

16 टुकड़े कुशा के आसन हेतु हाथ में रख संकल्प करें-

ॐ अद्यामुकगोत्रस्य अमुकनामप्रेतस्य प्रेतत्वविमुक्तये अभीष्टलोकप्राप्तये उत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतश्राद्धे इदमासनं ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।।

कुश तिल जल के वेदी के ऊपर आसन के लिए छोड़ कुश आसनों को ऊपर तिल भी बिखेर दे-**ॐ अपहता असुरा रक्षाꣳसि वेदिषदः।।**

16 पत्तों के ऊपर जल रख अर्घ्य बना देवे-

ॐ शन्नो देवीरभिष्टयऽआपो भवनतु पीतये। शंयोरभि स्त्रवन्तुनः।। पत्ते के जल में तिल कुश मिलाकर संकल्प कहे-

अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य प्रेतत्वविमुक्तये उत्तमलोकावाप्तये एकादश श्राद्धे एषोऽर्घ्यस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।।

अंगूठे की तरफ से चटों के ऊपर जलधारा देवे। अर्घ्य पात्रों को उलट दें। जो पहले 16 कुश चट रखे थे उनका पूजन करै-चटो पर गन्ध, अक्षत, पुष्प, धूप, नैवेद्य, दीपक, ताम्बूल, अंगूठे की तरफ से चढ़ाकर संकल्प करें-

अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य प्रेतत्वविमुक्तये अभिष्टलोकावाप्तये एकादशाह श्राद्धादारभ्य द्वादशमासिकश्राद्धपर्यन्तं एकादशाहश्राद्धे मया गन्धादि दीयते तवोपतिष्ठताम्।। थोड़ा अन्न सब चटों के पास रख जल छोड़कर संकल्प करें-**अमुक-गोत्रस्यअमुकप्रेतस्य प्रेतत्वविमुक्तये अभीष्टलोकावाप्तये एकादशाहश्राद्धादारभ्य द्वादशमासिक श्राद्धपर्यन्तं एकादशाह श्राद्धे इदमन्नोदकं ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।।**

पिण्ड निर्माण पूजन

पिण्ड के आटे (या खीर) में घी, शहद, तिल मिलाकर विल्वफल के समान 16 पिण्ड बनाकर प्रथम पिण्ड (पाक्षिक) को अपसव्य हो (सब पिण्ड अपसव्य हो कर देने हैं।) तिल, जल, कुशा, हाथ में, रख संकल्प करें-**अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य आद्यश्राद्धे प्रथमपक्षनिमित्तं एष ते पिण्डो मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।।**

पिण्ड को अंगूठे की तरफ से वेदी पर आसन के ऊपर रख दूसरा पिण्ड लेवे-(तिल, कुश, जौ, जल, सब पिण्डों के साथ लें) **अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य प्रथममासिकश्राद्धनिमित्तः एवं द्वितीयः पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।।**

वेदी के कुशासन में पूर्ववत् रख तीसरा पिण्ड तिल, जौ, कुश, जल के साथ लेकर संकल्प करे-**अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य त्रिपाक्षिकश्रराद्ध निमित्तं एष पिडस्ते मयादीयते तवोपतिष्ठताम्।।**

पिण्ड को कुश आसन के ऊपर रख, जौ, तिल, जल, कुश के साथ चौथा पिण्ड हाथ में रख संकल्प करें-**अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य द्वितीयमासिकश्राद्ध निमित्तं एष पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।**

पिण्ड को वेदी के आसन पर रख, जौ, तिलकुश, जल सहित पांचवां पिण्ड हाथ में रख संकल्प करे-**अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य तृतीयमासिकश्राद्धनिमित्तं एष पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।**

पांचवे पिण्ड को वेदी के कुश आसन पर रख, छठवां पिण्ड, जौ, तिलकुश जल सहित हाथ में रख संकल्प करें-**अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य चतुर्थमासिकश्राद्ध निमित्तं एष पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।**

पूर्ववत् छठे आसन पर रख, जौ, तिल, कुश, जल सहित सातवां पिण्ड हाथ में रखा संकल्प करें-**अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य पंचममासिकश्राद्ध निमित्तं एषपिण्डस्तेमया दीयते तवोपतिष्ठताम्।**

पिण्ड को पूर्ववत् सातवें आसन पर रख आठवां पिण्ड जौ, तिल, कुश, जल के साथ हाथ में रख संकल्प करें-**अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य ऊनषाणमासिकश्राद्ध निमित्तं एषपिण्डस्तेमया दीयते तवोपतिष्ठताम्।**

आठवें पिण्ड को वेदी के आसन के ऊपर पूर्ववत् रख, नवां पिण्ड जौ, तिल, कुश, जल सहित हाथ में रख संकल्प करें-**अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य षाणमासिक श्राद्धनिमित्तं एषपिण्डस्तेमया दीयते तवोपतिष्ठताम्।**

नवां पिण्ड पूर्ववत् आसन पर रख, तिल, कुश, जल, जौ, सहित दशवां पिण्ड हाथ में रख संकल्प करे-**अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य सप्तममासिकश्राद्धनिमित्तं एष पिण्डस्तेमया दीयते तवोपतिष्ठताम्।**

दसवां पिण्ड आसन के ऊपर पूर्ववत्, रख, ग्यारहवां पिण्ड जौ, तिल, कुश, जल सहित हाथ में रख संकल्प करें- **अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य अष्टममासिकश्राद्ध निमित्तं एषपिण्डस्तेमया दीयते तवोपतिष्ठताम्।**

पिण्ड को आसन के ऊपर पूर्ववत् रख बारहवां पिण्ड जौ, तिल, जल, कुशा के साथ हाथ में रख संकल्प करें-**अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य नवममासिकश्राद्ध निमित्तं एषपिण्डस्तेमया दीयते तवोपतिष्ठताम्।**

बारहवें पिण्ड को आसन के ऊपर रख तेरहवां पिण्ड जौ, तिल, जल, कुश के साथ हाथ में रख संकल्प करें-**अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य दशममासिकश्राद्ध निमित्तं एषपिण्डस्तेमया दीयते तवोपतिष्ठताम्।**

पूर्ववत् तेरहवें पिण्ड को आसन के ऊपर रख, चौदहवां पिण्ड तिल, जौ, कुशा के साथ हाथ में रख संकल्प करें- **अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य एकादशमासिक श्राद्धनिमितं एषपिण्डस्तेमया दीयते तवोपतिष्ठताम्।**

पिण्ड को पूर्ववत् आसन के ऊपर रख, पन्द्रहवां पिण्ड तिल, जौ, कुश सहित हाथ में रख संकल्प करें-**अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य उनद्वादशमासिकश्राद्धनिमित्तं एषपिण्डस्तेमया दीयते तवोपतिष्ठताम्।**

पूर्ववत् पिण्ड को आसन के ऊपर रख, सोलहवां पिण्ड तिल, जल, जौ, कुश के साथ हाथ में रख संकल्प करें-**अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य द्वादशश्राद्धनिमित्तं एषपिण्डस्तेमया दीयते तवोपतिष्ठताम्।**

पूर्ववत् सोलहवें पिण्ड को आसन के ऊपर रख देवे। सव्य होकर अर्घ्यपात्र बनाकर निम्न मंत्र पढ़े-**ॐ या दिव्याऽ आपः पयसासंबभूवुर्य्या ऽआन्तरिक्षाऽ उत पार्थीवीर्याः हिरण्यवर्णा यज्ञियास्तान् ऽआपः शिवा सधं᳭स्योनाः सुहवा भवन्तु।।**

ऐसा पढ़ कर तीन कुश, जल, तिल अपसव्य हो अर्घ्य हाथ में लेकर संकल्प करें- **अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य आद्यादिद्वादशमासिक श्राद्धनिमित्तं षोडशापिण्डेषु एषते हस्तेर्घ्यो मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।।**

ऐसा कह अर्घ्यों को पिण्डों के ऊपर छोड़कर अर्घ्य पात्रों को उल्टा रख दें।

अवनेजन जल

एक दोने में तिल, जल, पुष्प, गन्ध रख संकल्प करें-**अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य प्रेतत्व विमुक्तये अभीष्टलोकप्राप्त्यर्थं षोडशश्राद्धान्तर्गत आद्यश्राद्धादारभ्य द्वादशमासिक श्राद्धपर्यन्तं षोडशपिण्डो परिप्रत्यवनेजन जलानि मयादीयते तवोपतिष्ठताम्।।** पिण्डों पर जल छोड़ दें-

पिण्ड पूजन

पिण्डेषु जलं मयादीयते तवोपतिष्ठताम्।। (जल)

पिण्डेषु वासांसि मयादीयते तवोपतिष्ठताम्।। (वस्त्र)

पिण्डेषु कार्पाससूत्रं मयादीयते तवोपतिष्ठताम्।। (सूत्र)

पिण्डेषु ऊर्णसूत्रं मयादीयते तवोपतिष्ठताम्।। (ऊर्णसूत्र)

पिण्डेषु गन्धं मयादीते तवोपतिष्ठताम्।। (गन्ध)

पिण्डेषु यवाक्षतं मयादीयते तवोपतिष्ठताम्।। (यव अक्षत)

पिण्डेषु पुष्पं मयादीयते तवोपतिष्ठताम्।। (पुष्पं)

पिण्डेषु भृंगराजपत्रं मयादीयते तवोपतिष्ठताम्।। (भृंगराज)

पिण्डेषु तुलसीदलं मयादीयते तवोपतिष्ठताम्।। (तुलसी)

पिण्डेषु धूपं मयादीयते तवोपतिष्ठताम्।। (धूप)

पिण्डेषु दीपं मयादीयते तवोपतिष्ठताम्।। (दीपक)

पिण्डेषु नैवेद्यं मयादीयते तवोपतिष्ठताम्।। (नैवेद्य)

पिण्डेषु ताम्बूलं मयादीयते तवोपतिष्ठताम्।। (ताम्बूल)

पिण्डेषु दक्षिणां मयादीयते तवोपतिष्ठताम्।। (दक्षिणा)

उपरोक्त सामग्री पिण्डों पर चढ़ाकर नीवी विसर्जन कर संकल्प करें-

अमुकगोत्रस्य अमुकप्रतेस्य आद्यादि षोडश
श्राद्ध पिण्डेषु यद्दतंगंधाद्यर्चनं तवोपतिष्ठताम्।।

ऐसा कह कर जल छोड़ दे। पुनः एक पत्ते पर जल रखें।

ॐ शिवा आपः सन्तु। पुष्प रखे- **सौमनस्य मस्तु।।** यव, तिल रखें- **अक्षतं चारिष्टं चास्तु।।** तिल, जल, कुशतीन हाथ में रख संकल्प करें-

ॐ अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य आद्यश्राद्धे यद्दत्तमन्नपानादिकं तदुपतिष्ठताम्।। ऐसा कहकर पत्ते के जल को पिण्डों पर छोड़ दें। कर्मकर्ता सव्य ही आचमन लेकर दक्षिणा संकल्प करें-

अमुक गोत्रस्य अमुकप्रेतस्य प्रेतत्वविमुक्तये कृतैतदाद्यादिद्वादश-मासिकान्तषोडशश्राद्धप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं इदं रजतं चन्द्रदैवतं अमुकगोत्राय अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय दक्षिणात्वेन दातुमहमुत्सृजे।। ब्राह्मण को दक्षिणा देकर प्रार्थना करें-

अनादिनिधनोदेवः शंखचक्रगदाधरः!।
अक्षयः पुण्डरीकाक्षः प्रेतमोक्ष प्रदोभव।।1।।
अतसीपुष्पसंकाशं पीतवाससमच्युतम्।
ये नमस्यन्ति गोविन्दं न तेषां विद्यते भयम्।।2।।
प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्।
स्मरणादेव तद्विष्णोः संपूर्ण स्यादिति श्रुतिः।।3।।

अपसव्य होकर दीपक बुझा देवें। देवता विसर्जन कर पिण्डों, चटो को जल में छोड़ दें।।

आश्वत्थ पूजन

पीपल के वृक्ष के पास जाकर संकल्प लेवे-

अद्येत्यादिमुकगोत्रोऽमुकशर्माहं सपरिवारस्य ममोत्तरणशुभफलप्राप्तर्थं तथाऽ मुकगोत्रस्यामुकशर्मणोऽस्मतपितुरऽक्षयतृप्तिकामनायै विष्णुस्वरुपस्य अश्वत्थस्य पूजनं षष्ट्यधिकशतत्रयसंख्याकजलकुम्भै अभिषेचनं च करिष्ये।।

पुष्प लेकर अश्वत्थ में विष्णु भगवान का ध्यान करें-

एकादशात्मक रुद्रोऽसि वसूनांच शिरोमणिः।
नारायणोऽसिदेवानां वृक्षराज नमोऽस्तु ते।।

पुष्प अर्पण कर तीन सूत के धागे से वेष्ठित कर तीन सौ साठ दन्त धावन देकर तीन सौ साठ बार पीपल को जल प्रदान कर गन्ध, अक्षत, पुष्प, धूप, दीपक, नैवेद्य, दक्षिणा, अर्पण कर प्रार्थना करें-

यं दृष्ट्वा मुच्यते रोगैः स्पृष्ट्वा पापैः प्रमुच्यते।
यदाश्रयाचिरंजीवी तमश्वत्थं नमाम्यहम्।।

सपिण्डन श्राद्ध

कलियुग में धर्म की अनित्यता, पुरुष की आयु कम होने से, शरीर के स्थिर न होने से विष्णु भगवान ने धर्म शास्त्र के अनुसार चारों वर्णों को बारहवें दिन सपिण्डन कहा है। द्वादशाह के दिन प्रातः स्नानादि नित्यक्रियाकर मध्याह्न में कर्मकर्ता श्वेतवस्त्र धारण कर श्राद्ध भूमि को गोबर से लीपकर कर्मपात्र को जल से भर उसमें गन्ध तिल पुष्प डालकर कुशा से हिला देवे-**ॐ अपवित्र0** मंत्र से अपने शरीर तथा श्राद्धवस्तु को छींटा देवे-**ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु।।**

श्राद्ध भूमि का पूजन कर लेवे-**ॐ भगवत्यैगयायै नमः।। ॐ भगवत्यै गदाधराय़ नमः।। ॐ श्राद्धस्थलभूम्यै नमः।।**

तीन कुश, तिल, जल हाथ में लेकर कर्मकर्ता संकल्प करें-**अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य प्रेतत्वनिवृत्तये सद्गतिप्राप्तर्थे सपिण्डीकरणश्राद्धमंहकरिष्ये।।**

पितृगायत्री स्मरण तीन बार करें-

ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्यएव च।
नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः।।

अपसव्य होकर दिशाओं में यव बिखेर दें-

ॐ नमो नमस्तेगोविन्द! पुराणपुरुषोत्तम!।
इदंश्राद्धं हृषीकेश! रक्षतां सर्वतो दिशः।।

कर्मकर्ता बायें कमर भाग में सुपारी, कुश, पैसा अंट में दबा ले, एक कुशा आसन पर तथा एक कुशा शिखा में रख बायें हाथ में तीन कुशा तथा दांयें हाथ में दो कुशा की पवित्री पहन कर-एक दोने में जल रख कुशा से हिला लेवें-

ॐ येद्दवा देवहेडनं देवासश्चकृमा वयम्।
अग्निर्मातस्मादेनसो विश्वान् मुञ्चत्वꣳहसः।।1।।
ॐ यदि दिवा यदि नक्ततमेनाꣳसिचकृमा वयम्।
वायुर्मा तस्मादेनसो विश्वान् मुञ्चवꣳहसः।।2।।
यदिजाग्रद्यदिस्वप्न एनासि चकृमा वयम्।
सूर्यो मातस्मादेनसो विश्वान् मुञ्चन्त्वꣳहसः।।3।।

जल के छीटे पाक सामग्री एवं पूजन सामग्री पर देवें-

ॐ उदक्यादि दुष्टदृष्टिपातात् शूद्रादि।
संपर्कदोषाच्च पाकादीनां पवित्रतास्तु।।

उत्तर मुंह कर कर्मकर्ता विश्वेदेवा के लिए आसन हेतु तीन कुश, जल, तिल ले संकल्प करें-

अद्यास्मत्पितामहादित्रयश्राद्धसंबधिनः कामकाल संज्ञकान् विश्वान्देवा-नावाहयिष्ये।। जल विश्वेदेवा वेदी में छोड़ यव बिखेर दें-

ॐ विश्वेदवा स ऽ आगत श्रुणुताम्ऽ इमꣳहवम्।
एदंवर्हिर्निषीदत।। ॐ यवोऽसियवयास्मद्वेषोयव यारातीः।।

विश्वेदेवा आवाहान

आगच्छतु महाभाग विश्वेदेवा महाबलाः।
ये यत्र विहिताः श्राद्धे सावधाना भवन्तु ते।।

एक पत्ते पर कुश, जल छोड़कर निम्न मंत्र पढ़े।

ॐ शन्नोदेवीरभिष्टय ऽ आपोभवतुपीतये। शंय्योरभिस्त्रवंतुनः।।

पत्ते पर जौ डाल दें-**ॐ यवो ऽसि यवयास्मद्वेषो यवयारातीः।।**

यव डालकर चुपचाप उसमें गन्ध पुष्प तुलसीदल भी डाल दे। कुश से अर्घ्यपात्र को अभिमंत्रित करे-

ॐ यादिव्याऽ आपः पयसासंबभूवुर्या ऽ आन्तरिक्षा ऽ उत पार्थिवीर्याः। हिरण्यवर्णा यज्ञियास्तानऽ आपः शिवाः शꣳस्योनाः सुहवा भवंतु।। अर्घ्यपात्र अभिमंत्रित कर दाहिने हाथ में तिल, जल, कुश लेकर-

ॐ अद्यास्मत्पितामहादित्रयश्राद्धसंबंधिनः कामकालसंज्ञका विश्वेदेवा एषवोहस्तार्घः स्वाहानमः।।

दाहिने हाथ से देवतीर्थ द्वारा अर्घ्य विश्वेदेवा को देवे। विश्वेदेवा को वस्त्र, गन्ध, अक्षत, पुष्प, धूप, दीपक, नैवेद्य, दक्षिणा आदि चढ़ाकर तीन कुश, जल एवं यव लेकर संकल्प करें-

ॐ अद्यास्मत् पितामहादि त्रयश्राद्ध संबधिनः कामकालसंज्ञकाविश्वेदेवाः एतानि गन्धपुष्प धूपदीप तांबूलयज्ञोपवीतवासांसि वो नमः।। अनेन पूजनेन विश्वेदेवा प्रीयन्ताम्।।

पित्रेश्वरों का आवाहन तिल बिखेर कर करें। पित्रों के लिए आसन दक्षिण में, प्रेत के लिए पश्चिम में वेदी के ऊपर आसन रखे। दक्षिण मुंह कर बायां घुटना मोड़ अपसव्य हो पत्ते पर दो कुश रख संकल्प बोले-**अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य सपिण्डीकंरण श्राद्धे इदमासनमुपतिष्ठताम्।।**

प्रेत के लिए आसन रख पितरों के लिए भी तीन आसन पत्ते पर तीन कुशा जल तिल हाथ में रख कहें-

1. **अमुकगोत्रस्य पितामहस्य अमुकशर्मणः वसुरूपस्य इदमासनं स्वधानमः।।**
2. **अमुकगोत्रस्य प्रपितामहस्य अमुकशर्मणो रुद्ररूपस्य इदमासनं स्वधा नमः।।**
3. **अमुकगोत्रस्य वृद्धप्रपितामहस्य अमुकशर्मण आदित्यस्वरूपस्य इदमासनं स्वधा नमः।।**

आसनों को दक्षिण की वेदी के ऊपर रख-पितरों का आवाहन करें-

ॐ उशन्तस्त्वानिधी मह्य सन्तः समिधीमहि।
अशन्नुशत आवह पितृन हविष अत्तवे।।

पितरों की वेदी के ऊपर तिल बिखेर दे-

ॐ आयन्तु नः पितरः सोम्यासो अग्निष्वाता पथिभिर्देवयानैः।
अस्मिन् यज्ञे स्वधया मदन्तौधिब्रुवन्तुतेऽवन्त्वस्मान्।।

अव प्रेत के लिए अर्घ्य बनावे-दोने पर-**शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये शंयोरभिस्त्रवन्तु नः।।** मंत्र से जल डालकर उसमें तिल, पुष्प, गन्ध भी छोड़े। अर्घ्य उठाकर तिल, जल, कुश हाथ में ले अपसव्य हो संकल्प करें-

अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य प्रेतत्व विमुक्तये सपिण्डीकरण श्राद्ध एषते हस्तार्घ्यो मयादीयते तवोपतिष्ठताम्।।

अर्घ्य पात्र से थोड़ा जल प्रेत कुश के ऊपर रख पितरों के लिए तीन अर्घ्य बनावे। **ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तुपीतये। शंयोरभिःस्त्रवन्तु नः।।** जल डालकर उसमें तिल, पुष्प, गन्ध, भी डालकर संकल्प करे-

अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य प्रेतत्वनिवृत्तिपूर्वकपितृत्वप्राप्तये पितामह-प्रपितामह-बृद्धप्रपितामह-अमुक शर्मन् सपिण्डिकरणश्राद्धे एष हस्तार्घ्यस्ते स्वधा।

ऐसा कहकर अंगूठे की तरफ से पितामह प्रपितामह बृद्धप्रपितामह को थोड़ा-थोड़ा जल दें। अब प्रेत पितरों के अर्घ्य मिलाने के लिए संकल्प कहें-

अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य प्रेतत्वनिवृत्यर्थं सद्गति प्राप्त्यर्थं तत्पितृपितामह प्रपिताहानामर्घ्यैः सह अर्घ्यसंयोजनं करिष्ये।।

प्रेत और पितरों के अर्घ्य को मिलाते हुए ये मंत्र बोले-

ये समानाः समनसोजीवा जीवेषु मामकाः।
तोषꣳश्रीर्मयी कल्पतामस्मिन् लोके शतꣳसमाः।।

प्रेत के अर्घ्यपात्र को उठाकर कुश से पितामह प्रपितामह, बृद्धप्रपिताह के अर्घ्यपात्र में जल छोड़ दें। प्रेत के अर्घ्य पात्र को प्रेत वेदी के पास उल्टा रख पितर वेदी के पास तीनों अर्घ्य पात्र को भी उल्टा कर रख दें। एक आचमन जल छोड़ दें।

अनेन अर्घसंयोजनेनप्रेतस्य सद्गत्युत्तम लोक प्राप्तिः।।

पिण्ड निर्माण

पकाये हुए चावलों में घी, तिल, शहद, गंगाजल मिलाकर, पुरुष सूक्त का स्मरण करते हुए पिण्ड बनावें-एक प्रेतपिण्ड लम्बा, पितरों के लिए तीन पिण्ड गोल, एक पिण्ड (विकर पिण्ड) छोटा। प्रेत वेदी पर एक कुशा गाँठ लगाकर प्रेत निमित्त रख, तीन कुशा इसी प्रकार पितर वेदी पर पितरों के निमित्त रख गन्धादि से पहले प्रेत का पूजन कर संकल्प करे-**अमुक गोत्रस्य अमेुकप्रेतस्य सपिण्डीकरणश्राद्धे एतानि गंधपुष्पधूपदीपताम्बूलयज्ञोपवीतवासांमि ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।।** पितरों का पूजन भी गंधादि से कर संकल्प करें।

अमुकगोत्रास्मत् पितामहप्रपिताहमबृद्धप्रपितामह अमुकशर्मन् एतानि गंधपुष्पधूपदीपताम्बूलयज्ञोपवीतवासांसितुभ्यं स्वधा।।

कर्म कर्ता कहे **पितृणामर्चनं सम्पूर्णमस्तु।**

अब कर्मकर्ता प्रेत आसन के दक्षिण की तरफ एक पत्ता रख विकिर पिण्ड को हाथ में रख वंश में जिनकी अकाल मृत्यु हो गई हो उनकी तृप्ति के लिए पिण्ड देते हुए कहे-

अग्नि दग्धाश्च ये जीवा येऽपयदग्धा कुले मम।।
भूमौ दत्तेन तृप्यन्तु तृप्ता यांतु परां गतिम्।।

अब चार पत्तों पर अर्घ्य बनावे उसमें कुशा के एक-एक टुकड़े डालकर जल भरें-

ॐशन्नों देवीरभिष्टय आपो भवन्तुपीतये। शंय्योरभिस्त्रवन्तु नः।। अर्घ्य पात्रों में पुष्प, गन्ध, तिल डालकर **'अर्घपात्रसंपत्तिरस्तु'** ऐसा कहे। एक अर्घ्यपात्र उठाकर अपसव्य होकर प्रेत के लिए संकल्प करे-**अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य अर्घ्येऽवनेजनं मयादीयते तवोपतिष्ठताम्।।**

ऐसा कहकर अर्घ्य को प्रेत के आसन के ऊपर रख अर्घ्य के जल को प्रेत के आसन के पास रख दे। दूसरा अर्घ्य उठाकर संकल्प बोले-

अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य सपिण्डीकरण श्राद्ध निमित्तक अमुकगोत्र पितामह-अमुकशर्माणं पिण्डस्थाने कुशोपरिअर्घावनेजनं निक्षिप्यते स्वधा।

ऐसा कहकर अर्घ्य का थोड़ा जल पितामह के आसन वाले पत्ते पर छोड़ अर्घ्य को आसन के पास रख तीसरे अर्घ्य को हाथ में उठाकर संकल्प करे-

अमुक गोत्रस्य अमुकप्रेतस्य सपिंडीकरणश्राद्धे अमुकगोत्रप्रपितामह अमुशर्मन् पिण्डस्थाने कुशोपरि अर्धावनेजनं निक्षिप्यते स्वधा।

ऐसा कह थोड़ा अर्घ्य का जल प्रपितामह के आसन के पत्ते पर छोड़ अर्घ्य पात्र को प्रपितामह के आसन के पास रख चौथा अर्घ्य हाथ में ले संकल्प करे-

अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य सपिंडिकरण श्राद्धे अमुकगोत्र वृद्धप्रपितामह अमुकशर्मन् पिण्डस्थाने कुशोपरि अर्धावनेजनं निक्षिप्यते स्वधा।।

ऐसा कह थोड़ा जल वृद्ध प्रपितामह के आसन पर छोड़ अघ्यपात्र को वृद्ध प्रपितामह के आसन के पास रख दें।

पिण्डदान

पहले प्रेत पिण्ड जो लम्बे आकार में बनाया था अपसव्य होकर कर्मकर्ता उसे उठाकर तिल, कुश, जल हाथ में ले संकल्प करें-

अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतसपिंडीकरणश्राद्धे एष ते पिण्डो मयादीयते तवोपतिष्ठताम्।।

ऐसा कह पिण्ड को प्रेत के पास आसन के ऊपर अंगूठे की ओर रख पितामह के लिए दूसरे पिण्ड का संकल्प करे।

अमुकगोत्रः पितामहः अमुकशर्मन् वसुरूप एष ते पिण्डः स्वधा नमः।।
पिण्ड को पितामह के पास आसन के ऊपर रख तीसरा पिण्ड लेकर संकल्प करे-

अमुकगोत्रः प्रपितामहः अमुकर्शन् आदित्यरूप एष ते पिण्डः स्वधा नमः।। पिण्ड को वृद्ध प्रपितामह के पास आसन पर रख प्रेत के अघ्य से थोड़ा जल प्रेत के पिण्ड पर छोड़े-

अमुकगोत्रअमुकप्रेतसपिंडीकरणश्राद्धे प्रत्यवने अवनेजनं मयादीयते तवोपतिष्ठताम्।। अब पितामह, प्रपितामह, वृद्धप्रपितामह के अर्घ्यों से भी पिण्ड पर जल छोड़े-

अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य सपिंडीकरणश्राद्धनिमित्तं अमुकगोत्राणां पितामह-प्रपितामह वृद्धप्रपितामहानां पिण्डोपरि अवनेजनं तेभ्यः स्वधा नमः।।

पिण्ड देने के बाद पके हुए चावलों का शेष जो हाथ पर रहे बांये हाथ में कुश लेकर दाहिने हाथ को साफ करे और कहे-

ॐ नमो वः पितरो रसायनमो वः पितर शोषाय नमो वः पितरः जीवाय नमो वः पितरो स्वधायै नमो वः पितरो घोराय नमो वः पितरो मन्यवे नमो वः पितरः नमो वः पितरो नमो वः गृहान्नः पितरो दत्त सतो वः पितरो द्वैष्मै तद्वः पितरो वास आधत।।

अपसव्य हो कर्मकर्ता प्रेतपिण्ड का पूजन करे-पिण्ड का पूजन गन्ध, यव अक्षत, पुष्प, तुलसीपत्र, धूप, दीपक, नैवेद्य, ताम्बूल, दक्षिणा आदि चढ़ाकर पितामह, प्रपिताह और वृद्धपितामह के पिण्डों का पूर्ववत् पूजन कर कर्मकर्ता उत्तर मुँह कर प्राणायाम रीति से बाँये नांक से श्वास ले दक्षिण की दिशा की तरफ श्वास छोड़ते हुए पितरों व सूर्य का ध्यान करे।

पिण्ड संयोजन

अपसव्य हो कर्मकर्ता सुवर्ण या रजत शलाका (अभाव में कुश) से प्रेत पिण्ड के तीन समान भाग करे तथा तिल, जल, कुश हाथ में लेकर संकल्प करे-

अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य प्रेतत्वनिवृत्तिपूर्वकपितृसमप्राप्त्यर्थं वस्वादिलोक प्राप्त्यर्थं च अमुकगोत्राणां तत्पितृपितामहप्रपितामहानांपिण्डैः सहप्रेतस्य पिण्ड संयोजनं करिष्ये।।

प्रेतपिण्ड का पहला भाग बाँये हाथ में लेकर संकल्प-**अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य प्रथमं पिण्डशकलं अमुकपितामहस्यामुकशर्मणो वसुरूपस्य पिण्डेन सह संयोजयिष्ये।।** प्रेतपिण्ड के पहले भाग के साथ पितामह के पिण्ड के साथ मिला दे-

ॐ ये समानाः समनसः पितरोयमराज्ये।
तेषां लोकः स्वधा नमो यज्ञो देवेषु कल्पताम्।।1।।
ये समानाः समनसो जीवाजीवेषु मामकाः।
तेषाꣳश्रीर्म्मयि कल्पतामस्मिँलोके शतꣳसमाः।।2।।

पिण्ड गोलकर पितामह के आसन पर रख पुनः प्रेत पिण्ड का दूसरा भाग उठाकर संकल्प बोले-

अमुक गोत्रस्य अमुकप्रेतस्य द्वितीयपिण्डशकलं अमुक प्रपितामहस्यामुकशर्मणः रुद्ररूपस्य पिण्डेन सह संयोजयिष्ये। ऐसा कह **ये**

'समानाः॰' के दोनों मंत्र कहते हुये प्रेत पिण्ड के दूसरे भाग के साथ प्रपितामह के पिण्ड को गोलाकार बनाकर प्रपिताह के आसन के ऊपर रख दे। प्रेत पिण्ड के तीसरे भाग को उठाकर संकल्प बोले-

अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य तृतीयं पिण्डशकलं अमुक वृद्धपितामहस्यामुक शर्मणः आदित्यरूपस्य पिण्डेनसह संयोजयिष्ये।।

ऐसा कह **ये समानाः॰** के दोनों मंत्र कहते हुए प्रेतपिण्ड के तीसरे भाग के साथ वृद्ध पितामह का पिण्ड मिला के आसन के ऊपर रखे। अब शेप अर्घ्य के जल को हाथ में लेकर संकल्प-

अमुकगोत्राणां पितामह-प्रपितामह-वृद्धप्रपितामहानां पिण्डोपरि अवनेजनं तेभ्यः स्वधा नमः।।

जल देकर नीवी मोचन (अंट में रखे पैसा कुशा सुपारी) पिण्डो के पास रख सव्य होकर प्रार्थना करे-**ॐ नमो वः पितरो रसायनमो वः पितर शोषाय नमो वः पितरो जीवाय नमो वः पितरः स्वधायै नमो वः पितरो घोराय नमो वः पितरो मन्यवे नमो वः पितरः पितरो नमो वः गृहान्नः पितरो दत्त सतो वः पितरो द्वैष्मै तद्वः पितरो वास आधत।।**

पिण्डों का पूजन पुनः वस्त्रः तीन सूत्र, अक्षत, पुष्प, धूप, दीपक, नैवेद्य आदि से कर कर्मकर्ता उत्तर की दिशा को मुंह कर प्राणायाम की रीति से श्वास चढ़ाकर दक्षिण की तरफ छोड़े।

भगवान् विष्णु को पकवान चढ़ावे-

ॐ नाभ्याआसीदन्तरिक्षꣳशीर्ष्णोद्यौः समवर्त्तत।
पद्भ्यांभूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथालोकां 2ऽ अकल्पयन्।।

विश्वेदेवा को भी पकवान का भोग लगावे-

कालकाम संज्ञक विश्वेदेवानां पक्वान्ननैवेद्यं अहमुत्सृजे।।

कर्मकर्ता हाथ जोड़कर पितरों से आशीर्वाद मांगे-

ॐ गोत्रं नो वर्द्धतां दातारो नोऽभिवर्द्धन्ताम्।
वेदाः संततिरेव च। श्रद्धा च नो मा व्यगमद् बहुदेयं सदास्तुनः।
अन्नंचनो बहु भवेदतिथींश्चलभामहे।
याचितारश्च नः सन्तु मा च याचिष्म कंचन।।

अब पिण्डों पर दूध की धारा देकर पितरों को प्रणाम कर बीच के पिण्ड को हिला देवे। अब अपसव्य हो पिण्डों को उठाकर सूघं ले और पिण्डों को विसर्जन के लिए थाली में रख सव्य हो थाली को रुपये से बजा देवे।

मंत्र

ॐ वाजे वाजेऽवत वाजिनो नो धनेषु विभा अमृता ऋतज्ञाः।
अस्य मध्वः पिबत मादयध्वं तृप्ता यात पथिभिर्देवयान्यैः।।

ब्राह्मण को दक्षिणा संकल्प-

ॐ विष्णुः 3 देशकालौ संकीर्त्य पितृअमुक गोत्रपित्रादित्रयश्राद्ध सम्बन्धिनां कालसज्ञकानां विश्वेषां देवानां प्रीतये कृतस्य सपिण्डीकरण श्राद्धान्तर्गतविश्वदैविककर्मणः सांगतासिद्धयर्थं साद्गुणार्थंच इमां सुवर्णदक्षिणातन्निष्क्रयद्रव्यं वा ब्राह्मणाय दास्यै।।

कर्मकर्ता ब्राह्मण को दक्षिणा देकर अपसव्य से दीपक बुझा पितरों को उठाये-

ॐ उत्तिष्ठन्तु पितरः।। देवताओं का विसर्जन अक्षत चढ़ाकर करे-**देवाः स्वस्थानं यान्तु।।** प्रदक्षिणा भी कर लें-

ॐ अमावाजस्य प्रसवो जगम्यादेमेद्यावा पृथिवी विश्वरूपे।
आमा गन्तां पितरा मातरा वामा सोमो अमृतत्वेन गम्यात्।।
प्रार्थना- प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रत्यवेताध्वरेषु यत्।
स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णंस्यादिति श्रुति।।

कर्मकर्ता पिण्ड वेदी को साफ कर पिण्डों को जल में डाल दे या गाय को खिला देवे। **गौ, श्वान, काक बजि।**

तीन पत्तो पर बने हुए आहार से ग्रास निकाल कर निम्न प्रकार दे- गो ग्रास सव्य होकर-**सौरभेय सर्वहिताः पवित्राः पुण्यराशयः। प्रतिगृह्णन्तु मे ग्रासं गावस्त्रैल्योकमातरः।। श्वान बलि (जनेऊ मालाकार कर)**

द्वौ श्वानौ श्याम शवलौ वैवश्वतकुलोद्भवौ।
ताभ्यामन्नं प्रदास्यामि स्यातामेतावहिंसकौ।।

काकबलि (अपसव्य) होकर-

ऐन्द्रवारुण वायव्याः सौम्या वै नैर्ऋतास्तथा।
वायसाः प्रतिगृहणन्तु भूमावन्नं मयार्पितम्।।

शय्यादान

पलंग पर गद्दा चद्दर तकिया आदि बिछाकर शैय्या उत्तर दक्षिण रख सुन्दर ढंग से शैय्या को सजाकर मृतक को जो वस्तुयें जीवनकाल में प्रिय लगती थी उनको भी शैय्या के पास रख, घृत कुंभ, जल कुंभ, बर्तन, वस्त्र आदि रख, शैय्या के ऊपर सुवर्ण से बनी लक्ष्मी नारायण की प्रतिमा एवं शालग्राम को दूध जल से धोकर प्रतिष्ठापित करे-

ॐ एतन्ते देव सवितुर्यज्ञं प्राहुर्बृहस्पतये ब्रह्मणे।
तेन यज्ञमव तेन यज्ञपतिं तेन मामव।।1।।

मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञꣳसमिमं दधातु। विश्वेदेवास ऽइह मादयन्तामो 3म्प्रतिष्ठ।।

प्रतिष्ठापन कर-

नमोस्त्वनंतायसहस्त्रमूर्तये, सहस्त्रपादाक्षिशिरोरुवाहवे।
सहस्त्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्त्रकोटी युग धारिणे नमः।।
नमः कमलनाभाय नमस्तेजलशायिने।
नमस्ते केशवानन्त वासुदेव नमोस्तुते।।

लक्ष्मीनारायण को पुष्प अर्पण कर पूजन पुरुष सूक्त से कर ब्राह्मण का पूजन कर दें-

नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मण हिताय च।
जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः।।

कर्मकर्ता ब्राह्मण के मौली बांध शय्या के ऊपर बिठाकर हाथ में तिल, जल, कुशा रख यह संकल्प कहे-**ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्येत्यादि अमुकगोत्रस्या अमुकनामाहं मम पितुः विष्णुलोके सुखशयनार्थं इमां शय्यां सोपस्करां श्री लक्ष्मीनारायणकांचनप्रतिमासहितां विष्णुदैवत्यां अमुकगोत्राय अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं संप्रददे।।**

हाथ के जलतिलकुश को ब्राह्मण के हाथ में दे शय्या को हिला देवे, ब्राह्मण को प्रणाम करें-

यदर्चनं कृतं विप्रं तव विष्णुस्तद् रूपिणः।
प्रार्थना मम दीनस्य विष्णवेतु समर्पणम्।।

ब्राह्मण संकल्प हाथ में लेकर **'स्वस्ती'** कह दे। दाता शय्यादान सांगतासिद्धि के लिए स्वर्ण या रजत द्रव्य हाथ में रख यह संकल्प कहे-

अद्यकृतैतत्सोपकरणशय्यादानकर्मणः सांगता-सिद्धचर्थमिदं हिरण्यमग्निदैवतं अमुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय दक्षिणात्वेन तुभ्यमहं सम्प्रददे।।

दाता शय्या की प्रदाक्षिणा करें-

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।
तानि तानि विनश्यन्ति प्रदक्षिण पदे पदे।।

प्रार्थना वाक्य कहे-

यथा न कृष्णशयनं शून्यं सागरजातया।
शय्याममाप्यशून्याऽस्तु तथा जन्मनिजन्मनि।।
यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्।।

'इति शय्यादान'

त्रयोदश पद दान

तेरह पददान में निम्न द्रव्य वस्तु यथा शक्ति रखे-1-आसन। 2-उपानह। 3- छत्र। 4- मुद्रिका। 5-जलपात्र। 6- आमान्न 7- जल। 8-पाँच बर्तन। 9-वस्त्र। 10- यज्ञोपवीत। 11- घी। 12- दण्ड। 13- ताम्बूल।

उक्त वस्तुयें रख कर्मकर्ता हाथ में जल, तिल, कुश, रख यह संकल्प कहे-

ॐ विष्णुर्विष्णुः अद्यः अमुकगोत्रोत्पन्नो अमुकशर्माहं अमुकगोत्राय मम पितुः अमुकनाम्नः शुद्धश्राद्धान्तरे परलोके सुखप्राप्तर्थं असद्गतिनिवारणार्थं इमानि आसनोपानहच्छत्रमुद्रिका-कमण्डल्वन्नजलभाजन-वस्त्राज्ययज्ञो-पवीतदण्डताम्बूलानित्रयोदश-पदानि नानादैवतानि नानानामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो दातुमहमुत्सृजे। कर्मकर्ता अलग-अलग ब्राह्मणों को अलग-अलग वस्तुयें देकर सन्तुष्ट करें।

गोदान

कर्मकर्ता ब्राह्मण से आचमन लेकर आसन पूजन भूशुद्धि कर गाय के ऊपर तिल छोड़े-**ॐ आयं गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः। पितरं च प्रयन्त्स्वः।।**

पूजन क्रम-

आवाहन- **आवाहयाम्यहं देवीं गां त्वां त्रैलोक्यमातरम्।**
यस्या शरणमाविष्टः सर्वपापैः प्रमुच्यते।।

पाद्य- त्वं देवी त्वं जगन्माता त्वमेवासि वसुन्धरा।
गायत्री त्वं च सावित्री गंगा त्वं च सरस्वती।।
तृणानिभक्षसेनित्यं अमृतंस्त्रवसे प्रभो।
भूतप्रेतपिशाचांश्चपित्रृदैवतमानुषान्।
सर्वांस्तारयसे देवि नरकात् पापसंकटात्।।

वस्त्र- आच्छादनं सदाशुद्धं मयादत्तं सुनिर्मलम्।
सुरभिर्वस्त्रदानेन प्रीताभव सदा मयि।।

आभूषण- स्वर्णश्रृंगद्वयं रौप्यं खुराचातुष्कमुत्तमम्।
ताम्रपृष्टं मुक्तपुच्छं स्वर्णबिन्दु च शोभितम्।।
यत्तेमयार्पितं शुद्धं घण्टा चामरसंयुतम्।
धेनोर्गृहाण सततं मयादत्तं नमोऽस्तुते।।

चन्दन- सर्वदेव प्रियं देवि चन्दनं चन्द्रकान्तिदम्।
कस्तूरीकुंकुमाढ्यं च गोगन्धः प्रतिगृह्यताम्।।

अक्षत- अक्षतान्धवलान्देवि रक्तचनदनसंयुतान्।
गृहाण परयाप्रित्या यतस्त्वं त्रिदशार्चिता।।

पुष्प- पुष्पमाला तथाजाति पाटली चम्पकानि च।
सुपुष्पाणि गृहाणत्वं सर्वविघ्नं प्रणाशिनी।।

अंगपूजन- ॐ आस्यायनमः।। ॐ श्रृगाभ्यांनमः।।
ॐ पृष्ठाभ्यांनमः।। ॐ पुच्छाय नमः।।
ॐ अग्रपादाभ्यां नमः।। ॐ पृष्ठपादाभ्यांनमः।।

धूप- वनस्पतिरसोद्भूतो गंधाढ्योगन्धउत्तमः।
आघ्रेयः सर्वतोधेनो धूपोऽयं प्रतिगृहयताम्।।

दीप- साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।
दीपं गृहाण सुरभे! मयादत्तं हि भक्तितः।।

नैवेद्य- सुरभि वैष्णवी माता नित्य विष्णु पदे स्थिते।
नैवेद्यंहिमयादतं गृह्यतां पापहारिणी।।

जल- सर्वपापहरं दिव्यं गागेयं निर्मलं जलम्।
आचमनं मयादत्तं गृह्यतां परमेश्वरि।।

गोपुच्छ तर्पण

पूर्व मुख हो कर्मकर्ता हाथ में यव, कुश, जल, तिल, हाथ में रख गो की पूँछ पकड़ सव्य हो देवतीर्थ से तर्पण करे-

गणपतिस्तथा ब्रह्मा माधवो रुद्र देवता।
लक्ष्मी सरस्वती चैव कार्तिकश्च नवग्रहाः।।
देवाधिदेवताः सर्वास्तथा प्रत्यधि देवता।
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु गोपुच्छोदकतर्पणैः।
किन्नराश्चपिशाचाश्च यक्षगंधर्वराक्षसाः।।
दैत्याश्च दानवाश्चैव ये चान्येऽप्सरसांगणाः।।
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु गोपुच्छोदकतर्पणैः।।

जनेंऊ कण्ठी कर उत्तरमुख कार्यतीर्थ से तिल, यव, कुश, जल हाथ में रख तर्पण करे-

सनकः सनन्दनश्चैव सनातनस्तथैव च।
कपिलश्च सुरैश्चैव बोढुपंचशिखस्तथा।।
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु गोपुच्छोदकतर्पणैः।।

अपसव्य हो दक्षिण मुँह, पितृतीर्थ से तिल, यव, कुश जल हाथ में रख तर्पण करे-

पिता पितामहश्चैव तथैव प्रपितामहः।
मातामहस्तत्पिता च वृद्धमातामहस्तथा।।
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु गोपुच्छोदकतर्पणैः।।
माता पितामहीचैव तथैव प्रपितामही।
मातामह्यादयः सर्वास्तथैवान्याश्च गोत्रजाः।।
ता सर्वा तृप्तिमायान्तु गोपुच्छोदकतर्पणैः।।
पितृवंशेमृतायेच मातृवंशे तथैव च।
गुरुश्वसुर बन्धूनां ये चान्ये बांधवाः स्मृताः।
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु गोपुच्छोदकतर्पणैः।।

सव्य हो कर्मकर्ता आचमन लेकर प्रार्थना वाक्य कहे-

या लक्ष्मीः सर्वभूतानां या च देवेष्ववस्थिता।
धेनुरूपेण सादेवी मम पापं व्यपोहतु।।

गोदान संकल्प

पूर्व मुख गाय, उत्तरमुख ब्राह्मण हो, कर्मकर्ता गो की पूँछ की तरफ, गोपुच्छ, तीन कुशा, जल, तिल, हाथ में रख संकल्प कहे-

अद्येत्यादि॰ अमुकगोत्रस्य अस्मत्पितुरमुक नाम्नः स्वर्गकाम इमां गां सवत्सां सुपूजितां पयस्विनीं सुवर्णश्रृंगीरौप्यखुरां ताम्रपृष्ठां वस्त्रयुगच्छनां कांस्यपानीयपात्रां पैत्तिलदोहां रुद्रदैवताममुक-गोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणायतुभ्यमहं सम्प्रददे।।

हाथ में रखे तिल, जल आदि को ब्राह्मण के हाथ में देवें पश्चात् सुवर्ण दक्षिणा हाथ में रख निम्न संकल्प कहे-

अद्यकृतैतद्गोदानप्रतिष्ठार्थं इमां सुवर्णदक्षिणामग्निदैवता-ममुकगोत्रायाकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।।

ब्राह्मण दक्षिणा लेकर **'ॐ स्वस्ति'** ऐसा कहे। कर्मकर्ता चार बार गो प्रदक्षिणा करे-

यानिकानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।
तानि नाशय धेनों त्वं प्रदक्षिणा पदे पदे।।

ब्राह्मण तर्पण जल से कर्मकर्ता को सपरिवार छीटे दे कर्मकर्ता प्रार्थना वाक्य कहे-

नमो ब्रह्मण्य देवाय गो ब्राह्मण हिताय च।
जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमोः नमः।।

।। इति गोदान ।।

एकोद्दिष्ट श्राद्ध

प्रातः स्नान कर श्वेत धुले वस्त्र पहन नित्यकर्मोपरान्त श्राद्धभूमि को गोबर से लीप उसके ऊपर जलता हुआ तृण घुमाकर पिण्ड के लिए चावल पकाकर, वेदी के ऊपर पितृरुप कुशा रख श्राद्ध के लिए तिल के तेल से दीपक जलाकर कर्मकर्ता पूर्व मुंह आचमन लेकर दोनों हाथों में पवित्री धारण कर प्राणायाम कर बाँयें हाथ में जल ले दाहिने हाथ से ॐ अपवित्र:0 मन्त्र से अभिमंत्रित करे-

ऐसा कह जल के छींटे श्राद्ध सामग्री तथा शरीर को लगावे, भूमि का पूजन कर ले-

ॐ श्राद्धस्थलभूम्यै नमः।। ॐ भगवत्यै गयायै नमः।। ॐ भगवते गदाधराय:।। पूजन कर प्रार्थना करे-

पृथिवी त्वयाधृता0 कुश तिल जल हाथ में रख संकल्प बोले-

देशकालौ संकीर्त्य ॐ अद्यामुकगोत्रस्य असमत्पितुः अमुकशर्मणो वसुरूपस्य सांवत्सरिकैकोद्दिष्टश्राद्धं करिष्ये।।

पूर्वमुख हो तीन बार गायत्री स्मरण करे-

ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च।
नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमोनमः।।

दक्षिणमुख अपसव्य हो तिल सरसो दिशाओं में फेंके-

ॐ नमोनमस्तेगोविन्द! पुराण पुरुषोत्तम!।
इदं श्राद्धं हृषीकेश! रक्षतां सर्वतो दिशः।।1।।
अग्निष्वाताः पितृगणाः प्राची रक्षंतुमेदिशम्।
तथाबर्हिषदः पातु याम्यां ये पितरस्थिताः।।2।।
प्रतीचीमाज्यपास्तद्वदुदीचीमपि सोमपाः।
अधोर्ध्वमपिकोणेषु हविष्यन्तश्च सर्वदा।।3।।
रक्षोभूत पिशाचेभ्यस्तथैवासुर दोषतः।
सर्वतश्चाधिपस्तेषां यमोरक्षां करोतु वै।।4।।

सव्य हो श्राद्ध कर्ता दक्षिण मुख दीपक का पूजन करे-

भो दीप दीप रूपस्त्वं कर्मसाक्षीह्यविघ्नकृत्।
यावत् श्राद्धसमाप्तिः स्यात्तावदत्र स्थिरोभव।।

ब्राह्मण का भी पूजन करे-

यदर्चनं कृतं विप्र! तवविष्णुस्तद् रूपिणः।
प्रार्थना मम दीनस्य विष्णवेतु समर्पणम्।।

ब्राह्मण कर्मकर्ता को तिलक लगावे-

आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवाः सपैतृकाः।
तिलकं ते प्रयच्छन्तु इष्टकामार्थसिद्धये।।

अपसव्य हो कर्मपात्र में कुश छोड़े-

ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यो सवितुर्वः प्रसव उत्पनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः।। जल छोड़े-

ॐ शन्नोदेवीरभिष्टयऽआपोभवन्तु पीतये। शंय्यो रभि स्रवन्तु नः।। तिल छोड़े-

ॐ तिलोसि सोमदैवत्यो गोसवो देव निर्मितः। प्रत्नमद्भि पृक्तः स्वधयापितृन्लोकान् प्रिणाहिनः स्वधा।

पात्र में गन्ध पुष्प छोड़कर तीन कुश से हिला देवे-

ॐ यद्देवा देवहेडन देवासश्चकृमा वयम्।
अग्निर्मा तस्मादेनसो विश्वान्मुंचत्वꣳहसः।।1।।
ॐ यदि दिवा यदिनक्त मेनाꣳसिचकृमावयम्।
वायुर्मातस्मादेनसो विश्वान्मुंचत्वꣳसहः।।2।।
ॐ यदिजाग्रद्यदि स्वप्न एनाꣳसिचकृमावयम्।
सूर्योमा तस्मादेन सो विश्वान्मुंचत्वꣳहसः।।3।।

श्राद्ध सामग्री के छीटे लगाकर संकल्प तिल, जल, कुश हाथ में लेकर अपसव्य हो बोले-

अद्यामुकगोत्रस्य वसुस्वरूपस्यास्मत्पितुरमुकशर्मणः सांवत्सरिकैकोद्दिष्ट श्राद्धे इदमासनं ते स्वधा।।

कुश आसन को पितृरूप कुश के पास रख वेदी पर तिल बिखेर दे-

ॐ अपहता असुरा रक्षाꣳसिवेदिषदः।।

एक दोने में अर्घ्य बनाकर हाथ में तिल जल कुश रखकर कहे-

ॐ अमुकगोत्रः अस्मत्पितः अमुक शर्मन् वसुरूप एष ते हस्तार्ध्यः स्वधा।। कह कर दोने के जल को पितृ कुश पर छोड़ वेदी के बाँये रख दे, नीवि बन्धन कर पितृ पूजन करे-

ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः। पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः। प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः।। अक्षन्पितरो मीमदन्तपितरोऽतीतृपन्त पितरः पितरः सुन्धध्वम्।।

पितृरूप कुश का गन्ध, अक्षत, पुष्प, धूप, दीपक, नैवेद्य, दक्षिणा, वस्त्रादि से पूजन कर संकल्प बोले-

अद्यामुकगोत्रस्य वसुस्वरूपास्मत्पितः अमुकशर्मन् साम्वत्सरि-कैकोद्दिष्टश्राद्धे एतानि गन्धाक्षतपुष्पधूपदीपनैवेद्यताम्बूलदक्षिणावासांसि ते स्वधा।।

अन्न में मधु मिलाकर दक्षिण में जल पात्र, घी रख दाहिनें हाथ से अन्न पर हाथ रख पितृ को अर्पण करें-

ॐ मधुवाता ऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः संत्वोषधीः।।1।। मधुनक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवꣳरजः मधुद्यौरस्तुनः पिता।।2।। मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमां ऽ अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः।।3।। मधु मधु मधु।। बांया हाथ जमीन पर रख दाहिना हाथ उसके नीचे रख अन्न दिखावे-

ॐ पृथिवी ते पात्रं द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्य।
मुखे ऽअमृते ऽअमृतं जुहोमि स्वधा।।

सव्य हो भगवान विष्णु का पूजन भी कर ले-

ॐ इदं विष्णु र्विचक्रमेत्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पाꣳसुरे।।

पूजन कर प्रार्थना करे-

कृष्ण कृष्ण! कृपालो! त्वं अगतिर्नाम गतिर्भव।
संसार भव मग्नानां प्रसीद पुरुषोत्तम!।।1।।
अन्नहीनं क्रियाहीनं मंत्रहीनं च यद्भवेत्।
तत्सर्व क्षमयतां देव प्रसीद परमेश्वर।।2।।

पिण्ड के लिए प्रादेश मात्र की वेदी बनाकर रक्षोघ्न सूक्त पढ़कर तिल वेदी के ऊपर बिखेर दे-

ॐ कृष्णुष्वपाजः प्रसितिं न पृथ्वी याहि राजेवामवां 2 ऽ इमेन। तृष्वीमनु प्रसितिं द्रूणानो ऽ स्तासि विध्य रक्षसस्तपिष्ठैः।।1।। तव भ्रमास ऽ आशुया पतन्त्यनु स्पृश धृषता शोशुचानः। तपूꣳष्यग्ने जुह्वा पतङ्गान सन्दितो विसृज विष्वगुल्काः।।2।। प्रतिष्पशो विसृज तूर्णितमो भवा पायुर्विशोऽ अस्या अदब्धः। यो नो दूरे ऽ अघसꣳसो यो अन्त्यग्ने माकिष्टे व्यथिराद धर्षीत्।।3।। उदग्ने तिष्ठ प्रत्यातनुष्व न्यमित्रां 2ऽ ओषतात्तिग्म हेते। यो नोऽआरातिꣳसमिधान चक्रे नीचा तं धक्ष्यतसं न शुष्कम्।।4।। ऊर्ध्वो भव प्रति विध्याध्यस्मदाविष्कृण्णुष्व दैव्यान्यग्ने। अवस्थिरा तनुहि यातुजूनां जामिमजामिं प्रमृणीहि शत्रून्। अग्नेष्ट्वा तेजसा सादयामि।।5।। अग्निमूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या ऽअयम्। अपाꣳरेताꣳसि जिन्वन्ति। इन्द्रस्य त्वौजसा सादयामि।।6।। भुवो यज्ञस्य रजसश्च नेता यत्रा नियुद्भिः सचसे शिवाभिः। दिवि मूर्द्धानं दधिषे स्वर्षा जिह्वामग्ने च कृषे हव्यवाहम्।।7।। ध्रुवासि धरुणास्तृता विश्वकर्मणा। मात्वासमुद्रऽद्वधीन्मासुपर्णो ऽ व्यथमाना पृथिवीं ट्टꣳह।।8।। प्रजापतिष्ट्वा सादयत्वपां पृष्ठेसमुद्रस्येमन्। व्यचस्वतींप्रथस्वतिं प्रथस्व पृथिव्यासि।।1।। ॐ अंगिरसोनः पितरो नवग्वा अथर्वाणो भृगवः सोम्यासः तेषां वयꣳ सुमतौ यज्ञियानामपि भद्रे सौमनसे स्याम।।10।। ॐ एनः पूर्वे पितरः सोम्यासोऽनूहिरे सोमपीथं वसिष्ठाः। तेभिर्यमः ꣳस रराणो हवीꣳष्युशन्नु शद्धि प्रतिकाममत्तु।।11।।

पिण्ड निर्माण

कर्मकर्ता दोनों हाथों से विल्वफल प्रमाण का पिण्ड पायस से बनावे पिण्ड निर्माण समय ब्राह्मण पुरुष सूक्त के 16 मंत्र, आशुः शिशानो के 17 मंत्र, कृष्णष्वपाजः प्रसिति0 के 5 मंत्र, तथा निम्न मंत्र को कहे-

ॐ उदीरतामवर ऽ उत्परास ऽ उन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः।
असुंय ऽईयुरवृकाऽऋतज्ञास्ते नोऽवन्तु पितरो हवेषु।।

निम्न गाथा का गान भी करे-

सप्तव्याधा दशार्णेषु मृगाः कालंजरे गिरौ।
चक्रवाका सरद्वीपे हंसा सरसि मानसे।।1।।
तेभिजाता कुरुक्षेत्रे ब्राह्मणावेद पारगाः।।
प्रस्थितादूरमध्वानं यूयन्तेभ्योऽवसीदत।।2।।

पिण्ड स्थापन पूजन

पिण्ड निर्माण कर थाली में रख अपसव्य हो बांया जंघा नवाकर तीन कुशाओं को लेकर वेदी के पश्चिम भाग में रख दें-

असंस्कृतप्रमीतानां त्यागिनां कुलभागिनाम्।
आच्छिष्ट भाग धेयानां दर्भेषुविकिरासनम्।।

कुछ पका अन्न पत्ते पर उठाकर जल घुमाकर खड़े हो तीन कुशाओं के ऊपर रख दें-

ॐ अग्निदग्धाश्च ये जीवा ये ऽप्यादग्धा कुलेमम।
भूमौ दत्तेन चान्नेन तृप्तायान्तु परा गतिम्।।

सव्य हो भगवान का स्मरण करें-

ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च।
नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः।।

पुनः अपसव्य हो बांया घुटना नवाकर कुशा से वेदी के ऊपर दक्षिण से उत्तर को रेखा खींचे-**ॐ अपहता असुरा रक्षा सिवेदिषदः।**

अब जलता हुआ अंगार लेकर कुशा से वेदी की रेखा के ऊपर घुमाकर दक्षिण की तरफ रख दे-

ॐ ये रूपाणि प्रतिमुंचमाना ऽअसुराः संतः स्वध्याचरन्ति।
परा पुरोनिपुरो ये भरन्त्यनिष्टां लोकात्प्रणुदात्यस्मात्।।

पुनः वेदी में जल छिड़क दें। दोनें में निम्न जलादि डाल दे-

शन्नोदेवीतिजलम्।। तिलोसीति तिलान्।।
गंधाक्षतपुष्पाणि तूष्णी निक्षिप्य।।

दोने को बांये हाथ में रख उसमें रखे कुश को वेदी में रख, कुश तिल जल हाथ में रख संकल्प कहे-

आद्यामुकगोत्र वसुस्वरूपास्मत्पितरमुकशर्मन् सांवत्सरिकैकोद्दिष्ट श्राद्धे पिण्डस्थाने ऽत्रावनेनिक्ष्व ते स्वधा।

दोने के थोड़े जल को वेदी के कुशा के ऊपर छोड़ दोनें को पास रख पिण्ड पर घी, शहद लगा तिल, जल, कुश के साथ हाथ में रख संकल्प कहे-

आद्यामुकगोत्रामुकवसुस्वरूपो अस्पत्पितरमुकशर्मन् सांवत्सरिकश्राद्धे एष ते पिण्डः स्वधा नमः।।

वेदी के मध्य कुशासन के ऊपर पिण्ड को रख थाली में पिण्ड के शेप अन्न को पिण्ड के पास छोड़ दें-**लेपभागभुजस्तृप्यन्तु**

कुश मूल से हाथ पोंछ हाथ धो सव्य हो आचमन लेकर गायत्री स्मरण करे।

निश्वास ध्यान-कर्मकर्ता उत्तर की ओर मुंह कर प्राणायाम रीति से श्वास ले, दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर पितरों का ध्यान करते हुए श्वास ले और छोड़े-

मंत्र- **ॐ अत्र पितर्मादयस्व यथाभागमावृषायस्व।।** श्वास ले।।
ॐ अमीमदन्तपितर्यथा भागमाबृषयिषत्।। स्वास छोड़े।।

अर्घ्य के पात्र को हाथ में लेकर अपसव्य हो जल को पिण्ड पर छोड़े-

अद्यामुकगोत्र वसुस्वरूपास्मत् पितर अमुक शर्मन् सांवत्सरिकैकोद्दिष्ट श्राद्धे पिण्ड प्रत्यवने निक्ष्वते स्वधा।

नीवी कुशा आदि को पिण्ड के पास रख सव्य होकर आचमन लेव पुनः अपसव्य होकर बांया जंघा नवा कर कपास सूत्र हाथ में लेकर दक्षिण मुख हो पिण्ड पर चढ़ावे-

ॐ नमस्ते पितरो रसाय नमस्ते पितः शोषाय नमस्ते पितर्जीवाय पितः स्वधायै नमस्ते पितर्घोराय नमस्ते पितर्मन्यवे नमस्ते पितः पितर्नमस्ते गृहान्नः पितर्देहि नमस्ते पितर्देष्म।। हाथ जोड़कर पिण्ड पर सूत्र रख दें-**ॐ एतत्ते पितर्वासः।।**

हाथ में तिल, कुश, जल रख संकल्प कहे-

अद्यामुकगोत्रः वसुस्वरूपास्यात्पितरमुक शर्मन् सांवत्सरिकैको श्राद्धे पिण्डे एतत्तेवासः स्वधा।

पिण्ड पर गंध, अक्षत, पुष्प तुलसी, धूप, दीप, ताम्बूल, दक्षिणा चढ़ा वस्त्र से ढक दे पिण्ड का शेष अन्न पिण्ड के पास छोड़ें।

ॐ शिवा आपः सन्तु। जल छोड़े। **सौमनस्यमस्तु।** पुष्प छोड़े।। **अक्षतंचारिष्टं चास्तु।** ऐसा कह यव और तिल को अन्न पर छोड़े। दोनें पर जल में तिल रख अक्षयोदक देवे-

अद्यामुक गोत्रस्यवसुस्वरूपस्यास्पत्पितर अमुक शर्मणः सांवत्सरिकैकोद्दिष्टः श्राद्धे प्राणाप्यापन कामनायै दत्तै तदन्नपानादिकं अक्षयं अस्तु।।

सव्य होकर पूर्वमुख हो आशीष ग्रहण करे-

ॐ अघोरः पिताऽ स्तु।। ऐसा कह पुनः कहे-**ॐ गोत्रंनो वर्द्धतां दातारोनोभिवर्द्धतां वेदा सन्ततिरेव च। श्रद्धा चनोमा व्यगमद्बहुदेयंचनोऽस्तु।। अन्नंचनो बहुभवेदतिथिंश्चलभेमहि। याचितारश्च नः संतुमाचयाचिष्म कंचन।। एताः सत्या आशिषः सन्तु।।**

पुनः अपसव्य हो पिण्ड़ के ऊपर तीन कुशा रखे तथा जल धारा दें-

ॐ उर्जं वहंती रमृतं घृतं पयः कीलालं परिस्त्रुतम्। स्वधास्थतर्पयतमे पितरम्।।

अर्घ्यपात्र को उल्टा कर दे। यथा शक्ति सुवर्ण दक्षिणा हाथ में लेकर संकल्प कहे-

ॐ अमुकगोत्रस्यास्मत्पितुरमुक शर्मणो वसुरूपस्य कृतैतत्सांवत्सरिकैकोद्दिष्ट श्राद्धप्रतिष्ठार्थमिदं रजतचन्द्र-दैवतममुक गोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय दक्षिणात्वेन दातुमहमुत्सृजे।। ब्राह्मण को दक्षिणा दे नम्र हो पिण्ड को उठाकर सूंघ ले तथा थाली में रखे, कुश से जलते अंगार को अग्नि में डाल दीपक को बुझाकर हाथ पैर धो सव्य हो प्रार्थना करे-

प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषुयत्।
स्मरणादेवतद्विष्णो संपूर्णं स्यादिति श्रुतिः।।
देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च।
नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमोनमः।

पितृरूप कुश को भी उठाकर पिण्ड के साथ रख जल में विसर्जन कर दे। एकोदिष्ट श्राद्ध में शय्यादान, वस्त्र, अन्न, आमान्न, गायदान, देकर प्रार्थना करे-

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बृद्धयात्मनावाऽनु सृतः स्वभावात्।
करोमियद्यत्सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयामि।।

कमकर्ता पके हुए अन्न को तीन पत्तों पर रख अपसव्य हो काक को, जनेंऊ मालाकर कर श्वान को, सव्य हो कर गाय को खिलावे। ब्राह्मण से तिलक आशीष ग्रहण करें ब्राह्मण को भोजन देकर दक्षिणा से सन्तुष्ट करे स्वयं परिवार के साथ भोजन करें।

।। इति एकोद्दिष्ट श्राद्ध सम्पूर्ण ।।

पंचक मरण शान्ति

पंचक में मृत्यु होने पर वंश के लिए अनिष्ट कारक होता है इसलिए जहाँ पर शव जलाना हो वहां भूमि शुद्धकर कुश से मनुष्याकृति की पाँच प्रतिमा बनाकर यव के आटे से उनका लेपन कर, अपसव्य हो पूजन संकल्प करें-

अद्योत्यादि० अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य धनिष्ठादि पंचकेभरण-सूचितवंशानिष्ट विनाशार्थं पंचकशान्ति करिष्ये।

प्रतिमाओं को स्थापित कर पूजन करे -

1. प्रेतवाहाय नमः।। **2. प्रेतसखायै नमः।।**

3. प्रेतपाय नमः।। **4. प्रेतभूमिपाय नमः।।**

5. प्रेत हर्त्रे नमः।।

नाम मंत्र से प्रत्येक प्रतिमा को गन्ध, अक्षत, पुष्प, धूप, दीपक और नैवेद्य से पूजन कर दाह से पहले शव के ऊपर रख दें-

पहली प्रतिमा-शिर पर। दूसरी दक्षिण कुक्षी पर। तीसरी बांयी कुक्षी पर। चौथी नाभी के ऊपर। पांचवी पैरों के ऊपर रख घी को आहुति दें।

1- प्रेतवाहाय स्वाहा।। **2- प्रेतसखायै स्वाहा।।**

3- प्रेतपाय स्वाहा।। **4- प्रेत भूमिपाय स्वाहा।।**

5- प्रेत हर्त्रे स्वाहा।।

उपर्युक्त आहुति देकर पूर्व प्रकार से शव का दाह कर अशौचान्तर (ग्यारहवें, बारहवे दिन पंचक शान्ति करे।।

कर्मकर्ता नदी, तालाब तीर्थ आदि के पास जाकर श्राद्ध भूमि को साफ कर गोबर से लीप स्नान के बाद नया यज्ञोपवीत वस्त्र धारण करे। होम के लिए वेदी बनावे। कलश स्थापन पूर्व, दक्षिण, पश्चिम उत्तर तथा चारों के मध्य में करे। गणेश नवग्रह आदि का पूजन कर अपसव्य हो संकल्प करे-

अद्येत्यादि० अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य धनिष्ठादिपंचक जनित दुर्भरण दोष-निवृत्यर्थं (सव्य हो) मम गृहे सपरिवाराणामायुरारोग्य सुख प्राप्तर्थं विष्णुपूजनपूर्वकं पंचक शांतिकर्माहं करिष्ये।

संकल्प कर भगवान विष्णु (शालिग्राम) का पूजन षोडशोपचार से कर पुनः संकल्प करे -

अद्येत्यादि० अमुकप्रेतस्य पंचकशांतिकर्मांगतया विहितं कलशपंचक देवतानां स्थापनं प्रतिष्ठापूजनं च करिष्ये।

जन्मोत्सवविधि

ब्राह्म मुहूर्त में उठकर स्नान करने हेतु निम्न सङ्कल्प करें। **स्नानसङ्कल्प-अद्येहेत्याद्युच्चार्य्य अमुकगोत्रोऽमुकराशिरमुकशर्म्माहं आयुरभिवृद्धये संव्वत्सरावच्छिन्नसुखप्राप्ति कामस्शीतलोदकेन स्नानं करिष्ये।** स्नान कर सन्ध्यादि नित्यकर्म सम्पादित करें, यदि जन्म शनिवार या मंगलवार को हुआ हो तो तत्सूचित दोष परिहार के लिए आठ मुट्ठी धान या अन्य कोई अनाज ब्राह्मण को देकर नया वस्त्र निम्न विनियोग मंत्र पढ़कर पहनें। **परिधास्यै इत्याथर्वणऋषिः पंक्तिश्छन्दो वासोदेवता वस्त्रपरिधाने विनियोगः। ॐपरिधास्यै यशोधास्यै दीर्घायुष्ट्वाय जरदष्टिरस्मि शतं च जीवामि शरदः पुरूची रायस्पोषमभिसंब्ययिष्ये।।** नया वस्त्र धारण कर निम्न विनियोग एवं मन्त्र पढ़कर उत्तरीय (दुपट्टा) धारण करें। **यशसामेत्याथर्वणऋषिः पंक्तिश्छन्दः लिङ्गोक्ता देवता उत्तरीयसपरिधाने विनियोगः। ॐयशसा मा द्यावापृथिवी यशसेन्द्राबृहस्पती यशो भगश्च मा विन्दद्यशो मा प्रतिपाद्यताम्।** यदि दुपट्टा न हो तो कोई भी अश्वेत वस्त्र पहन नीम, गुग्गुल, दूव, गोरोचन आदि की पोटली बना निम्न मंत्र से प्रतिष्ठा करें-**ॐभूर्भुवः स्वः पोटलिके सुप्रतिष्ठिता वरदा भवत च।** उक्त पोटली को दाहिने हाथ में बांध लें। पुनः गणेश पूजन करें संभव हो तो कलश स्थापन करें। पुनः प्रधान सङ्कल्प करें। प्रधान संकल्प **अद्येहत्यादि अमुकगोत्रोऽमुकराशिरमुकशर्माहं ममायुष्याभिवृद्धये वर्षवृद्धिकर्म करिष्ये तदङ्गत्वेन दध्यक्षातपुञ्जेषु आवाहितानां कुलदेवतादिषष्ठीदेवीपर्य्यन्तानां कलशे आवाहितानां ब्रह्मवरुणसहितादित्या-दिनवग्रहाणां च पूजनं करिष्ये।** थाली में नया सफेद वस्त्र फैलाकर दही एवं अक्षत लेकर निम्न कुलदेवता से षष्ठी देवी तक का पूजनार्थ आवाहन करें। **ॐभूर्भुवःस्वः कुलदेवते इहागच्छेहतिष्ठ पूजार्थं त्वामावहयामि 1 ॐभूर्भुवःस्वः स्वनक्षत्रेश अमुक इहागच्छेहतिष्ठ पूजार्थं त्वामावाहयामि 2 ॐ भूर्भुवःस्वः प्रकृतिपुरुषात्मकमातापितरौ इहागच्छतं इहतिष्ठतं पूजार्थं युवामावाहयामि 3 ॐभू0 ब्रह्मन् इहागच्छेहतिष्ठ पू0 4 ॐभूः भानो इहा 0 5 ॐ भूः 0 विघ्नेश इहा 0 6 ॐ भूः 0 मार्कण्डेय इहा 0 7 ॐ भूः 0 बले इहा 0 7 ॐ भूः 0 व्यास इहा 0 8 ॐ भूः 0 जामदग्न्य राम इहा 0 10 ॐ भूः 0 अश्वत्थामन् इहा 0 11 ॐ भूः 0 कृपाचार्य्य इहा 0 12 ॐ भूः 0 प्रह्लाद इहा 0 13 ॐ भूः 0 हनुमन् इहा 0 14 ॐ भूः 0 विभीषण इहा 0 15 ॐ भूर्भुवःस्वः षष्ठीदेवि इहागच्छेहतिष्ठ पूजार्थं त्वामावाहयामि 16 आवाहन करें तथा षष्ठी देवी पर्यन्त का ध्यान करें। ॐ भूर्भुवःस्वः कुलदेवतादिदेवताः**

षष्ठीदेवीपर्य्यन्ताः इहागच्छन्तु इह तिष्ठन्तु सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु ॐवरदाभयपाणय इति मार्कण्डेयध्याने विशेषः-ॐद्विभुजं जटिलं सौम्यं सुवृद्धं चिरजीविनम्। मार्कण्डेयं नरो भक्त्या पूजयेत्प्रयतः शुचिः।। इनका ध्यान कर नाममात्र से पूजन करें-**ॐकुलदेवतायै नमः ॐजन्मनक्षत्रेशाय अमुकाय नमः ॐप्रकृतिपुरुषात्मकमातापितृभ्यां नमः ॐब्रह्मणे नमः ॐ भानवे नमः ॐविघ्नेशाय नमः ॐमार्कण्डेयाय नमः ॐबलये नमः ॐ व्यासाय नमः ॐअश्वत्थाम्ने नमः ॐकृपाचार्याय नमः ॐप्रह्लादाय नमः ॐहनुमते नमः ॐविभीषणाय नमः ॐषष्ठीदेव्यै नमः ॐ** जोड़कर प्रत्येक नाम मंत्र से षोडशोपचार पूजन, आरती कर नवग्रहों का भी नाम लेते हुए पुष्पाञ्जलि समर्पित करे। पुनः **मार्कण्डेय की प्रार्थना-**

मार्कण्डेय महाभाग सप्तकल्पान्तजीवन।
आयुरारोग्यसिद्ध्यर्थमस्माकं वरदो भव।।
चिरजीवी यथा त्वं भो भविष्यामि तथा मुने।
रूपवान्वित्तवाँश्चैव श्रिया युक्तश्च सर्वदा।।
मार्कण्डेय नमस्तेस्तु सप्तकल्पान्तजीवन।
आयुरारोग्यसिद्ध्यर्थं प्रसीद भगवन्मुने।।
चिरजीवी यथा त्वं तु मुनीनां प्रवर द्विज।
कुरुष्व मुनिशार्दूल तथा मां चिरजीविनम्।।

पुनः षष्ठी प्रार्थना-

जय देवि जगन्मातर्जगदानन्दकारिणि।
प्रसीद मम कल्याणि महाषष्ठि नमोस्तुते।
रूपं देहि यशो देहि भगं भगवति देहि मे।
पुत्रान् देहि धनं देहि सर्वान्कामाँश्च देहि मे।।
त्रैलोक्ये यानिभूतानि स्थावराणि चराणि च।
ब्रह्मविष्णुशिवैः सार्द्धं रक्षां कुर्वन्तु तानि मे।।

प्रार्थना कर अञ्जलि से मार्कण्डेय के लिए निवेदित दूध को पांच बार पीयें।

मन्त्र-

सतिलं गुडसम्मिश्रमञ्जल्यर्द्धमितं पयः।
मार्कण्डेयाद्वरं लब्ध्वा पिबाम्यायुःप्रवृद्धये।।

मुख धोकर दक्षिणा देने हेतु संकल्प करें। **अद्येहेत्यादि अमुकराशिरमुकशर्म्माहं आयुरभिवृद्धये कृतायाः कुलदेवतादीनाम् आदित्यादिनवग्रहाणां च पूजायाः साद्‌गुण्यार्थमिमां दक्षिणां ब्राह्मणेभ्यो विभाज्य दास्ये ॐतत्सत् तथा यथोपपन्नेनान्नेन ब्राह्मणाँश्च भोजयिष्ये।** अभिषेक, तिलक, मन्त्र आदि कराकर घृतछाया, ब्राह्मणभोजन पूर्वक स्वयं भोजन करे।

खण्डनं नखकेशानां मैथुनाध्वगमौ तथा।
आमिषं कलह-हिंसां वर्षवृद्धौ विवर्ज्जयेत्।।

इति।।

तृतीय खण्ड : सामान्य पूजन विधि

देव पूजा प्रकरण-इस प्रकरण में पञ्चाङ्ग पूजा विधि दी गई है। प्राय: प्रत्येक संस्कार, व्रतोद्यापन, हवन आदि यज्ञ यज्ञादि में पञ्चाङ्ग पूजन का विधान है। षोडशोपचार या पञ्चोपचार अर्चन का क्रम सामान्यत: प्रचलित है। अत: तत्सबंधी मंत्र दे दिये गये हैं। पुरुषसूक्त के षोडशमंत्र और रूद्रसूक्त के नमस्ते रुद्र. आदि षोडश मंत्रों से भी सभी देव पूजन में अर्चन करने की सामान्य विधि है।

शिलान्यास, गृहप्रवेश, ग्रहशान्ति की भी संक्षिप्त विधि दी जा रही है। ध्यातव्य है कि पूजन के इस प्रकरण के अभ्यास से संकल्प विशेष का परिवर्तन करके विविध पूजा के आयोजन सामान्य रूप से कराये जा सकते हैं। पञ्चाङ्ग के अतिरिक्त सर्वतोभद्र और लिङ्गतोभद्र पीठों के पूजन प्रकार भी आगे दिये गये हैं। विविध व्रतोद्यापन आदि में इसका विधान किया जाता है।

प्रत्येक पूजारंभ के पूर्व निम्नांकित आचार-अवश्य करने चाहिये-आत्मशुद्धि, आसन शुद्धि, पवित्र धारण, पृथ्वी पूजन, संकल्प, भैरव प्रणाम, दीप पूजन, शंख पूजन, घंटा पूजन और स्वस्तिवाचन तत्पश्चात् ही देव पूजन प्रारम्भ करना चाहिए। तृतीय, चतुर्थ खण्ड में विविध देव पूजन प्रकार प्रस्तुत किये गये हैं।

1. गणपति पूजन 2. आचार्यादिवरण 3. वरुण पूजन 4. मातृका, योगिनी, आयुष्य मंत्र जाप, सांकल्पिक नान्दी श्राद्ध, नवग्रह पूजन, अधिदेव प्रत्यधि देवों की स्थापन विधि, सर्वतोभद्रपीठस्थ देवों और लिङ्तोभद्र देवों की पूजन विधि, प्रधान यज्ञेश्वर पूजन की विधियां दे दी गई हैं। सत्य नारायण व्रत कथा, शालग्राम पूजन और शिवार्चन विधि के साथ ही महालक्ष्मी पूजन का भी संकलन कर दिया गया है।

देव पूजा प्रकार

(1) प्राय: प्रत्येक मङ्गल कार्य में पञ्चाङ्ग पूजन अपेक्षित है। कार्यारम्भ से पूर्व गौरी गणेश, कलश, मातृका, घृतमातृका, नवग्रह, पञ्चलोकपाल, दशदिग्पाल, योगिनी आदि देवों की पूजा की जाती है। (2) पुण्याहवाचन एवं साङ्कल्पिक नान्दी श्राद्ध पूजनोपरान्त प्रधान देव पूजन-विष्णु, शिव, दुर्गा, सूर्य आदि देवों की यथाविधि पूजन की जानी चाहिए। (3) व्रतोद्यापन एवं विशेष अनुष्ठान के समय यज्ञपीठ की स्थापना का विशेष महत्त्व होता है, अत: प्रधान देवता की पीठ रचना पूर्वाभिमुख पूर्व दिशा के मध्य में की जाय। ईशान कोण में ग्रह, मातृका, घृतमातृका, योगिनी अग्निकोण में वास्तु नैऋत्य में क्षेत्रपाल, वायव्य कोण में ग्रह आदि देवों की कलश स्थापन पूर्वक पीठ रचना अपेक्षित है। (4) उपर्युक्त पीठ रचना के प्रकार विभिन्न रंगों के अक्षत या विविध रंग के अन्न

के दानों से की जाती है। सभी व्रतोद्यापन-अनुष्ठान में-सर्वतोभद्रपीठ विशेष रूप से शिवपूजन में चतुर्लिङ्गतोभद्रपीठ की रचना की जाती है। चक्र के रेखाचित्रों से उसका अभ्यास करना चाहिए। (5) प्रधान देवों की मूर्तियां यथाशक्ति स्वर्ण-रजत-ताम्र आदि ध ातुओं की बननी चाहिए और विधिपूर्वक उनकी प्रतिष्ठा करके उनका अर्चन किया जाय।

अर्चना और पूजोपकरण-पूजन के अनेक प्रकार प्रचलित हैं और शास्त्रों में पञ्चोपचार, षोडशोपचार शतोपचार आदि विविध वस्तुओं से अर्चना के विधि विधान की विस्तार से चर्चा है। श्रद्धा-भक्ति-शक्ति के अनुसार उनका संग्रह करना चाहिए। देव पूजन में भावशुद्धि अपेक्षित है और पितृकार्य में वाक्य शुद्धि अपेक्षित होती है-**"पितरः वाक्यमिच्छन्ति भावमिच्छन्ति देवताः"** अतः संकल्प मंत्र की शुद्धि संस्कृत भाषा के अभ्यास से ही प्राप्त हो सकती है। महर्षि पतञ्जलि ने महाभाष्य में बताया है 'जैसे लकड़ी के भीतर रहने वाली आग बिना अग्नि के संपर्क के बाहर नहीं आती वैसे मंत्र की शक्ति अर्थज्ञान के बिना प्रभावी नहीं होती'' उसी प्रकार शुद्ध वाक्य की रचना के बिना अभीष्ट फल की प्राप्ति भी नहीं हो सकती। इसलिए मन्त्रों के शुद्ध उच्चारण और उनका अर्थज्ञान अवश्य कर लेना चाहिए। बहुत से वैदिक मंत्र सन्दर्भ सूचक होकर भी तत्-तत् देवताओं के आवाहन अर्चन के लिए प्रयुक्त होते हैं जिसका मीमांसाशास्त्र के ऋषियों ने उनका समर्थन किया है। मीमांसा शास्त्र के मनीषियों ने तर्क सम्मत विचारों के बाद सिद्ध किया है कि मंत्र ही देवता हैं। यदि मंत्र नहीं तो देवता भी उपस्थित नहीं होंगे इसलिए मंत्रों की ही महिमा सर्वोपरि है। यज्ञकर्त्ता यजमान और पौरोहित्य कर्म में संलग्न आचार्य को तद्रूप होकर ही अर्चना से सिद्धि प्राप्त होती है -

'देवो भूत्वा देवं यजेत्' ऐसा निर्देश लक्षित करता है कि तन्मयता और भावशुचिता से ही अभीष्ट सिद्धि होती है।

देवार्चन के लिए संग्रहणीय द्रव्य-

पञ्चगव्य-गोबर, गोमूत्र, गोघृत-गोदुग्ध, गोदधि यथाविधि।

पञ्चामृत-गोदुग्ध-गोघृत-गोदधि-मधु-शर्करा।

पञ्चमेवा-दाख-छुहाड़ा-बादाम-नारियल-अखरोट आदि।

नवग्रह समिधा-अर्क, पलास, खैर, अपामार्ग, गूलर-पीपल-शमी-कुश-दूर्वा।

पूजोपकरण-गन्ध (चन्दन) पुष्प, पुष्पमाला, तुलसी, विल्वपत्र, परिमल द्रव्य-सिन्दूर-अबीर-इत्र-अष्टगन्ध आदि।

ऋतुफल-ऋतु के अनुसार फलों का संग्रह करना चाहिए। कुछ फल सभी ऋतुओं में प्राप्त हैं किन्तु कुछ फल ऋतु विशेष में मिलते हैं।

पान-सुपारी-इलाचयी-लवंग-मिष्टान्न वस्त्र उपवस्त्र-रक्षा सूत्र-धोती-साड़ी-गमछा अन्य सौभाग्य द्रव्य आभूषण आदि यथाशक्ति।

उपर्युक्त वस्तुओं का यथाशक्ति संचय करना चाहिए किन्तु हम देवार्चन कर रहे हैं अतः सुन्दर; उत्तमोत्तम संक्षिप्त किन्तु उपयोगी हो, इसका सतत् ध्यान रखना अपेक्षित है।

कर्म्मोपयोगी सप्तधान्यादि विवरण-पूजोपकरण में सप्तधान्य, सप्तमृत्तिका आदि का प्रयोग किया जाता है, निम्नांकित कारिकाओं में उनका संग्रह है -

(1) सप्तधान्य-**यवगोधूमधान्यानि तिलाः कंगुस्तथैव च,**
श्यामकं चणकं चैव सप्तधान्यमुदाहृतम्।

जौ, धान, तिल, कंगनी, मूंग, चना और सावां ये सप्तधान्य कहलाते हैं।

(2) सर्वौषधि-**मुरा मांसी बचा कुष्ठं शैलेयं रजनीद्वयम्।**
सठी चम्पकमुस्तं च सर्वौषधिगणः सृतः। (सर्वाभावे शतावरी)

मुरा, जटामांसी, वच, कुण्ठ, शिलाजीत, हल्दी, दारुहल्दी, सठी, चम्पक, मुस्ता ये सर्वोषधि कहलाती हैं।

कुष्ठं मांसी या हरिद्रेद्वे मुरा शैलेयचन्दनम्
बचा कर्पूरमुस्ता च सर्वौषधयः प्रकीर्त्तिता।

(कूठ, जटामांसी, मुरा, चन्दन, वच, कपूर, मुस्ता। दारु हल्दी, हल्दी।)

(3) सप्तमृद-**गजाश्व रथ्यावल्मीके संगमाद् गोकुलाद्ह्रदात्।**
राजद्वार प्रदेशाच्च मृदमानीय निक्षिपेत्।

घुड़साल, हाथीसाल, बाँबी, नदियों के संगम, तालाब, राज द्वार और गोशाला- इन सात स्थानों की मिट्टी को सप्तमृत्तिका कहते हैं।

(4) पञ्चपल्लव-**अश्वत्थोदुम्बरप्लक्षाः न्यग्रोधश्चूत एव च।**
पञ्चकं पल्लवानां स्यात् सर्वकर्मसु शोभनम्।

पीपल, गूलर, पाकड़, बरगद और आम के पल्लव पञ्चपल्लव कहे जाते हैं।

(5) पञ्चरत्न-**सुवर्ण रजतं मुक्ता लाजवर्त्तः प्रबालकम्।**
अभावे सर्वरत्नानां हेम सर्वत्र योजयेत्।।

सोना, चांदी, मोती, लाजावर्त और मूंगा ये पञ्चरत्न कहे जाते हैं।

(6) मधु त्रय-**आज्यं क्षीरं मधु तथा मधुरत्रयमुच्यते।**

घी, दूध तथा मधु ये तीनों मधुत्रय कहते जाते हैं।

अर्चना सम्बन्धी ज्ञातव्य आचार-काम्य कर्म की सफलता सपत्नीक यज्ञ करने पर ही निर्भर है। शास्त्र में पत्नी शब्द की रचना यज्ञ सम्बन्धी होने के कारण ही हुई है। पत्नी के उपवेशन की शास्त्रीय विधि निम्नवत् है -

वामे सिन्दूरदाने च वामे चैव द्विरागमे।
वामेऽशनैकशय्यायां भवेज्जाया प्रियार्थिनी।
सर्वेषु शुभ कार्येषु पत्नी दक्षिणतः शुभा।
अभिषेके विप्रपादक्षालने चैव वामतः। (संस्कार गणपति)

आचमन- **गोकर्णाकृतिहस्तेन माषमात्रं जलं पिबेत्।**
आचमनं तु तत्प्रोक्तं सर्वकर्मसु पावनम्।

प्राणायाम- **नित्यं देवार्चने होमे सन्ध्यायां श्राद्धकर्मणि।**
स्नाने दाने तथा ध्याने प्राणायामास्त्रयः स्मृताः।।

तिलक- **तिलकं कुंकुमेनैव सदा मंगलकर्मणि।**
कारयित्वा सुमतिमान्न श्वेतचन्दनं मृदा।।

प्रणाम प्रकार-**बाहुभ्यां चैव मनसा शिरसा वचसा दृशा।**
पञ्चाङ्गोऽयं प्रणामः स्यात् पूजा सु प्रवराविमौ।।

साङ्कल्पिक नान्दी श्राद्ध

अनाग्निको यदा विप्रः उच्छिन्नाग्निरथापि वा।
तदा वृद्धिषु सर्वासु साङ्कल्पं श्राद्धमाचरेत्।।

गणेश, विष्णु, शिव, देवी पूजन के लिए निम्नलिखित विधि निषेध का ध्यान रखना चाहिए-

नाङ्गुष्ठैर्मदयेद्देवं नाधः पुष्पैः समर्चयेत्।
कुशाग्रैर्न क्षिपेत्तोयं वज्रपातसमो भवेत्।।

अंगूठा से देवता का मर्दन नहीं करना चाहिए न ही अधम पुष्पों से पूजा करनी चाहिए। कुश के अग्रिम भाग से जल नहीं छींटना चाहिए। ऐसा करना वज्रपात के समान होता है।

नाक्षतैरर्चयेद् विष्णुं न तुलस्या गणधिपम्।
न दूर्वयाजेत् दुर्गां बिल्वपत्रैश्च भास्करम्।।

अक्षत से विष्णु की, तुलसी से गणेश की, दूब से दुर्गा की और बेलपत्र से सूर्य की पूजा नहीं करनी चाहिए।

अधोवस्त्रधृतं चैव जलेऽन्तः क्षालितं च यत्।
देवास्तान्न गृह्णन्ति पुष्पं निर्माल्यतां गतम्।।

अधोवस्त्र में रखा तथा जल द्वारा भिगोया पुष्प निर्माल्य हो जाता है, देवता उस पुष्प को ग्रहण नहीं करते।

शिवे विवर्जयेत् कुन्दं धत्तूरं च तथा हरौ।
देवी नामर्कमन्दारौ सूर्यस्य तगरं तथा।।

शिव पर कुन्द (चमेली की जाति) हरि पर धतूर, देवी पर अकवन तथा सूर्य पर तगर नहीं चढ़ाना चाहिए।

पत्रं वा यदि वा पुष्पं नेष्टमधोमुखम्।
यथोत्पन्नं तथा देयं बिल्वपत्रमधोमुखम्।।

पत्र या पुष्प उलटकर नहीं चढ़ाना चाहिए। पत्र या पुष्प जैसा ऊर्ध्व मुख उत्पन्न होता है वैसे ही चढ़ाना चाहिए विल्बपत्र उलट कर चढ़ाना चाहिए।

पर्णमूले भवेद् व्याधिः, पर्णाग्रे पापसम्भव।
जीर्णपत्रं हरत्यायुः शिराबुद्धिविनाशिनी।।

पत्ते के मूल भाग को, अग्र भाग को, जीर्ण पत्र को तथा शिरा युक्त को चढ़ाने पर क्रमशः व्याधि, पाप, आयुष् क्षय एवं बुद्धि का विनाश होता है।

ये तु पिण्डास्तृता दर्भा यैः कृतं पितृतर्पणम्।
अमेध्याशुचिलिप्ता ये तेषां त्यागो विधीयते।।

जिन कुशों के द्वारा पिण्ड दिये गये हों और जिनसे पितृ तर्पण किया गया हो वे अमेध्य एवं अपवित्र होते हैं। इनका त्याग कर देना चाहिए।

प्रतिमाभाव में पूजन–

प्रतिमाभावे पूगीफलाक्षतरजतखण्डादौ आवाहनं कुर्यात्।
कुर्याद् आवाहनं मूर्तौ मृणमय्यां सर्वदैव हि।
प्रतिमायां जले बह्नौ नावाहनविसर्जने।।
शालग्रामार्चने चैव नावाहनविसर्जने।

गन्धार्चन– **अनामिक्या च देवस्य ऋषीणां च तथैव च।**
गन्धानुलेपनं कार्यं प्रयत्नेन विशेषतः।
पितृणामर्चयेत् गन्धं तर्जन्या च सदैव हि।
तथैव मध्यमाङ्गुल्या धार्यो गन्धः सदा बुधैः।

पुष्प-पत्र की पवित्रता का काल- पङ्कजं पञ्चरात्रं स्याद्दशरात्रं च बिल्वकम्।
एकादशाहे तुलसी नैव पर्युंषिता भवेत्।।

दीपदान विधि- न मिश्रीकृत्य दद्यात्तु दीपं स्नेहे घृतादिकम्।
घृतेन दीपकं नित्यं तिलतैलेन वा पुनः।
ज्वालयेन्मुनिशार्दूलं सन्निधौ जगदीशितुः।
सर्वसहा वसुमती सहते न त्विदं द्वयम्।
अकार्यपादघातं च दीपतापं तथैव च।

पञ्चगव्य निर्माणविधि- पलमात्रं तु गोमूत्रमङ्गुष्ठार्धं च गोमयम्।
क्षीरं सप्तपलं ग्राह्यं दधित्रिपलमीरितम्।
सर्पिस्त्वेकपलं देयमुदकं पलमात्रकम्।

जपसंख्या नियम- होमकर्मण्यसक्तानां विप्राणां द्विगुणोजपः।
इतरेषां तु वर्णानां त्रिगुणादि समीरितम्।
सम्पुटे हवनं नास्ति प्रत्यूहेऽपि तथैव च।
नानार्थसिद्धि वैकेल्ये होमे तु विपुलं चरेत्।

आरती के नियम- पञ्चनीराजनं कुर्यात् प्रथमं दीपमालया।
द्वितीयं सोदकाब्जेन तृतीये धौतवाससा।
पञ्चमं प्रणिपातेन साष्टाङ्गेन यथाविधिः।

आरब्ध अनुष्ठान में अशौच व्यवस्था-

व्रत-यज्ञ विवाहेषु श्राद्ध होमार्चने जपे।
आरब्धे सूतकं न स्यादनारब्धे तु सूतकम्।
प्रारम्भो वरणं यज्ञे संजल्पो व्रत-सत्रयोः।
नान्दीश्राद्धं विवाहादौ श्राद्धे पाकपरिक्रिया।

पूर्णाहुति के नियम- विवाहादिक्रियायाञ्च शालायां वास्तुपूजने।
नित्यहोमे वृषोत्सर्गे न पूर्णाहुतिसमाचरेत्।

मंत्रजप नियम- मनः संहृत्यविषयान् मन्त्रार्थगतमानसः।
न द्रुतं न विलम्बञ्च जपेन्मौक्तिकपंक्तिवत्।
उच्चरेदर्थमुद्दिश्य मानसः स जपस्मृतः
आलस्यजृम्भणं निद्रां क्षुतन्निष्ठीवनं तथा
नीचाङ्गस्पर्शनं कोपं जपकाले विवर्जयेत्।
तर्जन्या न स्पृशेत् अक्षं जपे यन्नविधूनयेत्।
अङ्गुष्ठस्य च मध्यस्य परिवर्त्तं समाचरेत्।
मनसा यः स्मरेत् स्तोत्रवचसामनुं जपेत् तु उभयं

निष्फलं देव मिन्न माण्डादेकं यथा।
प्रत्यहं प्रत्यहं तावन्नैव न्यूनाधिकं क्वचित्।
एवं जपं समाप्यान्ते दशाशं होममाचरेत्।
पादेन पाद्माक्रम्य जपं नैव तु कारयेत्।
शिरः प्रावृत्य वस्त्रेण ध्यानं नैव प्रशस्यते।
न पाणिपादचलो न नेत्रचपलो द्विजः।
न च वाक् चपलश्चैव जपन् सिद्धिमवाप्नुयात्।।

वस्त्र शुद्धि- कार्पासं कटिनिर्मुक्तं कौशेयं भाजने धृतम्।
क्षालनात् शुद्धिमाप्नोति वातेनौर्णं हि शुद्ध्यति।।

प्रदक्षिणा के नियम- एका चण्डयां रवौ सप्त तिस्रोदद्यात् विनायके।
चतस्रस्तु विष्णवे दद्यात्; शिवे तिस्रः प्रदक्षिणा।।

चरणामृत ग्रहण विधि-बाएँ हाथ पर दोहरा वस्त्र रख कर दाहिना हाथ रख दें, पश्चात् चरणामृत लेकर पान करें। जमीन पर न गिरने दें।

तुलसी-ग्रहण-मंत्र

पूजनानन्तरं विष्णोरर्पितं तुलसीदलम्।
भक्षयेद्देहशुद्ध्यर्थं चान्द्रायणशताधिकम्।।

चरणामृत-ग्रहण-मन्त्र

कृष्ण! कृष्ण! महाबाहो! भक्तानामार्तिनाशनम्।
सर्वपापप्रशमनं पादोदकं प्रयच्छ मे।।

पश्चात् नीचे लिखा मंत्र बोलते हुए चरणामृत पान करें।

अकालमृत्युहरणं सर्वव्याधिविनाशनम्।
विष्णुपादोदकं पीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते।।

दुःखदौर्भाग्यनाशाय सर्वपापक्षयाय च।
विष्णोः पञ्चामृतं पीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते।।

नैवेद्य-ग्रहण-मन्त्र

नैवेद्यमन्त्रं तुलसीविमिश्रितम् विशेषतः पादजलेन विष्णोः।
योऽश्नाति नित्यं पुरतो मुरारेः प्राप्नोति यज्ञायुतकोटिपुण्यम्।।

शुभ मूहूर्त में शुद्ध वस्त्र धारण करके यजमान पूजा के लिए मण्डप में आये। दक्षिण ओर पत्नी को ग्रंथिबन्धन करके बैठाया जाय। यथा संभव शुद्ध श्वेत वस्त्र धारण करना उत्तम होता है। तदनन्तर आत्म शुद्धि के लिए आचमन करें।

ॐ केशवाय नमः स्वाहा, ॐ नारायणाय नमः स्वाहा, ॐ माधवाय नमः स्वाहा, तीन बार आचमन कर आगे दिये मंत्र पढ़कर हाथ धो लें। **ॐ विष्णवे नमः।।** पुनः बायें हाथ में जल लेकर दाहिने हाथ से अपने ऊपर और पूजा सामग्री पर निम्न श्लोक पढ़ते हुए छिड़कें।

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।

ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु।

आसन शुद्धि-नीचे लिखा मंत्र पढ़कर आसन पर जल छिड़के-

ॐ पृथ्वि! त्वया धृता लोका देवि ! त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि ! पवित्रं कुरु चासनम्।।

शिखाबन्धन।। ॐ मानस्तोके तनये मानऽआयुषि मानो गोषु मानोऽअश्वेषुरीरिषः। मानोव्वीरान् रुद्रभामिनो व्यधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे ॐ चिद्रूपिणि महामाये दिव्यतेजः समन्विते। तिष्ठ देवि शिखाबद्धे तेजोवृद्धिं कुरुष्व मे।। बायें हाथ में तीन कुश तथा दाहिने हाथ में दो कुश निम्न मंत्र से धारण करें। **मन्त्रः-ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यो सवितुर्व्वः प्रसवऽउत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुनेतच्छकेयम्।** पुनः दायें हाथ को पृथ्वी पर उलटा रखकर **ॐ पृथिव्यै नमः** इससे भूमि की पञ्चोपचार पूजा का आसन शुद्धि करें। पुनः ब्राह्मण यजमान के ललाट पर कुंकुम तिलक करें।

यजमान तिलक

ॐ आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवा मरुद्गणाः।
तिलकन्ते प्रयच्छन्तु धर्मकामार्थसिद्धये।।

उसके बाद यजमान आचार्य एवं अन्य ऋत्विजों के साथ हाथ में पुष्पाक्षत लेकर स्वत्ययन पढ़े।

ॐ आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासोऽ परीतास उद्भिदः। देवा नो यथा सदमिद् वृधे असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे।। देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयातां देवाना ँ रातिरभि नो निवर्तताम्। देवाना ँ सख्यमुपसेदिमा

वयं देवा न आयुः प्रतिरन्तु जीवसे।। तान्पूर्वया निविदा हूमहे वयं भगं मित्रमदितिं दक्षमस्त्रिधम्। अर्यमणं वरुण ँ सोममश्विना सरस्वती नः सुभगा मयस्करत्।। तन्नो वातो मयोभु वातु भेषजं तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौः। तद् ग्रावाणः सोमसुतो मयोभुवस्तदश्विना शृणुतं धिष्ण्या युवम्।। तमीशानं जगतस्तस्थुषास्पतिं धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये।। स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।। पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभं यावानो विदथेषु जग्मयः। अग्निर्जिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वे नो देवा अवसागमन्निह।। भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवा ँ सस्तनुभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः।। शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम्। पुत्रसो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः।। अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः। विश्वे देवा अदितिः पञ्चजना अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम्।। ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ँ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिर्वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्मशान्तिः सर्वं ँ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि।।

यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरू।
शं नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः।।

सुशान्तिर्भवतु।।

हाथ में लिए पुष्प और अक्षत गणेश एवं गौरी पर चढ़ा दें। पुनः हाथ में पुष्प अक्षत आदि लेकर मंगल श्लोक पढ़े।

श्रीमन्महागणाधिपतये नमः। लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः। उमामहेश्वराभ्यां नमः। वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः। शचीपुरन्दराभ्यां नमः। मातापितृभ्यां नमः। इष्टदेवताभ्यो नमः। कुलदेवताभ्यो नमः। ग्रामदेवताभ्यो नमः। वास्तुदेवताभ्यो नमः। स्थानदेवताभ्यो नमः। सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः।

विश्वेशं माधवं ढुण्ढिं दण्डपाणिं च भैरवम् ।
वन्दे काशीं गुहां गङ्गां भवानीं मणिकर्णिकाम् ।। 1।।
वक्रतुण्ड ! महाकाय ! कोटिसूर्यसमप्रभ ! ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव ! सर्वकार्येषु सर्वदा ।। 2।।
सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः ।

लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः ।। 3।।
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः ।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि ।। 4।।
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा ।
सङ्ग्रामे सङ्कटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ।। 5।।
शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम् ।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये ।। 6।।
अभीप्सितार्थ-सिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुराऽसुरैः ।
सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः ।। 7।।
सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके ! ।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि ! नमोऽस्तु ते ।। 8।।
सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममङ्गलम् ।
येषां हृदिस्थो भगवान् मङ्गलायतनं हरिः ।। 9।।
तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव ।
विद्यावलं दैवबलं तदेव लक्ष्मीपते तेऽङ्घ्रियुगं स्मरामि ।। 10।।
लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः ।
येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः ।। 11।।
यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः ।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम ।।12।।
अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते ।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम् ।। 13।।
स्मृतेः सकलकल्याणं भाजनं यत्र जायते ।
पुरुषं तमजं नित्यं ब्रजामि शरणं हरिम् ।। 14।।
सर्वेष्वारम्भकार्येषु त्र्यस्त्रिभुवनेश्वराः ।
देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशानजनार्दनाः ।। 15।।

हाथ में लिये अक्षत-पुष्प को गणेशाम्बिका पर चढ़ा दें।

संकल्प

दाहिने हाथ में जल, अक्षत, पुष्प और द्रव्य लेकर संकल्प करे।

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः ॐ स्वस्ति श्रीमन्मुकन्दसच्चिदानन्दस्याज्ञया प्रवर्तमानस्याद्यपरार्द्धद्वयजीविनो ब्रह्मणो द्वितीये परार्धे एकपञ्चाशत्तमे वर्षे प्रथममासे प्रथमपक्षे प्रथमदिवसे अह्नो द्वितीये यामे तृतीये मुहूर्ते

रथन्तरादिद्वात्रिंशत्कल्पानां मध्ये अष्टमे श्रीश्वेतबाराहकल्पे स्वायम्भुवादिमन्वतराणां मध्ये सप्तमे वैवस्वतमन्वन्तरे कृत-त्रेता-द्वापर-कलिसंज्ञानां चतुर्युगानां मध्ये वर्तमाने अष्टाविंशतितमे कलियुगे तत्प्रथमचरणे तथा पञ्चाशत्कोटियोजनविस्तीर्ण-भूमण्डलान्तर्गतसप्तद्वीपमध्यवर्तिनि जम्बूद्वीपे तत्रापि श्रीगङ्गादिसरिद्भिः पाविते परम-पवित्रे भारतवर्षे आर्यावर्तान्तर्गतकाशी-कुरुक्षेत्र-पुष्कर-प्रयागादि-नाना-तीर्थयुक्त कर्मभूमौ मध्यरेखाया मध्ये अमुक दिग्भागे अमुकक्षेत्रे ब्रह्मावर्तादमुकदिग्भागा-वस्थितेऽमुकजनपदे तज्जनपदान्तर्गते अमुकग्रामे श्रीगङ्गायमुनयोरमुकदिग्भागे श्रीनर्मदाया अमुकप्रदेशे देवब्राह्मणानां सन्निधौ श्रीमन्नृपतिवीरविक्रमादित्य-समयतोऽमुक संख्यापरिमिते प्रवर्तमानवत्सरे प्रभवादिषष्ठिसम्वत्सराणां मध्ये अमुकनाम सम्वत्सरे, अमुकायने, अमुकगोले, अमुकऋतौ, अमुकमासे, अमुकपक्षे, अमुकतिथौ, अमुकवासरे, यथांशकलग्नमुहूर्तनक्षत्रयोगकरणान्वित.अमुकराशिस्थे श्रीसूर्ये, अमुकराशिस्थे चन्द्रे, अमुकराशिस्थे देवगुरौ, शेषेषु ग्रहेषु यथायथाराशिस्थानस्थितेषु, सत्सु एवं ग्रहगुणविशिष्टेऽस्मिन्शुभक्षणे अमुकगोत्रोऽमुकशर्म्मा वर्मा-गुप्त सपत्नीकोऽहं श्रीअमुकदेवताप्रीत्यर्थम् अमुककामनया ब्राह्मणद्वारा कृतस्यामुकमन्त्रपुरश्चरणस्य सङ्गतासिद्ध्यर्थ-ममुकसंख्यया परिमितजपदशांश-होम-तद्दशांशतर्पण-तद्दशांश-ब्राह्मण-भोजन रूपं कर्म करिष्ये।

अथवा-**ममात्मनः श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य द्विपदचतुष्पदसहितस्य सर्वारिष्टनिरसनार्थं सर्वदा शुभफलप्राप्तिमनोभि-लषितसिद्धिपूर्वकम् अमुकदेवताप्रीत्यर्थं होमकर्माहं करिष्ये।** अक्षत सहित जल भूमि पर छोड़ें।

अङ्गसंकल्प पुनः जल आदि लेकर-**तदङ्गत्वेन निर्विघ्नतासिद्ध्यर्थं श्रीगणपत्यादिपूजनम् आचार्यादिवरणञ्च करिष्ये। तत्रादौ दीपशंखघण्टाद्यर्चनं च करिष्ये।**

श्री भैरव प्रणाम-

ॐ तीक्ष्णदंष्ट्र महाकाय कल्पान्तदहनोपम।
भैरवाय नमस्तुभ्यमदनुज्ञां दातुर्महसि ।।

इस मंत्र से भैरव को प्रणाम करें, इसके बाद कर्म पात्र में थोड़ा गंगाजल छोड़कर गन्धाक्षत, पुष्प से पूजा कर प्रार्थना करें।

ॐ गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि! सरस्वति!।
नर्म्मदे! सिन्धु कावेरि! जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु।।
अस्मिन् कलशे सर्वाणि तीर्थान्यावाहयामि नमस्करोमि।

कर्म पात्र का पूजन करके उसके जल से सभी पूजा वस्तुओं को सींचे।

घृतदीप-(ज्योति) **पूजन**-

वह्निदैवत्याय दीपपात्राय नमः-से पात्र की पूजा कर ईशान दिशा में घी का दीपक जलाकर अक्षत के ऊपर रखकर **ॐ अग्निर्ज्ज्योर्ज्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्य्यो ज्ज्योतिर्ज्ज्योतिः सूर्य्यः स्वाहा। अग्निर्वर्च्चो ज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा, सूर्योव्वर्च्चो ज्ज्योतिर्वर्च्च स्वाहा, ज्ज्योतिः सूर्यः सूर्य्यो ज्ज्योतिः स्वाहा। भो दीप देवरूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत्। यावत्पूजासमाप्तिः स्यात्तावदत्र स्थिरो भव।। ॐ भूर्भुवः स्वः दीपस्थदेवतायै नमः आवाहयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि।**

शंखपूजन

-शंख को चन्दन से लेपकर देवता के वायीं ओर पुष्प पर रखकर

ॐ शंखं चन्द्रार्कदैवत्यं वरुणं चाधिदैवतम्।
पृष्ठे प्रजापतिं विद्यादग्रे गङ्गासरस्वती।।
त्रैलोक्ये यानि तीर्थानि वासुदेवस्य चाज्ञया।
शंखे तिष्ठन्ति वै नित्यं तस्माच्छंखं प्रपूजयेत्।।
त्वं पुरा सागरोत्पन्नो विष्णुना विधृतः करे।
नमितः सर्वदेवैश्च पाञ्चजन्य! नमोऽस्तुते।।

पाञ्चजन्याय विद्महे पावमानाय धीमहि तन्नः शंखः प्रचोदयात्। ॐ भूर्भवः स्वः शंखस्थदेवतायै नमः शंखस्थदेवतामावाहयामि सर्वोपचारार्थे गन्धपुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि। शंख मुद्रा करें।

घण्टा पूजन-ॐ सर्ववाद्यमयीघण्टायै नमः,

आगमार्थन्तु देवानां गमनार्थन्तु रक्षसाम।
कुरु घण्टे वरं नादं देवतास्थानसन्निधौ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः घण्टास्थाय गरुडाय नमः गरुडमावाहयामि सर्वोपचारार्थ गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। गरुडमुद्रा दिखाकर घण्टा बजाएें। दीपक के दाहिनी ओर स्थापित कर दें। **ॐ गन्धर्वदैवत्याय धूपपात्रय नमः** इस प्रकार धूपपात्र की पूजा कर स्थापना कर दें।

गौरी गणेश पूजन [1]

हाथ में अक्षत लेकर-भगवान् गणेश का ध्यान-

गजाननं भूतगणादिसेवितं कपित्थजम्बूफलचारुभक्षणम्।
उमासुतं शोकविनाशकारकं नमामि विघ्नेश्वरपादपङ्कजम्।।

गौरी का ध्यान -

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्।।
श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, ध्यानं समर्पयामि।

गणेश का आवाहन-

हाथ में अक्षत लेकर **ॐ गणानां त्वा गणपति ँ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति ँ हवामहे निधीनां त्वा निधिपति ँ हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्।।**

एह्येहि हेरम्ब महेशपुत्र ! समस्तविघ्नौघविनाशदक्ष !।
माङ्गल्यपूजाप्रथमप्रधान गृहाण पूजां भगवन् ! नमस्ते।।

ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्धिबुद्धिसहिताय गणपतये नमः, गणपतिमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि च।

हाथ के अक्षत को गणेश जी पर चढ़ा दें। पुनः अक्षत लेकर गणेशजी की दाहिनी ओर गौरी जी का आवाहन करें।

गौरी का आवाहन -

ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन।
ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्।।
हेमाद्रितनयां देवीं वरदां शङ्करप्रियाम्।
लम्बोदरस्य जननीं गौरीमावाहयाम्यहम्।।
ॐभूर्भुवः स्वः गौर्यै नमः, गौरीमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि च।

---

1. अनेक मांगलिक कार्यों में गणेश के साथ-साथ गौरी का भी पूजन किया जाता है। अतः दोनों एक साथ दिया जा रहा है।

प्रतिष्ठा-ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ ं समिमं दधातु। विश्वे देवास इह मादयन्तामो 3 म्प्रतिष्ठ।।

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।

अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन।।

गणेशाम्बिके ! सुप्रतिष्ठिते वरदे भवेताम्।

प्रतिष्ठापूर्वकम् आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि गणेशाम्बिकाभ्यां नमः।

(आसन के लिए अक्षत समर्पित करे)।

पाद्य, अर्घ्य, आचमनीय, स्नानीय और पुनराचमनीय हेतु जल

ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्।।

एतानि पाद्यार्घ्याचमनीयस्नानीयपुनराचमनीयानि समर्पयामि गणेशाम्बिकाभ्यां नमः।

दुग्धस्नान-ॐ पय : पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयो धाः पयस्वतीः। प्रदिशः सन्तु मह्यम्।।

कामधेनुसमुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम्।

पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पयः स्नानं समर्पयामि।

दधिस्नान - ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः।

सुरभि नो मुखाकरत्प्रण आयूँ षि तारिषत्।।

पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम्।

दध्यानीतं मया देव! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दधिस्नानं समर्पयामि।

(पुनः जल स्नान करायें।)

घृत स्नान - ॐ घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतम्वस्य धाम।

अनुष्वधमा वह मादयस्व स्वाहाकृतं वृषभ वक्षि हव्यम्।।

नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसंतोषकारकम्।

घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, घृतस्नानं समर्पयामि।

(पुनः जल स्नान करायें।)

मधुस्नान -ॐ मधुव्वाताऽऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः मधुनक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिव ँ रजः। मधुद्यौरस्तु नः पिता मधुमान्नो व्वनस्पतिर्म्मधुमाँऽ2 अस्तु सूर्यः माध्वीर्गावो भवन्तु नः।।

पुष्परेणुसमुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु।
तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, मधुस्नानं समर्पयामि।

(पुनः जल स्नान करायें।)

शर्करास्नान - ॐ अपा ँ रसमुद्वयस ँ सूर्ये सन्त ँ समाहितम्। अपा ँ रसस्य यो रसस्तं वो गृह्णाम्युत्तममुपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्।।

इक्षुरससमुद्भूतां शर्करां पुष्टिदां शुभाम्।
मलापहारिकां दिव्यां स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, शर्करास्नानं समर्पयामि।

(पुनः जल स्नान करायें।)

पञ्चामृतस्नान - ॐ पञ्चनद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्त्रोतसः।
सरस्वती तु पञ्चधा सोदेशेऽभवत्सरित्।।

पञ्चामृतं मयानीतं पयो दधि घृतं मधु।
शर्करया समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नान-ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्तऽआश्विनाः श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा यामा अवलिप्तारौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः।।

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धुकावेरि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, शुद्धोकस्नानं समर्पयामि।

आचमन - शुद्धोकदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

(आचमन के लिए जल दें।)

वस्त्र-ॐ युवा सुवासाः परिवीत आगात् स उ श्रेयान् भवति जायमानः।
तं धीरासः कवय उन्नयन्ति स्वाध्यो3 मनसा देवयन्तः।।
शीतवातोष्णसंत्राणं लज्जाया रक्षणं परम्।
देहालङ्करणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, वस्त्रं समर्पयामि।
वस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

वस्त्र के बाद आचमन के लिए जल दे।

उपवस्त्र -ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरूथमाऽसदत्स्वः।
वासो अग्ने विश्वरूप ँ सं व्ययस्व विभावसो।।
यस्याभावेन शास्त्रोक्तं कर्म किञ्चिन्न सिध्यति।
उपवस्त्रं प्रयच्छामि सर्वकर्मोपकारकम्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, उपवस्त्रं समर्पयामि।

उपवस्त्र न हो तो रक्त सूत्र अर्पित करे।

आचमन -उप वस्त्र के बाद आचमन के लिये जल दें।

यज्ञोपवीत -ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।।
यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वा यज्ञोपवीततेनोपनह्यामि।
नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।
उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर !।।
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

आचमन -यज्ञोपवीत के बाद आचमन के लिये जल दें।

चन्दन -ॐ त्वां गन्धर्वा अखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः।
त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान् यक्ष्मादमुच्यत।।
श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गंधाढ्यं सुमनोहरम्।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ ! चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, चन्दनानुलेपनं समर्पयामि।

अक्षत -ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रिया अधूषत।
अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती योजान्विन्द्र ते हरी।।
अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर।।
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पमाला -ॐ ओषधीः प्रति मोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः।
अश्वा इव सजित्वरीर्वीरुधः पारयिष्णवः।।
माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।
मयाहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पुष्पमालां समर्पयामि।

दूर्वा -ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।
एवा नो दूर्वे प्रतनुसहस्रेण शतेन च।।
दूर्वाङ्कुरान् सुहरितानमृतान् मङ्गलप्रदान्।
आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण गणनायक !।।
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।

सिन्दूर-ॐ सिन्धोरिव प्राध्वने शूघनासो वातप्रमियः पतयन्ति यह्वाः।
घृतस्य धारा अरुषो न वाजी काष्ठा भिन्दन्नूर्मिभिः पिन्वमानः।।
सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्।
शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, सिन्दूरं समर्पयामि।

अबीर गुलाल आदि नाना परिमल द्रव्य-
ॐ अहिरिव भोगैः पर्येति बाहुं ज्याया हेतिं परिबाधमानः।
हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान् पुमान् पुमाँ्ँ सं परि पातु विश्वतः।।
अबीरं च गुलालं च हरिद्रादिसमन्वितम्।
नाना परिमलं द्रव्यं गृहाण परमेश्वर!।।
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

सुगन्धिद्रव्य-ॐ **अहिरिव0** इस पूर्वोक्त मंत्र से चढ़ाये

दिव्यगन्धसमायुक्तं महापरिमलाद्भुतम्।

गन्धद्रव्यमिदं भक्त्या दत्तं वै परिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, सुगन्धिद्रव्यं समर्पयामि।

धूप-**ॐ धूरसि धूर्व धूर्वन्तं धूर्व तं योऽस्मान् धूर्वति तं धूर्वयं वयं धूर्वामः। देवानामसि वह्नितम ँ सस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमं देवहूतमम्।।**

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः।

आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, धूपमाघ्रापयामि।

दीप-**ॐ अग्निर्ज्योतिज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा।**

अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्च स्वाहा।।

ज्योर्ति सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा।।

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।

दीपं गृहाणा देवेश त्रैलौक्यतिमिरापहम्।।

भक्त्या दीपं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने।

त्राहि मां निरयाद् घोराद् दीपज्योतिर्नमोऽस्तु ते।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दीपं दर्शयामि।

हस्तप्रक्षालन -**'ॐ हृषीकेशाय नमः' कहकर हाथ धो ले।**

नैवेद्य-पुष्प चढ़ाकर बायीं हाथ से पूजित घण्टा बजाते हुए।

ॐ नाभ्या आसीदन्तरिक्ष ँ शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत।

पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्राँस्तथा लोकाँ2 अकल्पयन्।।

ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा।

ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा।

शर्कराखण्डखाद्यानि दधिक्षीरघृतानि च।

आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, नैवेद्यं निवेदयामि।

नैवेद्यान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

ऋतुफल -ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।

बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चुन्त्व ँ हसः।।

इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव।

तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, ऋतुफलानि समर्पयामि।

फलान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। जल अर्पित करे। **ॐ मध्ये-मध्ये पानीयं समर्पयामि। उत्तरापोशनं समर्पयामि हस्तप्रक्षालनं समर्पयामि मुखप्रक्षालनं समर्पयामि।**

करोद्वर्तन-**ॐ अ ँ शुना ते अ ँ शुः पृच्यतां परुषा परुः।**

गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसो अच्युतः।।

चन्दनं मलयोद्भुतं कस्तूर्यादिसमन्वितम्।

करोद्वर्तनकं देव गृहाण परमेश्वर।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, करोद्वर्तनकं चन्दनं समर्पयामि।

ताम्बूल -**ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।**

वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः।।

पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्।

एलादिचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, मुखवासार्थम् एलालवंगपूगीफलसहितं ताम्बूलं समर्पयामि।

(इलाची, लौंग-सुपारी के साथ ताम्बूल अर्पित करे।)

दक्षिणा-**ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।**

स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।

अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, कृताया पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि। (द्रव्य दक्षिणा समर्पित करे।)

विशेषार्घ्य-ताम्रपात्र में जल, चन्दन, अक्षत, फल, फूल, दूर्वा और दक्षिणा रखकर अर्घ्यपात्र को हाथ में लेकर निम्नलिखित मन्त्र पढ़ें:-

ॐ रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष रक्ष त्रैलोक्यरक्षक।
भक्तानामभयं कर्ता त्राता भव भवार्णवात्।।
द्वैमातुर कृपासिन्धो षाण्मातुराग्रज प्रभो!।
वरदस्त्वं वरं देहि वाञ्छितं वाञ्छितार्थद।।
गृहाणार्घ्यमिमं देव सर्वदेवनमस्कृतम्।
अनेन सफलार्घ्येण फलदोऽस्तु सदा मम।

आरती-ॐ इद ँ हविः प्रजननं मे अस्तु दशवीर ँ सर्वगण ँ स्वस्तये।
आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्यभयसनि।
अग्निः प्रजां बहुलां मे करोत्वन्नं पयो रेतो अस्मासु धत्त।।
ॐ आ रात्रि पार्थिव ँ रजः पितुरप्रायि धामभिः।
दिवः सदा ँ सि बृहती वि तिष्ठस आ त्वेषं वर्तते तमः।।
कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम्।
आरार्तिकमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव।।
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, अरार्तिकं समर्पयामि।
(कर्पूर की आरती करे, आरती करें, आरती के बाद जल गिरा दें।)

मन्त्र पुष्पाञ्जलि-अंजली में पुष्प लेकर खड़े हो जायें।
ॐ मालतीमल्लिकाजाती- शतपत्रादिसंयुताम्।
पुष्पाञ्जलिं गृहाणेश तव पादयुगार्पितम्।।
ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।।
नानासुगन्धिपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च।
पुष्पाञ्जलिर्मया दत्तो गृहाण परमेश्वर।।
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।
(पुष्पाञ्जलि अर्पित करे।)

प्रदक्षिणा -ॐ ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः।
तेषा ँ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि।
यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणपदे पदे।।
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, प्रदक्षिणां समर्पयामि।
(प्रदक्षिणा करे।)

प्रार्थना।।

विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय। नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषिताय गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते।। लम्बोदर नमस्तुभ्यं सततं मोदकप्रिय। अविघ्नं कुरुमे देव सर्वकार्य्येषु सर्वदा।।

अनया पूजया सिद्धि-बुद्धि-सहितः श्रीमहागणपतिः साङ्गसपरिवारः प्रीयताम्।। श्रीविघ्नराजप्रसादात्कर्तव्यामुककर्मनिर्विघ्नसमाप्तिश्चास्तु।

आचार्यादिवरण

हाथ में जल लेकर **ॐ तत्स. तिथौ आचार्यादिऋत्विजां वरणमहं करिष्ये,** आचार्य को पूर्वाभिमुख बैठाकर पाँव धोवें तथा गन्धाक्षत से पञ्चोपचार पूजन कर हाथ में वरण द्रव्य, जल और अक्षत लेकर दाहिने घुटने का स्पर्श करते हुए आचार्य वरण का संकल्प करें। **ॐ तत्स. अमुकगोत्र प्रवरशाखान्वितयजमानोऽहम् अमुकगोत्रप्रवरशाखाध्यायिनममुकनामाचार्यम् अस्मिन् कर्तव्ये अमुकयागाख्ये कर्मणि दास्यमानैः एभिर्वरणद्रव्यैः आचार्यत्वेन त्वामहं वृणे। वृतोऽस्मि।** ऐसा आचार्य कहे। पुनः आचार्य के हाथ में निम्नलिखित मंत्र पढ़कर वरण हेतु मंगल सूत्र बांधे। **ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम्। दक्षिणया श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते।।** पुनः वरण द्रव्य लेकर निम्न संकल्प पूर्वक ऋत्विक् का वरण करें। **ॐ तत्स. अस्मिन् अमुककर्मणि ऋत्विग्त्वेन। त्वामहं वृणे। ऋत्विक् कहे-वृत्तोऽस्मि।** पुनः प्रार्थना-**अस्य यागस्य निष्पत्तौ भवन्तोऽभ्यर्चिता मया। सुप्रसन्नैः प्रकर्त्तव्यं कर्मेद विधिपूर्वकम्।।** पुनः ऋत्विक् के साथ आचार्य अपने आसन पर बैठकर आचमन, प्राणायाम कर सङ्कल्प करें। **ॐ तत्स. अस्मिन् कर्मणि यजमानेन वृतोऽहं आचार्य-(ऋत्विक्)-कर्म करिष्ये।**

दिग्रक्षण

बायें हाथ में श्वेत सरसों अथवा अक्षत लेकर दिग्रक्षण करे।

ॐ पूर्वे रक्षतु गोविन्द आग्नेय्यां गरुडध्वजः।
याम्ये रक्षतु वाराहो नारसिंहस्तु नैऋते।।
केशवो वारुणीं रक्षेद् वायव्यां मधुसूदनः।
उत्तरे श्रीधरोरक्षेदीशाने च गदाधरः।।
ऊर्ध्वं गोवर्द्धनो रक्षेदधस्तात्तु त्रिविक्रमः।
एवं दश दिशो रक्षेद्वासुदेवो जनार्दनः।।
यज्ञाग्रे पातु मा शंखः पृष्ठे पद्मन्तु रक्षतु।
वामपार्श्वे गदा रक्षेद्दक्षिणे च सुदर्शनः।।

उपेन्द्रः पातु ब्राह्मणमाचार्यं पातुवामनः।
अच्युतः पातु ऋग्वेदं यजुर्वेदमधोक्षजः।।
कृष्णो रक्षतु सामाख्यमथर्वाणन्तु माधवः।
विप्रा ये चोपदेष्टारस्तांश्च दामोदरोऽववतु।।
यजमानं सपत्नीक पुण्डरीकविलोचनः।
रक्षाहीनन्तु यत्स्थानं तत्सर्वं रक्षताद्धरिः।।

सरसों या अक्षत सभी दिशाओं में छींट दें।

भूतोत्सारण

ॐ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमि संस्थिताः।
ये भूता विध्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।।
अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम्।
सर्वेषामविरोधेन शान्तिकर्म समारभेत्।।

उपर्युक्त श्लोक पढ़कर बायें हाथ, पाँव को तीन बार भूमि पर पटकें।

रक्षाबन्धन

यजमान तीन धागा वाला लाल सूत्र एवं थोड़ा द्रव्य बायें हाथ में लेकर एवं दाहिने हाथ से ढककर 'ॐ हुं फट्' यह मंत्र तीन बार करके उस सूत्र को गणपति के चरणों में निवेदित करें। पुनः गन्ध पुष्प से उसकी पूजा करें। फिर यह सूत्र गणपति के अनुग्रह से प्राप्त हुआ ऐसा समझते हुए अन्य देवों को भी निवेदित करें। पुनः आचार्य सहित अन्य विप्रों के सीधे दाहिने हाथ में निम्न मंत्र से बांधे -

ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाऽऽप्नोति दक्षिणाम्।
दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते।।

उसके वाद आचार्य भी यजमान के दाहिने हाथ में और यजमान पत्नी के बांयें हाथ में निम्न मंत्र पढ़ते हुए अभिमन्त्रित रक्षा सूत्र बांधें।

मन्त्र-ॐ यदाबध्नं दाक्षायणा हिरण्यं शतानीकाय सुमनस्यमाना। तन्म आवध्नामि शतशारदायायुष्मांजरदष्टिर्यथासम्।।

ॐ येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः।
तेन त्वामनुबध्नामि रक्षे मा चल मा चल।।

वरुणकलशस्थापन

हाथ में गन्ध, अक्षत और पुष्प लेकर पृथ्वी की पूजा करें-

ॐ भूरसि भूमिरस्यदितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री। पृथिवीं यच्छ पृथिवीं दृ ꣳ ह पृथिवीं माहि ꣳ सीः।

कलश स्थापित किये जाने वाली भूमि पर रोली से अष्टदल कमल बनाकर उत्तान हाथों से भूमि का स्पर्श करें-**ॐ महीद्यौः पृथिवी चन इमं यज्ञं मिमिक्षताम्। पिपृतान्नो भरीमभिः।।**

पुनः धान्यमसि मंत्र से जौ रखें-**ॐ धान्यमसि घिनुहि देवान्प्राणायत्त्वोदानायत्वा व्यानायत्वा दीर्घानुप्रसितिमायु-षेन्धान्देवो वः सविता हिरण्यपाणिः प्रतिगृभ्णात्वच्छिद्रेण पाणिना चक्षुषे त्वां महीनां पयोसि।।**

कलश में स्वस्तिक का चिह्न बनाकर तीन धागेवाली मौली को उसमें लपेटे। पुनः धातु या मिट्टी के कलश को जौ के ऊपर **'आ जिघ्र'** इस मंत्र को पढ़कर स्थापित करें।-

ॐ आजिघ्र कलशं मह्या त्वा विशत्विंदवः पुनरुर्ज्जा निवर्तस्वसानः। सहस्त्रन्धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्म्मा विशताद्रयिः।।

कलश में जल-**ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनीस्थो वरुणस्य ऋतसदन्यसि वरुणस्य ऋतसदनमसि वरुणस्य ऋतसदनमासीद।**

गन्ध प्रक्षेप-**ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्।**

चन्दन लेपकर सर्वौषधि डालें। **ॐ या ओषधीः पूर्वा जाता देवेभ्यास्त्रियुगं पुरा। मनै नु बभ्रूणामहं शतं धामानि सप्त च।।**

धान्य प्रक्षेप-**ॐ धान्यमसि धिनुहि**। इस पूर्वोक्त मंत्र से।

दूर्वा प्रक्षेप-**ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि। एवानो दूर्वे प्रतनु सहस्त्रेण शतेन च।।**

पंचपल्लव प्रक्षेप-**ॐ अश्वत्थे वो निषदनं पर्णे वो वसतिष्कृता गोभाज इत्किला सथ यत्समवथ पुरुषम्।।**

सप्तमृत्तिका प्रक्षेप-**ॐ स्योना पृथिविनो भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छानः शर्म्मसप्रथाः।**

पूगीफल प्रक्षेप-**ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पायाश्च पुष्पिणीः। बृहस्पति-प्रसूतास्ता नो मुञ्चत ꣳ हसः।।**

पंचरत्न प्रक्षेप-**ॐ परिवाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत् दधद्रत्नानि दाशुषे।।**

दक्षिणा प्रक्षेप-**ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्। सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।।**

कुशपवित्र प्रक्षेप-**ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सर्वितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्।**

मौन रहकर पुष्प डालें। लाल वस्त्र या मौली कण्ठ में लपेटें-**ॐ युवा सुवासाः परिवीत आगात् स उश्रेयान् भवति जायमानः। तं धीरासः कवय उन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः।।**

चावल से भरा पूर्ण पात्र कलश के ऊपर रखें **ॐ पूर्णादर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत। वस्नेव विक्रीणावहा इषमूर्ज ᳪ शतक्रतोः।।**

रक्त वस्त्र से लिपटा नारियल-**ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहो रात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रुपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुम्म इषाण सर्वलोकम्म इषाण।।**

वरुणावाहन-**ॐ तत्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेह बोद्धचरुश ᳭ समान आयुः प्रमोषीः।। ॐ भूर्भुवः स्वः अस्मिन् कलशे वरुणं साङ्गं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकम् आवाहयामि स्थापयामि। ध्यानम्-वरुणः पाशभूत्सौम्यः प्रतीच्यां मकराश्रयः। पाशहस्तात्मको देवो जलराश्यधिपो महान्।।**

हाथ में अक्षत पुष्प लेकर **प्रतिष्ठा-ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञं, समिमं दधातु। विश्वेदेवा स इह मादयन्तामों प्रतिष्ठ। ॐ वरुणाय नमः सुप्रतिष्ठितो वरदो भव**

पुनः **ॐ भूर्भुवः स्वः अपां पतये वरुणाय नमः** इस मंत्र से पञ्चोपचार या षोडशोपचार पूजन कर ॐ तत्त्वायामि इस पूर्वोक्त मन्त्र से पुष्पाञ्जलि अर्पित करे। **ॐ अनेन पूजनेन वरुणः प्रीयताम्** जल छोड़ दें।

गङ्गाद्यावाहन-**ॐ सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः।।**

पुनः कलश पर अक्षत छींटें।-**ॐ ऋग्वेदाय नमः। ॐ यजुर्वेदाय नमः। ॐ सामवेदाय नमः। ॐ अथर्ववेदाय नमः। ॐ कलशाय नमः। ॐ रुद्राय नमः। ॐ समुद्राय नमः। ॐ गङ्गायै नमः। ॐ यमुनायै नमः। ॐ सरस्वत्यै नमः। ॐ कलशकुम्भाय नमः।**

अनामिका से कलश का स्पर्श कर पढ़ें।

ॐ कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले तस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः।।
कुक्षौ तु सागराः सप्त सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः।।
अंगैश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः।
अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा।
आयान्तु यजमानस्य दुरितक्षयकारिकाः।।

ततः गायत्र्यादिभ्यो नमः इस मंत्र से पञ्चोपचार पूजन करें।

कलश प्रार्थना-

ॐ देवदानवसम्वादे मध्यमाने महोदधौ।
उत्पन्नोसि तदा कुम्भ विघृतो विष्णुना स्वयम्।।
त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वेत्वयि स्थिताः।
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः।।
शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः।
आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवाः सपैतृकाः।।
त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदः।
त्वत्प्रसादादिदं कर्म कर्तुमीहे जलोद्भव।
सान्निध्यं कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा।।
नमो नमस्ते स्फटिकप्रभाय सुश्वेतहाराय सुमङ्गलाय।
सुपाशहस्ताय झषासनाय जलाधिनाथाय नमो नमस्ते।।

जल लेकर-**ॐ अनया पूजया कलशे वरुणाद्यावाहितदेवताः प्रीयन्ताम्** यह पढ़कर जल छोड़ दें। **इति कलशपूजाविधि।**

पुण्याहवाचनम्

पुण्याहवाचन के दिन आरम्भ में वरुण-कलश के पास जल से भरा एक कलश भी रख दे। वरुण-कलश के पूजन के साथ-साथ इसका भी पूजन कर लेना चाहिए। पुण्याहवाचन का कर्म इसी से किया जाता है। सबसे पहले वरुण की प्रार्थना करें।

वरुण प्रार्थना -ॐ पाशपाणे नमस्तुभ्यं पद्मिनीजीवनायक।

पुण्याहवाचनं यावत् तावत् त्वं सुस्थिरो भव।।

यजमान अपनी दाहिनी ओर पुण्याहवाचन-कर्म के लिए वरण किये हुए युग्म ब्राह्मणों को, जिनका मुख उत्तर की ओर हो, बैठा ले। इसके बाद यजमान घुटने टेककर कमल की कोढ़ीं की तरह अञ्जलि बनाकर सिर से लगाकर तीन बार प्रणाम करे। तब आचार्य अपने दाहिने हाथ से स्वर्णयुक्त उस जलपात्र (लोटे) को यजमान की अञ्जलि में रख दे। यजमान उसे सिर से लगाकर निम्नलिखित मन्त्र पढ़कर ब्राह्मणों से अपनी दीर्घ आयु का आशीर्वाद मांगे-

यजमान-**ॐ दीर्घा नागा नद्यो गिरयस्त्रीणि विष्णुपदानि च।**

त्रीणि पदा विचक्रमे विष्णुर्गोपा अदाभ्यः अतो धर्माणि धारयन्।

तेनायुष्यप्रमाणेन पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु, इति भवन्तो ब्रुवन्तु विप्र-**ॐ पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु** कुल तीन बार इसी आनुपूर्वी से यजमान ब्राह्मण संवाद कर यजमान सिर पर रखे कलश को कलश के स्थान पर रखे पुनः इसी कलश को सिर से लगाकर पूर्वोक्त आनुपूर्वी मंत्र **ॐ दीर्घा नागा** आदि तीन बार करें। विप्र-**इति अस्तु।** पुनः कर्ता पूर्वाभिमुख बैठे युग्म ब्राह्मणों के सुप्रोक्षितमस्तु कहकर जल दे। ब्राह्मण-**अस्तु सुप्रोक्षितम्।** यजमान-**ॐ शिवा आपः सन्तु,** ऐसा कहकर आम्र पल्लव आदि के द्वारा ब्राह्मण के दाहिने हाथ में जल दे। विप्र-**ॐ सन्तु शिवा आपः,** ऐसा कहकर ग्रहण कर ले। इसी प्रकार आगे यजमान ब्राह्मण के हाथ में पुष्पादि देता जाय और ब्राह्मण इन्हें स्वीकार करते हुए यजमान की मङ्गलकामना करें। यजमान-**ॐ सौमनस्यमस्तु पुष्पं दद्यात्।** विप्र- **अस्तु सौमनस्यम्।** यजमान-**अक्षतं चारिष्टं चास्तु।** विप्र-**अस्त्वक्षतमरिष्टं च।** यजमानं-**ॐ गन्धाः पान्तु।** विप्र-**सौमंगल्यं चास्तु।** यजमान-**ॐ अक्षताः पान्तु।** विप्र-**आयुष्यमस्तु।** यजमान-**ॐ पुष्पाणि पान्तु।** विप्र-**सौश्रियमस्तु।** यजमान-**ॐ सफलानि ताम्बूलानि पान्तु** यजमान-**दक्षिणापान्तु।** विप्र-**बहुधनञ्चास्तु।** यजमान-**ॐ स्वर्चितमस्तु।** विप्र-**अस्तु स्वर्चितम्।** इसके बाद यजमान आचार्य एवं ब्राह्मणों को पुनः प्रणाम कर प्रार्थना कर-**श्रीर्यशो विद्या विनयो वित्तं बहुपुत्रं चायुष्यं चास्तु।** विप्र-**श्रीर्यशो विद्या विनयो वित्तं बहुपुत्रं चायुष्यं चास्तु।** ऐसा कहकर ब्राह्मण उसी कलश के जल से यजमान के सिर पर छिड़कते हए बोलें। **'दीर्घमायुः शान्तिः पुष्टिस्तुष्टिश्चास्तु'।** यजमान अक्षत लेकर-**यं कृत्वा सर्ववेद- यज्ञक्रियाकरणकर्मारम्भाः शोभनाः प्रवर्तन्ते तमहमोकारमादिं कृत्वा ऋग्यजुः सामाथर्वाशीर्वचनं बहुऋषिमतं समनुज्ञातं भवद्भिरनुज्ञातः पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये** ऐसा कहे। विप्र-**वाच्यताम्।** पुनः यजमान अञ्जलि में अक्षत लेकर बोले-**व्रत-जपनियम-तप-स्वाध्याय-क्रतु-दया-दम दान-विशिष्टानां सर्वेषां भवतां ब्राह्मणानां मनः समाधीयताम्।** विप्र- **समाहितमनसः स्मः।** यजमान- **प्रसीदन्तु भवन्तः।** विप्र-**प्रसन्नाः**

स्म। इसके बाद कलश के ऊपर अक्षत डालते हुए यजमान हर बार प्रणाम करे या पहले से रखे गये दो पात्रें में से पहले पात्र में आम के पल्लव या दूब से थोड़ा-थोड़ा जल गिरायें। ब्राह्मण बोलें-**ॐ शान्तिरस्तु। ॐ पुष्टिरस्तु। ॐ तुष्टिरस्तु। ॐ वृद्धिरस्तु। ॐ अविघ्नमस्तु। ॐ आयुष्यमस्तु। ॐ आरोग्यमस्तु। ॐ शिवमस्तु। ॐ शिवं कर्मास्तु। ॐ कर्मसमृद्धिरस्तु। ॐ वेदसमृद्धिरस्तु। ॐ शास्त्रसमृद्धिरस्तु। ॐ धनधान्यसमृद्धिरस्तु। ॐ पुत्रपौत्रसमृद्धिरस्तु। ॐ इष्टसम्पदस्तु।** इसके बाद दूसरे पात्र में **ॐ अरिष्टनिरसनमस्तु। ॐ यत्पापं यद्रोगमशुभमकमल्याणं तद्दूरे प्रतिहतमस्तु।** पुनः पहले पात्र में-**ॐ यच्छेयस्तदस्तु। ॐ उत्तरे कर्मणि निर्विघ्नमस्तु। ॐ उत्तरोत्तरमहरहरिभवृद्धिरस्तु। शुभाः शोभनाः सम्पद्यन्ताम्। ॐ तिथिकरणे समुहर्ते सनक्षत्रे सग्रहे सलग्ने साधिदैवते प्रीयेताम्। ॐ दुर्गापंचाल्यौ प्रीयेताम्। ॐ अग्निपुरोगा विश्वदेवाः प्रीयन्ताम्। ॐ इन्द्रपुरोगा मरुद्गणाः प्रीयन्ताम्। ॐ माहेश्वरीपुरोगा उमामातरः प्रीयन्ताम्। ॐ वसिष्ठपुरोगा ऋषिगणाः प्रीयन्ताम्। ॐ अरुन्धतीपुरोगा एकपत्न्यः प्रीयन्ताम्। ॐ ब्रह्मपुरोगाः सर्वे वेदाः प्रीयन्ताम्। ॐ विष्णुपुरोगाः सर्वेदेवाः प्रीयन्ताम्। ॐ ऋषयश्छन्दांस्याचार्या वेदा देवा यज्ञाश्च प्रीयन्ताम्। ॐ ब्रह्मा च ब्राह्मणाश्च प्रीयन्ताम्। ॐ अम्बिकासरस्वत्यौ प्रीयेताम्। ॐ श्रद्धामेधे प्रीयेताम्। ॐ भगवती कात्यानी प्रीयताम्। ॐ भगवती माहेश्वरी प्रीयताम्। ॐ भगवती ऋद्धिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवती तुष्टिकारी प्रीयताम्। ॐ भगवन्तौ विध नविनायकौ प्रीयेताम्। ॐ सर्वाः कुलदेवताः प्रीयन्ताम्।** दूसरे पात्र में-**ॐ हताश्च ब्रह्मद्विषः। ॐ हताश्च ब्रह्मद्विषः। ॐ हताश्च परिपन्थिनः। ॐ हताश्च विघ्नकर्तारः। ॐ शत्रवः पराभवं यान्तु। ॐ शाम्यन्तु घोराणि। ॐ शाम्यन्त पापानि। ॐ शाम्यन्तु ईतयः। ॐ शाम्यन्तूपद्रवाः।** पुनः प्रथम पात्र में-**ॐ शुभानि वर्द्धन्ताम्। ॐ शिवा आपः सन्तु। ॐ शिवा ऋतवः सन्तु। ॐ शिवा ओषधयः सन्तु। ॐ शिवा वनस्पतयः सन्तु। ॐ शिवा अग्नयः सन्तु। ॐ शिवा आहूतयः सन्तु। ॐ शिवा अतिथयः सन्तु। ॐ अरोहात्रे शिवे स्याताम्। ॐ निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषघयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्। शूक्रांगारक-बुध-बृहस्पति-शनैश्चर-राहु-केतु-सोमसहिता आदित्यपुरोगाः सर्वे ग्रहाः प्रीयन्ताम्। ॐ भगवान् नारायणः प्रीयताम्। ॐ भगवान् पर्जन्यः प्रीयताम्। ॐ भगवान् स्वामी महासेनः प्रीयताम्। ॐ पुरोऽवाक्यया यत्पुण्यं तदस्तु। ॐ याज्यया यत्पुण्यं तदस्तु। ॐ वषट्कारेण यत्पुण्यं तदस्तु। प्रातः सूर्योदये यत्पुण्यं तदस्तु।** इसके बाद यजमान कलश को भूमि पर रखकर पहले पात्र में गिराये गये जल

से मार्जन करें, परिवार के लोगों का एवं घर का भी अभिसिंचन करें। द्वितीय पात्र के जल को एकान्त स्थान में गिरा दे।

यजमान हाथ जोड़कर प्रार्थना करे-**ॐ पुण्याहकालान् वाचयिष्ये।** विप्र-**ॐ वाच्यताम्।** पुनः यजमान ब्राह्मणों को हाथ जोड़कर प्रार्थना करे-**ॐ ब्राह्मं पुण्यं महद्यच्चय सृष्टच्युत्पादनकारकम्। वेदवृक्षोद्भवं नित्यं तत्पुण्याहं ब्रुवन्तु नः।। भो ब्राह्मणः। मम सकुटुबस्य सपरिवारस्य गृहे क्रियमाणस्यामुकर्मणः पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु।** ब्राह्मण-**ॐ पुण्याहम्** इस प्रकार यजमान ब्राह्मण इस विधि की कुल तीन आवृत्ति करें। **ॐ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः। पुनन्तु विश्वाभूतानि जातवेदः पुनीहि माम्।** यजमान-**ॐ पृथिव्यामुद्धृतायान्तु यत्कल्याणं पुरा कृतम्। ऋषिभिः सिद्ध-गन्धर्वैस्तत्कल्याणं ब्रुवन्तु नः।। भो ब्राह्मणाः। मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे क्रियमाणस्यामुककर्मणः कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु।** ब्राह्मण-**ॐ कल्याणम्3 ॐ यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः ब्रह्मराजन्याभ्यांं शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च। प्रियो देवानां दक्षिणायै दातुरिह भूया समयं मे कामः समृद्धचतामुपमादो नमतु।। यजमानः-सागरस्य यथा वृद्धिर्महालक्ष्म्यादिभिः कृता सम्पूर्णा सुप्रभावा च तां च ऋद्धिं ब्रुवन्तु नः। भो ब्राह्मणाः मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे क्रियमाणस्यामुककर्मणः ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु।** ब्राह्मण-**ॐ ऋध्यताम्, 3 ॐ सत्रस्य ऋद्धिरस्यगन्म ज्योतिरमृता अभूम। दिवं पृथिव्याऽअध्यारुहामाविदाम देवान् स्वज्योर्तिः।** यजमान-**स्वस्तिर्याऽविनाशाख्या पुण्यकल्याणवृद्धिदा। विनायकप्रिया नित्यं ताञ्च स्वस्ति ब्रुवन्तु नः। भो ब्राह्मणाः। मम कुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे क्रियमाणस्यामुककर्मणः स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु।** ब्राह्मण-**ॐ आयुष्मते स्वस्ति3, ॐ स्वस्तिन इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्तिनस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु।।** यजमान-**समुद्रमथनाज्जाता जगदानन्दकारिका। हरिप्रिया च माङ्गल्या तां श्रियञ्च ब्रुवन्तु नः।। भो ब्राह्मणाः! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे क्रियमाणस्यामुकर्मणः "श्रीरस्तु" इति भवन्तो ब्रुवन्तु।** ब्राह्मण-**ॐ अस्तु श्रीः 3 ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुम्म इषाणा सर्वलोकम्म इषाण।** इसके बाद यजमान हाथ में अक्षत जल लेकर-**ॐ कृतैतदस्मिन् दानखण्डोक्तपुण्याहवाचने न्यूनातिरिक्तो यो विधिः स उपविष्टब्राह्मणानां वचनात् श्रीमहागणपतिप्रसादाच्च सर्वः परिपूर्णाऽस्तु** ऐसा कहकर जल छोड़ दे। ब्राह्मण-**ओं अस्तु परिपूर्णः।** इति पूण्याह वाचन

अभिषेक

पुण्याहवाचनोपरान्त कलश के जल को पहले पात्र में गिरा लें। अब अविधुर (जिसकी धर्मपत्नी जीवित हो) ब्राह्मण उत्तर या पश्चिम मुख होकर दूब और पल्लव के द्वारा इस जल से यजमान का अभिषेक करे। अभिषेक के समय यजमान अपनी पत्नी को बायीं तरफ कर ले। परिवार भी वहाँ बैठ जाय। अभिषेक के मन्त्र निम्नलिखित हैं-

ॐ पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयो धाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्।। ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः। सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित्।। ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनी स्थो वरुणस्य ऋतसदन्यसि वरुणस्य ऋतसदनमसि वरुणस्य ऋतसदनमा सीद।। ॐ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः। पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि माम्।। ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रिये दधामि बृहस्पतेष्ट्वा साम्राज्येनाभिषिञ्चाम्यसौ। ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रेणाग्नेः साम्राज्येनाभिषिञ्चामि।। ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। अश्विनोर्भैषज्येन तेजसे ब्रह्मवर्चसायाभिषिञ्चामि सरस्वत्यै भैषज्येन वीर्यायान्नाद्यायाभिषिञ्चामीन्द्रस्येन्द्रियेण बलाय श्रियै यशसेऽभिषिञ्चामि।। ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव। यद्भद्रं तन्न आ सुव।। ॐ धामच्छदग्निरिन्द्रो ब्रह्मा देवो बृहस्पतिः। सचेतसो विश्वे देवा यज्ञं प्रावन्तु नः शुभे।। ॐ त्वं यविष्ठ दाशुषो नॄँः पाहि शृणुधी गिरः। रक्षा तोकमुत त्मना। ॐ अन्नपतेऽन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः। प्र प्रदातारं तारिष ऊर्जं नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे।। ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ँ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व ँ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।। यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु। शं नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः।। सुशान्तिर्भवतु। सरितः सागराः शैलास्तीर्थानि जलदा नदाः। एते त्वामभिषिञ्चन्तु सर्वकामार्थसिद्धये।। शान्तिः पुष्टिस्तुष्टिश्चास्तु। अमृताभिषेकोऽस्तु।।

दक्षिणादान-**ॐ अद्य.. कृतैतत्पुण्याहवाचनकर्मणः साङ्गता-सिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च पुण्याहवाचकेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो यथाशक्ति मनसोद्दिष्टां दक्षिणां विभज्य दातुमहमुत्सृजे।**

षोडशमातृका-पूजन

चित्रानुसार सोलह कोष्ठक बनायें। पश्चिम से पूर्व की ओर मातृकाओं का आवाहन और स्थापन करे। कोष्ठकों में रक्त चावल, गेहूँ या जौ रख दे एवं निम्नाङ्कित मन्त्र पढ़ते हुए आवाहन करे।

षोडशमातृका-चक्र

पूर्व

आत्मनः कुलदेवता 16	**लोकमातारः** 12	**देवसेना** 8	**मेधा** 4
तुष्टिः 15	**मातरः** 11	**जया** 7	**शची** 3
पुष्टिः 14	**स्वाहा** 10	**विजया** 6	**पद्मा** 2
धृतिः 13	**स्वधा** 9	**सावित्री** 4	**गौरी** 1

ओं गौर्ये नमः गौरीमावाहयामि स्थापयामि। ॐ पद्मायै नमः पद्ममा.। ॐ शच्यै नमः शचीमा.। ॐ मेधायै नमः मेधामा0। ॐ सावित्र्यै नमः सावित्रिमा.। ॐ विजयायै नमः विजयामा.। ॐ जयायै नमः जयामा.। ॐ देवसेनायै नमः देवसेनामा। ॐ स्वधायै नमः स्वधामा। ॐ स्वाहायै नमः स्वाहामा। ॐ मातृभ्यो नमः मातृरावा.। ॐ लोकमातृभ्यो नमः लोकमातृरावा। पुष्टचै नमः पुष्टिमा.। ॐ तुष्टचै नमः तुष्टिमा.। ॐ आत्मकुलदेवतायै नमः आत्मकुलदेवतामा.। प्राण प्रतिष्ठा-ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञं ೮ समिमं दधातु विश्वेदेवा स इह मादयन्तामो3म्प्रतिष्ठ। ओं भूर्भुवः स्वः श्रीगौर्यादिषोडशमातरः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु। इस मन्त्र से प्रतिष्ठा कर **ओं गौर्यै नमः** इत्यादि नाम-मन्त्रों से अथवा पृथक् पृथक् **ओं गौर्यादिषोडशमातृभ्यो नमः** इससे षोडशोपचार अथवा यथालब्धोपचार पूजन समाप्त कर, **ओं आयुरारोग्यमैश्वर्यं ददध्वं मातरो मम। निर्विध्नं सर्वकार्येषु कुरुध्वं सगणाधिपाः** पढ़कर नारियल चढ़ायें। पुनः हाथ जोड़कर **श्रीगौर्यादिषोडशमातृणां पूजनकर्मणो यन्न्यूनमतिरिक्तं वा तत्सर्वं मातृणां प्रसादात्परिपूर्णमस्तु "गृहे वृद्धिशतानि भवन्तु" उत्तरे कर्मण्यविघ्नमस्तु।** यह बोले

इति मातृकापूजन।।

चतुःषष्टियोगिनीपूजन

(अग्निकोण में)-**ओं आवाहयाम्यहं देवीं योगिनीं परमेश्वरीम्। योगाभ्यासेन संतुष्टा परं ध्यानसमन्विता।। दिव्यकुण्डलसंकाशा दिव्यज्वाला त्रिलोचना। मूर्तिमती ह्यमूर्त्ता च उग्रा चैवोग्ररूपिणी।। अनेक भावसंयुक्ता संसारार्णवतारिणी।। यज्ञे कुर्वन्तु निर्विध्नं श्रेयो यच्छन्तु मातरः।। दिव्ययोगी-महायोगी-सिद्धयोगी गणेश्वरी। प्रेताशी डाकिनी काली कालरात्री निशाचरी।। हुङ्कारी सिद्धवेताली खर्परी भूतगामिनी।। उर्ध्वकेशी विरूपाक्षी शुष्कांगी मांसभोजिनी। फूत्कारी वीरभद्राक्षी धूम्राक्षी कलहप्रिया।। रक्ता च घोररक्ताक्षी विरूपाक्षी भयंकरी। चौरिका भारिका चण्डी वाराही मुण्डधारिणी। भैरवी चक्रिणी क्रोधा दुर्मुखी प्रेतवासिनी। कालाक्षी मोहिनी चक्री कंकाली भुवनेश्वरी। कुण्डला तालकौमारी यमदूती करालिनी।। कौशिकी यक्षिणी यक्षी कौमारी यन्त्रवाहिनी।। दुर्घटा विकटा घोरा कपाला विषलङ्घना। चतुःषष्टिः समाख्याता योगिन्यो हि वरप्रदाः।। त्रैलोक्यपूजिता नित्यं देवमानुषयोगिभिः।।** इस प्रकार आवाहन कर **ॐ चतुःषष्टियोगिनीभ्यो नमः** इससे चन्दन पुष्प आदि द्वारा पूजन करें।

इति योगिनीपूजन

सप्तघृतमातृका (वसोर्द्धारा) पूजन

आग्नेयकोण में किसी वेदी अथवा काष्ठपीठ (पाटा) पर प्रादेशमात्र स्थान में पहले रोली या सिन्दूर से स्वस्तिक बनाकर 'श्रीः' लिखे। इसके नीचे एक बिन्दु और इसके नीचे दो बिन्दु दक्षिण से करके उत्तर की ओर दे। इसी प्रकार सात बिन्दु क्रम से बनाना चाहिये।

इसके बाद नीचे वाले सात बिन्दुओं पर घी या दूध से प्रादेश मात्र सात धाराएँ निम्नलिखित मन्त्र से दें-

ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्त्रधारं देवस्त्वा सविता पुनातु। वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वाः कामधुक्षः। उस पर दही छोड़कर लाल सूत्र लपेट दें। पुनः उपर्युक्त वसोः इस मंत्र को पढ़कर गुड़ के द्वारा बिन्दुओं की रेखाओं को क्रमशः ऊपर से परस्पर मिला दें। पुनः उन सात बिन्दुओं में क्रमशः देवता का आवाहन करें। **ॐ भूर्भुवः स्वः श्रियै नमः श्रियमावाहयामि स्थापयामि। ॐ भूर्भुवः स्वः लक्ष्म्यै नमः लक्ष्मीमा0 स्था.। ॐ भूर्भुवः स्वः**

धृत्यै नमः घृतिमा. स्था.। ॐ भूर्भुवः स्वः मेधायै नमः मेधामा0 स्था.। ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहायै नमः स्वाहामा. स्था.। ॐ भूर्भुव. स्व. प्रज्ञायै नमः प्रज्ञामा. स्था.। ॐ भूर्भुवः स्वः सरस्वत्यै नमः सरस्वतीमा. स्था.। ॐ मनोजूतिः. यह मंत्र एक बार पढ़कर **वसोर्धारादेवताः सुप्रतिष्ठिताः वरदा भवन्तु।** इस मंत्र से प्रतिष्ठा करें। तदनन्तर-**ॐ वसोर्धारादेवताभ्यो नमः गन्धं समर्पयामि। पुष्पाणि समर्पयामि। धूपं समर्पयामि। दीपं सम.। नैवेद्य स.। प्रार्थना-यदङ्गत्वेन भो देव्यः पूजिता विधिमार्गतः। कुर्वन्तु कार्यमखिलं निर्विघ्नेन क्रतूद्भवम्।।**

आयुष्य मंत्र जप

यजमान अञ्जलि में पुष्प रखें तथा ब्राह्मण आयुष्य मन्त्र का पाठ करें। **ॐ आयुष्यं वर्चस्य ಆ रायस्पोषमौद्भिदम्। इद ಆ हिरण्यं वर्चस्यञ्जैत्राया विशतादुमाम्।।1।। नतद्रक्षा ಆ सिन पिशाचास्तरन्ति देवानामोजः प्रथम ಆ ह्येतत्। यो विभर्त्ति दाक्षायण ः हिरण्य ः स देवेषु कृणुते दीर्घमायुः स मनुष्येषु कृणुते दीर्घमायुः।।2।। यदाबध्नन्दाक्षायणा हिरण्य ः शतानीकाय समुनस्यमानाः। यन्म आबध्नामि शतशारदायायुष्मान् जरदष्टिर्यथासम्।।3।।**

पौराणिक श्लोक-**यदायुष्यं चिरं देवा सप्तकल्पान्तजीविषु। ददुस्तेनायुषा सम्यक् जीवन्तु शरदः शतम्।। दीर्घा नागा नगा नद्योऽन्तस्सप्तार्णवा दिशः। अनन्तेनायुषा तेन जीवन्तु शरदः शतम्।। सत्यानि पञ्च भूतानि विनाशरहितानि च। अविनाश्यायुषा तद्वज्जीवन्तु शरदः शतम्।।**

(इति आयुष्यमन्त्र जप)

साङ्कल्पिक-नान्दीश्राद्धप्रयोग

आचमन, प्राणायाम कर **सङ्कल्प ॐ अद्येत्यादि देशकालौ संकीर्त्य कर्तव्यामुककर्माङ्गत्वेन साङ्कल्पिकेन विधिना ब्राह्मणयुग्म-भोजन-पर्याप्तान्न निष्क्रयीभूत-यथाशक्ति-हिरण्येन नान्दीमुखश्राद्धमहं करिष्ये।** हाथ जोड़कर तीन बार निम्नोक्त का पाठ करें-**ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च। नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः। श्राद्धकाले गयां ध्यात्वा ध्यात्वा देवं गदाधरम्। मनसा च पितॄन्ध्यात्वा नान्दीश्राद्धं समारभे।**

एक पत्तल पर पूर्व से दक्षिण, प्रदक्षिण क्रमानुसार सीधे कुशाओं को बिछाकर उन पर सव्य होकर सर्वप्रथम हाथ में जल लेकर **'ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः।'** तक

वाक्य पढ़कर अपने हाथ से लिये जल को अंगूठे से पत्तल पर रखे गये आसन रूप कुश पर विश्वेदेव के पादप्रक्षालन के लिए जल को गिरा दें। इसी प्रकार प्रदक्षिण क्रम से **मातृ-पितामहि-प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः।'** तक उच्चारण कर **'मातामह-प्रमातामह-वृद्धाप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः'** 'मातृ-पितामही और प्रपितामही, पितृ पितामह तथा प्रपितामह एवं सपत्नीक मातामह, प्रमातामह एवं वृद्धप्रमातामह' को पादप्रक्षालन के लिए अर्घ्य जल दे। पुनः **ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इमे आसने वो नमो नमः। मातृ-पितामहि-प्रपितामह्यः नान्दी मुख्यः भूर्भुवः स्वः इमे आसने वो नमो नमः। पितृ-पितामह प्रपितामहाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इमे आसने वो नमो नमः। द्वितीयगोत्राः-मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इमें आसने वो नमो नमः।** पढ़कर विश्वेदेव को कुशरूप आसन प्रदान करे।

गन्धादिदान-तत्पश्चात् उन चारों स्थानों पर क्रम से **'ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः। मातृ-पितामहि-प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः भूर्भुवः स्वः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः। पितृ-पितामह-प्रतिपतामहाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः। द्वितीयगोत्राः-मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः।** तक वाक्य पढ़कर विश्वेदेव से लेकर सपत्नीक मातामह-प्रमातामह एवं वृद्धप्रमातामह तक के लिए जल, वस्त्र, यज्ञोपवीत चन्दन (रोरी), अक्षत, पुष्प, दीप, नैवेद्य, ऋतुफल, पान तथा सुपारी आदि से पूजन करे।

भोजन निष्क्रयदान-तदनन्तर क्रमशः चारों स्थान पर **ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इदं युग्मब्राह्मण-भोजन-पर्याप्तमामान्न-निष्क्रयभूतं द्रव्यममृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः। मातृ-पितामहि-प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः भूर्भुवः स्व इदं युग्म-ब्राह्मणभोजन-पर्याप्तमामान्न-निष्क्रयभूतं द्रव्यममृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः। पितृ-पितामह-प्रपितामहाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इदं युग्म-ब्राह्मण-भोजन-पर्याप्तमामान्ननिष्क्रयभूतं द्रव्यममृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः। द्वितीयगोत्राः-मातामह प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इदं युग्मब्राह्मण- भोजनपर्याप्तमामान्न-निष्क्रयभूतं द्रव्यममृतरूपेण**

स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः। विश्वेदेव के निमित्त दो ब्राह्मण, जितना आमान्न भोजन कर सकें, उसका निष्क्रय (मूल्य) भूत दक्षिणा दे। इसी प्रकार माता, पितामही एवं प्रपितामही तथा पिता, पितामह, एवं प्रपितामह और द्वितीयगोत्र वाले सपत्नीक मातामह, प्रमातामह और वृद्धप्रमातामह को भी विश्वेदेव की भांति दक्षिणा प्रदान करे।

दुग्ध-मिश्रित जलादिदान-तत्पश्चात् चारों स्थान पर क्रम से दूध, यव और जल को एक में मिलाकर दाहिने हाथ में लेकर अंगूठे से **ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम्। मातृपितामहि-प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः प्रीयन्ताम्। पितृ-पितामह-प्रपिता महाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम्। (द्वितीयगोत्राः) मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम्।** वाक्य उच्चारण कर विश्वेदेव के साथ सपत्नीक पिता, पितामह, प्रपितामह एवं सपत्नीक मातामह, प्रमातामह तथा वृद्धप्रमातामह के निमित्त अलग-अलग देवे।

जल-पुष्प-अक्षत प्रदान-पुनःचारों स्थानों पर **'ॐ शिव आपः सन्तु'** पढ़कर दाहिने हाथ के अंगूठे से जल, **'ॐ सौमनस्यमस्तु'** इससे पुष्प, **'ॐ अक्षतं चारिष्टं चास्तु'** से अक्षत, विश्वेदेव से सपत्नीक-पिता, पितामह एवं प्रपितामह तथा मातामह, प्रमातामह एवं वृद्धप्रमातामह पर क्रमशः पृथक्-पृथक् चढ़ावें।

जलधारा दान-पुनः अंजलि में जल लेकर **अघोराः पितरः सन्तु** यह वाक्य पढ़कर चारों स्थानों पर क्रमशः सभी पितरों के लिए अंगूठे कीओर से पूर्वाग्र जलधारा प्रदान करे।

आशीर्ग्रहणम्-यजमान-ॐ गोत्रं नो वर्द्धताम् ब्राह्मणाः-ॐ वर्द्धतां वो गोत्रम्। यज. ॐ दातारो नोभिवर्द्धन्ताम्, ब्रा0-ॐ वर्द्धन्तां वो दातारः। यज0-ॐ वेदाश्च नोऽभिवर्द्धन्ताम्, ब्रा-ॐ वर्द्धन्तां वो वेदाः। यज-ॐ सन्ततिर्नोऽभिवर्द्धन्तां। ब्रा.-ॐ वर्द्धतां वः सन्ततिः। यज.-ॐ श्रद्धा च नो मा व्यपगमत्, ब्रा.-ॐ मा व्यपगमद्वः श्रद्धा। यज.-ॐ बहु देयं च नोऽस्तु, ब्रा. -ॐ अस्तु वो बहु देयम्। यज. अन्नं च नो बहु भवेत्, ब्रा.-ॐ बहु भवेद्वोऽन्नम्। यज.-ॐ अतिथींश्च लभामहै, ब्रा.-ॐ लभन्तां वोऽतिथयः। यज-ॐ याचितारश्च नः सन्तु, ब्रा.-ॐ सन्तु वो याचितारः। यज. ॐ एता आशिषः सत्याः सन्तु, ब्रा. ॐ सन्त्वेताः सत्या आशिषः।

दक्षिणा दान-पुनः **सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः कृतैतन्नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं द्राक्षामलक-यवमूल-निष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे।** पढ़कर मुनक्का आवंला, यव एवं अदरक आदि क्रमशः संकल्प करके चारों स्थानों पर विश्वेदेव सहित सपत्नीक पितृ, पितामह, प्रपितामह तथा सपत्नीक मातामहादि के निमित्त देव और इन वस्तुओं के अभाव में निष्क्रयभूत

द्रव्य-दक्षिणा दान करे। **'मातृ-पितामहि-प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः भूर्भुवः स्वः कृतैतन्नान्दी श्राद्धस्य फलप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं द्राक्षाऽऽमलक-यवमूल-निष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे। पितृ-पितामह-प्रपितामहाः नान्दीमुखाः भूर्भूवः स्वः कृतैतन्नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं द्राक्षा-ऽऽमलक-यवमूल-निष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे। (द्वितीयगोत्राः) मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः कृतैतन्नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं द्राक्षाऽऽमलकयवमूल-निष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे।**

इसके बाद यव, पीली सरसों, ऋतुफल, दूर्वा, दुग्ध, जल, कुश, चन्दन एवं पुष्प सहित अर्घ्यपात्र को दाहिने हाथ में लेकर **'ॐ उपास्मै गायता नरः पवमानायेन्दवे। अभि देवाँ 2 इयक्षते।।1।। ॐ इडामग्ने पुरुदꣳ सꣳ सनिङ्गोः शश्वम ठ हवमानाय साध। स्यान्नः सूनुस्तनयो विजावाऽग्ने सा ते सुमतिर्भूत्वस्मे'** इन दो मन्त्रों से चारों स्थानों पर अर्घ्य प्रदान करे।

तत्पश्चात् यजमान हाथ में जल लेकर नान्दीश्राद्ध की सम्पन्नता के लिए प्रार्थना करते हुए **'अनेन नान्दीश्राद्धं सम्पन्नम्'** कहकर भूमि पर जल छोड़ दे। ब्राह्मणगण **'सुसम्पन्नं नान्दीश्राद्धम्'** ऐसा कह दें।

पुनः यजमान **'ॐ वाजे वाजे वत वाजिनो नो धनेषु विप्रा अमृताऽऋतज्ञाः। अस्य मध्वः पिबत मादयध्वं तृप्ता यात पथिभिर्देवयानैः।। आ मा वाजस्य प्रसवो जगम्यादेमे द्यावापृथिवी विश्वरूपे। आ मा गन्तां पितरा मातरा चामा सोमोऽमृतत्वेन गम्यात्।'** तक दो मन्त्र तथा **'विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम्'** ऐसा वाक्य कहकर विसर्जन करे। हाथ में जल लेकर **ॐ मयाचरितेऽस्मिन् सांकल्पिकनान्दीश्राद्धे न्यूनातिरिक्तो यो विधिः स उपविष्ट-ब्राह्मणानां वचनाच्छ्रीनान्दीमुख-पितृप्रसादाच्च सर्वः परिपूर्णोऽस्तु। अस्तु परिपूर्णः** ऐसा ब्राह्मण कहे। उसके बाद **प्रमादात्0** पढकर **ॐ विष्णवे नमो विष्णवे नमो विष्णवे नमः इति प्रणमेत्।**

सांकल्पिक नान्दी-श्राद्ध समाप्त।

नवग्रह-स्थापन एवं पूजन

वेदी पर श्वेत वस्त्र बिछाकर उसके ऊपर ग्रहों की स्थापना के लिये ईशानकोण में चार खड़ी पाइयों और चार पड़ी पाइयों का चौकोर मण्डल बनाये। इस प्रकार नौ कोष्ठक बन जायेंगे। बीच वाले कोष्ठक में सूर्य, अग्निकोण में चन्द्र, दक्षिण में मङ्गल, ईशानकोण में बुध, उत्तर में बृहस्पति, पूर्व में शुक्र, पश्चिम में शनि, नैर्ऋत्यकोण में राहु और वायव्यकोण में केतु की स्थाना करनी चाहिए। इसके बाद हाथ में जल, अक्षत, पुष्प लेकर संकल्प करें। देशकाल का संकीर्तन कर **"अमुक कर्मणः निर्विघ्नसमाप्तये**

सदङ्गतया सूर्यादिनवग्रहणामधिदेवता प्रत्यभिदेवता पञ्चलोकपालानां चावाहनं स्थापनं पूजनं च करिष्ये।"

तदनन्तर नीचे लिखे मन्त्र बोलते हुए उपरिलिखित क्रम से दाहिने हाथ से अक्षत छोड़कर ग्रहों का आवाहन एवं स्थापन करे।

1. सूर्य (मध्य में गोलाकर, लाल) सूर्य का आवाहन (लाल अक्षत-पुष्प लेकर)- **ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्।। जपाकुसुमसंकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्। तमोऽरिं सर्वपापघ्नं सूर्यमावाहयाम्यहम् ।। ॐ भूर्भुवः स्वः कलिङ्गदेशोद्भव काश्यपगोत्र-रक्तवर्ण-भो सूर्य! इच्छागच्छ, इह तिष्ठ ॐ सूर्याय नमः, श्रीसूर्यमावाहयामि, स्थापयामि।**

2. चन्द्र (अग्निकोण में, अर्धचन्द्र, श्वेत) चन्द्रका आवाहन (श्वेत अक्षत-पुष्प से)- **ॐ इमं देवा असपत्न ँ सुवध्यं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश एष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानां ँ राजा।। दधिशङ्खतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम्। ज्योत्स्नापतिं निशानाथं सोमभावाहयाम्यहम् ।। ॐ भूर्भुवः स्वः यमुनातीरोद्भव आत्रेयगोत्र शुक्लवर्ण भो सोम! इहागच्छ, इह तिष्ठ ॐ सोमाय नमः, सोममावाहयामि, स्थापयामि।**

3. मंगल (दक्षिण में, त्रिकोण, लाल) मङ्गल का आवाहन (लाल फूल और अक्षत लेकर) **ॐ अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपा ँ रेता ँ सि जिन्वति।। धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्तेजस्समप्रभम्। कुमारं शक्तिहस्तं च भौममावाहयाम्यहम्।। ॐ भूर्भुवः स्वः अवन्तिदेशोद्भव भारद्वाजगोत्र रक्तवर्ण भो भौम ! इहागच्छ, इह तिष्ठ ॐ भौमाय नमः, भौममावाहयामि, स्थापयामि।**

4. बुध (ईशानकोण में, हरा, धनुष) बुध का आवाहन (पीले, हरे, अक्षत-पुष्प लेकर)-**ॐ उदबुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टापूर्ते स ँ सृजेथामयं च। अस्मिन्त्य-धस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत।। प्रियङ्गुकलिकाभासं रूपेणाप्रतिम् बुधम्। सौम्यं सौम्यगुणोपेतं बुधमावाहयाम्यहम्। ॐ भूर्भुवः स्वः मगधदेशोद्भव आत्रेयगोत्र पीतवर्ण भो बुध! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ बुधाय नमः, बुधमावाहयामि, स्थापयामि।**

5. बृहस्पति (उत्तर में पीला, अष्टदल) बृहस्पति का आवाहन (पीले अक्षत-पुष्प से)-**ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद् द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्। उपयामगृहीतोऽसि बृहस्पतये त्वैष ते**

योनिर्बृहस्पतये त्वा।। देवानां च मुनीनां च गुरुं काञ्चनसन्निभम्। वन्द्यभूतं त्रिलोकानां गुरुमावाहयाम्यहम्।। ॐ भूर्भुवः स्वः सिन्धुदेशोद्भव आङ्गिरसगोत्र पीतवर्ण भो गुरो ! इहागच्छ, इह तिष्ठ ॐ बृहस्पतये नमः, बृहस्पतिमावाहयामि, स्थापयामि।

6. शुक्र (पूर्व में श्वेत, चतुष्कोण) शुक्र का आवाहन (श्वेत अक्षत-पुष्प से)- **ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपान ᳪ शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु।। हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्। सर्वशास्त्रप्रवक्तारं शुक्रमावाहयाम्यहम्।। ॐ भूर्भुवः स्वः भोजकटदेशोद्भव भार्गवगोत्र शुक्लवर्ण भो शुक्र ! इहागच्छ, इह तिष्ठ ॐ शुक्राय नमः, शुक्रमावाहयामि, स्थापयामि।**

7. शनि (पश्चिम में, काला मनुष्य) शनि का आवाहन (काले अक्षत पुष्प से) **ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभि स्रवन्तु नः।। नीलाम्बुजसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्। छायामार्तण्डसम्भूतं शनिमावाहयाम्यहम्।। ॐ भूर्भुव स्वः सौराष्ट्रदेशोद्भव काश्यपगोत्र कृष्णवर्ण भो शनैश्चर ! इहागच्छ, इह तिष्ठ ॐ शनैश्चराय नमः, शनैश्चरमावाहयामि, स्थापयामि।**

8. राहु (नैर्ऋत्यकोण में काला मकर) राहु का आवाहन (काले पुष्प से)-**ॐ कया नश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता। अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्। सिंहिकागर्भसम्भूतं राहुमावाहयाम्यहम्।। ॐ भूर्भुव स्वः राठिनपुरोद्भव पैठीनसगोत्र कृष्णवर्ण भो राहो ! इहागच्छ, इह तिष्ठ ॐ राहवे नमः, राहुमावाहयामि, स्थापयामि।**

9. केतु (वायव्यकोण में, कृष्ण खड्ग) केतु का आवाहन (धूमिल अक्षत पुष्प लेकर)-**ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः।। पलाशधूम्रसङ्काशं तारकाग्रहमस्तकम्। रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं केतुमावाहयाम्यहम्।। ॐ भूर्भुवः स्वः अन्तर्वेदिसमुद्भव जैमिनिगोत्र धूमवर्ण भो केतो ! इहागच्छ, इह तिष्ठ ॐ केतवे नमः, केतुमावाहयामि, स्थापयामि।**

नोटः-केवल नवग्रह पूजन कराना हो तो दिक्पाल आवाहन के बाद इसकी शेष विधियाँ दी गयी है। इससे नवग्रह पृथक् कर पूजन करा लें।

अधिदेवतास्थापनम्

सूर्य के दाहिने भाग में-ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम्।। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्म्मुक्षीय मामृतात्। ॐ भूर्भुवः स्वः ईश्वर इहागच्छेह तिष्ठ ॐ ईश्वराय नमः ईश्वरमाहयामि स्थापयामि।।1।। इसी प्रकार सभी जगह नाम लेकर आवाहयामि स्थापयामि कहें। चन्द्र के दाहिने भाग में-ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुम्मऽइषाण सर्वलोकम्मऽइषाण। ॐ भू. उमे इहा0 उमायै नमः उमामा. ।।2।। मंगल के दाहिने भाग में ॐ यदक्रन्दः पथमञ्जाय-मानऽउद्यन्त्समुद्रादुतवा पुरीषात्। श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहूऽउपस्तुत्यम्महि जातन्तेऽर्वन्। ॐ भू. स्कन्द इहा. स्कन्दाय नमः स्कन्दमा. ।।3।। बुध के दाहिने भाग में-ॐ विष्णोरराटमसि विष्णोः श्नप्प्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोसि। वैष्णवमसि विष्णवेत्वा। ॐ भू. विष्णो इहा. विष्णावे नमः, विष्णुमा.।।4।। गुरु के दाहिने भाग में-ॐ आब्रह्मन्ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामाराष्ट्रे राजन्यः शूरऽइषव्योतिव्याधी महारथो जायतान्दोग्ध्रधी धेनुर्वोढानड्वा नासुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः। सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतान्निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यों नऽओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्। ॐ भू. ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणमा0 ।।5।। शुक्र के दाहिने भाग में-ॐ सजोषाऽइन्द्र सगणो मरुद्भिः सोमम्पिब वृत्रहा शूरविद्वान्। जहि शँत्रूरपमृधोनु दस्वाथाभ्यङ्कृणुहि विश्वतो नमः। ॐ भू. इन्द्र इहा. इन्द्राय नमः इन्द्रमावा. ।।6।। शनि के दाहिने भाग में-यमाय त्वांगिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा धर्माय स्वाहा धर्म्मः पित्रे ॐ भू. यम इहा. यमाय नमः यममा.।।7।। राहु के दाहिने भाग में-ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य त्वाक्षित्याऽउन्नयामि। समापोऽअद्भिरग्मतसमोषधीमिरोषधीः। ॐ भू. काल इहा. कालाय नमः कालमा.।। 8।। केतु के दाहिने भाग में ॐ चित्रवसो स्वस्ति ते पारमशीय। ॐ भू. चित्रगुप्त इहा. ॐ चित्रगुप्ताय नमः चित्रगुप्तमावाहयामि।। 9।। इति अधिदेवता स्थापन।।

प्रत्यधिदेवतास्थापन

(अग्निरापो धरा विष्णुः शक्रेन्द्राणीपितामहः। पत्रगार्कक्रमाद्वामे ग्रहप्रत्यधिदेवताः।। (स्कन्दपुरा.))

सूर्य के बायें भाग में-ॐ अग्नि दूतम्पुरोदधे हव्यवाहमुपब्रुवे। देवां ऽआसादयादिह।। भू. अग्ने इहा. ॐ अग्नये नमः। अग्निमा. ।।1।।

सोम के बायें भाग में-ॐ आपो हिष्ठमयो भुवस्तानऊर्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे। ॐ आप इहागच्छत. अद्भ्यो नमः, अप.।।2।।

मंगल के बायें भाग में-ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरानिवेशनी। यच्छानः शर्म्मसप्रथा।। ॐ भू. पृथिवि इहा. ॐ पृथिव्यै नमः पृथिवीं.।।3।।

बुध के बायें भाग में-ॐ इदम्विष्णुचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् समूढमस्यपां ᳪ सुरे स्वाहा।। ॐ भू. विष्णो इहा. ॐ विष्णवे नमः विष्णुमावा.।।4।।

गुरु के बायें भाग में-ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र ᳪ स्वस्तिनो मधवा ६ गात्विन्द्र।। ॐ भू. इन्द्र इहा. ॐ इन्द्राय. इन्द्रम्. ।।5।।

शुक्र के बायें भाग में-ॐ आदित्यैरास्नासीन्द्राण्याऽउष्णीषः पूषासि धर्म्माय दीष्व।। ॐ भू. इन्द्राणि इहा. ॐ इन्द्राण्यै नमः इन्द्राणीम्.।।6।।

शनि के बायें भाग में-ॐ प्रजापते न त्वदेतान्न्यन्यो विश्वारूपाणि परिता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नोऽअस्तु वयस्याम पतयो रयीणाम्।। ॐ भू. प्रजापते इहा. ॐ प्रजापतये नमः प्रजापतिम्. ।।7।।

राहु के बायें भाग में ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु। ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यों नमः। ॐ भू. सर्पा इहागच्छत इह तिष्ठत ॐ सर्पेभ्यो नमः ॐ सर्पान्. ।।8।।

केतु के बायें भाग में-ॐ ब्रह्मयज्ञानं प्रथम्मपुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोवेनऽआवः।। सबुन्ध्याऽउपमाऽअस्य विष्टाः सतश्च योनिमसतश्च व्विवः। ॐ भू. ब्रह्मन! इ. ॐ ब्रह्मणे नमः। ब्रह्माणमावाहयामि।।9।। इति प्रत्यधिदेवतास्थापनधि।।

पञ्चलोकपालस्थापन

(गणेशश्चम्बिका वायुराकाशश्चाश्विनौ तथा ग्रहाणामुत्तरे पञ्च-लोकपालाः प्रकीत्तिताः।। (स्कन्दपुरा.)।।)

राहु से उत्तर-ॐ गणानान्त्वा ॐ भू. गणपते इहा. ।।1।।

शनि से उत्तर ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनम्। ॐ भू. दुर्गे इहा. दुर्गाये. ।।2।।

रवि से उत्तर-ॐ आनोनियुद्भिः सतिनीभिरध्वर ᳪ सहस्त्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम्।। वायोऽअस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः।। ॐ भू. वायो इहा. वायवे नमः।।3।।

राहू के दक्षिण-ॐ घृतङ् घृतपावानः पिबत वसाम्बसा पावानः

पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा दिशः प्रदिशऽआदिशो विदिशऽउद्दिशो दिग्भ्यः। ॐ भू. आकाश इहा. आकाशाय नमः।।4।।

केतु के दक्षिण-ॐ यावाङ्कशामधुमत्यश्विना सूनृतावतो तया यज्ञम्मिमिक्षताम्। ॐ भू. अश्विनौ इहागच्छाताम् अश्विभ्यां नमः।।5।।

अथ प्रागादितः पीठसमन्ताद्दिक्पालानावाहयेत्-

पूर्व में-ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र ँ हवे हवे सुहवं ँ शूरमिन्द्रम्। ह्वयामि शक्रम्पुरुहूतमिन्द्र स्वस्तिनो मघवा धात्विन्द्रः।। ॐ भू. इन्द्र इहा. इन्द्राय नमः।।1।।

अग्नि कोण में ॐ त्वन्नोऽअग्ने तव देव पायुभिर्म्मघोनो रक्षतन्वश्च वन्द्य। त्रतातोकस्य तनये गवामस्य निमेष ँ रक्षमाणस्तव व्रते। ॐ अग्ने इहा. अग्नये. ।2।

दक्षिण में-ॐ यमाय त्वांगिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा धर्माय स्वाहा धर्मः पित्रे।। ॐ भू. यम इहा. यमा0 ।।3।।

नैर्ऋति कोण में-ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छस्तेनस्येत्य-मन्विहितस्करस्य अन्यमस्मदिच्छसातऽइत्या नमो देवि। निर्ऋते तुभ्यमस्तु।। भू. निर्ऋते इहा।।4।।

पश्चिम में-ॐ तत्त्वायामि ब्रह्मणा वन्दमान-स्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः।। अहेडमानो वरुणेहवोध्युरुशं ँ समानऽआयुः प्रमोषीः।। ॐ भू. वरुण इहा ।।5।।

वायु कोण में-ॐ आनोनियुद्भिः शतिनीभिरध्वर ँ सहस्त्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम्। वायोऽअस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः। ॐ भू. वायो इहा. ।। 6।।

उत्तर में-ॐ वय ँ सोमव्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः प्रजावन्तः सचेमहि।। ॐ भू सोम इहा. ।।7।।

ईशान कोण में-ॐ तमीशानञ्जागतस्तस्थुषस्पतिन्धियञ्जिन्वमवसेहूमहे वयम्।। पूषा नो यथावेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॐ भू. ईश्वर इहा.।।8।।

पूर्व और ईशान के मध्य ऊपर में-ॐ अस्मे रुद्रामेहनापर्वतासो वृत्रहत्त्येभरहूतौ सजोषाः।। यः श ँ सतेस्तुवते धायिपज्र इन्द्रज्येष्ठाऽअस्मा2ऽअवन्तु देवाः। ॐ भू. ब्रह्मन्0 ब्रह्मणे0।।9।।

निर्ऋतिपश्चिम के मध्य नीचे में -**ॐ स्योना पृथिवी नो भवानृक्षरानिवेशनी यच्छानः शर्म सप्रथाः। ॐ भूर्भुवः स्वः अनन्त इहागच्छ इह तिष्ठ अनन्ताय नमः। अनन्तमावाहयामि।।10।।**

पुनः यजमान हाथ में अक्षत लेकर **ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्ज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनोत्वरिष्टं यज्ञ ᳪ समिमं दधातु। विश्वेदेवा सऽइह मादयन्तामो3म्प्रतिष्ठ। ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्यादिनवग्रहाः साङ्गाः सपरिवाराः सवाहना अधिदेवता-प्रत्यधिदेवता-विनायकादिपंचलोकपाल-वास्तोष्पतिक्षेत्रधिापतीन्द्रादि- दशदिक्पालसहिताः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु।** अक्षत छोड़ दें।

श्रीसूर्यध्यान-**पद्मासनः पद्मकरो द्विबाहुः पद्मद्युतिः सप्ततुरंगवाहनः।**
दिवाकरो लोकगुरुः किरीटी मयि प्रसादं विदधातु देवः।।

चन्द्रध्यान- **ॐ श्वेताम्बरः श्वेतविभूषणश्च श्वेतद्युतिर्दण्डधरो द्विबाहुः।**
चन्द्रोऽमृतात्मा वरदः किरीटी मयि प्रसादं विदधातु देवः।।

भौमध्यान- **रक्ताम्बरो रक्तवपुः किरीटी चतुर्भुजो मेषगमो गदाधृक्।**
धरासुतः शक्तिधरश्च शूली सदा मम स्याद्वरदः प्रशान्तः।।

बुधध्यान- **ॐ पीताम्बरः पीतवपुः किरीटी चतुर्भुजी दण्डधरश्च हारी।**
चर्म्मासिभृत् सोमसुतः सदा में सिंहाधिरूढो वरदो बुधोऽस्तु।।

बृहस्पतिध्यान- **पीताम्बरः पीतवपुः किरीटी चतुर्भुजो देवगुरुः प्रशान्तः।**
दधाति दण्डञ्ज कमण्डलुञ्ज तथाऽक्षसूत्रं वरदोऽस्तु मह्यम्।।

शुक्रध्यान- **ॐ श्वेताम्बरः श्वेतवपुः किरीटी चतुर्भुजो दैत्यगुरुःप्रभावान्।**
तथाक्षसूत्रञ्च कमण्डलुञ्च दण्डञ्च विभ्रद्वरदोऽस्तु मह्यम्।।

शनैश्चरध्यान-**ॐ नीलद्युतिः शूलधरः किरीटी गृध्रस्थितस्त्रासकरो धनुष्मान्।**
चतुर्भुजः सूर्यसुतः प्रशान्तः सदास्तु मह्यं वरदोऽल्पगामी।।

राहुध्यान- **ॐ नीलाम्बरो नीलवपुः किरीटी करालवक्त्रः करवालशूली।**
चतुर्भुश्चक्र-धरश्च राहुः सिंहाधिरूढो वरदोऽस्तु मह्यम्।।

केतुध्यान- **धूम्रो द्विबाहुर्वरदो गदाभृत् गृधासनस्थो विकृताननश्च।**
किरीटकेयूरविभूषितो यः स चास्तु मे केतुरयं प्रशान्त्यै।।

ॐ अन्ये किरीटनः कार्या वरदाभयपाणयः।। ॐ भूर्भुवः स्वः सांगेभ्यः सपरिवारेभ्यः सायुधेभ्यः सशक्तिकेभ्यः अधिदेवता-प्रत्यधिदेवता-

विनायकादिपञ्चलोकपाल-वास्तोष्पतिक्षेत्राधिपतीन्द्रादिदशदिक्पालसहितेभ्यो नवग्रहेभ्यो नमः आसनार्थे पुष्पाक्षतान् समर्पयामि।

इसी प्रकार-**ओं भूर्भुवः स्वः सांगेभ्यः. पादयोः पाद्यं समर्पयामि। ॐ भूर्भुवः स्वः सांगेभ्यः हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि। ओं भूर्भुवः स्वः सांगेभ्यः. अर्घ्याङ्गमाचमनीयं समर्पयामि।। स्नानं।। आचमनं।। वस्त्रं। यज्ञोपवीतं.।। गन्धं।। अक्षतं।। पुष्पं।। दूर्वांकुरं।। धूपमाघ्रापयामि।। दीपं दर्शयामि।। नैवेद्यं निवेदयामि।। हस्तप्रक्षालनं. ।। आचमनं. ।। फलं।। ताम्बूलं।। दक्षिणाद्रव्यं. नीराजनं समर्पयामि।। मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।।**

क्षमापनम्

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वराः।।
यत्पूजितं मया देवाः। परिपूर्णं तदस्तु मे।।1।।
ॐ यत्कृतं पूजनं देवाः।! भक्ति-श्रद्धा-विवर्जितम्।
परिगृह्णन्तु तत्सर्वं सूर्याद्या ग्रहनायकाः।।2।।

पुष्पाञ्जलि-**ॐ ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च। गुरुश्च शुक्रश्च शनिश्च राहुः केतुश्च सर्वे प्रदिशन्तु शं मे।।1।।**

सूर्यः शौर्यमथेन्दुरुच्चपदवीं सन्मङ्गलं मङ्गलः
सद्बुद्धिञ्च बुधो गुरुश्च गुरुतां शुक्रः सुखं शं शनिः।।
राहुर्बाहुबलं करोतु सततं केतुः कुलस्योन्नतिम्
नित्यं प्रीतिकरा भवन्तु मम ते सर्वेऽनुकूला ग्रहाः।।2।।

हाथ जोड़कर प्रणाम करें-

ॐ आयुश्च वित्तञ्च तथा सुखञ्च धर्मार्थलाभौ बहुपुत्रतां च।
शत्रुक्षयं राजसु पूज्यताञ्च तुष्टा ग्रहाः क्षेमकरा भवन्तु।।

हाथ में जल लेकर **ॐ अनया पूजया आवाहिता देवाः प्रीयन्ताम्।**

चतुर्थ खण्ड : विशिष्ट देव पूजन विधि

दान संकल्पों की प्रक्रिया

महादान में विशेष संकल्पः-ओं अद्येत्यादि0 अमुकगोत्रोअमुकराशिरमुकशर्माऽहं मम जन्मकालिक-वर्षकालिक-गोचरिक-समस्तसूर्यादिग्रहाणां यत्र कुत्रचिज्ज्योतिः-शास्त्रन्तरोक्तजातक-ताजिक-संहिता-होरा-गणितादिफल-निर्दिष्टलग्नवशात् स्थितानां येन केनचित्सह चतुर्विधसम्बन्धवशाद्यद्यद्मावेश-युतदृष्टयथोचितशुभफलाभिवृद्धये तत्तत्समयानुगतनानाविधानिष्टारिष्टनिवृत्तये कायिकवाचिक-मानसिक-सांसर्गिकतापत्रयोत्थ-दिव्यभौमान्तरिक्षस्थितभू-तभविष्यद्वर्तमानकालिकदृष्टश्रुतानुमानादिदुःशकुनदुःस्वप्नदुर्विचिन्तितप्रसवाप्र-सविकविविधवैकृत्यादिग्रहनक्षत्रताराविद्युदुल्काशनिपरिवेष सन्ध्यास्तनितप्रवर्ष-णमारुतप्रचारातिशयरजोगोधूमादिज्ञाता-ज्ञातनानाप्रत्यूहव्यू-हशान्तिपूर्वक-दीर्घायुष्यनैरुज्यबलपुष्टिसुखावाप्तये इमानि अमुकामुकद्रव्याणि स्वस्वदैवतानि अमुकामुकगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो विभज्य दातुमहमुत्सृजे।

सतुआ दान-ॐ प्राजापत्यायतः प्रोक्ता सक्तवो यज्ञ कर्मणि। तस्मात्सक्तु प्रदानेन प्रीयतां मे प्रजापतिः।

मलमास में मालपुआ दान संकल्प-ॐ अद्येत्यादि0 मम सकलमल-विशुद्धि-समस्तपापक्षयपूर्वकं श्रीपुत्रपौत्रदीनाञ्च आयुरारोग्यधन धान्यादिसर्वसम्पद्वृद्धिपृथ्वीदानसमफलावाप्ति विष्णवादिश्रीपत्यन्ताः त्रयस्त्रिंशद्देवता उद्दिश्य श्रीपुरुषोत्तमप्रीत्यर्थं मलमासमहापर्वनिमित्तमिदं सहिरण्यं कांस्यपात्रनिहितं सोपस्करं त्रयत्रिंशदपूपान्नं दक्षिणासहितं यथा नामगोत्राय व्रा0।

शंख दान संकल्प-ओं अद्येत्यादि0 श्रुतिस्मृति-पुराणोक्तफल-प्राप्त्यर्थं इमं शंखं विष्णुदैवतं तुभ्यं संप्रददे न मम।

बैलदान का संकल्प-ओं अद्येत्यादि0 इमं शंखं रक्तवृषभं ककुदान्वितं रुद्रदैवतं तुभ्यं सम्प्रददे न मम।

सुवर्णदान का संकल्प-ओं अद्येत्यादि0 पुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थे माषादि परिमितमिदं सुवर्णम्-अग्निदैवतं तुभ्यं सम्प्रददे न मम।

चाँदी दान का संकल्प-ओं अद्येत्यादि0 माषादिपरिमितम् इदं रूप्यं रुद्रदैवतं तुभ्यं सम्प्रददे न मम।

वस्त्रदान का संकल्प-**ओं अद्येत्यादि0 वलायुः श्रीवृद्धिकामनया इदं वस्त्रयुग्मं बृहस्पतिदैवतं तुभ्यं0।**

तूल (लाल) वस्त्र दान का संकल्प-**ॐ अद्येत्यादि0 मम श्रीपरमेश्वरप्रीतिद्वारा शीतत्राणाय सतूलगर्भितवस्त्रदानकल्पोक्तप्राप्त्यर्थम् इदं सतूलगर्भितवस्त्रं बृहस्पतिदैवतं यथा नामगोत्राय ब्रा0।**

सफेद अश्व दान का संकल्प-**ओं अद्येत्यादि0 इदं श्वेताश्वं वरुणदैवतं तुभ्यं0** ऐसा कहकर दाहिना कान पकड़कर ब्राह्मण को दे।

घी दान का संकल्प-**ओं अद्येत्यादि0 कुडवादि परिमितमिदमाज्यं सदैवतं तुभ्यं सं0।**

अनाज दान का संकल्प-**ओं अद्येत्यादि0 कुडवादिपरिमतमिमं धान्यं विश्वदेवदैवतं तुभ्यं सं0।**

कृसर (केसार) अन्नदान का संकल्प-**ॐ अद्येत्यादि0 ममात्मनः श्रीपरमेश्वरप्रीतिद्वारा सोपस्करकृसरान्नदानकल्पोक्तफलप्राप्त्यर्थं मकरसंक्रमणजनितमहापर्वनिमित्तमिदं कृसरान्नं सोपस्करं सदक्षिणाकं यथा0।**

ग्रहण दोष शान्ति हेतु धनदान का संकल्प-**ओं अद्येत्यादि0 मम जन्मराशेः सकाशादमुकस्थानस्थित-श्रीसूर्य (चन्द्र)-ग्रहसूचितसर्वारिष्टप्रशान्ति-पूर्वकं शुभुफलावाप्तये सूर्यबिंबादि-(चन्द्रग्रहणे-चन्द्रबिंब) दानं करिष्ये।** ऐसा संकल्प कर एवं ब्राह्मण की पूजाकर। **ॐ इदं यथाशक्तिनिर्मितं सौवर्णराहुबिम्बं नागं सौवर्णसूर्यबिम्बं (राजतं चन्द्रबिम्बं) घृतपूर्णकांस्यपात्रनिहितं यथाशक्ति तिलवस्त्रदक्षिणासहितं ज्यौतिश्शास्त्रोक्तग्रहणसूचितारिष्टविनाशार्थं शुभफलप्राप्त्यर्थञ्च अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय तु0।**

गाय के प्रतिनिधि स्वरूप द्रव्य दान का संकल्प-**ॐ अद्य0 गोदानजन्यफलप्राप्तिकामः गोप्रतिनिधिभूतमिदं द्रव्यं यथा0।**

नमक दान का संकल्प-**ॐ अद्येत्यादि0 पलादिपरिमितम् इदं लवणं सोमदैवतं तु0।**

तिल दान का संकल्प-**ॐ अद्येत्यादि0 द्रोणादिपरिमितानेतांस्तिलान् प्रजापतिदैवतान् तु0।**

भैंसादान का संकल्प-**पूर्वाभिमुखीं महिषीं गन्धादिभिः सम्पूजय ॐ अद्येत्यादि0 इमां सुवर्णश्रृङ्गीं रूप्यखुरां घण्टाचामरभूषितां सप्तधान्ययुतां रक्तवस्त्रालंकृतां तरुणीं सुशीलां निर्दोषां प्रथमप्रसूतां वरमहिषीं यमदैवतां**

सर्वारिष्टनिवृत्तिपूर्वकत्रिविधतापोपशमनार्थं शनिदेवताप्रीतये अमुकगोत्राय अ0 शर्मणे ब्राह्मणाय तु0। ऐसा संकल्प कर दाहिना सींग ब्राह्मण के हाथ में दे।

पितरों के निमित्त आमान्न दान का संकल्प-ॐ अद्य0 अमुकगोत्रः अमुकशर्मा (अपसव्यंकृत्वा) अमुकगोत्राणां पित्रादिसमस्तपितृणामक्षयतृप्तिप्राप्त्यर्थम् अमुकपर्वनिमित्तमिदमामान्नं सोपस्करं दक्षिणासहितं यथा0 ब्रा0 दातुमहमुत्सृजे।।

पृथ्वी दान का संकल्प-ॐ अद्येत्यादि0 ममैतज्जन्मजन्मान्तरसमुद्भूतवाङ्मनः-कायजाशेषपापक्षयपूर्वकं मनसि सर्वदानन्दद्वारा (वा अमुकपीडानिवृत्तिद्वारा) श्राविष्णुनारायणप्रीत्यर्थे इमां निवर्तनमितां भूमिं विष्णुदैवतां तु0।

गृह दान का संकल्प-ॐ अद्य0 श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलावाप्त्यर्थमिदं गृहं शयनासनभोजनाद्युपस्करसहितं सर्वधान्यप्रपूरितं सर्वदैवत्यं अमुकश0।

व्रत ग्रहण का संकल्प-ॐ अद्येत्यादि0 मम कायिकाद्यखिलपापक्षयकामः अद्यारभ्य.......पर्यन्तममुकदानव्रतम्, अमुकवर्जनव्रतम्, अमुकभक्षणव्रतम् अमुकदेवताप्रीतिकामोऽहमाचरिष्ये। ॐ इहेत्यादि अमुकदेवप्रीतिकामनया मया एतावत्कालं कृतस्य अमुकव्रतस्य साङ्गतासिद्ध्यर्थम् अमुकदानममुकगोत्रयामुकशर्मणे व्रा0 तु0।

सौभाग्य प्राप्ति का संकल्प-ॐ अद्येह ममेहजन्मनि जन्मान्तरे चाखण्डसौभाग्यावाप्तिपूर्वक-पुत्रपौत्राद्यभिवृद्धिद्वारा श्रीउमामहेश्वरप्रीत्यर्थम् अष्टब्राह्मणेभ्यः सदेवेभ्यः सोपस्करैकैकसौभाग्यवायनदानानि करिष्ये, संकल्प पूर्वक पूजन कर ओं इमानि सौभाग्यवायनानि नानानामगोत्रेभ्यः अष्टब्राह्मणेभ्यः सदेवेभ्यः संकल्पितकामनासिद्धिकामो युष्मभ्यमहं सम्प्रददे।

छत्र दान का संकल्प-ओं अद्य0 सर्वपापविनिर्मुक्तिकामनया आतपादिनाना विध-कष्टनिवारणर्थमिदं छत्रं उत्तानांगिरोदैवतं यथा0।

जूता दान का संकल्प-ओं अद्य0 वृषभयुक्तशकटदानजन्य-फलसमफलप्राप्तिकामनया इमे उपानहौ उत्तानांगिरोदैवते यथा नाम0।

आसन दान का संकल्प-ओं अद्य0 सर्वपापवनिर्मुक्तदिव्यविमानारोहण-चिरकालस्वर्गलोकवासकामनया इदम् आसनं विष्णुदैवतं यथा0।

कलश दान का संकल्प-ओं अद्य0 अतिशयघर्मतृष्णानिवारणपूर्वक-सुखसौभाग्यप्राप्ति कामनया-इदं वारिपूर्णं कलशं वस्त्रावृतं व्यजनसहितं सफलं ब्रह्मविष्णुशिवात्मकं वरुणदैवतं यथा0।

पात्र दान का संकल्प-**ओं अद्य0 इन्द्राद्यष्टलोकपालपुरसुखावास-विमानारोहणाप्सरोगणनृत्यगीतकामनया इदं पात्रं (पात्रे-पात्रणि वा) विश्वकर्मदैवतं यथा नामगोत्राय0।**

अंगूठी दान का संकल्प-**ओं अद्य सकलपापक्षयपुरस्सरसर्वप्रकारक-सुखप्राप्तिकामनया इमां मुद्रिकां विष्णुदेवतां यथा0।**

अन्न आदि दान का संकल्प-**ॐ अद्येत्या0 श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थमिदं गोधूमचूर्णं, वा-सिद्धान्नं, वा पक्वान्नं, वा-मिष्ठान्नं, वा गोधूमान्नं, वा-कृसरान्नं, प्रजापतिदैवतं तुभ्य0।**

ॐ अद्येत्यादि0 श्रुतिस्मृ0 इदं व्यंजनं वायुदैवतं तुभ्य0।

ॐ अद्येत्यादि0 श्रुतिस्मृति0 इदमुद्यानं वा-फलं वा-इमानि वा इमं वृक्षं वा-कार्पासं वनस्पतिदैवतं तुभ्यं।

ॐ अद्येत्यादि श्रुतिस्मृति. इदं वस्त्रं (वा इमे वस्त्रे वा इमानि वस्त्राणि) बृहस्पति दैवतं तुभ्यं...।

ॐ अद्येत्यादि0 श्रुतिस्मृति0 इमां मूर्तिस्वदैवतां तुभ्यं ।

ॐ अद्येत्यादि0 श्रुतिस्मृति0 इदं पुस्तकं सरस्वतीदैवतं तुभ्यं।

ॐ अद्येत्यादि0 श्रुतिस्मृति इदं रथं (मोटरादिकं वाहनं,) उत्तानाङ्गिरो दैवतं तुभ्यं।

ॐ अद्येत्यादि0 श्रुतिस्मृति0 इदं कूपं, वा इदं सरः, वा इदं मुक्ता-फलं वा इदं रत्नं वरुणदैवताकं तुभ्यं।

ॐ अद्येत्यादि0 श्रुतिस्मृति0 इष्दमुष्ट्रं निर्ऋतिदैवताकं तुभ्यं।

ॐ अद्य-श्रुति इदं लोहं यमदैवताकं तुभ्यं।

ॐ अद्येत्यादि0 श्रुति0 इमं गन्धं गन्धर्वदैवताकं तुभ्यं।

ॐ अद्येत्यादि0 श्रुति0 इदं गुड़ं वा इमं रसं सोमदैवताकं तुभ्यमहं।

ॐ अद्येत्यादि0 श्रुति0 इदं यज्ञोपवीतं, वा इदं दुग्धं, वा इदं दधि, वा इदं नवनीतं, वा इदं तैलं विष्णु-दैवताकं तुभ्यं।

हाथी के दाँत के आभूषण का संकल्प-**ॐ अद्य0 श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्ति-पूर्वकम् उद्वाहपर्वणि अमुकगोत्रं कन्यां अमुकनाम्नीम् अलङ्कर्तुकाम इदं गजदन्तादिनिर्मितं बाहुकङ्कणभूषणं विश्वकर्मदैवतम् अमुकगोत्रायै अमुकदेव्यै तुभ्यमहं सम्प्रददे।**

उपकरणों के साथ शय्यादान का संकल्प-ॐअद्येत्यादि0 श्रुतिस्मृतिपुराणागमप्रतिपादितसुकृतफलोपपत्तिपूर्वकश्रीलक्ष्मीनारायणप्रसादपुरस्सरयावज्जीवाखण्डसुखपुत्रपौत्रधनधान्यविवृद्धिधर्मार्थकामप्राप्त्युत्तरनानारत्नद्रव्यसमाकीर्णकनकोज्ज्वलदिव्याप्सरोगणगन्धर्वसेव्यमानविमानाधिकरणकषष्ठि- वर्षसहस्त्रावच्छिन्नस्वर्गवासप्राप्त्युत्तरै तच्छय्यास्थवस्त्रतन्तुसूक्ष्मावयव-संख्यावच्छिन्नसार्धत्रिकोटिसमाधिकरणेब्रह्मलोकभोगानन्तरा-क्षयविष्णुलोकप्राप्तये इमां खाट्वामुत्तानाङ्गिरो दैवतकामे तदग्निदैवता-कसुवर्णाभरण, चन्द्रदैवताकरजताभरण, बृहस्पतिचन्द्रदैवताककौशेयकार्पा-सश्वेतरक्तपीतहरितचित्रितवस्त्र, विश्वकर्मदेवताकरीतिकांस्यलोहभाजन-प्रजापतिदैवताकपक्वान्नोदनादि, चन्द्रदैवताकरजिकमुद्रिका-ऽन्यत्स्वस्वदैवताकद्रव्योपेतां यथानामगोत्रयामुकशर्म्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे न मम। ॐ कृतैतच्छय्या0।

गुप्त दान का संकल्प-ॐ अद्येत्यादि0 ममैहिकजन्मान्तरकृतपातकनिवृत्तिद्वारा अमुकदेवप्रीत्यर्थम् अमुकपर्वनिमित्तकं ब्राह्मणाय गुप्तादानं करिष्ये, तदङ्गत्वेन ब्राह्मणपूजनञ्च करिष्ये इति सङ्कल्प्य ब्राह्मणपूजनं कृत्वा-ॐ अद्येत्यादि0 इदं गुप्तदानम् अमुकशर्म्मणे ब्राह्मणाय ऐहिकजन्मान्तरकृतपातकनिवृत्तिकामः तुभ्य0। ॐ कृतस्य गुप्तदानस्य प्रतिष्ठाफलसि0।

तिल पात्र दान का संकल्प-ॐ अद्येत्यादि0 अमुकगोत्रोऽमुकराशिरमुकशर्म्माहं मम जन्मवर्षगोचरलग्नावधिकैः यथा-यथा स्थानोपपन्नैः शुभपापावलोकितैः शुभपापसमन्वितैः सूर्यादिनवग्रहैः संसूचितसंसूचयिष्यमाणभूतभविष्यद्वर्तमानकालिकनानाविधानिष्टसूचकशारीरिकबाह्याभ्यन्तर्गतशत्रुनिवृत्ति-पूर्वकदुःशकुनदुःस्वप्नदुर्निमित्तदुर्विचिन्तिताधिदैविकाधिभौतिकाध्यात्मिकतापत्रयसमुत्थहृद्गतचर्म्मगताधिव्याधिप्रत्यूहनिरसनपुरस्सराशुभस्थानगताशुभग्रहाज्जनिताशुभफलमनिराकरणमुखशुभस्थानगतशुभग्रह जनितशुभफलप्राप्तिद्वारा समस्तज्योतिश्शास्त्रेक्तसत्फलदीर्घायुष्यनैरुज्य-बलपुष्टयाद्यन्यतमनिखिलसौभाग्यदाम्पत्यैश्वर्य्याभिवृद्धये श्रीनवग्रहात्मका वृतेश्वरीसहितमृत्युञ्जयप्रीतये श्रीमृत्युञ्जयप्रीतिकारकं ताम्रपात्रस्थितम् ससुवर्णतिलान्नम् अर्काग्निविष्णुदैवतम्-अमुकगोत्रयामुकशर्म्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यं सम्प्रददे।

पर्व के निमित्त आसन्न आदि दान का संकल्प-अद्येत्या0अमुकगोत्रः अमुक शर्म्मा (अमुकगोत्रा अमुकदेवी) मम समस्तपापक्षयपूर्वकं श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं द्वादशीपर्वनिमित्तं, वा-पौर्णमासीपर्व0, वा-अमावस्याप0, वा-व्यतीपातपर्व0,

वा-वैधृति प0, वा0-अमुक संक्रान्ति प0, वा अर्द्धोदय प0, वा महोदय प0, वा0 वारुणी प0, वा-महावारुणी प0, वा महामहावारुणी प0, वा-अमुकग्रहणप0 इदमामान्नं सोपस्करं दक्षिणासहितं पात्ररहिम्। वा-इदमामान्नानिष्क्रयीभूतं द्रव्यम्, वा इदं मधुरमिष्ठान्नं दक्षिणासहितम्। वा-इदं घृतं वस्त्रं सुवर्णसहितं वा दक्षिणासहितम्, यथानामगोत्राय ब्रा0।।

ॐ अद्ये0 इमानि तण्डुलदधिघृतगुडलवणद्रव्याणि तत्तद्दैवतानि दक्षिणासहितानि नानागोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो दातुमहमुत्सृजे।

उपाध्याय के दक्षिणा का संकल्प-**ॐ अद्येत्यादि0 श्रुतिस्मृतिपुराणागमप्रतिपादितपुण्यफलप्राप्तिकामः अमुककर्ममन्त्रोच्चारणकारयितव्यकर्तव्यताककर्मप्रतिष्ठार्थञ्च साङ्गतासिद्ध्यर्थमिमाममुकद्रव्यमयीमुपाध्यायदक्षिणाम् अमुकदैवतां यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे।**

प्रचुरान्नदान, भूरि-द्रव्य-दान का संकल्प-

ओमद्य0 आत्मनोऽभिलषित-सकल-कामना-सिध्यर्थं, आयुरारोग्य-विद्या परिवार-पशुवाहन-वृत्तिकलत्रादीनामभिवृद्ध्यर्थं, शत्रु-रोग- महामारी- ग्रह-राजोपद्रव-देव-दानवप्रेतादि-कृत-पीडा-कष्ट-बन्ध-परयन्त्र परमन्त्र-मोहनादि-सकलसंकट-विनाशार्थम् अस्मिन् नगरे ब्राह्मण-प्रत्येक-गृह-प्रधान-स्वामिनामोद्देश्येन अमुक द्रव्यं नाना-नाम-गोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो याचकेभ्यो देवालयेभ्यो विद्यालयेभ्यश्च देशमर्यादानुसारतया यथासंभवं विभज्य दातुमहमुत्सृजे।

तिथि (पत्र/पञ्चाङ्ग) दान का संकल्प- **भवनस्थाऽहस्करादिग्रहोत्थपीडाद्युपशमनार्थमेतदागन्तुक-कालिकाव्दीय-तिथिवार-नक्षत्र-योग-करणक-रूपोद्वाहादि-सदसत्संस्कार-ज्ञापक पत्रं सरस्वती-दैवतं सफल-तण्डुल-वासोयुक्तं सदक्षिणं श्रीनारायण-प्रीतये यथ नामगोत्रावयेति0।**

बकरी दान-**अद्येत्यादि0 इमं छागं सदक्षिणं त्वाष्ट्र-दैवत्यं यथानाम-गोत्राय ब्राह्मणायतुभ्यमहं संप्रददे। इतिसंकल्प्य गलस्तनं विप्रहस्ते दद्यात्।**

दान के बाद प्रार्थना-**'यस्मात्त्वं सर्व-यज्ञानामङ्गत्वेन व्यवस्थितः।**

यानं विसावसोर्नित्यमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।"

शालग्राम-पूजन

शालग्राम तथा प्रतिष्ठित मूर्तियों में आवाहन न करें, केवल पुष्प छोड़े।

आवाहन- **ॐ सहस्त्रशीर्षा0[1] आवाहयामि**

आसन- **ॐ पुरुषऽ एवेद ँ0 आसनं समर्पयामि**

पाद्य- **ॐ एतावानस्य0 पाद्यं समर्पयामि।**

अर्घ्य- **ॐ त्रिपादूर्ध्व0 अर्घ्यं समर्पयामि।**

आचमन- **ॐ ततो विराडजायत0 आचमनं समर्पयामि।**

स्नान- **ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः0 स्नानं समर्पयामि।** (दुग्ध, दधि, घृत, मधु और शर्करास्नान के बाद शुद्धोदकस्नान कराएँ।)

दूध स्नान-**ॐ पयः पृथिव्यां पयऽ ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्।। दुग्धस्नानं समर्पयामि।**

दही स्नान-**ॐ दधिक्राव्णोऽ अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभिनो मुखा करत्प्रणऽ आयू ँ षि तारिषत्।। दधिस्नानं समर्पयामि।**

घृत स्नान-**ॐ घृतं घृतपावानः पिबत वसां वसापावानः पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा। दिशः प्रदिशऽ आदिशो विदिशऽ उद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा।। घृतस्नानं समर्पयामि।**

मधु स्नान-**ॐ मधुवाताऽ ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः।। मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिव ँ रजः। मधुद्यौरस्तु नः पिता।। मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँऽ2 अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः।। मधुस्नानं समर्पयामि।**

शर्करा स्नान-**ॐ अपा ँ रसमुद्वयस ँ सूर्ये सन्त समाहितम्। अपा ँ रसस्य यो रसस्तं वो गृह्णाम्युत्तमपुपयाम गृहीतोऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्।। शर्करास्नानं स.।**

पञ्चामृत स्नान- **ॐ पञ्चनद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्त्रोतसः। सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित्।। पञ्चामृतस्ना. सम.।**

शुद्धोदक स्नान-**ॐ कावेरी नर्मदा वेणी तुङ्गभद्रा सरस्वती।**
गङ्गा च यमुना चैव ताभ्यः स्नानार्थमाहृतम्।।

---

1. पूरा मंत्र देखें-परिशिष्ट/रुद्राष्टाध्यायी/द्वितीय अध्याय। (इसी प्रकार अन्य मन्त्रों में भी)

गृहाण त्वं रमाकान्त स्नानाय श्रद्धया जलम्।। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

वस्त्र-ॐ तस्माद्यज्ञात्0 वस्त्रोपवस्त्रं समर्पयामि।

यज्ञोपवीत- ॐ तस्मादश्वा0 यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

मधुपर्क-ॐ दधि मध्वाज्यसंयुक्तं पात्रयुग्म-समन्वितम्।

मधुपर्कं गृहाण त्वं वरदो भव शोभन।। मधुपर्कं स0,

आचमनीयं जलं समर्पयामि

गन्ध-ॐ तं यज्ञं0 गन्धं समर्पयामि।

अक्षत- (श्वेत तिल चढ़ाएं चावल नहीं) ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रियाऽ अधूषत। अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती यो जान्विन्द्र ते हरि।। अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्प-ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पा ँ सुरे स्वाहा।। पुष्पं समर्पयामि।

पुष्पमाला-ॐ ओषधीः प्रतिमोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः। अश्वाऽ इव सजित्वरीर्वीरुधः पारयिष्णवः।। पुष्पमाल्यां समर्पयामि।

तुलसीपत्र-ॐ यत्पुरुषं0 तुलसर्तीं हेमरूपां च रत्नरूपां च मञ्जरीम्।

भवमोक्षप्रदां तुभ्यमर्पयामि हरिप्रियाम्।।

ॐ विष्णोः कर्माणि पश्यत यतो व्रतानि पस्पशे। इन्द्रस्य युज्यः सखा।। तुलसीपत्रं समर्पयामि।

दूर्वा-विष्णवादिसर्वदेवानां दूर्वे त्वं प्रीतिदा सदा।

क्षीरसागरसम्भूते ! वंशवृद्धिकरी भव।। दूर्वां समर्पयामि।

शमीपत्र-शमी शमयते पापं शमी शत्रुविनाशिनी।

धारिण्यर्जुनबाणानां रामस्य प्रियवादिनी। शमीपत्रं समर्पयामि।

आभूषण-रत्नकङ्कणवैदूर्यमुक्ताहारादिकानि च।

सुप्रसन्नेन मनसा दत्तानि स्वीकुरुष्व भोः।। आभूषणानि समर्पयामि।

अबीर और गुलाल-नानापरिमलैर्द्रव्यैर्निर्मितं चूर्णमुत्तमम्।

अबीर नामकं चूर्णं गन्धं चारु प्रगृह्यताम्।। अबीरं समर्पयामि।

सुगन्धतैल-तैलानि च सुगन्धीनि द्रव्याणि विविधानि च।

मया दत्तानि लेपार्थं गृहाण परमेश्वर।। सुगन्धतैलं समर्पयामि।

धूप-ॐ ब्राह्मणोऽस्य0 ॐ धूरसि धूर्व धूर्वन्तं धूर्व तं योऽस्मान् धूर्वति तं

धूर्वयं वयं धूर्वामः। देवानामसि वह्नितम ँ सस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमं देवहूतमम्।। धूपमाघ्रापयामि।

दीप-**ॐ चन्द्रमा0 दीपं दर्शयामि।**

नैवेद्य-तुलसीदल डालकर आगे लिखी पाँच ग्रास-मुद्राएँ दिखाएँ।

प्राणाय स्वाहा-कनिष्ठा, अनामिका और अंगूठा मिलाएँ।

अपानाय स्वाहा- अनामिका, मध्यमा और अंगूठा मिलाएँ।

व्यानाय स्वाहा-मध्यमा, तर्जनी और अंगूठा मिलाएँ।

उदानाय स्वाहा-तर्जनी, मध्यमा, अनामिका और अंगूठा मिलाएँ।

समानाय स्वाहा-सभी अंगुलियां अंगूठे से मिलाएँ।

ॐ नाभ्या0 नैवेद्यं निवेदयामि।

पानीयजल एलोशीरलवङ्गादि कर्पूरपरिवासितम्।

प्राशनार्थं कृतं तोयं गृहाण परमेश्वर।। मध्ये पानीयं जलं समर्पयामि।

ऋतुफल-**बीजपूराम्र- मनस-खर्जुरी-कदली-फलम्।**

नारिकेल फलं दिव्यं गृहाण परमेश्वर।। ऋतुफलं समर्पयामि।

आचमन-**कर्पूरवासितं तोयं मन्दाकिन्याः समाहृतम्।**

आचम्यतां जगन्नाथ मया दत्तं हि भक्तितः।। आचमनीयं जलं समर्पयामि।

नारियल-**फलेन फलितं सर्वं त्रैलोक्यं सचराचरम्।**

तस्मात् फलप्रदानेन पूर्णाः सन्तु मनोरथाः।। अखण्डं ऋतुफलं सम0।

ताम्बूल-पूगीफल-**ॐ यत्पुरुषेण0 ताम्बूलं समर्पयामि।**

दक्षिणा-**पूजाफलसमृद्ध्यर्थं दक्षिणा च तवाग्रतः।**

स्थापिता तेन मे प्रीतः पूर्णान् कुरु मनोरथान्।। दक्षिणां समर्पयामि।

आरती- **कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरन्तु प्रदीपितम्।**
आरार्तिकमहं कुर्वे पश्य मां वरदो भव।।

पुष्पांजलि

ॐ यज्ञेन यज्ञ0 ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे। स मे कामान् काम कामाय मह्यं कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु।। कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः। ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यं

वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात् सार्वभौमः सार्वायुष आन्तादापरार्धात् पृथिव्यै समुद्रपर्यन्ताया एकराडिति। तदप्येषश्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन् गृहे। आवीक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इति।। ॐ विश्तश्चक्षुरुत विश्तोमुखो विश्तोबाहुरुत विश्वतस्पात्। सं बाहुभ्यां धमति सं पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन् देवऽ एकः।। ॐ तत्पुरुषाय विद्महे नारायणाय धीमहि तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्।।

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुद्ध्यात्मना वाऽनुसृतस्वभावात्।

करोमि यद्यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पये तत्।। पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।।

प्रदक्षिणा- ॐ ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः।
तेषां ॳ सहस्त्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि।।

क्षमा-प्रार्थना- मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं जनार्दन!।
यत्पूजितं मया देव! परिपूर्णं तदस्तु मे।।
यदक्षरपदभ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत्।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव! प्रसीद परमेश्वर!।।

विसर्जन- यजमानहितार्थाय पुनरागमनाय च।
गच्छन्तु च सुरश्रेष्ठाः! स्वस्थानं परमेश्वराः!।।

यजमान-आशीर्वाद-मन्त्र-अक्षतान् विप्रहस्तात्तु नित्यं गृह्णन्ति ये नराः।
चत्वारि तेषां वर्धन्ते आयुः कीर्तिर्यशो बलम्।।
मन्त्रर्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः।
शत्रूणां बुद्धिनाशोस्तु मित्रणामुदयस्तव।।
ॐ श्रीर्वचस्वमायुमायुष्यमारोग्नमाविधात्
पवमानं महीयते। धनं धान्यं पशुं बहुपुत्रलाभं
शतसम्वत्सरं दीर्घमायुः।।

।। इति।।

शिव-पूजन

पवित्र होकर आचमन-प्रणायाम करके संकल्प-वाक्य के अन्त में **श्रीसाम्बसदाशिवप्रीत्यर्थ गणपत्यादिसकलदेवतापूजनपूर्वक श्रीभवानीशङ्करपूजनं करिष्ये।** कहकर संकल्प करें। नीचे लिखे आवाहन मंत्रों से मूर्तियों के समीप पुष्प छोड़ें। मूर्ति न हो तो आवाहन करके पूजन करें।

गणपति-पूजन- **आवाहयामि पूजार्थं रक्षार्थं च मम क्रतोः।**
इहागत्य गृहाण त्वं पूजां यागं च रक्ष मे।।

पूजन करके आगे लिखी प्रार्थना करें।

लम्बोदर! नमस्तुभ्यं सततं मोदकप्रियम्।
निर्विघ्नं कुरु में देव! सर्वकार्येषु सर्वदा।

पार्वती-पूजन- **हिमाद्रितनयां देवीं वरदां शङ्करप्रियाम्।**
लम्बोदरस्य जननीं गौरीमावाहयाम्यहम्।।

पूजन करके नीचे लिखी प्रार्थना करें।

ॐ अम्बेऽ अम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन।
स सस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्।।

नन्दीश्वर-पूजन-**ॐ आयं गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः। पितरञ्च प्रयन्त्स्वः।।**

पूजन करके नीचे लिखी प्रार्थना करें।

ॐ प्रैतु वाजी कनिक्रदन्नानदद्रासभः पत्वा।
भरन्नग्निम्पुरीष्यम्मा पाद्यायुषः पुरा।।

वीरभद्र-पूजन-

ॐ भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवा ँ सस्तनूभिर्व्यशेमही देवहितं यदायुः।।

पूजन करके नीचे लिखी प्रार्थना करें।

ॐ भद्रो नोऽ अग्निराहुतो भद्रा रातिः सुभग भद्रोऽ अध्वरः।
भद्राऽउत प्रशस्तया।।

स्वामी कार्तिक-पूजन-**ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमानऽ उद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात्। श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहूऽउपस्तुत्यं महि जातं तेऽ अर्वन्।।**

पूजन करके नीचे लिखी प्रार्थना करें।

ॐ यत्र बाणाः सम्पतन्ति कुमारा विशिखाऽइव।

तन्नऽ इन्द्रो बृहस्पतिरदितिः शर्म यच्छतु विश्वाहा शर्म यच्छतु।।

कुबेर-पूजन-**ॐ कुविदङ्ग यवमन्तो यवं चिद्यथा दान्त्यनुपूर्वं वियूय।**

इहेहैषां कृणुहि भोजनानि ये वर्हिषो नमऽउक्ति यजन्ति।।

पूजन करके आगे लिखी प्रार्थना करें।

ॐ वय ॐ सोमव्रते तव मनस्तुनूषु विभ्रतः। प्रजावन्तः सचेमही।।

कीर्तिमुख-पूजन-**ॐ असवे स्वाहा वसवे स्वाहा विभुवे स्वाहा विवस्वते स्वाहा गणश्रिये स्वाहा गणपतये स्वाहाऽभिभुवे स्वाहाऽभिभुवे स्वाहाऽह्निपतये स्वाहा शूषाय स्वाहा स ७ँ सर्पाय स्वाहा चन्द्राय स्वाहा ज्योतिषे स्वाहा मलिम्लुचाय स्वाहा दिवा पतये स्वाहा।।**

पूजन करके नीचे लिखी प्रार्थना करें।

ॐ ओजश्च मे सहश्च मऽआत्मा च मे तनूश्च मे शर्म च मे वर्म च मेऽङ्गानि च मेऽस्थीनि च मे परू ७ँ षि च में शरीराणि च मऽ आयुश्च मे जरा च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।।

जलहरी में सर्प का आकार हो तो सर्प का पूजन करें।

शिव का पूजन

पाद्य-**ॐ नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्त्राक्षाय मीढुशे। अथो येऽ अस्य सत्वानोऽहं तेभ्योऽकरं नमः।। पाद्यं समर्पयामि।**

अर्घ्य-**ॐ गायत्री त्रिष्टुब्जगत्यनुष्टुप्पङ्क्तचा सह। बृहत्युष्णिहा ककुप्सूचीभिः शम्यन्तु त्वा।। अर्घ्यं समर्पयामि।**

आचमन-**ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्।। आचमनीयं जलं समर्पयामि।**

स्नान-**ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनी स्थो वरुणस्यऽ ऋतसदन्यसि वरुणस्यऽ ऋतसदनमसि वरुणस्यऽ ऋतसदनमासीद।। स्नानं समर्पयामि।**

दुग्ध-**ॐ गोक्षीरधामन् देवेश गोक्षीरेण मयाकृतम्।**

स्नपनं देवदेवेश गृहाण शिवङ्कर।। दुग्धस्नानं सम0।

पुनर्जलस्नानं सम.।

दधि-ॐ दध्ना चैव मया देव स्नपनं क्रियते तव।

गृहाण भक्त्या दत्तं मे सुप्रसन्नो भवाव्यय।। दधिस्नान समर्प0, पुनर्जलस्नानं समर्प0।

घृत-ॐ सर्पिषा देवदेवेश स्नपनं क्रियते मया।

उमाकान्त गृहाणेदं श्रद्धया सुरसत्तम।। घृतस्नानं समर्पयामि, पुनर्जलं समर्पयामि।

मधु-ॐ इदं मधु मया दत्तं तव तुष्ट्यर्थमेव च। गृहाण शम्भो मे भक्त्या मम शान्तिप्रदो भव।। मधुस्नान स0, पुनर्जलस्नान स0।

शर्करा-ॐ सितया देवदेवेश स्नपनं क्रियते मया। गृहाण शम्भो में भक्त्या मम शान्तिप्रदो भव।। शर्करा-स्नान स0, पुनर्जल0 स0।

पञ्चामृत-ॐ पञ्चामृतं मयानीतं पयोदधिसमन्वितम्। घृतं मधु शर्करया स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।। पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदक स्नान-ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्तऽ आश्विनाः। श्येतः श्येताक्षोरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा यामाऽ अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः।। शुद्धोकस्नानं समर्पयामि।

अभिषेक-ॐ नमस्ते रुद्र मान्यव0 से मा नस्तोके0 मंत्र (कुल 16 मंत्रों से) जलधारा छोड़ें (इन मंत्रों को देखें परिशिष्ट/रुद्रा0/पञ्चमाध्याय)

अभिषेकं समर्पयामि।

विजया-ॐ विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो वाणवाँऽ2 उत। अनेशन्नस्य याऽ इषवऽ आभुरस्य निषं गधिः।। विजयां समर्पयामि।

वस्त्र-ॐ प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयोरात्र्योर्ज्याम्। याश्च ते हस्तऽ इषवः परा ता भगवो वप।। वस्त्रोपवस्त्रं समर्पयामि।

यज्ञोपवीत-ॐ ब्रह्म यज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेनऽ आवः। स बुध्न्याऽ उपमाऽ अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः।। यज्ञोपवीतं समर्प0 यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं जलं सं0।

गन्ध-ॐ नमः श्वभ्यः श्वपतिभ्यश्च वो नमो नमो भवाय च रुद्राय च नमः शर्वाय च पशुपतये च नमो नीलग्रीवाय च शितिकण्ठाय च।। गन्धं समर्पयामि।

अक्षत-ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च।। अक्षतं समर्पयामि।

पुष्प-ॐ नमः पार्यायचावार्याय च नमः प्रतरणाय चोत्तरणाय च नमस्तीर्थ्याय च कूल्याय च नमः शष्प्याय च फेन्याय च।। पुष्पं समर्पयामि।

पुष्पमाला-नानापङ्कजपुष्पैश्च ग्रथितां पल्लवैरपि।

विल्वपत्रयुतां मालां गृहाण सुमनोहराम्।। पुष्पमाल्यां समर्पयामि।

बिल्वपत्र-ॐ नमो बिल्मिने च कवचिने च नमो वर्मिणे च वरूथिने च नमः। श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुभ्याय चाहनन्याय च।।

काशीवास निवासी च कालभैरव पूजनम्।
प्रयागे माघमासे च बिल्वपत्रं शिवार्पणम्।।
दर्शनं बिल्वपत्रस्य स्पर्शनं पापनाशनम्।
अघोरपापसंहारं बिल्वपत्रं शिवार्पणम्।।
त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रिधायुधम्।
त्रिजन्मपापसहारं बिल्वपत्रं शिवार्पणम्।।
अखण्डैर्बिल्वपत्रैश्च पूजयेत् शिवशङ्करम्।
कोटिकन्यामहादानं बिल्वपत्रं शिवार्पणम्।।
गृहाण बिल्वपत्रणि सपुष्पाणि महेश्वर।
सुगन्धीनि भवानीश शिव त्वं कुसुमप्रिय।। बिल्वपत्राणि समर्पयामि।

दूर्वा-ॐ काण्डात् काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि। एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्त्रेण शतेन च।। दूर्वां समर्पयामि।

शमीपत्र-ॐ अमङ्गलानां शमनीं शमनीं दुष्कृतस्य च। दुःस्वप्न नाशिनीं धन्यां प्रपद्येऽहं शमीं शुभाम्।। शमीपत्रं समर्पयामि।

आभूषण-ॐ वज्रमाणिक्यवैदूर्यमुक्ताविद्रुममण्डितम्। पुष्पराग समायुक्तं भूषणं प्रतिगृह्यताम्।। आभूषणं समर्पयामि।

सुगन्ध तैल-(अतर) ॐ अहिरिव भोगैः पर्येति बाहुं ज्याया हेतिं परिबाधमानः। हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान् पुमान् पुमा ँ सं परिपातु विश्वतः।। सुगन्धतैलं समर्पयामि।

धूप-ॐ नमः कपर्दिने च व्युप्तकेशाय च नमः सहस्त्राक्षाय च शतधन्वने च नमो गिरिशयाय च शिपिविष्टाय च नमो मीढुष्टमाय चेषुमते च।। धूपमाघ्रापयामि।

दीप-ॐ नमऽ आशवे चाजिराय च नमः शीघ्र्याय च शीभ्याय च नमऽ ऊर्म्याय चावस्वन्याय च नमो नादेयाय च द्वीप्याय च।। दीपं दर्शयामि।

(हाथ धोकर) नैवेद्य-ॐ नमो ज्येष्ठाय च कनिष्ठाय च नमः पूर्वजाय चापरजाय च नमो मध्यमाय चापगल्भयाय च नमो जघन्याय च बुध्न्याय च।। नैवेद्यं निवेदयामि।

पानीय जल-ॐ-नमः सोभ्याय च प्रतिसर्याय च नमो याम्याय च क्षेम्याय च नमः श्लोक्याय चावसान्याय च नमऽ उर्वर्जाय च खल्याय च।। मध्ये पानीयं जलं समर्पयामि।

ऋतुफल-ॐ फलानि यानि रम्याणि स्थापितानि तवाग्रतः। तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि-जन्मनि।। ऋतुफलं समर्पयामि।

अ. ऋतुफल-ॐ कूष्माण्डं मातुलुङ्गं च नारिकेलफलानि च। रम्याणि पार्वतीकान्त! सोमेशं प्रतिगृह्यताम्।। अखण्डऋतुफलं समर्प०।

ताम्बूल-पूगीफल- ॐ इमा रुद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्वीराय प्रभरामहे मतीः। यथा शमसद् द्विपदे चतुष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामेऽ अस्मिन्ननातुरम्।। ताम्बूलपूगीफलं समर्पयामि।

दक्षिणा-न्यूनातिरिक्तपूजायां सम्पूर्णफलहेतवे। दक्षिणां काञ्चनीं देव स्थापयामि तवाग्रतः।। द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।

आरती- कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानीसहितं नमामि।।

शिव-स्तुति-असितगिरिसमं स्यात्कज्जलं सिन्धुपात्रे
सुरतरुवरशाखा लेखनीपत्रमुर्वी।
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं
तदपि तवगुणानामीशपारं न याति।।

श्मशानेस्वाक्रीडा स्मरहर पिशाचाः सहचरा-
श्चिताभस्मालेपः स्त्रगपि नृकरोटीपरिकरः।
अमङ्गल्यं शीलं तव भवतु नामैवमखिलं
तथापि स्मर्तॄणां वरद परमं मङ्गलमसि।।
पापोऽहं पापकर्माहं पापात्मा पापसम्भवः।
त्राहि मां पार्वतीनाथ! सर्वपापहरो भव।।
कालहर कण्टकहर दुःखहर दारिद्र्यहर

आगे लिखे मन्त्र से गाल बजाते हुए बम् बम् बोल कर जलहरी का जल नेत्रों पर लगाएँ।

निरावलम्बस्य ममावलम्बं विपाटिताशेषविपत्कदम्बम्।
मदीयपापाचलपापशम्बं प्रवर्ततां वाचि सदैव बम्-बम्।।

पञ्चांग-प्रणाम, मन में स्मरण, नेत्रों से दर्शन और वाणी से नामोच्चार करते हुए, दोनों हाथ जोड़ कर मस्तक झुका कर प्रणाम करें।

प्रदक्षिणा

यानि कानि च पापानि ज्ञाताज्ञातकृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्ति प्रदक्षिण पदे पदे।।

क्षमा-प्रार्थना-**प्रपन्नं पाहि मामीश! भीतं मृत्युग्रहार्णवात्।।**
आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
पूजाञ्चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर!।।
अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेकं शरणं मम।
तस्मात् कारुण्यभावेन रक्ष रक्ष महेश्वर।।
अनेने पूजनेन श्रीसाम्बसदाशिवः प्रीयताम्।

पार्थिव-शिव-पूजन

पवित्र होकर संकल्प वाक्य के अन्त में **पार्थिवलिङ्गपूजनं करष्येि** कहकर संकल्प का जल छोड़ें।

भूमि-प्रार्थना-सर्वाधारे धरे देवि त्वद्रूपां मृत्तिकामिमाम्।
ग्रहिष्यामि प्रसन्ना त्वं लिङ्गार्थं भव सुप्रभे।।

ॐ ह्रां पृथिव्यै नमः।

उद्धृतासि वराहेण कृष्णेन शतबाहुना।
मृत्तिके त्वां च गृह्णामि प्रजया च धनेन च।।

ॐ हराय नमः मृत्तिका ग्रहण करें। **ॐ बं अमृताय नमः** जल को अभिमन्त्रित करें। **ॐमहेश्वराय नमः** मूर्ति बनाएँ। ॐ **शूलपाणये नमः** मूर्ति स्थापित करें।

विनियोग-

ॐ अस्य श्रीशिवपञ्चाक्षरमन्त्रस्य वामदेव ऋषिरनुष्टुप्छन्दः श्रीसदाशिवो देवता, ॐ बीजं, नमः शक्तिः, शिवाय कीलकं मम साम्बसदाशिवप्रीत्यर्थं न्यासे पूजने जपे च विनियोगः।।

अङ्गन्यास-**ॐवामदेवाय ऋषये नमः शिरसि। ॐअनुष्टुप् छन्दसे नमः मुखे। ॐ सदाशिवदेवतायै नमः हृदि। ॐ बीजाय नमः गुह्ये। ॐ शक्तये नमः पादयोः। ॐ शिवाय कीलकाय नमः सर्वांगे। ॐ नं तत्पुरुषाय नमो हृदये। ॐ मं अघोराय नमः पादयोः। ॐ शिं सद्योजाताय नमः गुह्ये। ॐ वां वामदेवाय नमः मूर्ध्नि। ॐ यं ईशानाय नमः मुखे। ॐ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ नं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ मं मध्यमाभ्यां वषट्। ॐ शिं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ वां कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्। ॐ यं करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्। ॐ हृदयाय नमः। ॐ नं शिरसे स्वाहा। ॐ मं शिखायै वषट्। ॐ शिं कवचाय हुम्। ॐ वां नेत्राभ्यां वौषट्। ॐ यं अस्त्राय फट्।।**

विनियोग-**ॐ अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्य ब्रह्मा-विष्णु-महेश्वराः ऋषयः ऋग्यजुः सामानिच्छन्दांसि क्रियामयवपुः प्राणाख्या देवता ॐ आं बीजं ह्रीं शक्तिः क्रौं कीलकं देवप्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः।**

प्रतिष्ठा-**ॐ ब्रह्म-विष्णु-रुद्र ऋषिभ्यो नमः शिरसि। ॐ ऋग्यजुः सामच्छन्देभ्यो नमो मुखे। ॐ प्राणाख्यदेवतायै नमः हृदि। ॐ आं बीजाय नमो गुह्ये। ॐ ह्रीं शक्तये नमः पादयोः। ॐ क्रौं कीलकाय नमः सर्वांगे।** इस प्रकार अङ्ग न्यास करके।

ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं सः सोऽहं शिवस्य प्राणा इह प्राणाः। ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं सः सोऽहं शिवस्य जीव इह स्थितः। ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं सः सोऽहं शिवस्य सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनस्त्वक्चक्षुः श्रोत्रघ्राणजिह्वापाणिपादपायूपस्थानि इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।।

नीचे लिखे मन्त्र से पुष्प समर्पण करें।

ॐ भूः पुरुषं साम्बसदाशिवमावाहयामि। ॐ भुवः पुरुषं साम्बसदाशिवमावाहयामि। ॐ स्वः पुरुषं साम्बसदाशिवमावाहयामि।। इससे आवाहन करें। **ॐ स्वामिन् सर्वजगन्नाथ! यावत् पूजावसानकम्।**

तावत् त्वं प्रीतिभावेन लिङ्गेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु।।

पूजन कर आगे लिखे मन्त्र से विसर्जन करें।

ॐ हरो महेश्वरश्चैव शूलपाणिः पिनाकधृक्।
शिवः पशुपतिश्चैव महादेव-विसर्जनम्।।

श्री दुर्गा-पूजन

शुद्ध मृत्तिका में यव रोपण कर उसपर कलश-स्थापन विधि से कलश स्थापन करें। आचमन, प्राणायाम करके संकल्प वाक्य के अन्त में **ममेह जन्मनि दुर्गाप्रीतिद्वारा सर्वापच्छान्तिपूर्वकं दीर्घायुर्विपुलधनपुत्रपौत्राद्यविच्छिन्न-सन्ततिवृद्धिस्थिर-लक्ष्मीकीर्तिलाभशत्रुपराजयप्रमुखचतुर्विधपुरुषार्थसिद्ध्यर्थं कलशस्थापनं दुर्गापूजनं तत्र निर्विघ्नतासिद्ध्यर्थं स्वस्तिवाचनं, पुण्याहवाचनं, गणपत्यादिपूजनं च करिष्ये** कह कर संकल्प करें।

पश्चात् नीचे लिखे संकल्प से ब्राह्मण का वरण करें।

ॐ अद्य श्रीदुर्गापूजनपूर्वकं मार्कण्डेयपुराणान्तर्गत दुर्गासप्तशती-पाठकरणार्थम् एभिर्वरणद्रव्यैः अमुक गोत्रम् अमुक शर्माणं ब्राह्मणं त्वामहं वृणे।। पश्चात्-ब्राह्मण वृतोस्मि कहें।

नोटः-स्वस्तिवाचन, पुण्याहवाचन, गणपति-गौरीपूजन, कलश स्थापन, नवग्रह, पञ्चलोकपाल, दशदिक्पाल, षोडशमात्रिका, चतुःषष्टि योगिनी, क्षेत्रपाल आदिका पूजन 'सामान्य पूजन विधि' में दिया गया है, तदनुसार करें, पश्चात् नीचे लिखे ध्यान करें।

(भगवती वाहन भैरव ध्वजा आदि का भी पूजन करें।)

भैरव-ध्यान- **ॐ करकलितकपालः कुण्डली दण्डपाणि-**
स्तरुणतिमिरनीलो व्यालयज्ञोपवीती।
क्रतुसमयसपर्या विघ्नविच्छेदहेतु-
र्जयति बटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम्।।

देवी-ध्यान- **ॐ विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणां**
कन्याभिः करवालखेटविलसद्धस्ताभिरासेवितम्।
हस्तैश्चक्रगदासिखेटविशिखाँश्चापं गुणं तर्जनीं
विभ्राणमनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे।।

आवाहन-**ॐ आगच्छ वरदे देवि दैत्यदर्पनिषूदिनि।**
पूजां गृहाण सुमुखि नमस्ते शङ्करप्रिये।। आवाहयामि।

आसन- **ॐ अनेकरत्नसंयुक्तं नानामणिगणान्वितम्।**
कार्तस्वरमयं दिव्यमासनं प्रतिगृह्यताम्।। आसनं समर्पयामि

पाद्य- **ॐ गङ्गादिसर्वतीर्थेभ्यो मया प्रार्थनयाहृतम्।**
तोयमेतत् सुखस्पर्शं पाद्यार्थं प्रतिगृह्यताम्।। पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्य-ॐ गन्धपुष्पाक्षतैर्युक्तमर्घ्यं सम्पादितं मया।
गृहाण त्वं महादेवि प्रसन्ना भव सर्वदा।। अर्घ्यं समर्पयामि।

आचमन-ॐ आचम्यतां त्वया देवि! भक्तिं मे ह्यचलां कुरु।
ईप्सितं मे वरं देहि परत्र च पराङ्गतिम्।। आचमनं समर्पयामि।

स्नान-ॐ जाह्नवीतोयमानीतं शुभं कर्पूरसंयुतम्।
स्नापयामि सुरश्रेष्ठे! त्वां पुत्रादिफलप्रदाम्।। स्नानं समर्पयामि।

पञ्चामृतस्नान-ॐ पयो दधि घृतं क्षौद्रं सितया च समन्वितम्।
पञ्चामृतमनेनाद्य कुरु स्नानं दयानिधे।। पञ्चामृतस्नान स०।

शुद्धोदकस्नान-ॐ परमानन्दबोधाब्धिनिमग्ननिजमूर्तये।
साङ्गोपाङ्गमिदं स्नानं कल्पयाम्यहमीशिते।। शुद्धोदकस्नानं समर्प०।

वस्त्र-ॐ वस्त्रञ्च सोमदेवत्यं लज्जायास्तु निवारणम्।
मया निवेदितं भक्त्या गृहाण परमेश्वरि।। वस्त्रं समर्पयामि।

उपवस्त्र-ॐ यामाश्रित्य महामाया जगत्सम्मोहिनीं सदा।
तस्यै ते परमेशायै कल्पयाम्युत्तरीयकम्।। उपवस्त्रं समर्पयामि।

मधुपर्क-ॐ दधिमध्वाज्यसंयुक्तपात्रयुग्मसमन्वितम्।
मधुपर्कं गृहाण त्वं वरदा भव शोभने!।। मधुपर्कं समर्पयामि।

गन्ध-ॐ परमानन्दसौभाग्यपरिपूर्णदिगन्तरे।
गृहाण परमं गन्ध कृपया परमेश्वरि।। गन्धं समर्पयामि।

कुङ्कुम-ॐ कुङ्कुमं कान्तिदं दिव्यं कामिनीकामसंभवम्।
कुङ्कुमेनार्चितं देवि! प्रसीद परमेश्वरि।। कुङ्कुमं समर्पयामि।

आभूपण-ॐ हारकङ्कणकेयूरमेखलाकुण्डलादिभिः।
रत्नाढ्यं कुण्डलोपेतं भूषणं प्रतिगृह्यताम्।। आभूषणं समर्पयामि।

सिन्दूर-ॐ सिन्दूरमरुणाभासं जपाकुसुमसन्निभम्।
पूजितासि मया देवि! प्रसीद परमेश्वरि।। सिन्दूरं समर्पयामि।

कज्जल-ॐ चक्षुर्भ्यां कज्जलं रम्यं सुभगे! शान्तिकारिके!
कर्पूरज्योतिरुत्पन्नं गृहाण परमेश्वरि।। कज्जलं समर्पयामि।

सौभाग्यद्रव्य-ॐ सौभाग्यसूत्र वरदे! सुवर्णमणिसंयुते।
कण्ठे बध्नामि देवेशि! सौभाग्यं देहि मे सदा।। सौभाग्यद्रव्यं समर्पयामि।

सुगन्धतैल-(अतर) ॐ चन्दनागरुकर्पूरैः संयुतं कुङ्कुमं तथा।
कस्तूर्यादिसुगन्धाँश्च सर्वाङ्गेषु विलेपनम्।। सुगन्धतैलं सम0।

परिमलद्रव्य-ॐ हरिद्रारंजिते देवि! सुखसौभाग्यदायिनि!।
तस्मात्त्वां पूजयाम्यत्र सुखशान्तिं प्रयच्छ मे।। परिमलद्रव्यं समर्पयामि।

अक्षत-ॐ रंजिताः कुङ्कुमौघेन अक्षताश्चातिशोभनाः।
ममैषां देवि दानेन प्रसन्ना भव शोभने।। अक्षतं समर्पयामि।

पुष्प-ॐ मन्दारपारिजातादि पाटलीकेतकानि च।
जातीचम्पकपुष्पाणि गृहाणेमानि शोभने।। पुष्पं समर्पयामि।

पुष्पमाला-ॐ सुरभिपुष्पनिचयैः ग्रथितां शुभमालिकाम्।
ददामि तव शोभार्थं गृहाण परमेश्वरि!।। पुष्पमाल्यां समर्पयामि।

विल्वपत्र-ॐ अमृतोद्भवः श्रीवृक्षो महादेवि प्रियः सदा।
विल्वपत्रं प्रयच्छामि पवित्रं ते सुरेश्वरि!।। विल्वपत्रं समर्पयामि।

धूप-ॐ दशाङ्गगुग्गुलं धूपं चन्दनागरुसंयुतम्।
समर्पितं मया भक्त्या महादेवि! प्रगृह्यताम्।। धूपमाघ्रापयामि।

दीप-ॐ घृतवर्तिसमायुक्तं महातेजो महोज्वलम्।
दीपं दास्यामि देवेशि! सुप्रीता भव सर्वदा।। दीपं दर्शयामि। (हाथ धो लें)

नैवेद्य-ॐ अन्नं चतुर्विधं स्वादु रसैः षड्भिः समन्वितम्।
नैवेद्यं गृह्यतां देवि! भक्तिं मे ह्यचलां कुरु।। नैवेद्यं निवेदयामि।

मध्येपानीयं जलं समर्पयामि।

ऋतुफल-ॐ द्राक्षाखर्जूरकदलीपनसाम्रकपित्थकम्।
नारिकेलेक्षुजम्ब्वादि फलानि प्रतिगृह्यन्ताम्।। ऋतुफलं समर्पयामि।

आचमन-ॐ कामारिवल्लभे देवि! कुर्वाचमनमम्बिके!।
निरन्तरमहं वन्दे चरणौ तव चण्डिके!।। आचमनं समर्पयामि।

ऋतुफल-ॐ नारिकेलं च नारंगं कलिंगं मंजिरं तथा।
उर्वारुकञ्च देवेशि-फलान्येतानि गृह्यन्ताम्।। अखण्ड ऋतुफलं समर्प0।

ताम्बूलपूगीफल-ॐ एलालवङ्गकस्तूरीकर्पूरैः पुष्पवासिताम्।
वीटिकां मुखवासार्थमर्पयामि सुरेश्वरि!।। ताम्बूलपूगीफलं समर्पयामि।

दक्षिणा-ॐ पूजाफलसमृद्धयर्थं तवाग्रे द्रव्यमीश्वरि!।
स्थापितं तेन मे प्रीता पूर्णान् कुरु मनोरथान्।। द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।

पुस्तक-पूजन (जल से न करें)

ॐनमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्।।

ज्योति-पूजन (पूजन करके प्रार्थना करें)

ॐ शुभं भवतु कल्याणमरोग्यं पुष्टिवर्धनम्।
आत्मतत्त्वप्रबोधाय दीपज्योतिर्नमोऽस्तु ते।।

कुमारी-पूजन

2 वर्ष से 10 वर्ष तक की कन्या का पूजन कर भोजन कराएँ।

प्रार्थना-**ॐ सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिस्वरूपिणि। पूजां गृहण कौमारि! जगन्मातर्नमोऽस्तु ते।।**

आरती- **ॐ नीराजनं सुमाङ्गल्यं कर्पूरेण समन्वितम्।**
चन्द्रार्कवह्निसदृशं महादेवि नमोऽस्तु ते।।

पुष्पांजलि- **ॐदुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः**
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीवशुभां ददासि।
दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या
सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता।।

प्रदक्षिणा- **ॐ नमस्ते देवि-देवेशि! नमस्ते ईप्सितप्रदे!।**
नमस्ते जगतां धात्रि! नमस्ते भक्तवत्सले!।।

साष्टांगप्रणाम- **ॐनमः सर्वहितार्थायै जगदाधारहेतवे।**
साष्टाङ्गोऽयं प्रणामस्तु प्रयत्नेन मया कृतः।।

प्रार्थना- **ॐपुत्रान्देहि धनं देहि सौभाग्यं देहि मङ्गले।**
अन्याँश्च सर्वकामाँश्च देहि देवि! नमोऽस्तु ते।।

विसर्जन- **ॐ इमां पूजां मया देवि यथाशक्त्युपपादिताम्।**
रक्षार्थं त्वं समादाय व्रज स्थानमनुत्तमम्।।

श्रीमहालक्ष्मी-पूजन

आचमन प्राणायाम करके-**देशकालौ सङ्कीर्त्य.. स्थिरलक्ष्मीप्राप्त्यर्थं श्रीमहालक्ष्मीप्रीत्यर्थं सर्वारिष्टनिवृत्तिपूर्वकसर्वाभीष्टफलप्राप्त्यर्थम् आयुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्धयर्थं व्यापारे लाभार्थं च गणपतिनवग्रह-कलशादिपूजनपूर्वकं श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती-लेखनी-कुबेरादीनां च पूजनं करिष्ये** कहकर जल छोड़े। पश्चात् गणपति, कलश और नवग्रहादि का पूजन करके महालक्ष्मी का पूजन करें।

ध्यान-**ॐ या सा पद्मासनस्थाविपुलकटितटी पद्मपत्रयताक्षी**
गम्भीरावर्तनाभिस्तनभरनमिता शुभ्रवस्त्रोत्तरीया।
या लक्ष्मीर्दिव्य- रूपैर्मणिगणखचितैः स्नापिता हेमकुम्भैः
सा नित्यं पद्महस्ता मम वसतु गृहे सर्वमाङ्गल्ययुक्ता।।

आवाहन-**ॐ सर्वलोकस्य जननीं शूलहस्तां त्रिलोचनाम्।**
सर्वदेवमयीमीशां देवीमावाहयाम्यहम्।। दुर्गायै नमः, आवाहयामि।

आसन-**ॐ तप्तकाञ्चनवर्णाभं मुक्तामणिविराजितम्।**
अमलं कमलं दिव्यमासनं प्रतिगृह्यताम्।। आसनं समर्पयामि।

पाद्य- **ॐ गङ्गादितीर्थसम्भूतं गन्धपुष्पादिभिर्युतम्।**
पाद्यं ददाम्यहं देवि गृहाणाशु नमोऽस्तु ते।। पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्य- **ॐ अष्टागन्धसमायुक्तं स्वर्णपात्रप्रपूरितम्।**
अर्घ्यं गृहाण मद्दत्तं महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते।। अर्घ्यं समर्पयामि।

आचमन-**ॐ सर्वलोकस्य या शक्तिर्ब्रह्मविष्ण्वादिभिः स्तुता।**
ददाम्याचमनं तस्यै महालक्ष्म्यै मनोहरम्।। आचमनं समर्पयामि।

स्नान-**ॐ मन्दाकिन्याः समानीतैर्हेमाम्भोरुहवासितैः।**
स्नानं कुरुष्व देवेशि! सलिलैश्च सुगन्धिभिः।। स्नानं समर्पयामि।

(दुग्ध, दधि, घृत, मधु, तथा शर्करास्नान विधि शालग्राम पूजन के अनुसार करायें।)

पञ्चामृतस्नान-**ॐ पञ्चामृतसमायुक्तं जाह्नवी सलिलं शुभम्।**
गृहाणविश्वजननि स्नानार्थं भक्तवत्सले!।। पंचामृतस्नानं समर्प0।

शुद्धोदकस्नान-**ॐ तोयं तव महादेवि! कर्पूरागुरुवासितम्।**
तीर्थेभ्यः सुसमानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।। शुद्धोदकस्नानं सम0।

वस्त्र- **ॐ दिव्याम्बरं नूतनं हि क्षौमं त्वतिमनोहरम्।**
दीयमानं मया देवि! गृहाण जगदम्बिके!।। वस्त्रं समर्पयामि।

उपवस्त्र-ॐ कञ्चुकीमुपवस्त्रं च नानारत्नैः समन्वितम्।
गृहाण त्वं मया दत्तं मङ्गले जगदीश्वरि!।। उपवस्त्रं समर्पयामि।

मधुपर्क-ॐ कपिलं दधि कुन्देन्दुधवलं मधुसंयुतम्।
स्वर्णपात्र स्थितं देवि! मधुपर्कं गृहाण भोः।। मधुपर्कं समर्पयामि।

आभूषण-ॐ स्वभावसुन्दराङ्गायै नानादेवाश्रये शुभे!।
भूषणानि विचित्राणि कल्पयाम्यमरार्चिते!।। आभूषणं समर्पयामि।

गन्ध-ॐ श्रीखण्डागरुकर्पूरमृगनाभिसमन्वितम्।
विलेपनं गृहाणाशु नमोऽस्तु भक्तवत्सले!।। गन्धं समर्पयामि।

रक्तचंदन-ॐ रक्तचन्दनसम्मिश्रं पारिजातसमुद्भवम्।
मया दत्तं गृहाणाशु चन्दनं गन्धसंयुतम्।। रक्तचंदनं समर्पयामि।

सिन्दूर-ॐ सिन्दूरं रक्तवर्णं च सिन्दूरतिलकप्रिये!।
भक्त्या दत्तं मया देवि! सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्।। सिन्दूरं समर्पयामि।

कुङ्कुमं-ॐ कुङ्कुमं कामदं दिव्यं कुङ्कुमं कामरूपिणम्।
अखण्ड कामसौभाग्यं कुङ्कुमं प्रतिगृह्यताम्।। कुंकुमं समर्पयामि।

अक्षत-ॐ अक्षतान्निर्मलाछुद्धान् मुक्तामणिसमन्वितान्।
गृहाणेमान् महादेवि! देहि मे निर्मलां धियम्।। अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्प- ॐ मन्दारपारिजाताद्याः पाटली केतकी तथा।
मरुवा मोगरं चैव गृहाणाशु नमो नमः।। पुष्पाणि समर्पयामि।

पुष्पमाला-ॐ पद्मशङ्खजपापुष्पैः शतपत्रैर्विचित्रिताम्।
पुष्पमालां प्रयच्छामि गृहाण त्वं सुरेश्वरि!।। पुष्पमाल्यां सम0।

दूर्वा- ॐविष्णवादिसर्वदेवानां प्रियां सर्वसुशोभनाम्।
क्षीरसागरसम्भूते! दूर्वां स्वीकुरु सर्वदा।। दुर्वां समर्पयामि।

सुगन्धतैल-ॐ स्नेहं गृहाण स्नेहेन लोकेश्वरि ! दयानिधे !।
सर्वलोकस्य जननि! ददामि स्नेहमुत्तमम्।। सुगन्धतैलं समर्पयामि।

अथाङ्गपूजा।

ॐ चपलायै नमः पादौ पूजयामि। ॐ चञ्चलायै नमः जानुनि पूजयामि। ॐ कमलायै नमः कटिं (कमर) पूजयामि। ॐ कात्यायिन्यै नमः नाभिं (नाभि) पूजयामि। ॐ जगन्मात्रे नमः जठरं पूजयामि। ॐविश्ववल्लभायै नमः वक्षस्थलं पूजयामि। ॐ कमलवासिन्यै नमः भुजौ (दोनों भुजायें) पूजयामि। ॐ पद्मकमलायै

नमः मुखं (मुख) **पूजयामि। ॐ कमलपत्राक्ष्यै नमः नैत्रत्रयं** (तीनों नेत्र) **पूजयामि। ॐ श्रियै नमः शिरः** (मस्तक) **पूजयामि।** अंग पूजा समाप्त।

पूर्वादिक्रम से आठों दिशाओं में अष्टसिद्धि की पूजा करें-**ॐ अणिम्ने नमः। ॐ महिम्ने नमः। ॐ गरिम्णे नमः। ॐ लघिम्ने नमः। ॐ प्राप्त्यै नमः। ॐ प्राकाम्यै नमः। ॐ ईशितायै नमः। ॐ वशितायै नमः।।** इति अष्टसिद्धिपूजन।

उसी प्रकार पूर्वादिक्रम से अष्ट लक्ष्मी पूजन **ॐ आद्यलक्ष्म्यै नमः। ॐ विद्यालक्ष्म्यै नमः। ॐ सौभाग्यलक्ष्म्यै नमः। ॐ अमृतलक्ष्म्यै नमः। ॐ कामलक्ष्म्यै नमः। ॐ सत्यलक्ष्म्यै नमः। ॐ भौगलक्ष्म्यै नमः। ॐ योगलक्ष्म्यै नमः।।** इति अष्टलक्ष्मीपूजन।

धूप-**ॐ वनस्पतिरसोत्पन्नो गन्धाढ्यः सुमनोहरः।**
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।। इति अष्टलक्ष्मीपूजन।

दीप- **ॐ कार्पासवर्तिसंयुक्तं घृतयुक्तं मनोहरम्।**
तमोनाशकरं दीपं गृहाण परमेश्वरि।। दीपं दर्शयामि।

नैवेद्य- **ॐ नैवेद्यं गृह्यतां देवि भक्ष्यभोज्यसमन्वितम्।**
षड्रसैरन्वितं दिव्यं लक्ष्मि देवि नमोऽस्तु ते।।
नैवेद्यं निवेदयामि। मध्ये पानीयं जल समर्पयामि।

ऋतुफल-**ॐ फलेन फलितं सर्वं त्रैलोक्यं सचराचरम्।**
तस्मात्फलप्रदानेन पूर्णाः सन्तु मनोरथाः।। ऋतुफलं समर्पयामि।

आचमन-**ॐ शीतलं निर्मलं तोयं कर्पूरेण सुवासितम्।**
आचम्यतामिदं देवि प्रसीद त्वं महेश्वरि!।। आचमनीयं जलं सम०।

अखण्डऋतुफल-**ॐ इदं फलं मयाऽनीतं सरसं च निवेदितम्।**
गृहाण परमेशानि प्रसीद प्रणमाम्यहम्।। अखण्डऋतुफलं सम०।

ताम्बूलपूगीफल-**ॐ एलालवङ्गकर्पूरनागपत्रादिभिर्युतम्।**
पूगीफलेन संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।। ताम्बूलपूगीफलं सम०।

दक्षिणा-**ॐ हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।**
अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।। द्रव्यदक्षिणां सम०।

प्रार्थना

ॐ सुरासुरेन्द्रादिकिरीटमौक्तिकैर्युक्तं सदा यत्तवपादपङ्कजम्। परावरं पातु वरं सुमङ्गलं नमामि भक्त्या तव कामसिद्धये।।

भवानि त्वं महालक्ष्मीः सर्वकामप्रदायिनि!।
सुपूजिता प्रसन्नस्यान्महालक्ष्मि! नमोऽस्तु ते।।
नमस्ते सर्वदेवानां वरदासि हरिप्रिये।
या गतिस्त्वत्प्रपन्नानां सा मे भूयात्त्वदर्चनात्।।

महाकाली-पूजन

दवात में मौली बाँध, तथा स्वस्तिक बनाकर नीचे लिखा ध्यान करें।

ॐ मसि त्वं लेखनीयुक्ता चित्रगुप्ताशयस्थिता।
सदक्षराणां पत्रे च लेख्यं कुरु सदा मम।।
या मया प्रकृतिः शक्तिश्चण्डमुण्डविमर्दिनी।
सा पूज्या सर्वदेवैश्च ह्यस्माकं वरदा भव।।

ॐ श्री महाकाल्यै नमः। पूजन कर नीचे लिखी प्रार्थना करें।

ॐ या कालिका रोगहरा सुवन्द्या वैश्यैः समस्तैर्व्यवहारदक्षैः।
जनैर्जनानां भयहारिणी च सा देवमाता मयि सौख्यदात्री।।

लेखनी-पूजन

कलम पर मौली बांध कर नीचे लिखा ध्यान करके पूजन करें।

ॐ शुक्लां ब्रह्मविचारसारपरमामाद्यां जगद्व्यापिनीं
वीणापुस्तकधारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम्।
हस्ते स्फाटिकमालिकां विदधतीं पद्मासने संस्थितां
वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम्।।

लेखिन्यै नमः। पूजन कर नीचे लिखी प्रार्थना करें।

ॐ कृष्णानने! द्विजिह्वे! च चित्रगुप्तकरस्थिते!।
सदक्षराणां पत्रे च लेख्यं कुरु सदा मम।।

बही, वसना आदि में केशर या रोली से स्वस्तिक बनाकर नीचे लिखा ध्यान करके पूजन करें।

ॐ या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता या
वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना।
या ब्रह्माच्युतशङ्करप्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता
सा माँ पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा।।

ॐ वीणापुस्तकधारिण्यै नमः। पूजनकर नीचे लिखी प्रार्थना करें।

ॐ शारदा शारदाम्भोजवदना वदनाम्बुजे।
सर्वदा सर्वदाऽस्माकं सन्निधिं सन्निधिं क्रियात्।।

संदूक आदि में सिन्दूर से स्वस्तिक बना, आवाहन करके पूजन करे।

आवाहयामि देव त्वमिहायाहिकृपां कुरु।
कोशं वर्द्धय नित्यं त्वं परिरक्ष सुरेश्वर!।।

प्रार्थना- **ॐ धनाध्यक्षाय देवाय नरयानोपवेशिने।**
नमस्ते राजराजाय कुबेराय महात्मने।।

तुला तथा मान-पूजन

सिंदूर से स्वस्तिक बनाकर पूजन करें, पश्चात् नीचे लिखी प्रार्थना करें।

नमस्ते सर्वदेवानां शक्तित्वे सत्यमाश्रिते।
साक्षीभूता जगद्धात्री निर्मिता विश्वयोनिना।।

दीपावली-पूजन

दीपक जलाकर पात्र में रख, पूजन करके नीचे लिखी प्रार्थना करें।

भो दीप त्वं ब्रह्मरूप अन्धकारनिवारक।
इमां मया कृतां पूजां गृह्णँस्तेजः प्रवर्धय।।

ॐ दीपेभ्यो नमः।

।। इति।।

सर्वतोभद्र पूजन

प्रत्येक व्रत गृह प्रतिष्ठा आदि में सर्वतोभद्र पीठ बनाकर उसका पूजन विधि पूर्वक करना चाहिए। प्रत्येक पीठ पर प्रधान देव की प्रतिमा स्थापित कर पूजा की विधि निम्नवत् करनी चाहिए।

ॐ ब्रह्मयज्ञानेत्यादिमन्त्राणां, गौतमाद्या ऋषयः, त्रिष्टुबादीनि छन्दांसि, ब्रह्मादयो देवताः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताऽऽवाहने पूजने च विनियोगः।

अक्षत लेकर कर्णिका के बीच में ब्रह्मादि का आवाहन करें। **ॐ ब्रह्मयज्ञानम्प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोव्वेन आवः।। सबुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सठश्चयोनिमसतश्चव्विवः। ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मन्निहागच्छ इह तिष्ठ। ॐ ब्रह्मणे नमः।।1।। उत्तरे वाप्यां सोमम्।। ॐ वय ँ सोमव्रते तव मनस्तनूषु बिब्भ्रतः।। प्रजावन्तः सचेमहि।। ॐ भूर्भुवः स्वः सोम इहागच्छ इह तिष्ठ।। ॐ सोमाय नमः।। 2।।** ईशान्यां खण्डेन्दावीशानम्। **ॐ तमीशानञ्जगतस्तस्थुषस्प्पतिन्धियञ्जिन्वमवसेहूमहे वयम्।। पूषानो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये।। ॐ भूर्भुवः स्वः ईशान इहा0।। ईशानाय नमः।।3।।** पूर्वस्यां दिशि वाप्यामिन्द्रम्।। **ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रꣳ हवे हवे सुवह ꣳ शूरमिन्द्रम्।। ह्वयामि शक्रम्पुरुहूतमिन्द्र ꣳ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः।। ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्र इहागच्छ. ॐ इन्द्राय नमः।।** आग्नेय्यां खण्डेन्दावग्निम्। **ॐ त्वन्नोऽअग्नेव्वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो अवयासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो व्विश्वाद्वेषा ँ सिप्प्रमुमुग्ध्यस्मत् ॐ भूर्भुवः स्वरग्ने इहा.।। ॐ अग्नये नमः।।** दक्षिणवाप्यां यमम्। **ॐ सुगन्नः पन्थाप्रदिशन्नऽएहि ज्योतिष्मद्धेह्यजरन्नऽआयुः।। अपैतु मृत्युममृतम्म आगाद्वैवस्वतो नोऽअभयं कृणोतु।। ॐ भूर्भुवः स्वः यम इहा. ॐ यमाय नमः।।** नैर्ऋत्यां खण्डेन्दौ निर्ऋतिम् **ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छस्तेनस्येत्यामन्विहितस्क्करस्य अन्यमस्मदिच्छसातऽइत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु।। ॐ भूर्भुवः स्वः निर्ऋते इहा. ॐ निर्ऋतये नमः।।** पश्चिमे वाप्यां वरुणम्। **ओं तत्त्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणे - हवोद्ध्यरुश ँ समानऽआयुःप्रमोषीः।। ॐ भुर्भुवः स्व वरुण इहा. वरुणाय नमः।।** वाव्यां खण्डेन्दौ वायुम्। **ॐ आनोनियुद्भिः शतिनीभिरध्वर ँ सहस्त्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम्।। वायोऽअस्मिन्त्सवनेमादयस्व यूयम्पातस्वस्तिभिः सदा नः। ॐ भुर्भुवः स्वः वायो इहा. ॐ वायवे नमः।।** वायुसोमयोर्मध्ये भद्रे अष्टवसून्। **ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं व्वसोः पवित्रमसि**

सहस्त्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु वसो पवित्रेण शतधारेण सुप्त्वा कामधुक्षः।। ॐ भूर्भुवः स्वः वसव इहागच्छत इह तिष्ठत।। वसुभ्यो नमः।। सोमेशानयोर्मध्ये भद्रे एकादशरुद्रान्। ॐ नमस्ते रुद्रमन्न्यव उतोत इषवे नमः। बाहुभ्यामुतते नमः। ॐ भूर्भुवः स्वः एकादश रुद्रा इहागच्छत इह तिष्ठत।। ॐ रुद्रेभ्यो नमः। ईशानपूर्वयोर्मध्ये भद्रे द्वादशादित्यान्। ॐ अदितिर्द्यौरदितिरन्तररिक्षमदितिर्म्मातासपितासपुत्रः। विश्वेदेवा अदितिः पञ्चाजना अदितिर्जातमदितिर्ज्जनित्वम्।। ॐ भूर्भुवः स्वः द्वादशादित्या इहागच्छत इह तिष्ठत।। ॐ द्वादशादित्येभ्यो नमः।। इन्द्राग्न्योर्मध्ये भद्रेऽशिवनौ। ॐ अश्विनातेजसा चक्षुःप्राणेन सरस्वतीवीर्यम्।। वाचेन्द्रो बलेनेन्द्राय दधुरिन्द्रियम्।। ॐ भूर्भुवः स्वः अश्विनाविहागच्छतमिह तिष्ठतम्। ॐ अश्विभ्यां नमः।। अग्नियमयोर्मध्ये भद्रे विश्वेदेवान्सपितृन्। ॐ विश्वेदेवा स आगत श्रृणुताम इम ꣳ हवम् इदं बर्हिन्निषीदत। ॐ भूर्भुवः स्वः विश्वेदेवा इहागच्छत इह. विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। ॐ आयन्तु नः पितरः सोम्यासोग्निष्वात्ताः पथिभिर्देवयानैः। अस्मिन्यज्ञे स्वधयामदन्तोऽधिब्रुवन्तु तेऽवन्त्वस्मान्।। ॐ भुर्भुवः स्वः पितरः इहा. ॐ पितृभ्यो नमः।। यमनिर्ऋत्योर्मध्ये भद्रे सप्त यक्षान्। ॐ अभित्यं देव ꣳ सवितारमोण्योः कविक्रतुमर्चामि सत्यसवꣳ रत्नधामभिः प्रियम्मतिङ्कविम्।। ऊर्ध्वायस्यामतिर्मा अदिद्द्युतसवीमनि हिरण्यपाणिरमिमीत सुक्रतुः कृपास्वः।। प्रजाभ्यस्त्वाप्रजा-स्त्वानुप्प्राणन्तु पूजास्त्वमनुप्राणिहि।। ॐ भूर्भुवः स्वः सप्त यक्षा इहागच्छत इह. ॐ सप्तयक्षेभ्यो नमः।। निर्ऋतिवरुणयोर्मध्ये भद्रे भूतनागान्। ॐ भूतायत्वा नारातयेस्वरभिविक्ख्येषन्दृ ꣳ हन्तादुर्य्याः पृथिव्यामुर्व्वन्तरिक्षमन्वेमि पृथिव्यास्त्वानाभौ सादयाम्यदित्या उपस्थेग्ग्नेहव्य ꣳ रक्ष।। ॐ भूर्भुवः स्वः भूतानि इहागच्छत इह तिष्ठत। ॐ भूतेभ्यो नमः।। तत्रैव। ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु। येऽन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः।। ॐ भूर्भुवः स्वः सर्पा इहागच्छत इह तिष्ठत।। ॐ सर्पेभ्यो नमः।। वरुणवाय्वोर्म-ध्ये भद्रे गन्धर्वाप्सरसः। ॐ गन्धर्वस्त्वा विश्वावसुः परिदधातु विश्वस्यारिष्टचै यजमानस्य परिधिरस्यग्निरिडऽईडितः। इन्द्रस्य बाहुरसि दक्षिणो विश्वस्यारिष्टचै यजमानस्य परिधिरस्यग्निरिडऽईडितः मित्रवरुणौ त्वोत्तरतः परिधत्ता ध्रुवेण धर्मणा विश्वस्यारिष्टचै यजमानस्य परिधिरस्याग्निरिडऽईडितः।। ॐ भूर्भुवः स्वः गन्धर्वा इहागच्छत इह तिष्ठत। ॐ गन्धर्वेभ्यो नमः।। तत्रैव। ॐ अयं पुरो हरिकेशः सूर्यरश्मिस्तस्य रथगृत्सश्च रथौजाश्च सेनानीग्रामण्यौ पुञ्जिाकस्थला च क्रतुस्थलाप्सरसौ दंक्ष्णवः पशवोहेतिः पौरुषेयो वधः प्प्रहेतिस्तेभ्यो नमोऽस्तु ते नोवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यन्द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषाञ्जम्भे दध्मः।। ॐ

भूर्भुवः स्वः अप्सरसः इहागच्छत इह तिष्ठत ओं अप्सरभ्यो नमः।। ब्रह्मसोमयोर्मध्ये वाप्यां स्कन्दनन्दीश्वरं शूलं च। ओं यदक्रन्दः प्रथमञ्जायमान उद्यन्त्समुद्रादुतवा पुरीषात्।। श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू उपस्तुत्यम्महिजा-तन्तेऽअर्व्वन्।। ओं भूर्भुवः स्वः स्कन्द इहागच्छ इह तिष्ठ। ओं स्कन्दाय नमः।। तदुत्तरे। ओं आशुः शिशानो वृषभो न भीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम्। संक्रन्दनो निमिष एकवीरः शत ँ सेना अजयत्साकमिन्द्रः।। ओं भूर्भुवः स्वः नन्दिन्निहाग0। ओं नन्दीश्वराय नमः। तत्रैव। ओं कार्षिरसि समुद्रस्य त्वा क्षित्याऽउन्नयामि।। समापोऽरद्भिरगमत समोषधीभिरोषधीः। ओं भूर्भुवः स्वः शूल इहा0। ओं शूलाय नमः। तदुत्तरे ओं कार्षिरसि0 रोषधीः ओं भूर्भुवः स्वः महाकाल इहा0 ओं महाकालाय नमः।। ब्रह्मेशानयोर्मध्ये वल्लीषु दक्षादीन् सप्तप्रजापतीन्। ॐप्रजापते नत्वदेतान्यन्यो विश्वारूपाणि परिता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमत्तन्नोऽस्त्वयममुष्य पितासावस्य पिता वय ँ स्याम पतयो रयीणाम्। ओं भूर्भुवः स्वः प्रजापते इहा0 ओं प्रजापतिभ्यो नमः।। ब्रह्मेन्द्रयोर्मध्ये दुर्गाम्।। ओं अम्बेऽम्बिकेऽम्बालिके नमानयति कञ्चन।। स सस्त्यश्वकः सुभद्रिकाङ्काम्पीलवासिनीम्।। ओं भूर्भुवः स्वः दुर्गे इहा0 ओं दुर्गायै नमः।। दुर्गापूर्वे विष्णुम्।। ओं इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्।। समूढमस्य पा ँ सुरे स्वाहा।। ओं भूर्भुवः स्वः विष्णो इहाग0 ओं विष्णवे नमः।। ब्रह्माग्न्यो-र्मध्ये वल्लीषु स्वधासहितान् पितॄन्। ओं उदीरतामवर उत्परास उन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः। असुं य इयुरवृका ऋतज्ञास्ते नोऽवन्तु पितरो हवेषु।। ओं भूर्भुवः स्वः स्वधासहिताः पितर इहाग0 इह तिष्ठत। ओं पितृभ्यो नमः। ब्रह्मयमयो-र्मध्ये वाप्यां मृत्युरोगान्। ओं परं मृयो अनुपरेहि पन्थां यस्ते अन्य इतरो देवयानात्। चक्षुष्मते श्रृण्वते ते ब्रवीमि मानः प्रजा ँ रीरिषोमोतवीरान्। ओं भूर्भुवः स्वः मृत्युरोगा इहा0 ओं मृत्युरोगेभ्यो नमः।। ब्रह्मनिर्ऋत्योर्मध्ये वल्लीषु गणपतिम्। ओं गणानां त्वा गणपतिꣳहवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिꣳहवामहे निधीनां त्वा निधिपतिꣳहवामहे वसो मम।। आहमजानिगर्भधमात्वमजासिगर्भधम्।। ओं भूर्भुवः स्वः गणपते इहा0 ॐ गणपतये नमः।। ब्रह्मवरुणयोर्मध्ये वाप्यामपः। ॐ अपोऽअद्यान्वचारिषꣳरसेन समसृक्ष्महि। पयस्वानग्न आगमन्तम्मासꣳ सृज वर्चसा प्रजया च धनेन च।। ॐ भूर्भुवः स्वः आप इहागच्छत इह तिष्ठत।। ॐ अद्भ्यो नमः।। ब्रह्मवायुमध्ये वल्लीषु मरुतः। ॐ बृहदिन्द्राय गायत मरुतो वृत्रहन्तमम्।। येन ज्ज्योतिरजयन् नृतावृधो देवं देवाय जागृवि।। ॐ भूर्भुवः स्वः मरुत इहा0 ओं मरुद्भ्यो नमः।। ब्रह्मणः पादमूले कर्णिकाधः पृथिवीम् ओं महीद्यौः पृथिवी च न इमं यज्ञम्मिमिक्षताम्।। पिपृतान्नो भरीमभिः ओं भूर्भुवः

स्वः पृथिवीहा0 ओं पृथिव्यै नमः। तत्रैव गङ्गादिसप्तसरितः। **ॐ इमं मे गंगे यमुने सरस्वति शतुद्रिस्तोमं स च तापरुष्णिया।। असिक्नियामरुद्वृधेवितस्तयार्जीकीये ऋणु ह्यासुषोमया।। ॐ भूर्भुवः स्वः गङ्गादिसप्तसरित इहागच्छत इह तिष्ठत। ॐ गङ्गादिसरिद्भ्यो नमः।** तत्रैव सप्तसागरान् **ॐ मापोमौशधीर्हिंॐ सीर्धम्नो धाम्नो राजँस्ततो वरुण नो मुञ्च। यदाहुरघ्न्या इति वरुणेति शपामहे ततो वरुण नो मुञ्च। ॐ भूर्भुवः स्वः सप्तसागरा इहा0 ॐ सप्तसागरेभ्यो नमः।।** तदुपरि मेरुं नाममन्त्रेणावाहयेत्।। **मेरुमावाहयामि स्थापयामि।। ॐ भूर्भुवः स्वः मेरो! इहागच्छ इह तिष्ठ। ॐ मेरवे नमः।। 16।।** ततो मण्डलाद्बहिः सोमादिसन्निधौ क्रमेण आयुधान्यावाहयेत्।। (उत्तरे) **गदामावाहयामि स्थापयामि। ॐ भूर्भुवः स्वः गदे इहा0 ॐ गदायै नमः।।** (ऐशान्याम्) **त्रिशूलमावाहयामि स्थापयामि।। ॐ भूर्भुवः स्वः त्रिशूल इहा0 ॐ त्रिशूलाय नमः।।** (पूर्वे) **वज्रमावाहया0।। ॐ भूर्भुवः स्वः वज्र इहा0 ॐ वज्राय नमः।।** एवं द्वितीयोद्देशेन सर्वत्रावाहनम् (आग्नेय्याम्) **शक्तये नमः।।** (दक्षिणस्याम्) **दण्डाय नमः।** (नैर्ऋत्याम्) **खड्गाय नमः।** (पश्चिमे) **पाशाय नमः।।** (वायव्याम्) **अंकुशाय नमः।।** तद्बाह्ये (उत्तरे) **गौतमाय नमः।** (ऐशान्याम्) **भरद्वाजाय नमः।** (पूर्वे) **विश्वामित्राय नमः।** (आग्नेय्याम्) **कश्यपाय नमः।** (दक्षिणे) **जमदग्नये नमः।।** (नैर्ऋत्याम्) **वशिष्ठाय नमः** (पश्चिमे) **अत्रये नमः।** (वायव्याम्) **अरुन्धत्यै नमः।** तद्बाह्ये पूर्वादिदिक्क्रमेण (पूर्वे) **ऐन्द्रयै नमः** (आग्नेयाम्) **कौमार्यै नमः।** (दक्षिणस्याम्) **ब्राह्म्यै नमः।।** (नैर्ऋत्यां) **बाराह्यै नमः।।** (पश्चिमायाम्) **चामुण्डायै नमः।।** (वायव्याम्) **वैष्णव्यै नमः।** (उत्तरस्याम्) **माहेश्वर्यै नमः।।** (ऐशान्याम्) **वैनायक्यै नमः।** इस प्रकार छप्पन (56) देवताओं का आवाहन कर **ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य वृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञॐसमिमं दधातु विश्वेदेवास इह मादयन्तामों प्रतिष्ठ।** प्रतिष्ठा कर।। यथालब्धोचार एक तंत्र द्वारा अथवा प्रत्येक मंत्र से ब्रह्मादि की पूजा करें।

लिंगतोभद्र देवताविशेष का पूजन

तद्बाह्ये पूर्वे **ॐ असिताङ्गभैरवाय नमः असिताङ्गभैरवमा. ।।1।। आग्नेय्यां ॐ रुरुभैरवाय नमः रुरुभैरवमा0 ।।2।।** दक्षिणे **ॐ चण्डभैरवाय नमः चण्डभैरवमा0।।3।।** नैर्ऋत्यां **ॐ क्रोध भैरवाय नमः क्रोधभैरवमा0 ।।4।।** पश्चिमे **ॐ उन्मत्तभैरवाय नमः उन्मत्तभैरवमा0।।5।।** वायव्यां **ॐ कपालभैरवाय नमः कपालभैरवमा. ।।6।।** उत्तरे **ॐ भीषणभैरवाय नमः भीषणभैरवमा. ।।7।।** ईशान्यां **ॐ संहारभैरवाय नमः संहारभैरवमा.।।8।।**

पुनः पूर्वादि।। **ॐ भवाय नमः भवं.** ।।1।। आग्नेय्यां **ॐ शर्वाय नमः शर्व.** ।।2।। दक्षिणे **ॐ पशुपतये नमः पशुपतिमा.** ।।3।। नैर्ऋत्यां **ॐ ईशानाय नमः ईशानमा0** ।।4।। पश्चिमे **ॐ रुद्राय नमः रुद्रमा.** ।।5।। वायव्यां **ॐ उग्राय नमः उग्रमा.** ।।6।। उत्तरे **ॐ भीमाय नमः भीममा.**।।7।। ईशान्यां **ॐ महते नमः महान्तं**।।8।। तद्बाह्ये पूर्वे **ॐ अनन्ताय नमः अनन्तमा0** ।।1।। आग्नेय्यां **ॐ वासुकये नमः वासुकिमा0** ।।2।। दक्षिणस्याम् **ॐ तक्षकाय नमः तक्षकम.** ।।3।। नैर्ऋत्यां **ॐ कुलिशायुधाय नमः कुलिशायुधमा.**।।4।। पश्चिमे **ॐ कर्कोटकाय नमः कर्कोटकमा.**।।5।। वायव्यां **ॐ शङ्खपालाय नमः शङ्खपालमा0** ।।6।। उत्तरे **ॐ कम्बलाय नमः कम्बलमा0**।।7।। ईशान्यां **ॐ आश्रत्तराय नमः अश्रत्तरमा0**।।8।। ईशानेन्द्रमध्ये **ॐ शूलाय नमः शूलं.** ।।1।। इन्द्राग्निमध्ये **ॐ चन्द्रमौलिने नमः चन्द्रमौलिनमा0** ।।2।। अग्निमयमध्ये **ॐ चन्द्रमसे नमः चन्द्रमसमा0**।।3।। यमनिर्ऋतिमध्ये **ॐ वृषभध्वजाय नमः वृषभध्वजमा.**।।4।। निर्ऋतिवरुणमध्ये **ॐ त्रिलोचनाय नमः त्रिलोचनमा.** ।।5।। वरुणवायुमध्ये **ॐ शक्तिधराय नमः शक्तिधरमा0** ।।6।। वायुसोममध्ये **ॐ महेश्वराय नमः महेश्वरमा.**।।7।। सोमेशानमध्ये **ॐ शूलपाणये नमः शूलपाणिनमा.**।।8।। तदनन्तर मनोजूति0 मंत्र से प्रतिष्ठा कर यथालब्धोपचार से प्रत्येक का एक साथ या अलग-अलग पूजन करें।

प्रधानदेव यज्ञेश्वर कलश स्थापन

प्रधान पीठ या सर्वतोभद्र पर अष्ट दल कमल बनाकर तांबे के कलश को वरुण कलशवत् स्थापित कर **ॐ देवदानवसंवादे0** इत्यादि मन्त्रों से पूजन करें। सोने-चाँदी की मूर्ति को स्थापित करके नीचे लिखे क्रम अग्न्युत्तारण और प्राण प्रतिष्ठा करके पूजन करे-

अग्न्युत्तारण प्राणप्रतिष्ठा विधि

आचमन प्राणायाम कर हाथ में अक्षत, जल और द्रव्य लेकर-**ॐ तत्सत् ॐ अद्येत्यादिदेशकालौ सङ्कीर्त्य, ममात्मनः श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं श्रीअमुकदेवप्रीतिद्वारा- सकलाभीष्टसिद्ध्यर्थम् अस्यां नूतनस्वर्णमय्य-मुकदेवप्रतिमाया घटनकालिकस्वर्णकारकृतटंकाद्याघातदोषपरिहा-रार्थमग्न्युत्तारणपूर्वकममुकदेवसारूप्यादिलाभयोग्यत्वसम्पादनाय प्राणप्रतिष्ठां करिष्ये।** इस प्रकार संकल्प कर मूर्ति या यन्त्र को नये कांस्यादि पात्र में रखकर घृत से स्नान कराकर उसके ऊपर दूध की जलधारा छोड़े। मन्त्र-**ॐ समुद्रस्य त्वा**

वकयाग्ने परिव्ययामसि। पावकोऽअस्मभ्यᳬं शिवो भव।। 1 ।। हिमस्य त्वा जरायुणाऽग्ने परिव्ययामसि पावकोऽअस्मभ्य ᳬं शिवो भव ।। 2।। उपज्मनुपवेतसे वतरनदीष्ण्वा अग्ने पित्तमपामसि मण्डूा॰..ताभिरागहि-सेमन्नोयज्ञम्पावकवर्ण ᳬं शिवङ्कृधि ।। 3।। अपामिदन्न्ययन ᳬंसमुद्रस्य निवेशनम्। अन्यांस्ते अस्मत्तपन्तु हेतयः पावको अस्मभ्य ᳬ शिवो भव ।।4।। अग्ने पावक रोचिषा मन्द्रया देवजिह्वया। आदेवान्वक्षि यक्षि च ।।5।। सनः पावक दीदिवोऽग्ने देवाँ इहावह। उपयज्ञ ँ हविश्वनः ।।6।। पावकया यश्चिन्त्या कृपाक्षामन् रुरुच उषसो न भानुना। तूर्वन्नयामन्नेताशस्य नूरण आयो घृणेन ततृषाणोऽजरः।। 7।। नमस्ते हरसे शोचिषे नमस्ते अस्त्वर्चिषे अन्यांस्ते अस्मत्तपन्तु हेतयः पावको अस्मभ्य ँ शिवो भव।।8।। नृषदेवेडप्सुदेवेड् वर्हिषदेवेड् वनसदेवेड् स्वर्विदेवेड्।।9।। ये देवा देवानां यज्ञियाना ᳬं सँव्वत्सरीणमुपभागमासते आहुतादो हविषा यज्ञे अस्मित्स्वयं पिबन्तु मधुनो घृतस्य ।। 10।। ये देवा देवेष्वधिदेवत्वमायन्ये ब्रह्मणः पुर एतारो अस्य। येभ्यो न ऋते पवते धाम किञ्चन न ते दिवो न पृथिव्या अधिस्नुषु।। 11।। प्राणदा अपानदा व्यानदा व्वर्चोदा व्वरिवोदाः। अन्यांस्ते अस्मत्तपन्तु हेतयः पावकोऽअस्मभ्य ँ शिवो भव ।। 12।।

।। इति अग्न्युत्तारण।।

प्राणप्रतिष्ठा-प्राण प्रतिष्ठा के विना किसी मूर्ति या यन्त्र का कोई महत्त्व नहीं होता अतः पहले प्राण प्रतिष्ठा करनी चाहिए।

प्रधान देवता की मूर्ति या यन्त्र को सामने स्थापित करके जल लेकर निम्न विनियोग पढ़े-**ॐ अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयः ऋग्यजुः सामानि छन्दांसि क्रियामयवपुः प्राणाख्या देवता आं बीजं ह्रीं शक्तिः क्रौं कीलकं अस्यां नूतनमूर्तौ (अस्मिन्नूतनयन्त्रे वा) प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः।।** जल गिरा दे। इसके बाद यंत्र अथवा मूर्ति को दायें हाथ से स्पर्श करते हुए-**ॐ आं ह्री क्रौ यं रं लं वं षं षं सं हं सः सोऽहं अस्या अमुकदेवप्रतिमायाः प्राणा इह प्राणाः पुनः ॐ आं0 अस्याः अ0 जीव इह स्थितः।** पुनः-**ॐआं0 अस्या अमु0 सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनस्त्वक्चक्षुः श्रोत्रजिह्वाघ्राणपाणिपादपायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।** उक्त मन्त्र को पढ़कर हाथ में फूल को लेकर-**ॐ मनो जुतिर्जुषतामाज्यस्य वृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्ट यज्ञ ᳬं समिमं दधातु विश्वेदेवा स इहमादयन्तामों 2 प्रतिष्ठ।। एष वै प्रतिष्ठानाम यज्ञो यत्रैतेन यज्ञेन यजन्ते सर्व मे प्रतिष्ठितम्भवति।।** इस प्रकार प्रतिष्ठापित कर समर्पित करें और पुनः इसी मूर्ति का स्पर्श करते हुए 16 बार धीरे-धीरे ॐ का उच्चारण करते हुए जल और अक्षत

लेकर **ॐ अनेनास्य अमुकदेवताप्रतिमाया गर्भाधानादयः षोडशसंस्काराः सम्पद्यन्ताम्** यह पढ़कर जल छोड़ दें। इसके बाद उसी मूर्ति को स्वर्ण की सलाई से मिलाते हुए-**ॐ वृत्रस्यासि कनीनकश्चक्षुर्दा असि चक्षुर्मे देहि**। ऐसा पढ़े। इस प्रकार प्राण प्रतिष्ठा कर षोडशोपचार से पूजन करें।

यदि प्रतिमा स्थापित नहीं हो तो सुपारी पर कलावा बांधकर उसी में प्रधान देव की प्रतिष्ठा करके पूजन करना चाहिए।

प्रधानदेव (यज्ञेश्वर) पूजन विधि

प्रधान पीठ पर ताम्रकलश रख उस पर अधिष्ठित किये जाने वाले देवता (देवी) का षोडशोपचार पूजन करे, देवतानुसार यथाविहित मंत्र द्वारा ध्यान करें-**ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीअमुकदेवताभ्यो नमः ध्यायामि।**

आवाहन खड़े होकर (वैदिकमन्त्र)-**ॐ धामच्छदग्निरिन्द्रो ब्रह्मा देवो बृहस्पतिः। स चेतसो विश्वेदेवा यज्ञं प्रावन्तुं नः शुभेः।**

पौराणिकमन्त्र-**ॐ आगच्छागच्छ देवेश (शि) त्रैलोक्यतिमिरापह (हे)। क्रियमाणां मया पूजां गृहाण सुरसत्तम! (मे।। ॐ भूर्भुव स्वः अमुकदेवताभ्यो नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि च।**

आसन-**(वै0 मं0)-ॐयविष्ठदाशुषो नृ ॳ पाहि शृणुधी गिरः रक्षातोकमुत्मना। (पौ0 मं0) रम्यं सुशोभनं दिव्यं सर्वसौख्यकरं शुभम्। आसनञ्च मया दत्तं गृहाण परमेश्वर! (रि)।। ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवताभ्यो नमः आसनार्थे पुष्पं समर्पयामि।**

मूर्ति में प्राणप्रतिष्ठा-अक्षत एवं पुष्प हाथ में लेकर **ॐ अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च। अस्यै देवत्वमर्चायै मामेहति च कश्चन।**

पाद्य-**(वै0मं0)-ॐ एतावानस्य0 (पौ0मं0)-ॐ उष्णोदकं निर्मलञ्च सर्वसौगन्ध्यसंयुतम्। पादप्रक्षालनार्थाय दत्तं ते प्रतिगृह्यताम्। ॐ भूर्भुवः स्वः अमु0 पादयोः पाद्यं स0। अर्घ्य-(वै0मं0)-ॐ सहस्त्रशीर्षा! पुरुषः0 (पौ0 मं0)-ॐ अर्घ्यं गृहाण देवेश (शि) गन्धपुष्पाक्षतैः सह। करुणां कुरु मे देव (देवि) गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तु ते।। ॐ भूर्भुवः स्वः हस्तयोरर्घ्यं स0।**

आचमनीय-**(वै0 मं0)-ॐ शन्नो देवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये। शंय्योरभिस्त्रवन्तु नः।। (पौ0 मं0) ॐ सर्वतीर्थसमायुक्तं सुगन्धिनिर्मलं जलम्। आचम्यतां मया दत्तं गृहाण परमेश्वर! (रि)।। ॐ भूर्भुवः स्वः अमु0 मुखे आचमनीयं स0।**

स्नान-बायें हाथ से घण्टा बजाते हुए (वै0 मं0)-**ॐ आपो हिष्ठामयोभुवस्तान ऊर्ज्जे दधातन, महेरणाय चक्षसे। ॐ यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयते हनः उषतीरिव मातरः। ॐ तस्माऽअरङ्ग मामवो यस्य क्षयाय जिन्वथ, आपो जनयथा च नः।** (पौ0 मं0)-**ॐ गङ्गा-सरस्वतीरेवापयोष्णी-नर्मदाजलैः। स्नापितोसि मया देव! (स्नापितासि मया देवि! ह्यतः शान्ति) कुरुष्व मे।। ॐ भू0 अमु0 सर्वाङ्गे् स्नानं स0।।** शीघ्रता करनी हो तो दुग्धादि को मिलाकर एक साथ पंचामृत स्नान करा दें।

एक साथ पञ्चामृत स्नान (वै0 मं0)-**ॐ पञ्चनद्यः0 (पौ0 मं0)-ॐ पयो दधि घृतं चैव मधुशर्करयान्वितम्। पञ्चामृतं मयानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।। ॐ भू0 अमु0 एकतन्त्रेणपञ्चामृतस्नानं स0।। शुद्धो0 स0** अथवा पृथक् पृथक् मन्त्रों से पञ्चामृत स्नान।

दुग्ध स्नान-(वै0 मं0)-**ॐ पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु0 (पौ0 मं0)-ॐ कामधेनुसमुत्पन्नं सर्वेषां जीवनं परम्। पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम्।। ॐ भू0 अमु0 पयः स्नानं स0। पयः स्नानान्तेशुद्धोदकस्नानं स0। शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं स0।**

दधिस्नान-(वै0 मं0)-**ॐ दधिक्राब्णो0 (पौ0 मं0)-ॐ पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम्। दध्यानीतं मया देव! (देवि) स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्। ॐ भू0 अमु0 दधिस्नानं स0। दधिस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं स0 शुद्धो0 स्ना0 आ0 स0।**

घृतस्नान-**(वै0 मं0)-ॐ घृतं घृतपावानः0 (पौ0 मं0)-ॐ नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसंतोषकारकम्। घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यतात्। ॐ भू0 अमु0 घृतस्नानं स0। घृतस्नानान्तेशुद्धोदकस्नानं स0। शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं स0।**

मधुस्नान-(वै0मं0)-**ॐ मधुव्वाता ऋतायते0 (पौ0 मं0) ॐ तरुपुष्पसमुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु। तेजःपुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्। ॐभू0 अमु0 मधुस्नानं स0। मधुस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं स0। शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं स0।**

शुर्करास्नान-(वै0 मं0)-**ॐ अपाᳫं रसमुद्द्वयसᳫं0 (पौ0 मं0)-ॐ इक्षुसारसमुद्भूता शर्करा पुष्टिकारिका। मलापहारिका दिव्या स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्। ॐ भू0 अमु0 शर्करास्नानं स0।शर्करास्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं स0। शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं स0।** इस प्रकार पूजा कर निर्माल्य को हटाकर

अभिषेकार्थ तत्तद् देवताओं के सूक्त के द्वारा अथवा मूल मंत्र से अभिषेक करें। पुनः चरणोदक लेकर देवता का वस्त्र से मार्जन कर कलश पर स्थापित करें।

वस्त्र-(वै0 मं0)-**ॐ युवा सुवासाः परिवीतऽआगात्। सऽउ श्रेयान्भवति जायमानः। तं धीरासः कवयऽउन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः। (पौ0 मं0) ॐ सर्वभूषाधिके सौम्ये लोकलज्जानिवारणे। मयोपपादिते तुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यताम्। ॐ भू0 अमु0 वस्त्रं (वस्त्राभावे अक्षतान्) स0 उपवस्त्रं स0 आचमनीयं स0।**

यज्ञोपवीत-(वै0 मं0)-**ॐ तस्मादश्वा0 (पौ0 मं0)-ॐ नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्। उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर। ॐ भू0 अमु0 यज्ञोपवीतं (यज्ञोपवीताभावेऽक्षतान्) स0।**

गन्ध-(वै0 मं0)-**ॐ त्वाङ्गन्धर्वा अखनँस्त्वामिनोद्रस्त्वाँ बृहस्पतिः। त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान्यक्ष्मादमुच्यत। (पौ0 मं0) ॐश्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्। विलेपनं सुरश्रेष्ठ! (सुरश्रेष्ठे) चन्दनं प्रतिगृह्यताम्। ॐ भू0 अमु0 गन्धं स0।**

अक्षत-(वै0 मं0)-ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यवप्रिया अघूषत। अस्तोषत स्वभानवो विप्रा न विष्ठया मतीयो जाविन्द्रते हरी। (पौ0 मं0) ॐ अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ! (सुरश्रेष्ठे) कुंकुमाक्ता सुशोभिताः। मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर (रि)। ॐ भू0 (कुंङ्कुमार्चित) अक्षतानसम0।

पुष्प-(वै0मं0)-**ॐ ओषधीः प्रतिमोदद्ध्वं पुष्पवती प्रसूवरी। अश्वा इव स जित्वरीर्वीरुधः पारयिष्णवः। (पौ0मं0)-माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो। मयानीतानि पुष्पाणि/प्रीत्यर्थं प्रतिगृह्यताम्। ॐ भू अमु0 नमः पुष्पाणि स0। दूर्वा-दूर्वाङ्क्रान् सुहरितानमृतान्मङ्ग्लप्रदान्। आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण सुरसत्तम।**

सौभाग्यद्रव्य-(वै0मं0)-**ॐ अहिरिव भोगैः पर्येति बाहुञ्ज्याया हेतिम्परिबाधमानः। हस्तग्घ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान्पुमान्पुमाꣳ सम्परिपातु व्विश्वतः। (पौ0 मं0)-श्वेतचूर्ण-रक्तचूर्ण-हरिद्राकुंकुमान्वितैः नानापरिमलद्रव्यैः प्रीयतां परमेश्वर! (रि)। ॐ भू0 अमु0 अतर-अवीर- गुलालादिनाना-परिमलसौभाग्यद्रव्याणि स0।**

धूप (घण्टां वामहस्तेन वादयन्) (वै0 मं0)-**ॐ धूरसि धूर्व्व धूर्वन्तं धूर्वतं योस्मान्धूर्वति तं धूर्वयं वयं धूर्वामः। देवानामसि बह्नितमꣳ सस्नितमम्पप्रित-मञ्जुष्टतमन्देवहूतम्। (पौ0 मं0)-ॐ वनस्पतिरसोद्भूतो**

गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः। आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्। ॐ भू0 अमु0 धूपमाघ्रापयामि।

दीप-बायें हाथ से घण्टा बजाते हुए (वै0 मं0) **ॐ अग्निर्ज्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा, सूर्यो ज्ज्योतिर्ज्योतिः सूर्य्यः स्वाहा। अग्निर्वर्च्चो ज्ज्योतिर्वर्च्चः स्वाहा, सूर्य्यो व्वर्चोज्ज्योतिर्वर्च्चः स्वाहा। ज्ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्ज्योतिः स्वाहा। (पौ0 मं0)-ॐ आज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया। दीपं गृहाण देवेश! (षि) त्रैलोक्यतिमिरापहम्। ॐ भू0 अमु0 नेत्रादिपादपर्यन्तं दीपं दर्शयामि। हस्तप्रक्षालनम्।**

नैवेद्य-(वै0 मं0)-**ॐ अन्नपतेन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः। प्रप्रदातारं तारिषऽऊर्ज्जन्नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे। (पौ0 मं0)-ॐ शर्कराखण्ड-खाद्यादि-दधिक्षीर-घृतादिभिः। आहारैर्भक्ष्यभोज्यैश्च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्।।** अथवा-**ॐ नैवेद्यं गृह्यतां देव ! (देवि) भक्तिं मे ह्यचलां कुरु। ईप्सितं मे वरं देहि परत्रेह परां गतिम्।** देवता के आगे जल से चतुष्कोण मण्डल बनाकर उस पर नैवेद्य पात्र रख दें। तुलसी पत्र डालकर अधोमुख होकर दक्षिण हाथ पर उसी तरह बायीं हाथ कर नैवेद्य को ढकें। धेनुमुद्रा प्रदर्शित कर ग्रास मुद्रा द्वारा **ॐ प्राणाय स्वाहा, ॐ अपानाय स्वाहा, ॐ व्यानाय स्वाहा, ॐ उदानाय स्वाहा, ॐ समानाय स्वाहा, ॐ भू0 अमु0 नैवेद्यं निवेदयामि।** मंत्र पढ़कर नैवेद्य समर्पित करें।

नैवेद्य एवं देवता को परदे से ढककर बायें हाथ से घण्टा बजाते हुए **ॐ पत्रं पुष्पं फलं तोयम्** इत्यादि पढ़कर **पूर्वापोशनं स0। नैवेद्यमध्ये पानीयं स0। उत्तरापोशनं स0। ततः। सपरिवारं देवं तृप्तं विभाव्य हस्तप्रक्षालनं सम0। मुखप्रक्षालनं स0। आचमनीयं स0। करोद्वर्तनार्थे गन्धं स0।**

ताम्बूल-(वै0मं0)-**ॐ उतस्मास्यद्द्रवतस्तुरण्यतः पर्णन्नवेरनुवाति प्प्रगर्द्धिनः। श्येनस्येवद्व्रजतोऽअङ्क्सम्परि दधिक्राब्णः। सहोर्ज्जातरित्रतः स्वाहा। (पौ0मं0)-ॐ पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्। एलादिचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्। ॐ भू0अ0 मुखवासार्थे ताम्बूलं स0।**

अखण्डफलम्-(वै0मं0)-**ॐ याः फलिनीर्य्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः। वृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चत्वꣳ हसः। (पौ0मं0)-ॐ इदं फलं मया देव! (देवि) स्थापितं पुरतस्तव। तेन मे सफला वाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि ॐ भू0अ0 अखण्डफलं स0।**

दक्षिणा-(वै0 मं0)-**ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्। सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम। (पौ0**

मं0)-हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः। अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे। ॐ भू0 अ0 सुवर्ण-पुष्पदक्षिणां (तदभावे किञ्चिद् व्यावहारिकं द्रव्यं वा) स0।

कर्पूरारार्तिक्य-(आरती जलाकर) **ॐ ज्वालामालिन्यै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि स0।** गन्धादि द्वारा आरती की पूजा कर बायें हाथ से घण्टा बजाते हुए **(वै0मं0)-ॐ आरार्तिपार्थिवꣳ रजः पितुरप्रायि धामभिः। दिवः सदा ꣳ सि बृहती वितिष्ठ स आत्त्वेषं वर्त्तते तमः।। (पौ0 मं0)-ॐ कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरञ्च प्रदीपितम्। आरार्तिक्यमहं कुर्वे पश्य मे वरदोत्तम (मे)।।** ऐसा पढ़ते हुए देवता के नेत्र भाग में दश बार घुमावें। **ॐ भू0 अ0 कर्पूरारार्तिक्यं दर्शयामि। जलेन प्रदक्षिणं पुष्पेण देववन्दनम्, अभिवन्दनम् आत्मवन्दनं हस्तं प्रक्षाल्य।**

मन्त्रपुष्पाञ्जलि-अञ्जलि में पुष्प लेकर खड़े हों (लक्ष्मी पूजन में कमल बीज लेकर)-**ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त0 नानासुगन्धपुष्पाणि यथा कालोद्भवानि च। पुष्पाञ्जलिर्मयादत्त गृहाण परमेश्वर!** (रि)। पुष्पाञ्जलि देकर प्रणाम करें।

मानसी प्रदक्षिणा-**यानि कानि च पापानि0-ॐ भू0 अ0 मानसीप्रदक्षिणां स0।**

विशेषार्घ:-अर्घ्य पात्र में जल भरकर गन्ध, अक्षत, पुष्प, नारियल या सुपारी लेकर **ॐ नमस्ते देवदेवे नमस्ते धरणीधर। नमस्ते जगदाधारः अर्घ नः प्रतिगृह्यताम्।। वरद त्वं वरं देहि वाञ्छितं वाञ्छितार्थद! अनेन सफलार्घ्येण फलदोऽस्तु सदा मम।। ॐ भू0 अ0 विशेषार्घ्यं स0। गतं पापं गतं दुःखं गतं दारिद्रचमेव च। आगता सुखसम्पत्तिः पुण्योऽहं तव दर्शनात्। पुराकृतं मया घोरं ज्ञातमज्ञातकिल्विषम्। यन्मयाद्यदिनं यावत् तस्मात्पापात्पुनीहि माम्।ॐ भू0 श्री0 अ0 प्रार्थनापूर्वकं नमस्करोमि।**

अर्पण-जल लेकर **ॐ अनेन यथाज्ञानेन यथामिलितोपचारद्रव्यैः ध्यानावाहनासनपाद्यार्घाचमनीय-स्नान-वस्त्रेपवीत-गन्ध-पुष्प-धूप-नैवेद्य-ताम्बूल-दक्षिणा- प्रदक्षिणा-मन्त्र-पुष्परूपैः षोडषोपचारैः अन्योपचारैश्च कृतेन पूजनेन श्रीअमुकदेवताः प्रीयन्तां न मम। समर्पित करें। एतान्यर्चनानि पाद्यार्घ्यस्नानवस्त्रादि-पुष्पाञ्जलि-विशेषार्घान्तानि परिपूर्णानि भवन्तु।**

इस प्रकार पूजा कर **ॐ अकालमृत्युहरणं सर्वव्याधि विनाशनम्।**
विष्णोः पादोदकं पीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते।

इस मंत्र को पढ़कर चरणामृत पीयें। तदनन्तर कुशकण्डिका करें।

नित्य होम-विधि

प्रातःकालीन कर्म के पश्चात् नित्य होम करना चाहिए। सर्वप्रथम पूर्वाभिमुख वैठकर आचमन, प्राणायाम एवं आसन शुद्धि करके दायीं हाथ के अनामिका अङ्गुलि में कुश की पवित्री धारण करें। तत्पश्चात् निम्नलिखित सङ्कल्प करें -

संकल्प-**देशकालौ सङ्कीर्त्य अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहं (वर्मा/गुप्तः/दासोऽहम्) श्रीपरमेश्वरप्रीतये सायं प्रातर्होमं करिष्ये।**

पञ्चभूसंस्कार-तत्पश्चात् वेदी अथवा ताम्रकुण्ड में पञ्चभूसंस्कार करना चाहिये। 1. तीन कुशों से भूमि अथवा ताम्र-कुण्ड को झाड़ दें और उन कुशों को ईशानकोण में फेंक दें। (दर्भैः परिसमुह्य)। 2. पश्चात् गोमय और जल से लेपन करें। (गोमयोदकेनोपलिप्य) 3. स्रुवा अथवा तीन कुशों द्वारा उत्तरोत्तर क्रम से तीन-तीन पूर्वाग्र रेखाएँ करें। (वज्रेणोल्लिख्य) 4. उल्लेखन क्रम से अनामिका और अङ्गुष्ठ से तीन बार मृत्तिका उठाकर ईशानकोण में फेंक दें। (अनामिकाङ्गुष्ठाभ्यां मृदमुद्धृत्य) 5. फिर वहाँ जल छिड़कें। (उदकेनाभ्युक्ष्य)।

इसके बाद निम्नांकित मंत्र पढ़कर वेदी अथवा ताम्रकुण्ड में अग्नि की स्थापना करें **-पृष्टो दिवीत्यस्य कुत्सऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो वैश्वानरो देवता अग्निस्थापने विनियोगः।**

ॐ पृष्टो दिवि पृष्टोऽग्निः पृथिव्यां पृष्टो व्विश्वाऽओषधीरा विवेश। वैश्वानरः सहसा पृष्टोऽग्निः स नो दिवा स रिषस्पातु नक्तम्।। अग्नि स्थापन के पश्चात् कुशों से परिस्तरण करे। इसके बाद अग्नि को प्रज्वलित कर ध्यान करें।

अग्नि का ध्यान-**ॐ चत्वारि शृङ्गा त्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो अस्य। त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महो देवो मर्त्यां2 आ विवेश।**

ॐ मुखं यः सर्वदेवानां हव्यभुक् कव्यभुक् तथा।

पितृणां च नमस्तस्मै विष्णवे पावकात्मने।।

ध्यान के पश्चात् **'ॐ अग्ने शाण्डिल्यगोत्र मेषध्वज प्राङ्मुख मम सम्मुखो भव'** -इस प्रकार प्रार्थना करके 'पावकाग्नये नमः' इस मन्त्र से पञ्चोपचार-पूजन करे। तदनन्तर घृत मिश्रित हविष्यान्न से अथवा घृत से हवन करें। सम्भव हो तो घृत से स्रुवा द्वारा आहुति दें-

1. **ॐ भूः स्वाहा, इदमग्नये न मम।**
2. **ॐ भुवः स्वाहा, इदं वायवे न मम।**
3. **ॐ स्वः स्वाहा, इदं सूर्याय न मम।**

ॐ अग्नये स्वाहा, इदमग्नये न मम। (सायंहोम)

ॐ धन्वन्तरये स्वाहा, इदं धन्वन्तरये न मम।

ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा, इदं विश्वेभ्यो देवेभ्यो न मम।

ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये न मम।

ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा, इदमग्नये स्विष्टकृते न मम।

ॐ सूर्याय स्वाहा, इदं सूर्याय न मम। (प्रातर्होम)

तदनन्तर निम्न मंत्रों से आहुतियाँ दें -

ॐ देवकृतस्यैनसोऽवयजनमसि स्वाहा, इदमग्नये न मम।

ॐ मनुष्यकृतस्यैनसोऽवयजनमसि स्वाहा, इदमग्नये न मम।

ॐ पितृकृतस्यैनसोऽवयजनमसि स्वाहा, इदमग्नये न मम।

ॐ आत्मकृतस्यैनसोऽवयजनमसि स्वाहा, इदमग्नये न मम।

ॐ एनस एनसोऽवयजनमसि स्वाहा, इदमग्नये न मम।

ॐ यच्चहमेनो विद्वांश्चकार यच्चाविद्वाँस्तस्य सर्वस्यैनसोऽवयजनमसि स्वाहा, इदमग्नये न मम।

होम सम्पन्न कर पञ्चोपचार-गन्ध, पुष्प, धूप, दीप तथा नैवेद्य से अग्नि की उत्तर-पूजा करके न्यूनतापूर्ति के लिये प्रार्थना करे-

ॐ सप्त ते अग्ने समिधः सप्त जिह्वाः सप्त ऋषयः सप्तधाम प्रियाणि। सप्त होत्राः सप्तधा त्वा यजन्ति सप्त योनीरा पृणस्व घृतेन स्वाहा।। इसके पश्चात् अग्नि की प्रदक्षिणा करके प्रणाम करें और निम्न मंत्र से भस्म धारण करें -

ॐ त्र्युषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम्।

यद्देवेषु त्र्यायुषं तन्नो ऽअस्तु त्र्यायुषम्।।

इसके बाद निम्नाङ्कित श्लोक पढ़कर न्यूनतापूर्ति के लिए भगवान् से प्रार्थना करें-

ॐ प्रमादात् कुर्वतां कर्म0 यस्य स्मृत्या च0।

अन्त में निम्नाङ्कित वाक्य कहकर हवन-कर्म भगवान को अर्पण करें-

कृतेनानेन नित्यहोमकर्मणा श्रीपरमेश्वरः प्रीयताम्, न मम।

।। इति।।

पञ्चगव्य विधि

गोमूत्र-एक ताम्र पात्र अथवा पलाश के दोना में **ॐ भू0 गायत्र्या** कपिला गाय का गोमूत्र।

गोमय-**ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्।**

दुग्ध-**ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोमवृष्ण्यं भवा व्वाजस्य सङ्गथे।।**

दधि-**ॐ दधि क्राब्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभिनो मुखाकरत्प्रण आयूᳬ तारिषत्।**

घृतम्-**ॐ तेजोसि शुक्रमस्यमृतमसि धामनामासि प्रियं देवानामनाधृष्टं देवयजनमसि।।**

कुश का जल-**ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेश्विनौ बाहुभ्यां पूष्णोर्हस्ताभ्याम्।-ॐ आलोडयामि,** प्रणवेनैव यज्ञीयकाष्ठेन प्रदक्षिणं निर्मथ्य। **ॐ** इस मंत्र से अभिमंत्रित कर थोड़ा पीयें मन्त्र-**ॐ यत्त्वगस्थिगतं पापं देहे तिष्ठति मामके (तावके)। प्राशनात्पञ्चगव्यस्य दहत्यग्निरिबेन्धनम्।।**

उसके बाद-**ॐ आपोहिष्ठा0** इस मंत्र द्वारा कुशा से याग भूमि पर तथा यज्ञीय सामग्री पर पञ्चगव्य छीटें।

हाथ जोड़कर-**ॐ स्वस्ति न इन्द्रो0 दधातु,** यह दो मंत्र पढ़े।

प्रार्थना-**ॐ देवाः आयान्तु, यातुधानाः अपयान्तु, विष्णोर्देवयजनं रक्षस्व** पढ़कर स्थण्डिल के ऊपर पुष्प छोड़ दें।

कुश कण्डिका

होम के अनुसार यथा परिमित तीन कण्ठ युक्त कुण्ड अथवा स्थण्डिल का निर्माण करना चाहिए। कुण्ड के अभाव में बालू से मेखला सहित स्थण्डिल का प्रयोग भी किया जा सकता है। स्थण्डिल मिट्टी से निर्मित 24 अंगुलियों का होना चाहिए। प्रत्येक कण्ठ की ऊँचाई दो या चार अंगुल होना चाहिए।

कुण्ड अथवा स्थण्डिल भूमि को तीन-तीन कुशों से परिसमूहन कर उन कुशाओं को ईशान कोण में छोड़ दें। **'वम्'** यह अमृतबीज उच्चारण करते हुए जल मिश्रित गाय के गोबर से कुण्ड का उपलेपन करना चाहिए। स्रुव के मूल द्वारा एक-एक क्रम से तीन रेखा करते हुए 'ह्रीं' इस मायाबीज का उच्चारण कर अनामिका एवं अंगुष्ठा द्वारा कुण्ड से मिट्टी निकाल दें। ऊपर से आच्छादित कांस्य पात्र में अग्नि लाकर कुण्ड अथवा

स्थण्डिल के आग्नेय कोण में रखकर **'हुं फट्'** उच्चारण करें। तदनन्तर **ओं अग्निन्दूतं पुरोदधे हन्यवाहमुपब्रुवे। देवां असादयादिह** इस मंत्र को बोलकर अपनी ओर कर अग्नि स्थापित करें। जिस पात्र से अग्नि लाया गया हो उस पर अक्षत एवं जल छो़ दें। तदनन्तर अग्नि प्रज्चलित करें।

अग्नि का ध्यान-ॐ चत्वारि शृंगा त्रयो अस्य पादा द्वय शीर्षे सप्त हस्तासो अस्य त्रिधा बद्धो बृषभो रोरवीति महोदेवो मर्त्यां आविवेश। ॐ भूर्भुवः स्वः अग्ने वैश्वानर शाण्डिल्यगोत्र शाण्डिलासित देवलेति त्रिप्रवरान्वित भूमिमातः वरुणपिता मेषध्वज प्राङ्मुख मम सम्मुखो भव।

इससे (वरद नामक) अग्नि की प्रतिष्ठा कर **ॐ भूभुर्वः स्वः अग्नये नमः** इससे (बर्हि) अग्नि की पञ्चोपचार पूजा कर प्रार्थना करें **ॐ अग्निं प्रज्जवलितं वन्दे जातवेदं हुताशनं हिरण्यवर्णममलं समृद्धं विश्वतोमुखम्।** पुनः पुष्पमाला चन्दन आदि लेकर **ॐ अद्येत्यादि देशकालौ सङ्कीर्त्य कर्तव्यामुकहोमकर्मणि कृताकृतवेक्षणरूपब्रह्मकर्म कर्तुममकुकगोत्रममुकशर्माणं वा पञ्चाशत्कुशनिर्मितं प्रदक्षिणग्रन्थिकं ब्रह्माणमेभिः पुष्प-चन्दन-ताम्बूलवासोभिर्ब्रह्मत्वेन त्वामहं बृणे।** ब्रह्मा कहे-**वृतोऽस्मि।** आचार्य-**यथाविहितं कर्म कुरु।** ब्रह्मा-**करवाणि।**

तदनन्तर अग्नि की दाहिनी ओर परिस्तरण भूमि को छोड़कर ब्रह्मा के बैठने के लिए शुद्ध आसन देकर **ॐ अस्मिन्नमुक होमकर्मणि त्वं मे ब्रह्मा भव।** ब्रह्मा-**भवानि।** यदि ब्रह्म लक्षणयुक्त ब्राह्मण न मिले तो पचास (50) कुशाओं द्वारा ब्रह्मा का निर्माण कर लें। ब्रह्मा अग्नि की प्रदक्षिणा करें।

आचार्य अग्नि की दक्षिण ओर कुशरूप आसन और उत्तर ओर प्रणीता पात्र स्थापन के लिए दो कुश रखे। तथा प्रणीतापात्र को आगे कर उसको जल से पूर्ण कर और दो कुशाओं से उस पात्र को ढककर कुशरूप प्रथम आसन पर रख ब्रह्मा का मुख देख द्वितीय कुशरूप आसन पर उस प्रणीता पात्र को रखे।

परिस्तरण-पुनः हाथ में 16 कुशा लेकर 4-4 कुश अग्निकोण से ईशान कोण तक, ब्रह्मा से लेकर वेदी तक, नैर्ऋत्य कोण से वायव्य कोण तक एवं अग्नि से प्रणीता पर्यन्त सोलह कुशाओं का परिस्तरण करे।

तदनन्तर अग्नि के उत्तर भाग से पश्चिम में पवित्री के लिए तीन कुशा, पुनः दो कुशा रखे। प्रोक्षणी पात्र, आज्य स्थाली (कटोरा), संमार्जन कुशा पांच, उपयमन कुशा सात, समिधा तीन, स्रुवा, घृत, पूर्णपात्र, उसी ओर शमी तथा पलाश मिश्रित लाजा (धान का लावा) सिल, कन्या का भाई, सूप, दृढ़पुरुष एवं आलेपन आदि सामग्री को रखे।

पवित्रकरण-अधोलिखित प्रक्रिया से पवित्री बनावे। दो कुशा के ऊपर तीन

कुशा को रखकर दो कुशाओं से मूल कों घुमाकर, उन तीन कुशाओं को तोड़कर, दो कुशाओं को ग्रहण करता हुआ तीन कुशाओं का परित्याग करे। उन्हीं दो कुशाओं की पवित्री बनावे। पवित्री वाले हाथ से प्रणीता पात्र के जल को तीन बार प्रोक्षणी पात्र में डाले। अनामिका और अंगूठे से पवित्री को पकड़ कर तीन बार प्रोक्षिणी पात्र के जल को प्रादेश मात्र (एक वित्ता) उछाले। तथा प्रणीता के जल से प्रोक्षणी का प्रोक्षण करे और उक्त प्रोक्षणी के जल से वेदी के पास स्थापित सभी वस्तुओं का सिंचन करे अग्नि-प्रणीता के मध्य में प्रोक्षणीपात्र रख दे। तदनन्तर घी के कटोरे में घी रखे। उसे अग्नि पर तपावे और जलती हुई तृण (लकड़ी) से उस घी के कटोरे की प्रदक्षिणा करे। पुनः एक बार उलटी प्रदक्षिणा करे। पश्चात् उस वेदी की अग्नि में स्रुव का प्रतपन करे।

तत्पश्चात् संमार्जन कुशा के अग्र भाग से स्रुवा के निचले भाग को पोंछे और कुशा के अग्र भाग से स्रुवा के ऊपरी भाग का संमार्जन करे तथा प्रणीता पात्र के जल से छिड़के और संमार्जन कुशा का अग्नि में प्रक्षेप करे। पुनः स्रुवा को तपाकर दाहिनी ओर रख दे तथा आज्यपात्र को अग्नि से उतार कर प्रणीता पात्र के पशिचम भाग में रखता हुआ अनामिका एवं अँगूठे से पवित्री पकड़कर प्रोक्षणी की तरह उछाले और उस आज्य को देखकर उसमें यदि तिनका आदि पड़ गया हो तो उसको निकाल दे। पुनः प्रोक्षणी के समान उसको अग्नि के पश्चिम भाग में रखकर सात उपयमन कुशाओं को बायें हाथ में लेकर तथा तीन समिधाओं को दाहिने हाथ में ग्रहण कर प्रजापति का मन से ध्यान करता हुआ खड़ा हो उन तीन समिधाओं का मौन होकर अमन्त्रक अग्नि में प्रक्षेप करे।

स्रुव पूजन-ॐ आवाहयाम्यहं देवं श्रुवं शेवधिमुत्तमम्। स्वाहाकार-स्वधाकार-वषट्कारसमन्वितम्।

हाथ में अक्षत, पुष्प और जल लेकर संकल्प करें-**संकल्प-देशकालौ संकीर्त्य अस्मिन् अमुक-देवता-मन्त्र-जपकृतपुरश्चरण-दशांश-हवनाख्ये कर्मणि इदं सम्पादितं समिच्चरुतिलाज्यादि-हविर्द्रव्यं विहितसंख्याहुतिपर्याप्तं या याः वक्ष्यमांणदेवतास्तस्यै तस्यै देवतायै न मम। यथासंख्यं यथादैवतमस्तु,** यह बोलते हुए अक्षत, जल भूमि पर छोड़ दें।

तत्पश्चात् बैठकर पवित्री सहित हाथ से जल द्वारा ईशान कोण से आरम्भ कर पुनः ईशान कोण तक अग्नि के चारों ओर जल घुमाता हुआ एक बार उस जल को विपरीत घुमावे तथा दोनों पवित्रियों को प्रणीता पात्र में स्थापित कर अपना दाहिना घुटना मोड़ कुशा द्वारा ब्रह्मा का स्पर्श करता हुआ प्रज्वलित अग्नि में स्रुवा से घृत की आहुति देवे। यजमान भी द्रव्य त्याग करे।

हवन विधि

आधारादि हवन-तदनन्तर कुशा द्वारा ब्रह्मा का स्पर्श कर अग्नि के उत्तर भाग में घी से आहुति दें-**ओं प्रजापतये स्वाहा** मन ही मन **इदं प्रजापतये न मम** ऊँचे स्वर में पढ़कर आहुति से अतिरिक्त घृत को प्रोक्षणी पात्र में छोड़ें। अग्नि के दक्षिण भाग में-**अग्नये स्वाहा, इदमग्नये न मम। ओं सोमाय स्वाहा, इदं सोमाय न मम** केवल विवाह में **(ॐ इन्द्राय स्वहा इदमिन्द्राय नमम) इत्याज्यभागौ। इति** आधार संज्ञक हवन **ॐ भूः स्वाहा, इदमग्नये न मम। ओं भुवः स्वाहा, इदं वायवे न मम। ओं स्वः स्वाहा, इदं सूर्याय न मम,** एता महाव्याहृतयः। प्रजापति और इन्द्र दोनों आधार संज्ञक और अग्निसोम आज्य भाग हैं। **'ॐ भूः भूवः स्वः'** को महाव्याहृति कहते हैं।

तत आचार्य-**ओं यथा बाणप्रहाराणां कवचं वारकं भवेत्।**
तद्वद्देवोपघातानांशान्तिर्भवति वारिका।।

शान्तिरस्तु पुष्टिरस्तु यत्पापं रोगम्, अकल्याणं तद्दूरे प्रतिहतमस्तु, द्विपदे चतुष्पदे सुशान्तिर्भवतु, पढ़कर यजमान के सिर पर जल छिड़क दें।

पञ्चवारुण होम (सर्वप्रायश्चित्तसंज्ञक)-

ॐ त्वं नोऽअग्ने वरुणस्य विद्वान्देवस्य हेडोऽअवयासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषाᳬसि प्रमुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा।। इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम।।1।। ॐ स त्वं नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठोऽअस्या उषसो व्युष्टौ अवयक्ष्व नो वरुणᳬ रराणो वीहि मृडीकᳬ सुहवो नऽएधि स्वाहा।। इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम।।2।। ॐ अयाश्चाग्नेऽस्यनभिशस्तिपाश्च सत्य-मित्वमया ऽअसि। अयानो यज्ञᳬ वहास्ययानो धेहि भेषजᳬ स्वहा।। इदमग्नये न मम।।3।। ॐ ये ते शतं वरुणं ये सहस्त्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः। तेभिर्नो ऽअद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा।। इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम।।4।। ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं विमध्यमᳬ श्रथाय। अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो ऽअदितये स्याम स्वाहा।। इदं वरुणायादित्यायादितये न मम।।5।। पढ़कर यथाक्रम बारह आहुतियों को प्रदान कर प्रोक्षणीपात्र में स्रुवावशिष्ट घृत का प्रक्षेप करें। **इति पञ्च वारुणी (प्रायश्चित्तसंज्ञक) होम।**

तदुपरान्त चन्दन, पुष्प, अक्षत द्वारा वायव्यकोण में बहिरग्नि की पूजा कर ग्रह होम पुरस्सर प्रधान होम करें।

गणपति-नवग्रह-अधिदेवता-प्रत्यधिदेवता-पञ्चलोकपाल होम-

एक या दश आहुति गणेश के लिए प्रदान करें-**(अन्वारब्धं विना) ॐ गणानान्त्वा गणपतिॅं हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपतिॅं हवामहे निधीनान्त्वा निधिपतिॅं हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमात्वमजासि गर्भधम् स्वाहा। इदं गणपतये न मम।** गणेश पूजन के बाद आये अन्य शेप देवताओं के लिए यथाशक्ति हवन करें।

नवग्रह होम

6 इंच (एक वित्ता) लम्बा अंगुलि के समान मोटा अकवन आदि समिधाओं को दधि, दूध, घी, चरु, साकल्य के साथ प्रत्येक देवताओं के लिए आठ-आठ बार आहुति प्रदान करें।

अर्क-**ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् स्वाहा। इदं सूर्य्याय न मम।।1।।**

(पलाश) ओं इमं देवाऽअसपत्नॅं सुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्येष्ट्याय महते जानराज्ज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय इमममुष्य पुत्रमष्यै विशऽएष वोमी राजा सोमोस्माकं ब्राह्मणाना ॅं राजा स्वाहा। इदं चन्द्रमसे न मम।। 2।।

(खदिर)-ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽयम् अपाॅं रेताॅं सि जिन्वति स्वाहा। इदं भौमाय न मम।। 3।।

(अपामार्ग) ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्ठापूर्ते सॅं सृजेथामयं च अस्मिन्त्सधस्थेऽअध्युत्तरस्मिन्विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत स्वाहा। इदं बुधाय न मम।। 4।।

(अश्वत्थ)-ॐ बृहस्पतेऽअतियदर्य्योऽअर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु यद्दीदयच्छवसऽऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रॅं स्वाहा। इदं गुरवे न मम।।5।।

(उदुम्बर)-ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्त्रं पयः सोमम्प्रजापतिः ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानॅंशुक्रमन्धसऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु स्वाहा। इदं शुक्राय न मम।।6।।

(शमी)-ॐ शन्नोदेवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये शंय्योरभिस्त्रवन्तु नः स्वाहा। इदं शनैश्चराय न मम।। 7।।

(दूर्वा)-कयानश्चित्रऽआभुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया बृता स्वाहा। इदं राहवे न मम।। 8।।

(कुश)-ॐकेतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्य्या अपेशसे समुषद्भिरजायथाः स्वाहा। इदं केतवे न मम।। 9।। इति नवग्रह होम।।

हाथ में जल लेकर **अनेन समिधादिकृतेन होमेन सूर्य्यादयो ग्रहाः प्रीयन्तां न मम** कहकर जल छोड़ दें।

अधिदेवता-प्रत्यधिदेवता होम-

ईश्वरादिभ्यः पलाशसमिधं मिष्टान्नमिश्रितचर्वाज्यादिद्रव्यैः सह (4-4) चतुष्चतुःसंख्यकाभिराहुतिभिर्जुहुयात्। ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम् उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् स्वाहा। इदमीश्वराय0।। 1।। ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इणन्निषाणमुम्मऽइषाणसर्वलोकम्मऽइषाण स्वाहा इदमुमायै।।2।। ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमानः उद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात्। श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहूऽउपस्तुत्यं महिजातन्ते अर्व्वन्स्वाहा। इदं स्कन्दाय।। 3।। ॐ विष्णोरराटमसि विष्णोश्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोसि वैष्णवमसि विष्णवे त्वा स्वाहा। इदं विष्णवे।। 4।। ॐ ब्रह्म यज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेनऽआवः। सबुध्न्या उपमाऽअस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसश्च विवः स्वाहा। इदं ब्रह्मणे।। 4।। ॐ सजोष इन्द्र सगणो मरुद्भिः सोमम्पिब वृत्रहा शूर विद्वान् जहि शत्रूँ रपमृधो नुदस्वाथाभयङ्कृणुहि विश्वतो नः स्वाहा। इदमिन्द्राय।। 6।। ॐ यमाय त्वांगिरस्वते पितृमते स्वाहा धर्म्माय स्वाहा धर्म्मः पित्रे स्वाहा। इदं यमाय।। 7।। ॐ कार्षिरस समुद्रस्य त्वाक्षित्याऽउन्नयामि समापोऽअद्मिर-ग्गमतसमोषधीभिरोषधीः स्वाहा। इदं कालाय।। 8।।ॐ चित्रवसो स्वस्ति ते पारमशीय स्वाहा। इदं चित्रगुप्ताय।।9।। अनेन सघृत-तिल-यव-चरुसमिद्धोमेन ईश्वराधिदेवताः प्रीयन्तां न कहकर जल छोड़ दे। **यथा बाणप्रहाराण0** यजमान के सिर पर जल छीटें।

प्रत्यधिदेवता होम-

ॐ अग्निदूतं पुरो दधे हव्यवाहमुपब्रुवे देवाँ 2 ऽआसादयादिह स्वाहा। इदमग्नये।।1।। ॐ आपो हिष्ठा मयोभुवस्तानऽऊर्ज्जे दधातन महेरणाय चक्षसे यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः उशतीरिव मातरः। तस्माऽअरङ्गमामवो यस्य क्षयाय जिन्विथ आपो जनयथा च नः स्वाहा। इदमद्भ्यः ।। 2।। ॐ स्योना पृथिवी नो भवानृक्षरा निवेशनी यच्छा नः शर्म स प्रथाः स्वाहा। इदं पृथिव्यै।।3।। ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्, समूढमस्य पा ॅं सुरे स्वाहा। इदं विष्णवे।।4।। ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रॅं

हवे हवे सुहव ॅं शूरमिन्द्रम्, ह्वायामि शक्रम्पुरुहूतमिन्द्र ॅं स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः स्वाहा। इदमिन्द्राय0।। 5।। ॐ अदित्यैरास्नासीन्द्राण्याऽउष्णीयपूषासि धर्मायदीष्व स्वाहा। इदमिन्द्राण्यै0।। 6।। ॐ प्रजापते नत्वदेतान्नयन्यो विश्वारूपाणि परिता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नोऽस्तु वय ॅं स्याम पतयो रयीणाम् स्वाहा। इदं प्रजापतये0।। 7।। ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु येऽ अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः स्वाहां। इदं सर्पेभ्यः।।8।। ॐ ब्रह्म यज्ञानम्प्रथमम्पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेनऽआवः सबुध्न्याऽउपमाऽअस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः स्वाहा। इदं ब्रह्मणे।। 9।। अनेन समिधादिकृतेन होमेन अग्न्यादिप्रत्यधिदेवताः प्रीयन्तां न मम इत्युत्सृजेत्।

पञ्चलोकपालदेवता होम-

विनायकादिपञ्चलोकपाल के लिए और इन्द्रादिदशदिक्पाल के लिए प्रत्येक को पूर्वोक्त द्रव्य द्वारा दो-दो आहुति दें ॐ गणानान्त्वा गणपति ॅं हवामहे प्रियाणान्त्वां प्रियपति ॅं हवामहे निधीनान्त्वा निधिपतिॅं हवामहे व्वसो मम आहमजानिगर्भधमात्त्वमजासि गर्भधं स्वाहा। इदं गणपतये।। 1।। ॐ अंबेऽअंबिकेऽम्बालिके न मानयति कश्चन ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां। काम्पीलवासिनीॅं स्वाहा। इदं दुर्गायै।। 2।। ॐ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वर ॅं सहस्त्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम्, वायो अस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयम्पात स्वस्तिभिः सदा नः स्वाहा। इदं वायये।।3।। घृतं घृतपावानः पिबत वसाम्व्वसापावानः पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा दिशः प्रदिशऽआदिशो विदिशऽउद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा। इदमाकाशाय।। 4।। यावांकशा मधुमत्यशिवनासूनृतावती तया यज्ञम्मिमिक्षताम् स्वाहा। इदमशिवभ्याम्।। 5।। अनेन होमेन पञ्चलोकपालदेवता प्रीयन्ताम् न मम कहकर जल छोड़ दे यथा बाणप्रहाराणा0 मंत्र द्वारा यजमान के शिर पर जल छोड़ें।

दशदिक्पाल होम-

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र ॅं हवे हवे सुहव ॅं शूरमिन्द्रं ह्वयामि शक्रम्पुरुहूतमिन्द्रॅं स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः स्वाहा। इदमिन्द्राय0।।1।। त्वन्नोऽअग्ने तव पायुभिर्म्मघोनो रक्ष तन्वश्च बन्ध। त्राता तोकस्य तनये गवामस्य निमेषॅंरक्षमाणस्तवव्व्रते स्वाहा। इदमग्नये।।2।। ॐ यमाय त्वांगिरस्वते पितृमते स्वाहा धर्माय स्वाहा धर्म्मः पित्रे स्वाहा। इदं यमाय।।3।। ॐ असुन्नवन्तमयजमानमिच्छस्तेन- स्येत्यामन्विहितस्करस्य अन्यमस्मदिच्छ-

सातऽइत्यानमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु स्वाहा। इदं निर्ऋतये।। 4।। ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः अहेळमानो वरुणेह बोध युरूᳬसमानऽआयुः प्रमोषीः स्वाहा। इदं वरुणाय।।4।। ॐ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वरः सहस्त्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम्। वायोऽअस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयम्पात स्वस्तिभिः सदा नः स्वाहा। इदं वायवे।। 6।। ॐ वय ᳬ सोमव्रते तव मनस्तनूष बिभ्रतः प्रजावन्तः सचेमहि स्वाहा। इदं कुबेराय।।7।। ॐ तमीशानञ्जगतस्तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयं। पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्ध स्वस्तये स्वाहा। इदमीशानाय।। 8।। ॐ अस्मे रुद्रा मेहना पर्वतासो वृत्रहत्ये भरहूतो सजोषः यश ᳬ सते स्तुवते धायि वज्रऽइन्द्र ज्येष्ठाऽअस्माँऽअवन्तु देवाः स्वाहा। इदं ब्रह्मणे।।9।। ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरानिवेशनी यच्छा नः सर्मसप्रथाः स्वाहा। इदमनन्ताय।।10।। अनेन होमेन इन्द्रादयो दिक्पालदेवताः प्रीयन्तां न ममेति जलमुत्सृजेत्। इति दिक्पालहोम।

अथ पितामहादिदेवानामेकैकयाहुत्या होमः।। ॐ ब्रह्म यज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेनऽआवः सबुध्न्या उपमाऽअस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः स्वाहा। इदं ब्रह्मणे।। 1।। ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् समूढमस्य पाᳬसुरे स्वाहा। इदं विष्णवे।। 2।। त्र्यम्बकं यजामहे0 इदं शिवाय।। 3।। गणानान्त्वा0 स्वाहा। इदं गणपतये।।4।। ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च0 स्वाहा। इदं लक्ष्म्यै।।5।। ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्त्रोतसः सरस्वती तु पञ्चधा सो देशे भवत्सरित् स्वाहा। इदं सरस्वत्यै।।6।। ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कञ्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीᳬस्वाहा। इदं दुर्गायै।।7।। ॐ नहि स्पर्शमविदन्नन्य-मस्माद्वैष्वानरात्पुरऽएतारमग्नेः एमे नम वृधन्नमृता अमर्त्यवैश्वानरं क्षैत्रजित्याय देवाः स्वाहा। इदं क्षेत्रपालाय।।8।। ॐ भूताय त्वानारातये स्वरभिविख्ये यन्दृ ᳬ हंतादुर्याः पृथिव्यामुर्वन्तरिक्षमन्वेमि पृथिव्यास्त्वानाभौ सादयाम्यदित्या ऽउपस्थेऽग्नेहव्य ᳬ रक्ष स्वाहा। इदं भूतेभ्यः।।9।। वास्तोष्पते प्रति जानीह्यस्मान्त्स्वावेशोऽअनमीवो भवाः नः यस्त्वेमहे प्रतितन्नो जुषस्व शन्नो भवद्द्विपदे शञ्चतुष्पदे स्वाहा। इदं वास्तोष्पतये।।10।। ॐ विश्वकर्म्मन्हविषा वर्द्धनेनत्रतारमिन्द्रमकृणोरवद्ध्यम् तस्मै विशः समनमन्त पूर्वीरयमुग्रो विहव्योषथासत् स्वाहा। इदं विश्वकर्मणे।। 11।।

प्रधान देव का हवन

ग्रह मण्डल देवता के होम के पश्चात् प्रधान देवता का ध्यान, प्राणायाम कर हवन करें। **तद्यथा-ॐ (मूलमन्त्र) स्वाहा0** यदि आवरण पूजा किये हो तो यन्त्रस्थ आवरण देवता के लिए एक-एक आहुति देवें।

दुर्गा होम-

मार्कण्डेय उवाच (प्रथम मन्त्र) से प्रारम्भ कर प्रत्येक मन्त्र के बाद स्वाहा कहें। अध्याय पूर्ण होने पर उठकर श्रुव में आज्य लेकर उसमें गंध, पुष्प, सुपारी, ताम्बूल, भोजपत्र रखकर-

'ॐ अम्बे अम्बिके अम्बालिके नमानयति कश्चन। सुस्वस्त्यश्वकः सुभद्रिकां कांपील-वासिनी स्वाहा हवन करें। **ॐ अम्बे स्वाहा, ॐ अम्बिके, ॐ अम्बिालिके स्वााहा।**

अग्निपूजन-

(आयतनाद्बहिर्वायव्यां दिशि) ॐ स्वाहा स्वधा युताग्नये वैश्वानराय नमः इससे **पञ्चोपचार (सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि, इति वा)** पूजा कर, **ॐ अनया पूजया स्वाहास्वधायुतोग्निः प्रीयताम्, इति** जल छोड़ दे। **(होमतर्पणाभिषेकानां मध्ये यदेवं न संभवति तत्स्थाने तत्द्विगुणो जपः कार्यः)**

स्विष्टकृद् होम-

हवन से अवशिष्ट हवि द्रव्य को लेकर स्विष्टकृद् होम करें।

ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा (चर्वादिद्रव्ये तदा पात्रान्तरम्) इदमग्नये स्विष्टकृते न मम। घी द्वारा 9 आहुति देवें-**ॐ भूः स्वाहा इदमग्नये न मम।। 1।। ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे न मम।। 2।। ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय न मम।। 3।। ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो अवयासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोचानो विश्वा द्वेषा ꣳसि प्रमुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा इदमग्नी-वरुणाभ्यां0।।4।। ॐ स त्वन्नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ। अवयक्ष्व नौ वरुणꣳरराणो वीहि मृळीकꣳसुहवो न एधि स्वाहा। इदमग्नीवरुणाभ्यां0।। 5।। ॐ अयाश्चाग्नेस्यनभिशस्तपाश्च सत्वमित्वमयाऽअसि। अयानो यज्ञं वहास्यया नो धेहि भेषजꣳस्वाहा। इदमग्नये न मम।। 6।। ॐ ये ते शतं वरुण ये सहस्त्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः। तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा। इदं**

वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न0।।7।। ॐ उदुत्तमं वरुणपाशमस्मदवाधमं विमध्यमꣳ श्रथाय। अथावयमादित्यव्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा। इदं वरुणायादित्यायादितये न0।।8।। ओं प्रजापतये स्वाहा, इदं प्रजापतये न0।।9।।

बलिदान

हाथ में जल अक्षत लेकर-ॐ तत्सदद्य अमुकगोत्रः अमुकशर्म्मा (वर्म्मा गुप्तो हं) कृतस्य कर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं दशदिक्पालपूर्वकम् आदित्यादि-ग्रहमण्डलस्थापितदेवताभ्यो बलिदानञ्च करिष्ये। अग्नि के चारों ओर 10 दिशाओं में दही मिश्रित उड़द को दोना में रखकर एवं प्रत्येक के समीप दीप रखकर-ॐ इन्द्रादिदशदिक्पालेभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि, अक्षत, जल को भूमि पर छोड़ दें।। भो भो इन्द्रादिदशदिक्पालाः स्वां स्वां दिशं रक्षत बलि भक्षत कृपां वितरत मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्तारः क्षेमकर्तारः शान्तिकर्तारः पुष्टिकर्तारः तुष्टिकर्तारो वरदा भवत, प्रार्थना। शिरसि करौ कृत्वा भूमौ जानुभ्यां पतित्वा क्षमध्वमितिवदेदिति सर्वत्र। एभिर्बलिदानैः इन्द्रादिदशदिक्पालाः प्रीयन्ताम्। ततो ग्रहवेदीसमीपे पत्रावल्युपरि बलिं निध ाय आदित्यादिग्रहार्थं बलिद्रव्याय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। ॐसूर्यादिनवग्रहेभ्यः साङ्गेभ्यः सपरिवारेभ्यः सायुधेभ्यः सशक्तिकेभ्यः अधिदेवताप्रत्यधिदेवतागणपत्यादिपञ्चलोकपाल-वास्तोष्पतिसहितेभ्यः एतं सदीपमाषभक्तबलिं समर्पयामि इति जलमुत्सृजेत्। भो भो सूर्यादिनवग्रहा साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिका अधिदेवता-प्रत्यधिदेवता- गणपत्यादिपञ्चलोकपालवास्तोष्पतिसहिताः इमं बलिं गृह्णीत मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्तारः क्षेमकर्तारः शान्तिकर्तारः तुष्टिकर्तारः पुष्टिकर्तारो वरदा भवत। अनेन बलिदानेन सूर्यादिग्रहाः प्रीयन्ताम्। मातृकाओं के लिए भी एक वलि दें श्रीगौर्यादिमातृभ्यः इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि, इति जलमुत्सृजेत्। भो भो गौर्यादिमातर इमं बलिं गृह्णीत आयुःकर्त्र्यः क्षेमकर्त्र्यः, शान्तिकर्त्र्यः, पुष्टिकर्त्र्यः, वरदा भवत। अनेन बलिदानेन श्रीगौर्यादिमातरः प्रीयन्ताम्।

योगिनि वेदि के समीप-ॐ चतुःषष्टियोगिनीभ्यः साङ्गभ्यः सपरिवाराभ्यः सायुधाभ्यः सशक्तिकाभ्यः इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि, इति जलमुत्सृजेत्। भो भो चतुःषष्टियोगिन्यः इमं बलिं गृह्णीत मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्त्र्यः क्षेमकर्त्र्यः शान्तिकर्त्र्यः तुष्टिकर्त्र्यः पुष्टिकर्त्र्यो वरदा भवत। अनेन बलिदानेन श्रीचतुःषष्टियोगिन्यः प्रीयन्ताम्। उसके बाद मूल मंत्र

के अन्त में **कूष्माण्डरसेनाप्यायताम्0** यह कहें। प्रधान देवता के लिए सुपूजित कुष्माण्ड बलि देकर पैर धो लें। आचमन कर **शान्तिः शान्तिः शान्तिः** कहे।

क्षेत्रपाल बलि-

एक बांस के पात्र में कुश बिछा कर भोजन के दो गुणा या चार गुणा उड़द, दधि और जलपात्र रखकर हल्दी, चन्दन, सिन्दूर, काजल, द्रव्य, पताका, चौमुख दीप से उसे सजाकर संकल्प करें।

ॐ अद्येत्यादि० सकलारिष्टशान्तिपूर्वक प्रारिप्सितकर्मणः साङ्गता-सिद्ध्यर्थं क्षेत्रपालपूजनं बलिदानञ्च करिष्ये।

संकल्प कर-**ॐ न हि स्पर्शमविदन्नन्यमस्माद्वैश्वानरात्पुर एतारमग्नेः। एमेनमवृधन्नमृता अमर्त्यवैश्वानरं क्षेत्रजित्याय देवाः। ॐ श्रीक्षेत्रपालाय नमः क्षेत्रपालम्** इस मंत्र से (बलि में रखे सुपारी में) **आवाहयामि स्थापयामि। सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि दक्षिणाञ्च श्रीक्षेत्रपालाय नमः।**

पूजा कर ध्यान करें-

भ्राजद्ववक्त्रजटाधरं त्रिनयनं नीलाञ्जनाद्रिप्रभं
दोर्दण्डान्तगदाकपालमरुणं स्त्रग्गन्धवस्त्रावृतम्।
घण्टाघुर्घुरुमेखलाध्वनिमिलद्धुंकारभीमं प्रभुं
वन्दे संहितसर्प्पकुण्डलधरं श्रीक्षेत्रपालं सदा।।

प्रार्थना-**ॐ नमो क्षेत्रपालस्त्वं भूतप्रेतगणैः सह।**
पूजां बलिं गृहाणेमं सौम्यो भवतु सर्वदा ।।1।।
देहि मे आयुरारोग्ये निर्विघ्नं कुरु सर्वदा।
अनेन पूजनेन श्रीक्षेत्रपालः प्रीयताम्।

हाथ में जल लेकर- **ॐ क्षेत्रपाल महाबाहो! महाबलपराक्रम!।**
क्षेत्राणां रक्षणार्थाय बलिं नय नमोस्तु ते।।

श्रीक्षौं क्षेत्रपालाय सांगाय भूतप्रेतपिशाचडाकिनीपिशाचिनी- मारीगण-वेतालादिपरिवारयुताय सायुधाय सशक्तिकाय सवाहनाय इमं सचतुर्मुखदीप-दधिमाषभक्तवबलिं समर्पयामि।

जल छोड़कर प्रार्थना करें-**भो भोः क्षेत्रपाल ! स्वं क्षेत्रं रक्ष बलिं भक्ष यज्ञं परिरक्ष मम सकुटुम्बस्याभ्युदयं कुरु-आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता निर्विघ्नकर्ता वरदो भव ॐ अनेन बलिदानेन श्रीक्षेत्रपालः प्रीयताम्।**

भूतों के लिए बलिदान

शुद्ध सूप में दीप, उड़द, दधि, हल्दी, सिन्दूर, काजल, जल, चन्दन, लालफूल रखकर सपरिवार चौराहे पर जाकर गन्ध पुष्प से सूप की पूजा कर इन मंत्रों से स्थापित करें-

ॐ बलिं गृह्णन्त्विमे देवा आदित्या वसवस्तथा।
मरुतश्चाश्विनौ रुद्राः सुपर्णाः पन्नगा ग्रहाः ।।1।।
असुरा यातुधानाश्च पिशाचोरगराक्षसाः।
शाकिन्यो यक्षवेताला योगिन्यः पूतना शिवाः ।।2।।
जृम्भकाः सिद्धगन्धर्वा नानाविद्याधरा नगाः।
जगतां शान्तिकर्त्तारः क्रमाद्याश्चैव मातरः ।।3।।
मा विघ्नं मा च मे रोगो मा सन्तु परिपन्थिनः।
सौम्या भवन्तु तृप्ताश्च भूताः प्रेताः सुखावहाः।।4।।
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु रक्षां कुर्वन्तु मेऽध्वरे।
देवताभ्यः पितृभ्यश्च भूतेभ्यः सह जन्तुभिः ।।5।।
त्रैलौक्ये यानि भूतानि स्थावराणि चराणि च।
एतस्थानाधिवासिभ्यः प्रयच्छामि बलिं नमः।।6।।

एतेभ्यो भूतेभ्यो गन्धादिकं वः स्वाहा इति बलिदानम्।

पूर्णाहुति होम-

संकल्प-**ॐ अद्येत्यादिदेशकालौ सङ्कीर्त्य मम मनोऽभिलषित-धर्मार्थकामादियथेप्सि-तायुरारोग्यैश्वर्यपुत्र-पशु सखि-सुहृत्सम्बन्धिब-ध्वादिप्राप्तये ब्राह्मणद्वारा मत्कारिते अमुककर्मणि श्रीगणपतिगौर्याद्यावाहि-तेष्टदेवताप्रीतये च स्वैर्मन्त्रैर्यवतिलतण्डुलाज्याहुतिभिः परिपूर्णतासिद्धये - वसोर्धारासमन्वितं पूर्णाहुतिहोममहं करिष्ये।** श्रुवा में पान सुपारी, अक्षत, घी एवं वस्त्र से लिपटा नारियल, पुष्पमाला लेकर चन्दन लगाकर **पूर्णाहुत्यै नमः** से पञ्चोपचार पूजन कर सपत्नीक यजमान पूर्णाहुति करें।

मन्त्र-**ॐ मूर्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आजातमग्निम्। कविꣳसम्राजमतिथिञ्जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः।। ॐ पूर्णा दर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत वस्नेव विक्रीणा वहा इषमूर्जꣳ शतक्रतो स्वाहा,** अग्नि में दोनों हाथों से छोड़ दें।

ततो यजमानः-इदमग्नये वैश्वानराय वसुरुद्रादित्येभ्यः शतक्रतवे सप्तवते अग्नये अद्भः पुरुषाय श्रियै च न मम। ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः

पवित्रमसि सहस्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः स्वाहा, इदं वाजादिभ्योऽग्नये विष्णवे रुद्राय सोमाय वैश्वानराय च न मम।

पूर्णाहुति से शेष को संस्रव पात्र में छोड़ दें। स्रुचि लेकर पूर्णाहुति पर अटूट घृतधारा छोड़े। मन्त्र-**ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः स्वाहा, इदं वाजादिभ्योऽग्नये विष्णवे रुद्राय सोमाय वैश्वानराय च न मम।**

अग्निप्रार्थना-**ॐ श्रद्धा मेधां यशः प्रज्ञां विद्यां पुष्टिं श्रियं बलम्। तेज आयुष्यमारोग्यं देहि मे हव्यवाहन!।1।। भो भो अग्ने ! महाशक्ते! सर्वकर्मप्रसाधन! कर्मान्तरेऽपि सम्प्राप्ते सान्निध्यं कुरु सर्वदा।।**

भस्मवन्दन-त्र्यायुषकरण - कुण्ड में दग्ध पूर्णाहुति के नारियल के राख को स्रुव के पृष्ठ भाग से लेकर दाहिने हाथ के अनामिका अंगुलि से आचार्य स्वयं तिलक करे। पुनः यजमान को निम्न मन्त्र से भस्म अंकित करे। मन्त्र-**ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेरिति ललाटे। कश्यपस्य त्र्यायुषमिति हृदि वामस्कन्धे च। यजमानपक्षे 'तन्नो' इत्यस्य स्थाने 'तत्ते' इति वाच्यम्।**

संश्रवप्राशन-प्रोक्षणी पात्र में छोड़े गये घी को यजमान अनामिका एवं अंगूठा से पीये। मन्त्र-**ॐयस्माद्यज्ञपुरोडाशाद्यज्वानो ब्रह्मरूपिणः। तं संस्रवपुरोडाशं प्राश्नामि सुखपुण्यदम्।** आचमन कर प्रणीता पात्र में स्थित दोनों पवित्री का ग्रन्थि खोलकर उसे शिर पर लगाकर अग्नि में छोड़ दें।

ब्रह्मा के लिए पूर्ण पात्र दान-**ॐअद्येत्यादिकृतैतदमुक-होम-कर्मणः प्रतिष्ठार्थमिदं तण्डुलपूरितं पूर्णपात्रं सदक्षिणं प्रजापतिदैवतं ब्रह्मणे तुभ्यमहं संप्रददे। ॐस्वस्तीति प्रतिवचनम्।** ब्रह्म ग्रन्थी खोल दें। जल युक्त प्रणीता पात्र को अग्नि के पीछे से लाकर **ॐ आपः शिवाः शिवतमाः शान्ताः शान्ततमास्तास्ते कृण्वन्तु भेषजम्।** उपयमन कुशा द्वारा यजमान के सिर पर जल छिड़कें। **ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान्द्वेष्टि यञ्च वयं द्विष्मः। इत्यैशान्यां प्रणीतां न्युब्जीकुर्यात्।** उपयमन कुशा को अग्नि में छोड़ दें।

बर्हि होम-

बिछाये गये बर्हि कुश को घी में डुबाकर-**ॐ देवा गातु विदो गातु वित्वा गातु मित मनसस्पत इमं देव यज्ञꣳस्वाहा वातेधाः स्वाहा।** पढ़कर हवन कर दें।

दशांश तर्पण मार्जन विधि-होम पूर्ण कर पात्रस्थ जल की पूजा कर दूध एवं तीर्थों का जल उसमें मिला लें। तदनन्तर होम के दशांश तर्पण करें। मूल मंत्र के बाद **ॐ साङ्गं सपरिवारम् अमुकदेवतां तर्पयामि** ऐसा कहकर तर्पण करें। तर्पण के दशांश मूल मंत्र के बाद **आत्मानमभिषिञ्चामि नमः** इतना कहे। तर्पण एवं सिंचन के अतिरिक्त शुद्ध जल से यजमान के सिर पर या पृथ्वी पर मार्जन करें।

अभिषेक विधि

ग्रह वेदी के कलश के जल एवं प्रधान देवता के कलश-जल को मिलाकर दूब, पञ्चपल्लव द्वारा अभिषेक करें। आचार्य, जापक पूर्वाभिमुख, यजमान उनकी पत्नी एवं परिवार को पश्चिमाभिमुख बैठाऐ। **ओं आपो हि ष्ठामयो भुवस्तान ऊर्जे दधातनः।1। ओं महेरणाय चक्षसे यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः।।2।। ओं तस्मा अरङ्गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा चनः ।।3।। ओं वरुणस्योत्तम्भनमसि व्वरुणस्य स्कम्भसर्जनीस्थो वरुणस्य आगे मन्त्र देखें ऋतसदनमासीद।।4।। पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा ।।5।। ओं पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम् ।।6।। ओं देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यापूष्णो- र्हस्ताभ्याम्। सरस्वत्यै वाचो यन्तु यन्त्रिये दधामि बृहस्पतेष्ट्वा साम्राज्येनाभिषिञ्चामि।।7।। ओं द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳशान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिर्वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वꣳशान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।।8।।**

ओं सुरास्त्वामभिषिञ्चन्तु ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः।
वासुदेवो जगन्नाथस्तथा सङ्कर्षणो विभुः ।।1।।
प्रद्युम्नश्चानिरुद्धश्च भवन्तु विजयाय ते।
आखण्डलोऽग्निर्भगवान् यमो वै निर्ऋतिस्तथा ।।2।।
वरुणः पवनश्चैव धनाध्यक्षस्तथा विभुः।
ब्रह्मणासहिताः सर्वे दिक्पालाः पान्तु ते सदा ।।3।।
कीर्तिर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा पुष्टिः श्रद्धा क्रिया मतिः।
बुद्धिर्लज्जा वपुः शान्तिस्तुष्टिः कान्तिश्च मातरः ।।4।।
एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु देवपत्न्यः समागताः।
आदित्यश्चन्द्रमा भौमो बुधजीवसितार्कजाः ।।5।।
ग्रहास्त्वामभिषिञ्चन्तु राहुः केतुश्च तर्पिताः।
देवदानवगन्धर्वा यक्षराक्षसपन्नगाः ।।6।।

ऋषयो मनवो गावो देवमातर एव च।
देवपत्न्यो द्रुमा नागा दैत्याश्चाप्सरसां तथा ।। 7।।
अस्त्राणि सर्वशस्त्राणि राजानो वाहनानि च।
औषधानि च रत्नानि कालस्यावयवाश्च ये ।।8।।
सरितः सागराः शैलास्तीर्थानि जलदा नदाः।
एते त्वामभिषिञ्चन्तु ते सर्वे धर्मकामार्थसिद्धये ।।10।।
अमृताभिषेकोऽस्तु।।

मंगलस्नान–

यजमान सर्वौषधि लगाकर, महानदी अथवा शुद्ध जल से स्नान करे। मंगल स्नान का वस्त्र नापित या दुर्ब्राह्मण को दे। सपत्नीक यजमान मण्डप में आकर मंगल तिलक धारण कर श्रेयोदान स्वीकार करे। आचार्य या ऋत्विक् पश्चिमाभिमुख यजमान के हाथ में-**ओं शिवा आपः सन्तु इति जलम्, ओं सोमनस्यमस्तु इति पुष्पम्, अक्षत चारिष्टं चास्तु इत्यक्षतांश्च दत्त्वा, पूगीफलफलादिकञ्चादाय, ओं भवन्नियोगेन मया श्रीअमुकदेवप्रीत्यर्थ कृतो यः साङ्गजपपाठहोमस्तदुत्पन्न यच्छेयस्तत् तुभ्यमहं सम्प्रददे तेन श्रेयसा त्वं श्रेयोवान् भव।** फल आदि यजमान को दे। **यजमानश्च सुगुप्तदेशे स्थापयेत्, यथावसरं भक्षयेच्च। आचार्यमात्रकर्तृके श्रेयोदाने तु–ओं भवन्नियोगेन मया एभिर्ब्राह्मणैः सह कृतं मदाचार्यत्वम् उपद्रष्टृत्वं जपहोमादिकञ्च तदुत्पन्नं क्षिपेत्।** तदनन्तर यजमान आचार्य आदि की पूजा करे।

दक्षिणादानविधि-पश्चिम मुख कर यजमान हाथ में जल अक्षत लेकर अग्नि के पश्चिम की ओर पूर्वाभिमुख बैठे आचार्य की पूजा करे–**ओं तत्सदद्य मयाचरितस्य अमुकहवनात्मकयागस्य साङ्गतासिद्धये आचार्यादीन् पूजयिष्ये दक्षिणाञ्च दास्ये। इति सङ्कल्प्य, आचार्य चतुरस्त्रे पीठे उपवेश्य ओं विष्णुरूप आचार्य! एतत्ते पाद्यम्, इमे वाससी, एष ते गन्धः, इमानि पुष्पाणि, धूपः, दीपः, नैवेद्यम्, ताम्बूलम्, इत्येवं सम्पूज्य अन्यानपि ऋत्विजादीन् गन्धाक्षतादिभिः पूजयेत्। ततः सजलदक्षिणां गृहीत्वा– ओं तत्सदद्य पूर्वोक्तविशेषणवति काले देशे च मया-आचरितस्य अमुककर्मणः प्रतिष्ठासिद्ध्यर्थम् अमुकसगोत्राय अमुकामुकैतावत्प्रवराय, यजुर्वेदान्तर्गतमाध्यान्दिनशाखाध्यायिने, (काण्वादि शाखाध्यायिने वा) अमुकशर्म्मणे विष्णु (रुद्र) रूपिणे इदं द्रव्यम् अमुकदैवत्यं तुभ्यमहं सम्प्रददे न मम। ॐ अद्य कृतैतद्दानप्रतिष्ठासाङ्गतासिद्ध्यर्थम् इदं द्रव्यं अमुकदैवत्यं तु.। इति दद्यात्। आचार्यश्च– ॐ कोदात् कस्मा अदात् कामोदात्कामायादात्। कामो दाता कामः प्रतिग्रहीता कामैतत्ते।। इति पठित्वा ॐ स्वस्तिति ब्रूयात्।**

एवमन्यानपि ऋत्विजः सम्पूज्य-सङ्कल्पपूर्वकं पृथक् पृथक् दक्षिणां दद्यात्। ॐ अद्ये॰ कृतस्य–अमुककर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थम् अमुकमन्त्रजापकाय (स्तोत्रपाठकाय वा) यथोक्तदक्षिणां तन्निष्क्रयभूतं यथाशक्त्या रजतं रुद्रदैवतं तुभ्यमहं संप्रददे न मम तत्सत्। ॐ तत्सदद्ये॰ कृतैतद्दान॰।

अथवा आचार्यादीन्सम्पूज्य-ॐ तत्सदद्ये॰ कृतस्य अमुककर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्तये च आचार्यादिभ्यो महर्त्विग्भ्यः सूक्तपाठकेभ्योऽमुकमन्त्रजापकेभ्यो हवनकर्तृभ्योऽन्येभ्यो देवयजनमागतेभ्यश्च नाना गोत्रेभ्यो नानाशर्मभ्यो ब्राह्मणेभ्यो यथोक्तदक्षिणां तन्निष्क्रयभूतं यथाशक्त्येदं द्रव्यं रजतं रुद्रदैवतं विभज्याहं सम्प्रददे न मम। इत्येष एव सङ्कल्पोऽनुष्ठेयः (अथवा) ॐ त. कृतस्य अमुककर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थम् आचार्यादिभ्यो ब्राह्मणेभ्यः इमां दास्यमानां वा मनसोद्दिष्टां दक्षिणां विभज्य दातुमहमुत्सृजे (अथवा) ॐ त. कृतयोः अमुककर्मणोः साङ्गतासिद्ध्यर्थं दास्यमानं हिरण्यनिष्क्रयभूतं द्रव्यम् अमुकामुकगोत्राभ्याम् अमुकामुकशर्म्मभ्यां ब्राह्मणाभ्यां युवाभ्यामहं सम्प्रददे।। (अथवा) ॐ तत्स. कृतानाम् अमुकामुकर्मणां साङ्गतासिद्ध्यर्थं हिरण्यनिष्क्रयिणीं दक्षिणाममुकगोत्रेभ्यः अमुमुकामुकशर्म्मभ्यः ब्राह्मणेभ्यः युष्मभ्यमहं सम्प्रददे। (अथवा) ॐ तत्स॰ कृतस्य अमुककर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थमिमां दक्षिणां हवनकर्त्रे ऋत्विजे तु॰ ।। वा ऋत्विग्भ्यां दातुमहमुत्सृजे ।। वा यथासंख्याकऋत्विग्भ्यो दातुमहमुत्सृजे।। इति ब्राह्मणान् जपानुसारेण दक्षिणावस्त्रालङ्कारादिभिः परितोष्य प्रणमेत् ततो ब्राह्मणः स्वस्ति इत्युक्त्वा दक्षिणां स्वीकृत्य ॐ आदित्या वसवोरुद्रेति मंत्रेण यजमानललाटे तिलकं कुर्यात्।।

अथ ब्राह्मणभोजनसंकल्प–

ॐ तत्सदद्ये॰ कृतस्यामुककर्मणः सम्पूर्णतासिद्धये यथोपन्नोनान्नेन यथाकालं यथासंख्यकान् नानागोत्रान् नानाभिधान् ब्राह्मणान् (वा-कन्याबटुकादीन्) भोजयिष्ये दक्षिणाञ्च दास्ये इति सङ्कल्प्य यथाकालं ब्राह्मणान् भोजयेत्। तत आचार्याय गां तन्मौल्यं वा दद्यात्।

गोदान संकल्प–ॐ तत्स॰ ममामुककर्मसाङ्गतासिद्ध्यर्थम् अमुकगोत्रायामुकशर्म्मणे ब्राह्मणाय यथाशक्त्यलंकृतामिमां सवत्सां गां रुद्रदैवत्यां तुभ्यं सम्प्रददे न मम, इति कुसुमाक्षतसमन्वितं जलं सपुच्छं ब्राह्मणहस्ते दद्यात्, ब्राह्मणस्तु ॐ कोदादिति मन्त्रं पठित्वा ॐ स्वस्तीति ब्रूयात्। ॐ त॰ कृतेतद्गोदानप्र॰। प्रत्यक्षायाः गोरभावे तु तन्निष्क्रयं निष्कपरिमितं तदर्द्ध

तदर्द्ध वा हिरण्यं दद्यात् – अस्मिन् पक्षे, गोनिष्क्रयभूतमिदं हिरण्यमग्निदैवतं (वा हिरण्यमूल्योपकल्पितं रजतं रुद्रदैवतं) तुभ्यं सम्प्रददे न मम। इति आचार्यहस्ते जलाक्षतयुतं द्रव्यं दद्यात्, आचार्यः ॐ स्वस्तीति वदेत्।

अथ भूयसीदक्षिणा संकल्प-ॐ अद्येo पुराणोक्तफलप्राप्तिपूर्वककृतेऽस्मिन् अमुकयागकर्मणि न्यूनातिरिक्तदोषपरिहारार्थं, नानावेदान्तर्गतनानाशाखाध्यायिभ्यो नानागोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो दीनानाथेभ्यो अन्धपङ्गुभ्यश्च यथाशक्ति यथोत्साहं भूयसीं दक्षिणां विभज्य दातुमहमुत्सृजे ॐ तत्सत् इतिवदन् यथाशक्तिभूयसीं दक्षिणां दद्यात्।

छायापात्रदान–छायापात्रं स्वपुरस्तिलराश्युपरि संस्थाप्य पत्र धारितशुद्धगोघृतं पूरयेत् ततः सपत्नीको यजमानः स्वमुखमवलोकयेत्, तत्र मन्त्रों-ॐ आज्यं सुराणामाहारमाज्यं पापहरं परम्। आज्यमध्ये मुखं दृष्ट्वा सर्वपापैः प्रमुच्यते ।।1।। घृतं नाशयते व्याधिं घृतञ्च हरते रुजम्। घृतं तेजोधिकरणं घृतमायुः प्रवर्द्धते ।।2।। इति मुखं दृष्ट्वा हिरण्यं पंचरत्नानि वा प्रक्षिपेत्। ततस्सोपकरणैस्तत्कांस्यपात्रोपन्यस्तघृतबिम्बप्रतिबिम्बितात्मछायापात्राय नमः, एवं गन्धादिभिः पूजयेत्। ॐ अद्येo अमुकदेवप्रीतिपूर्वकसोपकरणच्छायापात्रदानं ददामि। इति विप्रकरे जलं दद्यात्।

संकल्प -ॐ अद्येत्यादिदेशकालसङ्कीर्तनान्ते-अमुकगोत्रोत्पन्नोहं जन्मनामतः प्रसिद्धनामतश्चामुकशर्मा सपत्नीकोऽहं मम कलत्रादिभिस्सह दीर्घायुरारोग्यसुतेजस्वित्वसुभगत्वसर्वपापप्रशमनोत्तरजन्मराशेस्सकाशान्नामराशेस्सकाशाद्वा जन्मलग्नाद्वर्षलग्नाद्गोचराद्वा ये केचिच्चतुर्थाष्टमद्वादशाद्यनिष्टस्थान-स्थिताः क्रूरग्रहास्तैः सूचितं सूचयिष्यमाणञ्च यत्सर्वारिष्टं तद्विनाशार्थं सर्वदा तृतीयै-कादशशुभस्थान-स्थितवदुत्तमफलप्राप्त्यर्थं कांस्यपात्रोपन्यस्तं घृतबिन्दुकणि-कासमसंख्यावच्छि-न्नैरुज्यचिरञ्जीवित्वकामैतत्स्वशरीरछायावलोकित घृतपूरितं कांस्यपात्रं पञ्चरत्नादिसहितं सुपूजितं श्रीमहामृत्युञ्जयदेवताप्रीत्यर्थं चन्द्रमाप्रजापतिबृहस्पतिदैवतं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे। ॐ अद्य कृतैतच्छायापात्रदानप्रतिष्ठार्थमेतद्द्रव्यममुकदैवतं यथानामगोत्रायo। ततः प्रार्थयेत् -ॐ यानि कानि च पापानि मया कामं कृतानि च। छायापात्रप्रदानेन तानि नश्यन्तु मे सदा ।।1।। यत्कृतं मे स्वकायेन मनसा वचसा त्वघम्। तत्सर्व नाशमायातु छायापात्रप्रदानतः ।।2।। इति पठित्वा हस्तद्वयेन तत्पात्रं रहित्वा ब्राह्मणाय समर्पयेत्-ॐ सदक्षिणं मया तुभ्यं स्वात्मदेहमिदं परम्। छायापात्रपरं प्रीत्या गृहाण द्विजसत्तम!। दानेनानेन भा सन्तु सर्वे रोगादयो मम। आयुरारोग्यमैश्वर्य प्रददातु दिवाकरः।। इत्युच्चार्य छायापात्रं ब्राह्मणहस्ते

दद्यात्।। अथवा-आज्य-पात्रे छायामवलोक्य देशकालौ स्मृत्वा ममायुरारोग्यप्राप्तये ससुवर्णमिदमाज्यपात्रममुकगोत्रायामुककर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे। इति कस्मैचित् ब्राह्मणाय दद्यात्।

उत्तरपूजनम् –ॐ तत्स० कृतस्य-अमुककर्मणः साङ्गत्वसिद्धये मृडाग्निसहित- आवाहितदेवानामुत्तरपूजनं करिष्ये। इति सङ्कल्प्य, आयतनाद्बहिर्वायव्यां दिशि ॐस्वाहास्वधायुतमृडाग्नये नमः इति मन्त्रेणाग्निं गन्धादिपञ्चोपचारैः सम्पूज्य स्थापितदेवतानामुत्तरपूजनं कुर्यात् –ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीगणपत्यादिस्थापितदेवताभ्यो नमः इति गन्धादिपञ्चोपचारैः सम्पूज्य, ॐ अनया पूजया स्वाहास्वधायुतो मृडाग्निः स्थापितदेवताश्च प्रीयन्तामित्युत्सृजेत्। ततो गीतवादित्रशङ्खध्वन्यादिभिः सह नीराजनम् – साज्यं त्रिवर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया। दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम्। (अत्रावसरे केचिदारार्तिक्यमपि पठन्ति)।।

सभी देवताओं की आरती

ॐजय जगदीश हरे भक्तिजनेड्यविभो।
त्वयि मम रतिरस्तु परे (ध्रुपदम्)
यस्त्वां ध्यायति धन्यः सन्ततमनुरागी।
स भवति जनिमृतिरहितः श्रेयः –फलभागी ।।1।।
त्वं जननी जनको मे त्वं विपदुद्धर्ता।
त्वं शरणः शरणप्रद सकलैनोहर्ता ।।2।।
पूर्णस्त्वं परमात्मन् सर्वान्तर्य्यामी।
ब्रह्मपरमेश्वरभर्तः त्वं सर्वस्वामी ।।3।।
त्वं पालयिता पातस्त्वं करुणासिन्धुः।
दुर्वृत्तेरपि जन्तोस्त्वमकारणबन्धुः ।।4।।
सर्वागोचर एकः सकलासुगणेशः।
प्राप्यः केन कुमतिना मयि का परमेशः ।।5।।
दीनोद्धारः प्रभुरसि सर्वार्त्युद्धर्ता।
पतितोद्धार्य्युत्थाप्यः स्नेहमसत्कर्ता ।।6।।
श्रौतिं स्मृतिमुज्जीवय संजीवय धर्म्मम्।
विद्यावृद्धिं विरचय शमयाप्युपधर्म्मम् ।।7।।
विषयविकारं शमयांहः संहर विष्णो!।
श्रद्धा भक्ती सेवां दृढय सतां विष्णो! ।।8।।

पुष्पाञ्जलि–ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्। तेह नाकम्महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।। राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने नमो वयं वश्रवणाय कुर्महि। समे कामान्कामकामाय मह्यं कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु। कुबेराय वैश्रवणाय राजाधिराजाय महाराजाय नमः।। ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात् सार्वभौमः सार्वायुष आन्तादापरार्धात्। पृथिव्यै समुद्रपर्यन्ताया एकराडिति।। तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन् गृहे। आविक्षितश्च कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इति। विश्वश्चक्षुरुत विश्वतो मुखो विश्वतो बाहुरुत विश्वतस्पात्। संबाहुभ्यां धमति संपतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन् देव एकः। विधिच्छिन्नतु यत्किञ्चित्तदच्छिद्रं प्रजायताम्। राज्ञः कर्तुः प्रजानाञ्च शान्तिर्भवतु सर्वदा।। श्रीमन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि नमः।।

अथ बान्धवैः सह प्रदक्षिणा –ॐ यानि कानि0

साष्टाङ्गप्रणामः –ॐ नमः सर्वहितार्थाय जगदाधारहेतवे।
साष्टाङ्गोऽयं प्रणामस्ते प्रयत्नेन मया कृतः।।

इति देवान् प्रणम्य ब्राह्मणानामपि चरणस्पर्शं कृत्वा करौ च बद्ध्वा तेषामाशिषो गृह्णीयात्।

अथाशीर्वादः–(वस्त्रेण शिर आच्छाद्य) ॐ स्वस्ति न इन्द्रो० दधातु ।।1।। श्रीवर्चस्वमायुष्यमारोग्यमाविधात्पवमानम्महीयते। धान्यं धनं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः ।।2।। ॐ पुनस्त्वादित्या रुद्रा वसवः समिन्धताम्पुनर्ब्रह्माणो वसुनीथयज्ञैः। घृतेन त्वन्तन्व वर्धयस्व सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः ।।3।।

मन्त्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः।
शत्रूणां बुद्धिनाशोस्तु मित्राणामुदयस्तव ।।4।।
आयुष्कामो यशस्कामः पुत्रपौत्रस्तथैव च।
आरोग्यं धनकामश्च सर्वे कामा भवन्तु ते ।।5।।

विघ्ना विनाशमायान्तु नाशमायान्तु शत्रवः।
प्रयत्ना सफलाः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः

(इत्यक्षतफलसहिताभिराशीर्भिराशीर्वादः)। यजमानो विप्रहस्ताल्लब्धानि आशीर्वादात्मकनारिकेलादीनि फलानि मङ्गलसूत्रं च स्वपत्न्या अञ्चले निदध्यात्।

क्षमा प्रार्थना–आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
पूजां चैव न जानामि "क्षमस्व परमेश्वर!" (परमेश्वरि) ।।1।।
अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया।
दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व "परमेश्वर!" ।।2।।
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं "सुरेश्वर!" (रि)
यत्पूजितं मया देव! देवि) परिपूर्णं तदस्तु मे ।।3।।
अज्ञानाद्विस्मृतेर्भ्रान्त्या यन्न्यूनमधिकं कृतम्।
तत्सर्वं क्षमयतां "देव!" (देवि) प्रसीद "परमेश्वर!" (रि) ।।4।।
कामेश्वर! (रि) जगन्नाथ! (जगन्मातः) सच्चिदानन्दविग्रह!
(हे)। गृहाणार्चामिमां सर्वां प्रसीद करुणानिधे! ।।5।।
अन्यथाशरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम।
तस्मात् कारुण्यभावेन रक्ष मां परमेश्वर! (रि)
इत्यादिमन्त्रैः क्षमाप्य विसर्जयेत्।

देवताग्नि विर्सजन

हस्ते पुष्पाक्षतानादायोत्थाय –
ॐ यान्तु देव (मातृ) गणाः सर्वे स्वशक्त्या पूजिता मया।
इष्टकामप्रसिद्ध्यर्थं पुरागमनाय च।।
ॐ उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयन्तस्त्वेमहे।
उपप्रयन्तु मरुतः सुदानवऽइन्द्र प्राशुर्भवाशचा ।।2।।
शिरसि करौ कृत्वा भूमौ जानुभ्यां पतित्वा–
ॐ ये च ब्रह्मादयो देवा अस्मिन् यज्ञे समागताः।
स्वस्वस्थानं ब्रजन्त्वेते शान्तिं कुर्वन्तु मे सदा ।।3।।
भक्तिहीनं क्रियाहीनं विधिहीनञ्च यत्कृतम्।
देवा क्षमध्वं तत्सर्वं सर्वदैव कृपाकराः।।4।।
ॐ आवाहितदेवताः स्वस्वस्थानानि गच्छत।।
गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ! स्वस्थाने परमेश्वर!।
यत्र ब्रह्मादयो देवास्तत्र गच्छ हुताशन!।।
ॐ यज्ञ यज्ञं गच्छ यज्ञपतिं गच्छ स्वां योनिं गच्छ स्वाहा।
एष ते यज्ञो यज्ञपते! सहसूक्तवाकः सर्ववीरस्तञ्जुषस्व स्वाहा।।

श्रीगणपतिलक्ष्म्यौ यजमानगृहे तिष्ठतम् इति सम्प्रार्थ्य गणपतिपीठस्थपूगीफलं गृहे स्थापयेत्। इति पुष्पाक्षतप्रक्षेपेण स्थापितसर्वकलशदेवताग्निञ्च विसृज्य सर्वदेवपीठानि आचार्याय दद्यात्

ॐ तत्सदद्य० इमानि पीठानि सकलसवस्त्रप्रतिमासहितानि सदक्षिणाकानि अमुकगोत्राय अमुकशर्म्मणे आचार्याय तु०। स्वस्तीति प्रतिवचनम्।

ततः–**ॐ मया यत्कृतं यथावकाशं यथाज्ञानं यथाशक्ति च अमुककर्म तेन श्री अमुकदेवः प्रीयताम्।** इति जलाक्षतक्षेपेण कर्मेश्वरार्पणं कुर्यात्।

ततः शेषयज्ञोपकरणादिकम् ऋत्विग्भ्यो दत्त्वा, साक्षतकरौ सम्पुटीकृत्य–**ॐ मया यत्कृम् अमुकदेवता "मन्त्रपुरश्चरणाख्यं" (हवनशान्त्याख्यं वा) यज्ञकर्म तत्कालहीनं भक्तिहीनं श्रद्धाहीनं द्रव्यहीनञ्च भवतां ब्राह्मणानां वचनात् श्रीगणपत्याद्यावाहितदेवताप्रसादाच्च सर्वविधैः परिपूर्णमस्त्विति भवन्तो ब्रुवन्तु।। अस्तु परिपूर्णम्,** इति ब्राह्मणा ब्रूयुः तत आचार्यः यजमानस्य शिरसि करं धृत्वा – **ॐ भद्रमस्तु शिवं चास्तु महालक्ष्मीः प्रसीदतु। रक्षन्तु त्वां सदा देवाः सम्पदः सन्तु सर्वदा।।** इति वदेत्।।

सत्यनारायण पूजा विधि

सत्यनारायण व्रत करने वाला व्यक्ति सङ्क्रान्ति, पूर्णिमा, एकादशी या जिस किसी दिन शाम को पवित्र होकर धोती पहनकर, दीपक जलाकर आचमन आदि कर संकल्प करे –

ॐ विष्णुः 3 अद्येहेत्यादिदेशकालौ सङ्कीर्त्य अमुकगोत्रेऽमुकशर्मा सपत्नीकोऽहं श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं समस्तदुरितोपशमनार्थं सकलमनोरथसिद्ध्यर्थं यथा सम्पादितसामग्र्या गणेश-गौरी- वरुणदेवता-दिपूजनपूर्वकं श्रीसत्यनारायणपूजनं तत्कथाश्रवणञ्च च करिष्ये। इति सङ्कल्प-

गौरी गणेश पूजन कलश स्थापन-पूजन षोडशोपचार से कर तदनन्तर सत्यनारायण की पूजा करें।

जौ से प्रतिष्ठा-**ॐ एतन्ते देव सवितर्य्यज्ञं प्राहुर्बृहस्पतये ब्रह्मणे तेन यज्ञमव तेन यज्ञपतिं तेन मामव। मनोर्जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्य्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ समिमं दधातु। विश्वेदेवा स इह मादयन्ताम् ॐ प्रतिष्ठ। ॐ भूर्भुवः स्वः सुवर्णप्रतिमायां श्रीसत्यनारायणदेव इहागच्छ इह तिष्ठ सुप्रतिष्ठितो वरदो भव।**

पीठपूजन-**ॐ विमलायै नमः, ॐ उत्कर्षिण्यै नमः, ॐ ज्ञानायै नमः, ॐ क्रियायै नमः, ॐ योगायै नमः, ॐ प्रह्व्यै नमः, ॐ सत्यायै नमः, ॐ ईशानायै नमः, मध्ये ॐ अनुग्रहायै नमः, ॐ नमो भगवते सर्वदेवात्मने सर्वात्मसंयोगपीठात्मने सत्यनारायणाय नमः।**

प्राणप्रतिष्ठा-ॐ आँ, ह्रीं क्रों यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ श्री सत्यनारायणदेवस्य जीवः सर्वेन्द्रियाणि वाक् मनः प्राणाः चक्षुः श्रोत्रं जिह्वा घ्राणादयं इहागच्छन्तु इह तिष्ठन्तु सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु।

ध्यान- ध्यायेत् सत्यं गुणातीतं गुणत्रयसमन्वितम्।
लोकनाथं त्रिलोकेशं कौस्तुभाभरणं हरिम्।।
नीलवर्णं पीतवस्त्रं श्रीवत्सपदभूषितम्।
गोविन्दं गोकुलानन्दं ब्रह्माद्यैरपि पूजितम्।।
आवाह-दामोदर समागच्छ लक्ष्म्या सह जगत्पते !
इमां मया कृतां पूजां गृहाण सुरसत्तम !।।

आसन- नानारत्नसमायुक्तं कार्तस्वरविभूषितम्।
आसनं देवदेवेश ! गृहाण पुरुोत्तम !।।

पाद्य- नारायण नमस्तेऽस्तु नरकार्णवतारक ! ।
पाद्यं गृहाण देवेश! मम सौख्यं विवर्द्धय।।

अर्घ्य- व्यक्ताऽव्यक्तस्वरूपाय हृषीकपतये नमः।
मया निवेदितो ह्यार्घ्यो भक्त्याऽयं प्रतिगृह्यताम्।।

आचमन- मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम्।
तदिदं कल्पितं देव सम्यगाचम्यतां त्वया।।

स्नान- गङ्गा च यमुना चैव नर्मदा च सरस्वती।
तीर्थानां पावनं तोयं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

पञ्चामृतस्नान-स्नानं पञ्चामृतैर्देव गृहाण पुरुषोत्तम ! ।
अनाथनाथ ! सर्वज्ञ ! गीर्वाणपरिपूजित !।।

शुद्धे जल से स्नान-परमानन्दतोयाऽब्धौ निमग्नतव मूर्तये।
साङ्गोपाङ्गमिदं स्नानं कल्पयामि प्रसीद मे।।

शरीर प्रोक्षण हेतु वस्त्र-वेदसूत्रसमायुक्ते यज्ञसामसमन्विते।
सर्ववर्णप्रदे देव वाससी प्रतिगृह्यताम्।।

वस्त्र के पश्चात आचमन करायें-

यज्ञोपवीत- ब्रह्माविष्णुमहेशैश्च निर्मितम् ब्रह्मसूत्रकम्।
यज्ञोपवीतदानेन प्रीयतां कमलापतिः।।

पुनः आचमन करायें-

चन्दन- **श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढयं सुमनोहरम्।**
विलेपनं सुरश्रेष्ठं चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।

अक्षत-अक्षत के स्थान पर जौ समर्पित करें।

पुष्प- **सुगन्धीनि सुपुष्पाणि देशकालोद्भवानि च।**
मयाऽऽनीतानि पूजार्थ पुष्पाणि प्रतिगृह्यताम्।।

तुलसीदल चढ़ावें

जौ से अङ्गपूजन करे-**ॐ दामोदराय नमः पादौ पूजयामि, ॐ माधवाय नमः जानुनी पूजयामि, ॐ कामपतये नमः गुह्यं पूजयामि, ॐ वामनाय नमः कटिं पूजयामि, ॐ पद्मनाभाय नमः नाभिं पूजयामि, ॐ विश्वमूर्तये नमः कण्ठं पूजयामि, ॐ सहस्त्रबाहवे नमः बाहुं पूजयामि, ॐ योगिने नमः चक्षुषी पूजयामि, ॐ उरगासनाय नमः ललाटं पूजयामि, ॐ नाकेश्वराय नमः नासिकां पूजयामि, ॐ श्रवणेशाय नमः श्रवणे पूजयामि, ॐ सर्वकामप्रदाय नमः शिखां पूजयामि, ॐ सहस्त्रशीर्षे नमः शिरः पूजयामि, ॐ सर्वरूपिणे नमः सर्वाङ्गं पूजयामि।**

धूप- **वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढयो गन्ध उत्तमः।**
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।

दीप- **साज्यं च वर्तिं संयुक्तं वह्निना योजितं मया।**
दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापह।।

नैवेद्य - **घृतपक्कं हविष्यान्नं पायसं च सशर्करम्।**
नानाविधं च नैवेद्यं विष्णो मे प्रतिगृह्यताम्।।

नैवेद्य के बाद आचमन-**सर्वपापहरं दिव्यं गाङ्गेयं निर्मलं जलम्।**
आचमनं मया दत्तं गृह्यतां पुरुषोत्तम ! ।।

ताम्बूल- **लवङ्गकर्पूरयुतं ताम्बूलं सुरपूजितम्।**
प्रीत्या गृहाण देवेश ! मम सौख्यं विवर्धय।।

फल- **इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव।**
तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि।।

आभूषण के स्थान पर द्रव्य चढ़ावें, क्षण पर्यन्त ध्यान करके **श्री सत्यनारायणाय नमः** का यथाशक्ति जो संभव हो जप करें।

प्रार्थना- गुह्यातिगुह्यगोप्ता त्वं गृहाणाऽस्मतकृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देव! त्वत् प्रसादात् सुरेश्वर!।।

आरती- चतुर्वर्तिसमायुक्तं गोघृतेन च पूरितम्।
नीराजनेन सन्तुष्टो भवत्येव जगत्पतिः।।
अनन्तस्तेजो बहिस्तेज एकीकृत्याऽमितप्रभम्।
आरार्तिकमिदं देव गृहाण मदनुग्रहात्।।

विशेषार्ध्य (फल एवं पुष्प के साथ) -नमः कमलनाभाय नमस्ते जलशायिने !।
नमस्तेऽस्तु हृषीकेश! गृहाणाऽर्घ्यं जगत्पते !।।

दामोदर जगन्नाथ ! भक्तानां भयनाशन।
मया निवेदितं भक्त्या गृह्यतामर्घ्यमच्युत।।

पुष्पाञ्जलि- यन्मया भक्तियुक्तेन पत्रं पुष्पं फलं जलम्।
निवेदितञ्च नैवेद्यं तद् गृहाणाऽनुकम्पया।।
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं जनार्दन!।
यत्पूजितं मया देव! परिपूर्णं तदस्तु मे।।

प्रार्थना- अमोघं पुण्डरीकाक्षं नृसिंहं दैत्यसूदनम्।
हृषीकेशं जगन्नाथं वागीशं वरदायकम्।।
गुणत्रयं गुणातीतं गोविन्दं गरुणध्वजम्।
जनार्दनं जनातीतं जानकीवल्लभं हरिम्।।
प्रणमामि सदा भक्त्या नारायणमतःपरम्।
दुर्गमे विषमे घोरे शत्रुभिः परिपीडते।।
निस्तारयस्व सर्वेषु तथाऽनिष्टभयेषु च।
नामान्येतानि सङ्कीर्त्य वाञ्छितं फलामाप्नुयात्।।
सत्यनारायणं देवं वन्देऽहं कामदं विभुम्।
लीलया विततं विश्वं येन तस्मै नमो नमः।।

प्रदक्षिणा- यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्ति प्रदक्षिणपदे पदे।।

चन्दन पुष्पमालादि से व्यास की पूजा कर दें, वरण सामग्रीं लेकर वरण करें -
एभिर्गन्धाक्षत पत्र-पुष्प-पूगीफल-द्रव्यैः श्रीसत्यनारायणकथाश्रवणकर्मणि व्यासकर्मकर्तुं व्यासत्वेन त्वामहं वृणे। व्यास कहें-**वृतोऽस्मीति,**

व्यास-प्रार्थना- नमोऽस्तु ते व्यास विशालबुद्धे ! फुल्लारविन्दायतपत्रनेत्र !।
येन त्वया भारततैलपूर्णः प्रज्वालितो ज्ञानमयप्रदीपः।।
व्यासाय विष्णुरूपाय व्यासरूपाय विष्णवे।
नमो वै ब्रह्मविधये वसिष्ठाय नमो नमः।।
अचतुर्वदनो ब्रह्मा द्विबाहुरपरो हरिः।
अभाललोचनः शम्भुर्भगवान् बादरायणिः।।
मङ्गलाचरण-नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम्।
देवीं सरस्वतीं व्यासं ततो जयमुदीरयेत्।।
जयति पराशरसूनुः सत्यवतीहृदयनन्दनो व्यासः।
यस्याऽऽस्य कमलगलितं वाङ्गमयममृतं जगत् पिबति।।
निगमकल्पतरोर्गलितं फलं शुकमुखादमृतद्रवसंयुतम्।
पिबत भागवतं रसमालयं मुहुरहो रसिका भुवि भावुकाः।।
ये देवा सन्तिः मेरौ वरकनकमये मन्दरे ये च यक्षाः।
पातालं ये भुजङ्गा फणिमणिकिरणध्वस्तमोहान्धकाराः।।
कैलासे स्त्रीविलासात् प्रमुदितहृदया ये च विद्याधराद्यास्ते
मोक्षद्वारभूतं मुनिवरवचनं श्रोतुमायान्तु सर्वे।।
मूकं करोति वाचालं पङ्गु लङ्घयते गिरिम्।
यत् कृपा तमहं वन्दे परमानन्दमाधवम्।।

श्रीसत्यनारायणव्रत कथा

प्रथमोऽध्यायः

व्यास उवाच-एकदा नैमिषारण्ये ऋषयः शौनकादयः। पप्रच्छुर्मुनयः सर्वे सूतं पौराणिकं खलु।।1।।

ऋषयः ऊचुः-व्रतेन तपसा किं वा प्राप्यते वाञ्छितं फलम्। तत्सर्वं श्रोतुमिच्छामः कथयस्व महामुने !।।2।।

सूत उवाच-नारदेनैव सम्पृष्टो भगवान् कमलापतिः। सुरर्षये यथैवाऽऽह तच्छृणुध्वं समाहिताः।।3।। एकदा नारदो योगी परानुग्रहकाङ्क्षया। पर्यटन् विविधान् लोकान् मर्त्य लोकमुपागतः।।4।। तत्र दृष्ट्वा जनान् सर्वान् नाना क्लेशसमन्वितान्। नाना योनिसमुत्पन्नान् क्लिश्यमानान् स्वकर्मभिः।।5।। केनोपायेन चैतेषां दुःखनाशो भवेद् ध्रुवम्। इति सञ्चिन्त्य मनसा विष्णुलोकं

गतस्तदा ।।6।। तत्र नारायणं देवं कृष्णवर्णं चतुर्भुजम्। शङ्ख-चक्र-गदा-पद्म-वन मालाविभूषितम्।।7।। दृष्ट्वा तं देवदेवेशं स्तोतुं समुपचक्रमे।

नारद-उवाच-नमो वाङ्मनसाऽतीतरूपायाऽनन्तशक्तये।।8।। आदि-मध्याऽन्तहीनाय निर्गुणाय गुणात्मने। सर्वेषामादिभूताय भक्तानामार्तिनाशिने।।9।। श्रुत्वा स्तोत्रं ततो विष्णुर्नारदं प्रत्यभाषत। श्रीभगवानुवाच-किमर्थमागतोऽसि त्वं किं ते मनसि वर्तते।।10।। कथयस्व महाभाग तत्सर्वं कथयामि ते।

नारद उवाच-मर्त्यलोके जनाः सर्वे नाना क्लेशसमन्विताः। नाना योनिसमुत्पन्नाः क्लिश्यन्ते पापकर्मभिः।।11।। तत्कथं शमयेन्नाथ लघूपायेन तद् वद। श्रोतुमिच्छामि तत्सर्वं कृपास्ति यदि ते मयि।।12।। श्रीभगवानुवाच-साधु पृष्टं त्वया वत्स! लोकानुग्रहकाङ्क्षया। यत्कृत्वा मुच्यते मोहात् तच्छृणुष्व वदामि ते।।13।। व्रतमस्ति महत्पुण्यं स्वर्गे मर्त्ये च दुर्लभम्। तव स्नेहान्मया वत्स! प्रकाशः क्रियतेऽधुना।।14।। सत्यनारायणस्यैतद् व्रतं सम्यग्विधानतः। कृत्वा सद्यःसुखं भुक्त्वा परत्र मोक्षमाप्नुयात्।।15।। तच्छ्रुत्वा भगवद् वाक्यं नारदो मुनिरब्रवीत्।

नारद उवाच-किं फलं किं विधानं च कृतं केनैव तद्व्रतम्।।16।। तत्सर्वं विस्तराद् ब्रूहि कदा कार्यं व्रतं हि तत्। श्रीभगवानुवाच-दुःख-शोकादिशमनं धन-धान्यप्रवर्धनम्।।17।। सौभाग्य-सन्ततिकरं सर्वत्र विजयप्रदम्। यस्मिन् कस्मिन् दिने मर्त्यो भक्ति श्रद्धासमन्वितः।।18।। सत्यनारायणं देवं यजेच्चैव निशामुखे। ब्राह्मणैर्बान्धवैश्चैव सहितो धर्मतत्परः।।19।। नैवेद्यं भक्तितो दद्यात् सपादं भक्तिसंयुतम्। रम्भाफलं घृतं क्षीरं गोधूमस्य च चूर्णकम्।।20।। अभावे शालिचूर्णं वा शर्करा वा गुडं तथा। सपादं सर्वभक्ष्याणि चैकीकृत्य निवेदयेत् ।।21।। विप्राय दक्षिणां दद्यात् कथां श्रुत्वा जनैः सह। ततश्च बन्धुभिः सार्धं विप्रांश्च प्रतिभोजयेत्।।22।। प्रसादं भक्षयेद् भक्त्या नृत्यगीतादिकं चरेत्। ततश्च स्वगृहं गच्छेत् सत्यनारायणं स्मरन्।। 23।। एवं कृते मनुष्याणां वाञ्छासिद्धिर्भवेद् ध्रुवम्। विशेषतः कलियुगे लघूपायोऽस्ति भूतले।।24।।

इति श्री स्कन्दपुराणे रेवाखण्डे सूत-शौन-संवादे सत्यनारायण-व्रत कथायां प्रथमोऽध्यायः।।1।।

द्वितीयोऽध्यायः

सूत उवाच-अथाऽन्यत् सम्प्रवक्ष्यामि कृतं येन पुरा व्रतम्। कश्चित् काशीपुरे रम्ये ह्यासीद् विप्रोऽतिनिर्धनः।।1।। क्षुत्तृड्भ्यां व्याकुलो भूत्वा नित्यं बभ्राम भूतले। दुःखितं ब्राह्मणं दृष्ट्वा भगवान् ब्राह्मणप्रियः।।2।। वृद्धब्राह्मणरूपस्तं पप्रच्छ द्विजमादरात्। किमर्थं भ्रमसे विप्र! महीं नित्यं सुदुः खितः ।।3।। तत्सर्वं श्रोतुमिच्छामि कथ्यतां द्विजसत्तम!। ब्राह्मणोऽतिदरिद्रोऽहं भिक्षार्थं वै भ्रमे महीम्।।4।। उपायं यदि जानासि कृपया कथय प्रभो! वृद्धब्राह्मण उवाच-सत्यनारायणो विष्णुर्वाञ्छितार्थफलप्रदः।।5।। तस्य त्वं पूजनं विप्र कुरुष्व व्रतमुत्तमम्। यत्कृत्वा सर्वदुःखेभ्यो मुक्तो भवति मानवः ।।6।। विधानं च व्रतस्यास्य विप्रायाऽऽभाष्य यत्नतः। सत्यनारायणो वृद्ध-स्तत्रैवान्तर धीयत।।7।। तद् व्रतं सङ्करिष्यामि यदुक्तं ब्राह्मणेन वै। इति सञ्चिन्त्य विप्रोऽसौ रात्रौ निद्रां न लब्धवान्।।8।। ततः प्रातः समुत्थाय सत्यानारायणव्रतम्। करिष्य इति सङ्कल्प्य भिक्षार्थमगद् द्विजः।।9।। तस्मिन्नेव दिने विप्रः प्रचुरं द्रव्यमाप्तवान्। तेनैव बन्धुभिः सादर्ध सत्यस्य व्रतमाचरत्।।10।। सर्वदुःखविनिर्मुक्तः सर्वसम्पत् समन्वितः। बभूव स द्विज-श्रेठो व्रतास्यास्य प्रभावतः।।11।। ततः प्रभृतिकालं च मासि मासि व्रतं कृतम्। एवं नारायणस्येदं व्रतं कृत्वा द्विजोत्तमः।।12।। सर्वपापविनिर्मुक्तो दुर्लभं मोक्षमाप्तवान्। व्रतमस्य यदा विप्राः पृथिव्यां सञ्चरिष्यन्ति।।13।। तदैव सर्वदुःखं च मनुजस्य विनश्यति। एवं नारायणेनोक्तं नारदाय महात्मने ।।14।। मया तत्कथितं विप्राः किमन्यत् कथयामि वः। ऋषय ऊचुः-तस्माद् विप्राच्छ्रुतं केन पृथिव्यां चरितं मुने। तत्सर्वं श्रोतुमिच्छामः श्रद्धाऽस्माकं प्रजायते।।15।। सूत उवाच-श्रृणुध्वं मुनयःसर्वे व्रतं येन कृतं भुवि। एकदा स द्विजवरो यथाविभवविस्तरैः।।16।। बन्धुभिः स्वजैनः सार्ध व्रतं कर्तुं समुद्यतः। एतस्मिन्नन्तरे काले काष्ठक्रेता समागमत्।।17।। बहिः काष्ठं च संस्थाप्य विप्रस्य गृहमाययौ। तृष्णया पीडितात्मा च दृष्ट्वा विप्रकृतं व्रतम् ।।18।। प्रणिपत्य द्विजं प्राह किमिदं क्रियते त्वया। कृते किं फलमाप्नोति विस्तराद् वद मे प्रभो! ।।19।। विप्र उवाच-सत्यनाराणस्येदं व्रतं सर्वेप्सित- प्रदम्। तस्य प्रसादान्मे सर्वं धनधान्यादिकं महत्।।20।। तस्मादेतत् ब्रतं ज्ञात्वा काष्ठक्रेतातिहर्षितः। पपौ जलं प्रसादं च भुक्त्वा स नगरं ययौ।।21।। सत्यनारायणं देवं मनसा इत्यचिन्तयत्। काष्ठं विक्रयतो ग्रामे प्राप्यते चाद्य यद्धनम्।।22।। तेनैव सत्यदेवस्य करिष्ये व्रतमुत्तमम्। इति सञ्चिन्त्य मनसा काष्ठं धुत्वा तु मस्तके।।23।। जगाम नगरे रम्ये धनिनां यत्र संस्थितिः। तद्दिने काष्ठमूल्यं च द्विगुणं प्राप्तवानसौ।।24।। ततः प्रसन्नहृदयः

सुपक्वं कदलीफलम्। शर्करा-घृत-दुग्धं च गोधूमस्य च चूर्णकम् ।।25।। कृत्वैकत्र सपादं च गृहीत्वा स्वगृहं ययौ। ततो बन्धून् समाहूय चकार विधिना व्रतम्।।26।। तद् व्रतस्य प्रभावेण धनपुत्रन्वितोऽभवत्। इह लोके सुखं भुक्त्वा चान्ते सत्यपुरं ययौ।।27।।

इति श्री स्कन्दपुराणे रेवाखण्डे सूत शौनकसंवादे सत्यनारायण व्रतकथायां द्वितीयोऽध्यायः ।।2।।

तृतीयोऽध्यायः

सूत उवाच-पुनरग्रे प्रवक्ष्यामि श्रृणुध्वं मुनिसत्तमाः। पुरा चोल्कामुखो नाम नृपश्चासीन्महामतिः।।1।। जितेन्द्रियः सत्यवादी ययौ देवालयं प्रति। दिने दिने धनं दत्त्वा द्विजान् सन्तोषयत् सुधीः।।2।। भार्या तस्य प्रमुग्धा च सरोजवदना सती। भद्रशीलानदीतीरे सत्यस्य व्रतमाचरत्।।3।। एतस्मिन् समये तत्र साधुरेकः समागतः। वाणिज्यार्थं बहुधनैरनेकैः परिपूरिताम् ।।4।। नावं संस्थाप्य तत्तीरे जगाम नृपतिं प्रति। दृष्ट्वा स व्रतिनं भूपं पप्रच्छ विनयान्वितः।।5।। साधुरुवाच-किमिदं कुरुषे राजन्! भक्तियुक्तेन चेतसा। प्रकाशं कुरु तत्सर्वं श्रोतुमिच्छामि साम्प्रतम्।।6।। राजोवाच-पूजनं क्रियते साधो! विष्णोरतुलतेजसः । व्रतं च स्वजनैः सार्धं पुत्राद्यावाप्तिकाम्यया।।7।। भूपस्य वचनं श्रुत्वा साधुः प्रोवाच सादरम्। सर्वं कथय में राजन्! करिष्येऽहं तवोदितम्।।8।। ममापि सन्ततिर्नास्ति ह्येतस्माज्जायते ध्रुवम्। ततो निवृत्य वाणिज्यात् सानन्दो गृहमागतः।।9।। भार्यायै कथितं सर्वं व्रतं सन्ततिदायकम्। तदा व्रतं करिष्यामि यदा में सन्ततिर्भवेत् ।।10।। इति लीलावती प्राह स्वपत्नीं साधुसत्तमः। एकस्मिन् दिवसे तस्य भार्या लीलावती सती।।11।। भर्तृयुक्ताऽऽनन्दचित्ताऽभवद्धर्मपरायणा। गर्भिणी साऽभवत्तस्य भार्या सत्यप्रसादतः ।।12।। दशमे मासि वै तस्याः कन्यारत्नमजायत। दिने दिने सा ववृधे शुक्लपक्षे यथा शशी।।13।। नाम्ना कलावती चेति तन्नामकरणं कृतम्। ततो लीलावती प्राह स्वामिनं मधुरं वचः।।14।। न करोषि किमर्थं वै पुरा सङ्कल्पितं व्रतम्। साधुरुवाच-विवाहसमये त्वस्याः करिष्यामि व्रतं प्रिये!।।15।। इति भार्यां समाश्वास्य जगाम नगरं प्रति। ततः कलावती कन्या वृधे पितृवेश्मनि।।16।। दृष्ट्वा कन्यां ततः साधुर्नगरे सखिभिः सह। मन्त्रयित्वा द्रुतं दूतं प्रेषयामास धर्मवित्।।17।। विवाहार्थं च कन्याया वरं श्रेष्ठ विचारय। तेनाऽऽज्ञप्तश्च दूतोऽसौ काञ्चनं नगरं ययौ ।।18।। तस्मादेकं वणिक्पुत्रं समादायाऽऽगतो हि सः। दृष्ट्वा तु सुन्दरं बालं वणिक्पुत्रं गुणान्वितम्।।19।। ज्ञातिभि-र्बन्धुभिः सार्धं परितुष्टेन चेतसा। दत्तवान् साधुपुत्राय कन्यां विधि-विधानतः ।।20।। ततो भाग्यवशात्तेन विस्मृतं व्रतमुत्तमम्। विवाहसमये

तस्यास्तेन रुष्टोऽभवत् प्रभुः ।।21।। ततः कालेन नियतो निजकर्मविशारदः। वाणिज्यार्थं ततः शीघ्रं जामातृसहितो वणिक्।।22।। रत्नसारपुरे रम्ये गत्वा सिन्धुसमीपतः। वाणिज्यमकरोत् साधुर्जामात्र श्रीमता सह।। 23।। तौ गतौ नगरे रम्ये चन्द्रकेतोर्नृपस्य च। एतस्मिन्नेव काले तु सत्यनारायणः प्रभुः ।।24।। भ्रष्टप्रतिज्ञमा-लोक्य शापं तस्मै प्रदत्तवान्। दारुणं कठिनं चास्य महद्दुःखं भविष्यिति।।25।। एकस्मिन् दिवसे राज्ञो धनमादाय तस्करः। तत्रैव चागतश्चौरौ वणिजौ यत्र संस्थितौ।।26।। तत्पश्चाद् धावकान् दूतान् दृष्ट्वा भीतेन चेतसा। धनं संस्थाप्य तत्रैव स तु शिघ्रमलक्षितः।।27।। ततो दूताः समायाता यत्रास्ते सज्जनो वणिक्। दृष्ट्वा नृपधनं तत्र बद्ध्वाऽ ऽनीतौ वणिक्सुतौ।।28।। हर्षेण धावमानाश्च ऊचुर्नृपसमीपतः। तस्करौ द्वौ समानीतौ विलोक्याऽऽज्ञापय प्रभो।।29।। राज्ञाऽऽज्ञप्तास्ततः शीघ्रं दृढं बद्ध्वा तु तावुभौ। स्थापितौ द्वौ महादुर्गे कारागारेऽविचारतः।।30।। मायया सत्यदेवस्य न श्रुतं कैस्तयोर्वचः। अतस्तयोर्धनं राज्ञा गृहीतं चन्द्रकेतुना।।31।। तच्छापाच्च तयोर्गेहे भार्या चैवातिदुःखिता। चौरेणापहृतं सर्वं गृहे यच्च स्थितं धनम्।।32।। आधिव्याधिसमायुक्ता क्षुत्पिपसातिदुःखिता। अन्नचिन्तापरा भूत्वा बभ्राम च गृहे गृहे।।33।। कलावती तु कन्यापि बभ्राम प्रतिवासरम्। एकस्मिन् दिवसे जाता क्षुधार्ता द्विजमन्दिरम् ।।34।। गत्वाऽपश्यद् व्रतं तत्र सत्यनारायणस्य च। उपविश्य कथां श्रुत्वा वरं सम्प्रार्थ्य वाञ्छितम्।।35।। प्रसादभक्षणं कृत्वा ययौ रात्रौ गृहं प्रति। माता लीलावती कन्यां कथयामास प्रेमतः।।36।। पुत्रि रात्रौ स्थिता कुत्र किं ते मनसि वर्तते। कन्या कलावती प्राह मातरं प्रति सत्वरम्।।37।। द्विजालये व्रतं मातर्दृष्टं वाञ्छितसिद्धिदम्। तच्छ्रुत्वा कन्यका वाक्यं व्रतं कर्तु समुद्यता।।38।। सा तदा तु वणिग्भार्या सत्यनारायणस्य च। व्रतं चक्रे सैव साध्वी बन्धुभिः स्वजनैः सह।।39।। भर्तृ-जामातरौ क्षिप्रमागच्छेतां स्वमाश्रमम्। इति दिव्यं वरं बव्रे सत्यदेवं पुनः पुनः।।40।। अपराधं च मे भर्तुर्जामातुः क्षन्तुमर्हसि। व्रतेनानेन तुष्टोऽसौ सत्यनारायणः पुनः।।41।। दर्शयामास स्वप्नं हि चन्द्रकेतुं नृपोत्तमम्। वन्दिनौ मोचय प्रातर्वणिजौ नृपसत्तम!।।42।। देयं धनं च तत्सर्वं गृहीतं यत्त्वयाऽधुना। नो चेत् त्वां नाशयिष्यामि सराज्यं-धन-पुत्रकम्।।43।। एवमाभाष्य राजानं ध्यानगम्योऽभवत् प्रभुः। ततः प्रभातसमये राजा च स्वजनैः सह।।44।। उपविश्य सभामध्ये प्राह स्वप्नं जनं प्रति।। बद्धौ महाजनौ शीघ्रं मोचय द्वौ वणिक्सुतौ।।45।। इति राज्ञो वचः श्रुत्वा मोचयित्वा महाजनौ। समानीय नृपस्याऽग्रे प्राहुस्ते विनयान्विताः।।46।। आनीतौ द्वौ वणिक्पुत्रै मुक्त्वा निगडबन्धनात्। ततो

महाजनौ नत्वा चन्द्रकेतुं नृपोत्तमम्।।47।। स्मरन्तौ पूर्ववृत्तान्तं नोचतुर्भयविह्वलौ। राजा वणिक्सुतौ वीक्ष्य वचः प्रोवाच सादरम्।।48।। दैवात् प्राप्तं महद्दुःखमिदानीं नास्ति वै भयम्। तदा निगडसन्त्यागं क्षौरकर्माऽद्यकारयत्।।49।। वस्त्रालङ्कारकं दत्त्वा परितोष्य नृपश्च तौ। पुरस्कृत्य वणिक्पुत्रौ वचसाऽतोायद् भृशम्।।50।। पुराऽऽनीतं तु यद् द्रव्यं द्विगुणीकृत्य दत्तवान्। प्रोवाच तौ ततो राजा गच्छ साधो! निजाश्रमम्।।51।। राजानं प्रणिपत्याऽऽह गन्तव्यं त्वत्प्रसादतः। इत्युक्त्वा तौ महावैश्यौ जग्मतुः स्वगृहं प्रति।।52।।

इति श्री स्कन्दपुराणे रेवाखण्डे सूतशौनकसंवादे सत्यनारायणव्रतकथायां तृतीयोध्यायः।

चतुर्थोध्यायः

सूत उवाच-यात्रां तु कृतवान् साधुर्मङ्गलायनपूर्विकाम्। ब्राह्मणेभ्यो धनं दत्त्वा तदा तु नगरं ययौ।।1।। कियद् दूरे गते साधौ सत्यनारायणः प्रभुः। जिज्ञासां कृतवान् साधो! किमस्ति तव नौ स्थितम्।।2।। ततो महाजनौ मत्तौ हेलया च प्रहस्य वै। कथं पृच्छसि भो दण्डिन्! मुद्रां नेतुं किमिच्छसि।।3।। लता-पत्रदिकं चैव वर्तते तरणौ मम। निष्ठुरं च वचः श्रुत्वा सत्यं भवतु ते वचः।।4।। एवमुक्त्वा गतः शीघ्रं दण्डी तस्य समीपतः। कियद्दूरे ततो गत्वा स्थितः सिन्धुसमीपतः।।5।। गते दण्डिनि साधुश्च कृतनित्यक्रियस्तदा। उत्थितां तरणीं दृष्ट्वा विस्मयं परमं ययौ ।।6।। दृष्ट्वा लतादिकं चैव मूर्च्छितो न्यपतद् भुवि। लब्धसंज्ञो वणिक् पुत्रस्ततश्चिन्ताऽन्वितोऽभवत्।।7।। तदा तु दुहितुः कान्तो वचनं चेदमब्रवीत्।। किमर्थं क्रियते शोकः शापो दत्तश्च दण्डिना।।8।। शक्यतेऽनेन सर्वं हि कर्तुं चात्र न संशयः। अतस्तच्छरणं याहि वाञ्छितार्थो भविष्यति ।।9।। जामातुर्वचनं श्रुत्वा तत्सकाशं गतस्तदा।। दृष्ट्वा च दण्डिनं भक्त्या नत्वा प्रोवाच सादरम्।।10।। क्षमस्व चापराधं मे यदुक्तं तव सन्निधौ।। एवं पुनः पुनर्नत्वा महाशोकाऽऽकुलोऽभवत्।।11।। प्रोवाच वचनं दण्डी विलपन्तं विलोक्य च। मारोदीः श्रृणु मद्वाक्यं मम पूजाबहिर्मुखः।।12।। ममाऽऽज्ञया च दुर्बुद्धे! लब्धं दुःखं मुहुर्मुहुः। तच्छ्रुत्वा भगवद् वाक्यं व्रतं कर्तुं समुद्यतः।।13।। साधुरुवाच-त्वन्मायामोहिताः सर्वे ब्रह्माद्यास्त्रिदिवौकसः। न जानन्ति गुणान् रूपं तवाऽऽश्चर्यमिदं प्रभो।।14।। मूढोऽहं त्वां कथं जाने मोहितस्तव मायया। प्रसीद पूजमिष्यामि यथाविभवविस्तरैः।।15।। पुरा वित्तैश्च तत्सर्वैः पाहि मां शरणागतम्। श्रुत्वा भक्तियुतं वाक्यं परितुष्टो जनार्दनः।।16।। वरं च वाञ्छितं दत्त्वा तत्रैवाऽन्तर्दधे हरिः। ततो नौकां समारुह्य दृष्ट्वा वित्तप्रपूरिताम्।।17।। कृपया सत्यदेवस्य

सफलं वाञ्छितं मम। इत्युक्त्वा स्वजनैः सार्द्धं पूजां कृत्वा यथाविधि।।18।। हर्षेण चाऽभवत्पूर्णः सत्यदेवप्रसादतः। नावं संयोज्य यत्नेन स्वदेशगमनं कृतम्।। 19।। साधुर्जामातरं प्राह पश्य रत्नपुरीं मम। दूतं च प्रेषयामास निजवित्तस्य रक्षकम्।।20।। दूतोऽसौ नगरं गत्वा साधुभार्यां विलोक्य च। प्रोवाच वाञ्छितं वाक्यं नत्वा बद्धाञ्जलिस्तदा।।21।। निकटे नगरस्यैव जामात्रा सहितो वणिक्। आगतो बन्धुवर्गैश्च वित्तैश्च बहुभिर्युतः ।।22।। श्रुत्वा दूतमुखाद् वाक्यं महाहर्षवती सती। सत्यपूजां ततः कृत्वा प्रोवाच तनुजां प्रति।।23।। ब्रजामि शीघ्रमागच्छ साधुसन्दर्शनाय च। इति मातृवचः श्रुत्वा व्रतं कृत्वा समासतः ।।24।। प्रसादं च परित्यज्य गता साऽपि पतिं प्रति। तेन रुष्टः सत्यदेवो भर्तारं तरणीं तथा।।25।। संहृत्य च धनैः सार्धं जले तस्मिन्नमज्जयत्। ततः कलावती कन्या न विलोक्य निजं पतिम्।।26।। शोकेन महता तत्र रुदती चाऽपतद् भुवि। दृष्ट्वा तथाविधां नौकां कन्यां च बहुदुःखिताम् ।।27।। भीतेन मनसा साधुः किमाश्चर्यमिदं भवेत् चिन्त्यमानाश्च ते सर्वे बभूवुस्तरिवाहकाः।।28।। ततो लीलावती कन्या दृष्ट्वा सा विह्वलाऽभवत्। विललापऽतिदुः खेन भर्तारं चेदमब्रतीत्।।29।। इदानीं नौकया सार्धं कथं सोऽभूदलक्षितः। न जाने कस्य देवस्य हेलया चैव सा हृता।।30।। सत्यदेवस्य माहात्म्यं ज्ञातुं वा केन शक्यते। इत्युक्त्वा विलालपैवं ततश्च स्वजनैः सह।।31।। ततौ लीलावती कन्या क्रोडे कृत्वा रुरोद ह। ततः कलावती कन्या नष्टे स्वामिनि दुःखिता।।32।। गृहीत्वा पादुकां तस्याऽनुगन्तुं च मनोदधे। कन्यायाश्चरितं दृष्ट्वा सभार्यः सज्जनो वणिक्।।33।। अतिशोकेन सन्तप्तश्चिन्तयामास धर्मवित्। हृतं वा सत्यदेवेन भ्रान्तोऽहं सत्यमायया।।34।। सत्यपूजां करिष्यामि यथाविभवविस्तरम्। इति सर्वान् समाहूय कथयित्वा मनोरथम्।।35।। नत्वा च दण्डवद् भूमौ सत्यदेवं पुनः पुनः। ततस्तुष्टः सत्यदेवो दीनानां परिपालकः।।36।। जगाद वचनं चैनं कृपया भक्तवत्सलः। त्यक्त्वा प्रसादं ते कन्या पतिं द्रष्टुं समागता।।37।। अतोऽदृष्टोभवत्तस्याः कन्यकायाः पतिर्ध्रुवम्। गृहं गत्वा प्रसादं च भुक्त्वा साऽऽयाति चेत्पुनः ।।38।। लब्धभर्त्री सुता साधो! भविष्यति न संशयः। कन्यका तादृषं वाक्यं श्रुत्वा गगनमण्डलात्।।39।। क्षिप्रं तदा गृहं गत्वा प्रसादं च बुभोज सा। तत् पश्चात्पुनरागत्य सा ददर्श निजं पतिम्।।40।। ततः कलावती कन्या जगाद पितरं प्रति। इदानीं च गृहं याहि विलम्बं कुरुषे कथम्।।41।। तच्छ्रुत्वा कन्यकावाक्यं सन्तुष्टोऽभूद वणिक्सुतः। पूजनं सत्यदेवस्य कृत्वा विधिविधानतः।।42।। धनैर्बन्धुगणैः सार्धं जगाम निजमन्दिरम्।। पौर्णमास्यां

च सङ्क्रान्तौ कृतवान् सत्यपूजनम्।।43।। इह लोके सुखं भुक्त्वा चान्ते सत्यपुरं ययौ।।44।।

इति श्री सकन्दपुराणे रेवाखण्डे सूतशौनकसंवादे सत्यनारायणव्रतकथायां चतुर्थोऽध्याय:।।4।।

पञ्चमोध्याय:

सूत उवाच-अथान्यच्च प्रवक्ष्यामि श्रृणध्वं मुनिसत्तमा:।। आसीत् तुङ्ग-ध्वजो राजा प्रजापालनतत्पर:।।1।। प्रसादं सत्यदेवस्य त्यक्त्वा दु:खमवाप स:। एकदा स वनं गत्वा हत्वा बहुविधान् पशून्।।2।। आगत्य वटमूलं च दृष्ट्वा सत्यस्य पूजनम्। गोपा: कुर्वन्ति सन्तुष्टा भक्तियुक्ता: सबन्धवा:।।3।। राजा दृष्ट्वा तु दर्पेणा न गतो न ननाम स:। ततो गोपगणा: सर्वे प्रसादं नृपसन्निधौ ।।4।। संस्थाप्य पुनरागत्य भुक्त्वा सर्वे यथेप्सितम्। तत: प्रसादं संत्यज्य राजा दु:खमवाप स:।।5।। तस्य पुत्रशतं नष्टं धनधान्यादिकं च यत्। सत्यदेवेन तत्सर्वं नाशितं मम निश्चितम्।।6।। अतस्तत्रैव गच्छामि यत्र देवस्य पूजनन्। मनसा तु विनिश्चित्य ययौ गोपालसन्निधौ।।7।। ततोऽसौ सत्यदेवस्य पूजां गोपगणै: सह। भक्तिश्रद्धान्वितो भूत्वा चकार विधिना नृप:।।8।। सत्यदेवप्रसादेन धनपुत्राऽन्वितोऽभवत्। इह लोके सुखं भुक्त्वा पश्चात् सत्यपुरं ययौ।।9।। य इदं कुरुते सत्यव्रतं परम दुर्लभम्। श्रृष्णोति च कथां पुण्यां भक्तियुक्तां फलप्रदाम्।।10।। धनधान्यादिकं तस्य भवेत् सत्यप्रसादत:। दरिद्रो लभते वित्तं बद्धो मुच्येत बन्धनात्।।11।। भीतो भयात् प्रमुच्येत सत्यमेव न संशय:। ईप्सितं च फलं भुक्त्वा चान्ते सत्यपुरं ब्रजेत्।।12।। इति व: कथितं विप्रा: सत्यनारायणव्रतम्। यत्कृत्वा सर्वदु:खेभ्यो मुक्तो भवति मानव:।।13।। विशेषत: कलियुगे सत्यपूजा फलप्रदा। केचित्कालं वदिष्यन्ति सत्यमीशं तमेव च।।14।। सत्यनारायणं केचित् सत्यदेवं तथापरे। नाना रूपधरो भूत्वा सर्वेषामीप्सितप्रद:।।15।। भविष्यति कलौ सत्यव्रतरूपी सनातन:। श्रीविष्णुना धृतं रूपं सर्वेषामीप्सितप्रदम्।।16।। श्रृणोति य इमां नित्यं कथा परमदुर्लभाम्। तस्य नश्यन्ति पापानि सत्यदेव प्रसादत:।।17।। व्रतं यैस्तु कृतं पूर्वं सत्यनारायणस्य च। तेषां त्वपरजन्मानि कथयामि मुनीश्वरा:।।19।। शतानन्दो महा-प्राज्ञ: सुदामा ब्राह्मणोऽभवत्। तस्मिन् जन्मनि श्रीकृष्णं ध्यात्वा मोक्षमवाप ह।।19।। काष्ठभारवहो भिल्लो गुहराजो बभूव ह। तस्मिन् जन्मनि श्रीरामसेवया मोक्षमाप्तवान्।।20।। उल्कामुखो महाराजो नृपो दशरथो-ऽभवत्। श्रीरङ्नाथं सम्पूज्य श्रीवैकुण्ठं तदाऽगमत्।।21।। धार्मिक: सत्यसन्धश्च साधुर्मोरध्वजोऽभवत्। देहार्धं क्रकचैश्छित्वा दत्त्वा

मोक्षमवाप ह।।22।। तुङ्गध्वजो महाराजः स्वायम्भुरभवत् किल। सर्वान् भागवतान् कृत्वा श्रीवैकुण्ठं तदाऽगमत्।।23।।

इति श्री स्कन्दपुराणे रेवाखण्डे सूतशौनकसंवादे। सत्यनारायणव्रतकथायां पञ्चमोऽध्यायः।। 5।।

श्रीमद्भागवत पूजन विधि

प्रातः काल स्नान के पश्चात् अपना नित्य-नियम समाप्त करके पहले भगवत्सम्बन्धी स्तोत्रों एवं पदों के द्वारा मङ्गलाचरण और वन्दना करे। इसके बाद आचमन और प्राणायाम करके-

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवा ँ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः।।

इत्यादि मन्त्रों से शान्तिपाठ करे। इसके पश्चात् भगवान् श्रीकृष्ण, श्रीव्यासजी, शुकदेवजी तथा श्रीमद्भागवत-ग्रन्थ की षोडशोपचार से पूजा करनी चाहिये। यहाँ श्रीमद्भागवत पुस्तक के षोडशोपचार पूजन की मन्त्र सहित विधि दी जा रही है। इसी के अनुसार श्रीकृष्ण आदि की भी पूजा करनी चाहिये। निम्नाङ्कित वाक्य पढ़कर पूजन के लिये संकल्प करना चाहिये। संकल्प के समय दाहिने हाथ की अनामिका-अङ्गुलि में पवित्री पहने और हाथ में जल लिये रहे। संकल्पवाक्य इस प्रकार है-

ॐ तत्सत्। ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः.......... अमुकगोत्रोत्पन्नस्य अमुकशर्मणः (वर्मणः गुप्तस्य वा) मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य श्रीगोवर्धनधरण-चरणारविन्दप्रसादात् सर्वसमृद्धिप्राप्त्यर्थं भगवदनुग्रहपूर्वक-भगवदीयप्रेमोपलब्धये च श्रीभगवन्नामात्मकभगवत्स्वरूपश्रीभागवतस्य पाठेऽधिकारसिद्ध्यर्थं श्रीमद्भागवतस्य प्रतिष्ठां पूजनं चाहं करिष्ये।

इस प्रकार संकल्प करके-

तदस्तु मित्रावरुणा तदग्ने शंयोऽस्मभ्यमिदमस्तु शस्तम्।
अशीमहि गाधमुत प्रतिष्ठां नमो दिवे वृहते सादनाय।।

यह मंत्र पढ़कर श्रीमद्भागवत की सिंहासन या अन्य किसी आसन पर स्थापना करे। तत्पश्चात् पुरुषसूक्त के एक-एक मन्त्रद्वारा क्रमशः षोडश उपचार अर्पण करते हुए पूजन करे।

आवाहन-**ॐ सहस्रशीर्षा० श्रीभगवन्नामात्मकस्वरूपिणे श्रीभागवताय नमः। आवाहयामि।**

इस मंत्र से भगवान् के नामस्वरूप श्रीमद्भागवत को नमस्कार करके आवाहन करे।

आसन-**ॐ पुरुष एवेदं0 श्रीभगवन्नामात्मकस्वरूपिणे श्रीभागवताय नमः। आसनं समर्पयामि।** इस मन्त्र से आसन समर्पण करे।

पाद्य-**ॐ एतावानस्य0 श्रीभगवन्नामात्मकस्वरूपिणे श्रीभागवताय नमः। पाद्यं समर्पयामि।** इस मंत्र से पाद्य समर्पित करे।

अर्घ्य-**ॐ त्रिपादूर्ध्व0 श्रीभगवन्नामात्मकस्वरूपिणे श्रीभागवताय नमः। अर्घ्यं समर्पयामि।** इस मन्त्र से पैर पखारने के लिये जल समर्पण करे।

आचमन-**ॐ ततो विराडजायत0 श्रीभगवन्नामात्मकस्वरूपिणे श्रीभागवताय नमः। आचमनीयं समर्पयामि।** इस मन्त्र से आचमन के लिये जल या गङ्गाजल अर्पण करे।

स्नान-**ॐ तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतः सम्भृतं0 श्रीभगवन्नामात्मकस्वरूपिणे श्रीभागवताय नमः। स्नानीयं समर्पयामि।** इस मन्त्र से स्नान के लिये जल अर्पण करे।

वस्त्र-**ॐ यत्पुरुषेण0 श्रीभगवन्नामात्मकस्वरूपिणे श्रीभागवताय नमः। वस्त्रं समर्पयामि।** इस मन्त्र से वस्त्र समर्पण करे।

यज्ञोपवीत-**ॐ तं यज्ञं0 श्रीभगवन्नामात्मकस्वरूपिणे श्रीभागवताय नमः। यज्ञोपवीतं समर्पयामि।** इस मन्त्र से यज्ञोपवीत अर्पण करे।

चन्दन-**ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः0 श्रीभगवन्नामात्मकस्वरूपिणे श्रीभागवताय नमः। चन्दनं समर्पयामि।** इस मन्त्र से चन्दन चढ़ाये।

पुष्प-**ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ऋचः0 श्रीभगवन्नामात्मकस्वरूपिणे श्रीभागवताय नमः। पुष्पं समर्पयामि।** इस मंत्र से फूल चढ़ाये।

धूप-**ॐ यत्पुरुषं0 श्रीभगवन्नामात्मकस्वरूपिणे श्रीभागवताय नमः। धूपमाघ्रापयामि।** इस मन्त्र से धूप सुँघाये।

दीप-**ॐ चन्द्रमा0 श्रीभगवन्नामात्मकस्वरूपिणे श्रीभागवताय नमः दीपं दर्शयामि।** इस मन्त्र से घीका दीप जलाकर दिखाये और उसके बाद हाथ धो ले।

नैवेद्य-**ॐ नाभ्या0 श्रीभगवन्नामात्मकस्वरूपिणे श्रीभागवताय नमः। नैवैद्यं निवेदयामि।** इस मन्त्र से नैवेद्य अर्पण करे।

श्रीभगवन्नामात्मकस्वरूपिणे श्रीभागवताय नमः।
एलालवङ्गपूगीफलकर्पूरसहितं ताम्बूलं समर्पयामि।

ताम्बूल-**ॐ सप्तास्यासन्, 0** इस मन्त्र से पानका बीड़ा अर्पण करे।

श्रीभगवन्नामात्मकस्वरूपिणे श्रीभागवताय नमः।

दक्षिणा-**हिरण्यगर्भः0 दक्षिणां समर्पयामि।**

प्रदक्षिणा-**धाता पुरस्ताद्यमुदाजहार शक्रः**
प्रविताद्यमुदाजहार शक्रः प्रविद्वान् प्रदिशश्चतस्त्रः।
तमेवं विद्वानमृत इह भवति नान्यः पन्था अयनाय विद्यते।।

श्रीभगवन्नामात्मकस्वरूपिणे श्रीभागवताय नमः।

प्रदक्षिणां समर्पयामि। इस मन्त्र से प्रदक्षिणा करे।

मंत्र पुष्पाञ्जलि-**ॐ यज्ञेन0 श्रीभगवन्नामात्मकस्वरूपिणे श्रीभागवताय नमः। मन्त्रपुष्पं समर्पयामि।** इस मन्त्र से मन्त्रपाठपूर्वक पुष्पाञ्जलि अर्पण करे।

प्रार्थना- **वन्दे श्रीकृष्णदेवं मुरनरकभिदं वेदवेदान्तवेद्यं**
लोके भक्तिप्रसिद्धं यदुकुलजलधौ प्रादुरासीदपारे।
यस्यासीद् रूपमेवं त्रिभुवनतरणे भक्तिवच्च स्वतन्त्रं
शास्त्रं रूपं च लोके प्रकटयति मुदा यः स नो भूतिहेतुः।।
श्रीभागवतरूपं तत् पूजयेद् भक्तिपूर्वकम्।
अर्चकायाखिलान् कामान् प्रयच्छति न संशयः।।

विनियोग-दाहिने हाथ की अनामिका में कुश की पवित्री पहन ले। फिर हाथ में जल लेकर नीचे लिखे वाक्य को पढ़कर भूमिपर गिरा दे-

ॐ अस्य श्रीमद्भागवताख्यस्तोत्रमन्त्रस्य नारद ऋषिः। बृहती छन्दः। श्रीकृष्णः परमात्मा देवता। ब्रह्म बीजम्। भक्तिः शक्तिः। ज्ञानवैराग्ये कीलकम्। मम श्रीमद्भगवत्प्रसादसिद्ध्यर्थे पाठे विनियोगः।

न्यास-विनियोग में आये हुए ऋषि आदि का तथा प्रधान देवता के मन्त्राक्षरों का अपने शरीर के विभिन्न अङ्गों में जो स्थापन किया जाता है, उसे 'न्यास' कहते हैं। मन्त्र का एक-एक अक्षर चिन्मय होता है, उसे मूर्तिमान् देवता के रूप में देखना चाहिये। इन अक्षरों के स्थापन से साधक स्वयं मन्त्रमय हो जाता है, उसके हृदय में दिव्य चेतना का प्रकाश फैलता है, मन्त्र के देवता उसके स्वरूप होकर उसकी सर्वथा रक्षा करते हैं। ऋषि आदिका न्यास सिर आदि कतिपय अङ्गों में होता है मन्त्र पदों अथवा अक्षरों का न्यास प्रायः हाथ की अँगुलियों और हृदयादि अङ्गों में होता है। इन्हें क्रमशः'करन्यास' और 'अङ्गन्यास' कहते हैं। किन्हीं-किन्हीं मन्त्रों का न्यास सर्वाङ्गमें होता है। न्यास से बाहर-भीतर की शुद्धि, दिव्य बलकी प्राप्ति और साधना की निर्विघ्न पूर्ति होती है। यहाँ क्रमशः ऋष्यादिन्यास, करन्यास और अङ्गन्यास दिये जा रहे हैं-

ऋष्यादिन्यास-**नारदर्षये नमः शिरसि।।1।। बृहतीच्छन्दसे नमो मुखे।।2।। श्रीकृष्णपरमात्मदेवतायै नमोहृदये।।3।। ब्रह्मबीजाय नमो गुह्ये।।4।। भक्तिशक्तये नमः पादयोः।।5।। ज्ञानवैराग्यकीलकाभ्यां नमो नाभौ।।6।। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।।7।।**

पहला वाक्य पढ़कर दाहिने हाथ की अङ्गुलियों से सिरका स्पर्श करे, दूसरा वाक्य पढ़कर मुखका, तीसरे वाक्य से हृदयका, चौथे से गुदाका, पाँचवें से पैरों का, छठे से नासिका और सातवें वाक्य से सम्पूर्ण अङ्गोका स्पर्श करना चाहिये।

करन्यास-इसमें **'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय'** इस द्वादशाक्षर मन्त्र के एक-एक अक्षर प्रणव से सम्पुटित करके दोनों हाथों की अङ्गुलियों में स्थापित करना है। मन्त्र नीचे दिये जा रहे हैं-**'ॐ ॐ ॐ नमो दक्षिणतर्जन्याम्'** ऐसा उच्चारण करके दाहिने हाथ के अँगूठे से दाहिने हाथ की तर्जनी का स्पर्श करे। **ॐ नं ॐ नमो दक्षिणमध्यमायाम्**-यह उच्चारण कर दाहिने हाथ के अँगूठे से दाहिने हाथ की मध्यमा अङ्गुलिका स्पर्श करे। **ॐ मों ॐ नमो दक्षिणानामिकायाम्**-यह पढ़कर दाहिने हाथ के अँगूठे से दाहिने हाथ की अनामिका अङ्गुलिका स्पर्श करे। **ॐ भं ॐ नमो दक्षिणकनिष्ठिकायाम्**-इससे दाहिने हाथ के अँगूठे से दाहिने हाथ की कनिष्ठिका अङ्गुलिका स्पर्श करें। **ॐ गं ॐ नमो वामकनिष्ठिकायाम्**-इससे बायें हाथ के अँगूठे बायें हाथ की कनिष्ठिका अङ्गुलिका स्पर्श करे। **ॐ यं ॐ नमो वामानामिकायाम्**-इससे बायें हाथ के अँगूठे से बाये हाथ की अनामिका अङ्गुलिका स्पर्श करे। **ॐ तें ॐ नमो वाममध्यमायाम्**-इस से बायें हाथ के अँगूठे से बायें हाथ की मध्यमा अङ्गुलिका स्पर्श करे। **ॐ वां ॐ नमो वामतर्जन्याम्**-इससे बायें हाथ के अँगूठे से बायें हाथ की तर्जनी अङ्गुलिका स्पर्श करे। **ॐ सुं ॐ नमः ॐ दें ॐ नमो दक्षिणाङ्गुष्ठपर्वणोः**-इसको पढ़कर दाहिने हाथ की तर्जनी अङ्गुलि से दाहिने हाथ के अँगूठे की दोनों गाँठों का स्पर्श करे। **ॐ वां ॐ नमः ॐ यं ॐ नमो वामाङ्गुष्ठपर्वणोः**-इसका उच्चारण करके बायें हाथ की तर्जनी अङ्गुलिसे बायें हाथ के अँगूठे की दोनों गाँठों का स्पर्श करे।

अङ्गन्यास-यहाँ द्वादशाक्षर मन्त्र के पदों का हृदयादि अङ्गों में न्यास करना है-**ॐ नमो नमो हृदयाय नमः**-इसको पढ़कर दाहिने हाथ की पाँचों अङ्गुलियों से हृदय का स्पर्श करे। **ॐ भगवते नमः शिरसे स्वाहा**-इसका उच्चारण करके दाहिने हाथ की सभी अङ्गुलियों से सिरका स्पर्श करे। **ॐ वासुदेवाय नमः शिखायै वषट्**-इसके द्वारा दाहिने हाथ से शिखा कर स्पर्श करे। **ॐ नमो नमः कवचाय हुम्**-इसको पढ़कर दायें हाथ की अङ्गुलियों से बायें कंधे का और बायें हाथ की अङ्गुलियों से दायें

कंधे का स्पर्श करे। **ॐ भगवते नमः नेत्रत्रयाय वौषट्**-इसको पढ़कर दाहिने हाथ की अङ्गुलियों के अग्रभाग से दोनों नेत्रों तथा ललाट के मध्यभाग में गुप्तरूप से स्थित तृतीय नेत्र (ज्ञानचक्षु) का स्पर्श करे। **ॐ वासुदेवाय नमः अस्त्राय फट्**-इसका उच्चारण करके दाहिने हाथ को सिरके ऊपर से उलटा अर्थात् बायीं ओर से पीछे की ओर ले जाकर दाहिनी ओर से आगे की हथेली पर ताली बजाये। अङ्गन्यास में आये हुए 'स्वाहा', 'वषट्', 'हुम्', 'वौषट्' और 'फट्'-ये पाँच शब्द देवताओं के उद्देश्य से किये जाने वाले हवन से सम्बन्ध रखने वाले हैं। यहाँ इनका आत्मशुद्धि के लिये ही उच्चारण किया जाता है।

ध्यान-**किरीटकेयूरमहार्हनिष्कैर्मण्युत्तमालङ्कृतसर्वगात्रम्।**

पीताम्बरं काञ्चनचित्रनद्धं मालाधरं केशवमभ्युपेमि।।

शिलान्यास

शिला स्थापन करने वाला यजमान निर्माणाधीन भूमि के आग्नेय दिशा में खोदे गये भूमि के पश्चिम की ओर बैठकर आचमन प्राणायाम आदि करे। तदनन्तर स्वस्ति वाचन आदि करते हुए संकल्प करे।

देशकालौ संकीर्त्य अमुकगोत्रोऽमुकशर्म्माऽहं करिष्यमाणस्यास्य वास्तोः शुभतासिद्ध्यर्थं निर्विघ्नता गृह-(प्रासाद)-सिद्ध्यर्थमायुरारोग्यैश्वर्य्याभिवृद्-ध्यर्थं च वास्तोस्तस्य भूमिपूजनं शिलान्यासञ्च करिष्ये तदङ्गभूतं श्रीगणपत्यादिपूजनञ्च करिष्ये। गणेश, षोडशमातृका, नवग्रह आदि का पूजन करे। इसके बाद आचार्य **ॐ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।।** इस मंत्र से पीली सरसों चारों ओर छींटकर पंचगव्य से भूमि को पवित्र कर वायुकोण में पांच शिलाओं को स्थापित करे। इसके बाद सर्पाकार वास्तु का आवाहन कर **ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्स्वावेशोऽदमीवो भवा नः।। यत्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे।।** इस मंत्र से पूजा कर दही और भात का वलि दे पुनः नाग की पूजा करे **ॐ वासुकिं धृतराष्ट्रञ्च कर्कोटकधनञ्जयौ। तक्षकैरावतौ चैव कालेयमणिभद्रकौ।।** इससे आठों नागों के लिए पृथक्-पृथक् अथवा एक ही साथ नाम मंत्रों से आवाहन पूजन करें। पुनः धर्म रूप वृष का आवाहन पूजन कर हाथ जोड़कर प्रार्थना करें-

ॐ धर्मोसि धर्मदैवत्यवृषरूप नमोस्तु ते।

सुखं देहि धनं देहि देहि पुत्रमनुत्तमम्।।

गृहे गृहे निधिं देहि वृषरूप नमोस्तु ते।
आयुर्वृद्धिं च धान्यं च आरोग्यं देहि गेहयोः।।
आरोग्यं मम भार्याया पितृमातृसुखं सदा।
भ्रातृणां परमं सौख्यं पुत्राणां सौख्यमेव च।।
सर्वस्वं देहि मे विष्णो! गृहे संविशतां प्रभो!।
नवग्रहयुतां भूमिं पालयस्व वरप्रद!।।

पुनः पञ्चशिलाओं को-**ॐ आपः शुद्धा ब्रह्मरूपाः पावयन्ति जगत्त्रयम्। चाभिरद्भिः शिलां स्नाप्य स्थापयामि शुभे स्थले।** यह पढ़कर शुद्ध जल से धो दें। पुनः **ॐ गजाश्वरथ्यावल्मीकसद्भिर्मृद्भिः शिलेष्टकान् प्रक्षालयामि शुद्ध्यर्थं गृहनिर्माणकर्मणि।।** इसे पढ़कर सप्तमृतिका से प्रक्षालन करें। पुनः पञ्चगव्य, दही और तीर्थ के जल से धोकर शुद्ध वस्त्र से पोंछ दें और उन शिलाओं का कुंकुम चन्दन से लेपन कर स्वस्तिक चिह्न बनाकर वस्त्र से ढककर मन्त्र पढ़ें-**ॐ नन्दायै नमः (1) ॐ भद्रायै नमः (2) ॐ जयाये नमः (3) ॐ रिक्तायै नमः (4) ॐ पूर्णायै नमः (5)** उन शिलाओं के आगे इन पांचों कुम्भों (घड़ा) की स्थापना करे-**ॐ पद्माय नमः (1) ॐ महापद्मायनमः (2) ॐ शंखाय नमः (3) ॐ मकराय नमः (4) ॐ समुद्राय नमः (5)**

उसके बाद आचार्य गड्ढे की भूमि को लेपकर कछुआ के पीठ के ऊपर स्थित श्वेत वर्ण वाले चार भुजाओं में पद्म, शंख, चक्र और शूल धारण किये भूमि का ध्यान करे।

कूर्माय नमः इति कूर्ममम् (1) ॐ अनन्ताय नमः इति अनन्तम् (2) ॐ वराहाय नमः इति वराहम् (3) इस प्रकार आवाहन, पूजन कर दोनों घुटनों से पृथ्वी का स्पर्श कर जल, दूध, तिल, अक्षत जौ, सरसों और पुष्प अर्घ्य पात्र में रखकर भूमि के निमित्त मंत्र से अर्घ्य दें-**ॐ हिरण्यगर्भे वसुधे शेषस्योपरि शायिनि। उद्धृतासि वराहेण सशैलवनकानना।। प्रासादं (गृहं वा) कारयाम्यद्य त्वदूर्ध्वं शुभलक्षणम्।। गृहाणार्घ्यं मया दत्तं प्रसन्ना शुभदा भव।। भूम्यै नमः इदमर्घ्यं समर्पयामि।** पुनः आम्र या पलाश के पत्ते के ऊपर दीपक सहित घी और भात की बलि देकर प्रार्थना करे **ॐ समुद्रमेखले देवि पर्वतस्तनमण्डले। विष्णु-पत्नि नमस्तुभ्यं शस्त्रपातं क्षमस्व मे।। इष्टं मेत्वं प्रयच्छेष्टं त्वामहं शरणं गतः। पुत्रदारधनायुष्य-धर्मवृद्धिकरी भव।।** पुनः गड्ढे में तेल डालकर उसके ऊपर सफेद सरसों छोड़े।

मन्त्र-**ॐ भूतप्रेतपिशाचाद्या अपक्रामन्तु राक्षसाः। स्थानादस्माद्व्रजन्त्वन्यत्स्वीकरोमि भूवं त्विमाम्।।** उसके ऊपर दही लिपटा

चावल उड़द की बलि देकर उसके ऊपर 7 पत्ते स्थापित कर एवं उसके ऊपर बारह अंगुलि लोहे की कील गाड़ दे। मन्त्र-**ॐ विशन्तु भूतले नागाः लोकपालाश्च सर्वतः। अस्मिन् स्थानेऽवतिष्ठन्तु आयुर्बलकराः सदा।।** उसके ऊपर मधु, घी, पारद, सुवर्ण (अथवा रुपया) ढके हुए मुख वाले ताम्र आदि से निर्मित पद्म नामक कुम्भ में पञ्चरत्न रख, चन्दन लगाकर वस्त्र लिपटाकर मध्य में रख दे तथा उस पर नारियल भी रख दे। इसी प्रकार पूर्व आदि दिशाओं में चार घड़ा स्थापित करे। पूर्वादि के क्रम से महापद्म 2, शंख 6, मकर 4, समुद्र 5, की पूजा कर कुम्भ के बराबर मिट्टी देकर अक्षत छोड़े। पुनः अच्छे मुहूर्त में सुपूजित 'पूर्णा' नामक ईंट स्थापित करे।

मन्त्र-**पूर्णे त्वं सर्वदा भद्रे! सर्वसन्दोहलक्षणे। सर्वं सम्पूर्णमेवात्र कुरुष्वाङ्गिरसः सुते।।** तदनन्तर पूर्व दिशा में-**ॐ नन्दे त्वं नन्दिनी पुंसां त्वामत्र स्थापयाम्यहम्। अस्मिन् रक्षा त्वया कार्या प्रासाद यत्नतो मम।।** तदनन्तर दक्षिण दिशा में-**ॐ भद्रे! त्वं सर्वदा भद्रं लोकानां कुरु काश्यपि। आयुर्दा कामदा देवि ! सुखदा च सदा भव।।** पश्चिम दिशा में-**ॐ जये ! त्वं सर्वदा देवि तिष्ठ त्वं स्थापिता मया। नित्यं जयाय भूत्यै च स्वामिनो! भव भार्गवि !।।** उत्तर दिशा में-**रिक्ते त्वरिक्तेदोषघ्ने सिद्धिवृद्धिप्रदे शुभे !। सर्वदा सर्वदोषघ्ने तिष्ठास्मिन्मम मन्दिरे।।** इस मंत्र से स्थापित कर पूर्णादि नाम मन्त्रों से गन्धादि द्वारा पूजा करें। पुनः चारों ओर दिक्पालों की पूजा कर दीपक के साथ दही, उड़द एवं भात की बलि दे। **विश्वकर्मणे नमः** इस प्रकार आयुध की पूजा कर प्रार्थना करे-**ॐ अज्ञानाज्ज्ञानतो वापि दोषाः स्युश्च यदुद्भवाः। नाशयन्त्वहितान्सर्वान् विश्वकर्मन्नमोऽस्तु ते।।** उसके बाद फावड़े की पूजा कर प्रार्थना करे-**ॐ त्वष्ट्रा त्वं निर्मितः पूर्वं लोकानां हितकाम्यया। पूजितोऽसि खनित्र ! त्वं सिद्धिदो भव नो ध्रुवम्।। वाष्पोष्पति, मृत्युञ्जय आदि देवताओं के जप हेतु प्रतिज्ञा संकल्प करे-**

अद्येत्याद्युक्त्वा अनवधिवर्षावच्छिन्नबहुकालपर्यन्तं पुत्रकलत्रारोग्य-धनादिसमृद्धिप्राप्तिकामो गृहनिर्माणार्थकर्त्तव्यशिलास्थापनाङ्गत्वेन वास्तुदेवतामृत्युञ्जयादिप्रसादलाभाय यथासंख्यापरिमितं ब्राह्मणद्वारा जपमहं कारयिष्ये।

वरण सामग्री लेकर-**अद्येत्यादि गृहनिर्माणार्थं कर्तव्यशिलास्थापनांगभूत-ब्राह्मणद्वारावास्तोष्पतिमृत्युंजयजपं कारयितुमेभिर्वरणद्रव्यैरमुकामुकगोत्रान् अमुकामुकशर्मणः ब्राह्मणान् जापकत्वेन युष्मानहं वृणे।** तदनन्तर मिष्ठान वितरण करे।

इति शिलान्यासविधिः

गृहप्रतिष्ठा विधि

गोबर से लीये गये मण्डप के पश्चिम ओर यजमान भूमि पर बैठकर आचमन प्राणायाम देवताओं को नमस्कार कर संकल्प करे- **ॐ अद्येत्यादिज्ञाताज्ञात-कायवाङ्मनःकृतसकलपापक्षयपूर्वकशालाकर्माहं करिष्ये।** ब्राह्मण कहे-**कुरुष्व।** तदनन्तर गणेशादि की पूजा कर मंडप के ऊपर लाल रंग की एक ध्वजा स्थापित करे। उसके पूर्वादि दिशाओं में क्रमशः पीली, लाल, काली, नीली, सफेद धूंधली हरी, पंच रंगों वाली रक्त और सफेद पताका स्थापित करे। अनन्तर आचार्य वरण करे। तत्पश्चात् एक हाथ परिमित भूमि को कुशों से ढककर पहले पञ्चभूः संस्कार कर अग्निस्थापन पूर्वक ब्रह्मा का वरण करे। पुनः कुशकण्डिका कर प्रज्जवलित अग्नि में श्रुवा से हवन करे। **ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्स्वावेशोऽनमीवो भवा नः यत्त्वेमहे प्रतितन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे स्वाहा। इदं वास्तोष्पतये। ॐ वास्तोष्पते प्रतिरणोन एधि गयस्फानो गोभिरश्वेभिरिन्दो। अजरासस्त्वे सखे स्वामपितेव पुत्रन्प्रति तन्नो जुषस्व स्वाहा। इदं वास्तोष्पतये। ॐ वास्तोष्पते शग्मयासं सवाते सक्षीमहिरण्वद्यागातु मत्वा। पाहि क्षेम उत योगे वरन्नो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः स्वाहा। इदं वास्तोष्पतये। ॐ अमीवहा वास्तोष्पते विश्वारूपाण्याविश्च सखा सुशेवरग्धिनः स्वाहा। इदं वास्तोष्पतये। ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये। इति मनसा। ॐइन्द्राय स्वाहा, इदमिन्द्राय। इत्याघारौ। ॐ अग्नये स्वाहा, इदमग्नये। ॐ सोमाय स्वाहा, इदं सोमाय। इत्याज्यभागौ। ॐ अग्निमिन्द्रं बृहस्पतिं विश्वान्देवानुपधये। सरस्वतीं वाजीं च वास्तु मे दत्त वाजिनः स्वाहा। इदमग्नये इन्द्राय बृहस्पतये विश्वेभ्यो देवेभ्यः सरस्वतीवायव्यै च। ॐ सर्प्प देवजनान्सर्वान्हिमवन्तꣳसुदर्शनम् बह्वश्च रुद्रानादित्यानीशानं जगदैः सह एतान् सर्वान् प्रपद्येऽहं वास्तु मे दत्तावाजिनः स्वाहा। इदं सर्वदेवजनेभ्यो हिमवते सुदर्शनाय वसुभ्यो रुद्रेभ्यः आदित्येभ्य ईशानाय जगदेभ्यच। ॐ पूर्वाह्णं मपराह्णं चोभौ मध्यन्दिना सह प्रदोषमर्द्धरात्रं च व्युष्टां देवीं महापथां एतान्सर्वान्प्रपद्येऽहं वास्तु मे दत्तवाजिनः स्वाहा। इदं पूर्वाह्णायापराह्णाय मध्यन्दिनाय प्रदोषायार्द्धरात्राय व्युष्टायै दैव्यै महापन्थायै च। ॐ कर्तारं च विकर्तारं विश्वकर्माणमौषधीश्च वनस्पती। एतान्सर्वान्प्रपद्येऽहं वास्तु मे दत्त वाजिनः स्वाहा। इदं कर्त्रे विकर्त्रे, विश्वकर्म्मणे ओषधीभ्यो वनस्पतिभ्यश्च। ॐ धातारं च विधातारं निधीनाञ्च पतिं सह। एतान् सर्वान्प्रपद्येऽहं वास्तु दत्त्वाजिनः स्वाहा। इदं धात्रे विधात्रे निधीनां पतये च। ॐ स्योनꣳ शिवमिदं वास्तु मे दत्त ब्रह्मप्रजापती सर्वाश्च देवताः स्वाहा। इदं ब्रह्मणे प्रजापतये सर्वाभ्यो देवताभ्यश्च। ॐअग्नये**

स्विष्टकृते स्वाहा इदमग्नये स्विष्टकृते। ॐ भूःस्वाहा इदमग्नये। ॐ भुवः स्वादा इदं वायवे। ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय।

इसके बाद सर्व प्रायश्चित्त संज्ञक पञ्च वारुण होम 'चतुर्थ खण्ड के होम प्रकरण' से करायें।

ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये। संस्त्रवप्राशनम् आचमनम् च। ब्रह्मणे पूर्णपात्रदानं ब्रह्मग्रन्थिविमोकः। ॐ सुमित्रिया न आप ओषधयः सन्तु इति पवित्राभ्यां जलमानीय तेन शिरः सम्मृज्य ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योस्मान् द्वेष्टि यञ्च वयं द्विष्मः इत्यैशान्यां प्रणीतान्युब्जीकरणम्। तत आस्तरणक्रमेण बर्हिरानीय घृतेनाभिघार्य हस्तेनैव जुहुयात्। तत्र मन्त्रः ॐ गातु विदो गातु वित्वा गातुमितमनसस्पत। इमं देवयज्ञ ᳪ स्वाहा व्वातेधाः स्वाहा। इति वर्हिर्होमः।

वास्तुपूजन-संकल्प-**ॐ अद्य शुभगुणविशिष्टायां पुण्यतिथौ गृहप्रतिष्ठाङ्गभूतवास्तुपूजनं सकलकर्म्मसमृध्यर्थमीशानादिरुद्रदासपर्यन्तानां पञ्चत्वारिंशत्वास्तुदेवतानां पूजनमहं करिष्ये।** तदनन्तर चन्दन और पुष्प लेकर ईशानाय नमः से रुद्रपर्यन्त इदमावाहनं कहते हुए आवाहन करे **अत्रागच्छन्तु वरदा भवन्तु पञ्चचत्वारिंशद्देवताभ्य इदमासनम्। एवं पाद्यार्घाचमनीयस्नानीय-वस्त्रयज्ञोपवीतोत्तरीयं, गन्धं, पुष्पं, धूपं, दीपं, ताम्बूलं नमस्कारः पञ्चचत्वारिंशद्देवताभ्यो नमः। दध्योदनेन बलिदानम्। ॐ ईशानाय नमः पूजानैवेद्यं दध्योदनं च ईशानाय स्वाहा। ॐ पर्जन्याय नमः पूजानैवेद्यं दध्योदनं पर्ज्जन्याय स्वाहा। एवं जयन्ताय पीतध्वजाय ॐ इन्द्राय नमः। पूजानैवेद्यं दध्योदनं च इन्द्राय स्वाहा। ॐ सूर्याय0 ॐ सत्याय0 ॐभृशाय0 ॐ अन्तरिक्षाय0 ॐ वायवे0 ॐ पूष्णे0 ॐ वितथाय0 ॐ गृहक्षेत्राय0 ॐ यमाय0 ॐ गन्धर्वाय0 ॐ भृङ्गराजाय0 ॐ मृगाय0 ॐ पितृगणाय0 ॐ दौवारकाय0 ॐ सुग्रीवाय0 ॐ पुष्पदन्ताय0 ॐ वरुणाय0 ॐ असुराय0 ॐ शेषाय0 पापयक्ष्मणे0 रोगाय0 नागाय0 उरव्याय0 मल्लाटाय0 सोमाय0 भुजङ्गपतये0 अदितये0, दितये0। कोणेषु ब्रह्मणे, अर्यम्णे, विवस्वते, मित्राय। ततो मध्यात् पृथ्वीधराय, अपाय, आपवत्साय, सवित्रे, सावित्राय, जयन्ताय, विबुधाधिपाय, रुद्राय। रुद्रदासाय। वास्तुप्रीतये धेनुदानं। पूजितोऽसि उमामहेश्वरदानं च। ॐ उमा महेश्वराभ्यां नमः। सप्तधान्यदानम्। पूजितोऽसि मया वास्तो हेमाद्यैरर्चनैः शुभैः। प्रसीद याहि विश्वेश! देहि मे गृहजं सुखम्।।** इति प्रार्थना। तदनन्तर घर अन्दर प्रवेश कर कोषागार के दक्षिण कोण में श्री लिखकर **ॐ अद्य पूर्वोक्तगुणविशिष्टायां तिथौ वास्तुपूजनगृह-प्रवेशाद्यङ्गभूतश्री-**

स्थापनादि कर्माहं करिष्ये। पञ्चामृत, आरती नैवेद्य समर्पण आवाहन आदि पूर्ववत् करनी चाहिए। एक पात्र में धान्य सरसों, चांदी युक्त दूब अक्षत, गंध पुष्प आदि सामग्री लेकर स्वस्तिवाचन करे। **ॐ स्थिरो भव वीड्वङ्ग आशुर्भव वाज्यर्वन् पृथुर्भव सुखदस्त्वमग्ने: पुरीषवाहन:** इस मंत्र से गड्ढे के मध्य में उपर्युक्त सामग्री रखकर उस पर मिट्टी डाल दे। स्वस्तिक का चिन्ह बना दे। तदनन्तर सूत से लिपटे गूलर के पत्ते को दूध के साथ, दूब, गोबर दधि मधु, घी, कुश और जौ इन सभी को कांस्य के बर्तन में एकत्र कर जल सहित एक पात्र में रखकर पूर्वादि दिशाओं के क्रम से घर के मध्य में अभिषेक एवं आसन आदि का सिंचन करे।

गृह शेष वास्तु पूजा-**दक्षिणद्वारे धात्रे नमः, वामद्वारे विधात्रे नमः। गणेशाय नमः। पट्टशालायै नमः। मण्डपदेवताभ्यो नमः। कण्डनीभ्यो नमः। पेषिण्यै नमः। इसके अनन्तर इस मंत्र से चुह्लादि बलिदान करे।-ॐ धर्माय नमः इससे। पुनः धर्माय नमः वामवाहौ ॐ स्वरस्वरपरिवर्तनीयाय नमःकिं धान्यादि भाण्डेषु। ॐ जलामृताय वरुणाय नमः जलभाण्डेषु। ॐ महाविघ्नराजाय नमः गृहप्रधानाधारे। ॐ महाशुभांगाय नमः, पेषिण्यां। ॐ रुद्रकोटिगिरिकायै नमः इत्युलूखले। ॐ बलभद्रप्रियाय प्रहरणाय नमः इति मुशले। ॐ मृत्यवे देवीचोदिते नमः इति संमार्जन्यां। ॐ कामार्थंकुसुमायु-धाय नमः इति शयनीय-शिरसि। ॐ स्कन्दाय गृहाधिपतये नमः** मूत्र पुरीषयुक्त गोशाला में बलिदान करें, मार्ग-मार्ग में-**देवताभ्यो नमः। मध्यस्तंभाधस्तात्।**

गृहप्रवेश-उसके बाद गृहनक्षत्रों के अनुकूल पवित्र दिनों में गृह पूजा सम्बन्धी कृत्य समाप्त हो जाने पर मातृ पूजा आदि आभ्युदयिक कृत्य कर ब्राह्मणों के साथ स्वस्ति वाचन करते हुए मांगलिक गाजे-बाजे के साथ जलपूर्ण कलश एवं गो ब्राह्मण के साथ, स्नान कर श्वेत वस्त्र एवं माला से युक्त सपरिवार तोरण युक्त मुख्यद्वार से प्रवेश करें। **ॐ धर्मस्थूणा राजा ँ श्रीस्तूयमहोरात्रेद्वारफलके इन्द्रस्य गृहावसमतो वरूथिनहं प्रपद्ये सह प्रजया पशुभिः सह यन्मे किञ्चिदस्युपहतः सर्वगणः सखायः साधु संमतः तां त्वा शालेदिष्टपीठा गृहान्नः सन्तु सर्वतः।।** तदनन्तर गृहदेव की दोष निवारण हेतु प्रार्थना करें-**प्रार्थयामीत्यहं देवं शालायामधिपस्तु यः। प्रायश्चित्तप्रसंगेन गृहार्थे यन्मया कृतम्। मूलच्छेदं तृणच्छेदं कृमीणां च निपातनम्। हननं जलजीवनां भूमेः शस्त्रेण पातनम्। अनृतं भाषितं यच्च किंचिदर्थस्य पातनम्-तत्सर्वं ही क्षमस्व त्वं यन्मया दुष्कृतं कृतम्। गृहार्थे यत्कृतं पापमज्ञानेनाथ चेतसा। तत्सर्व क्षम्यतां देवि! शाले! मम क्षमां कुरु।।**

इति गृहप्रतिष्ठा प्रवेश विधि।

मूलगण्डान्त शान्ति प्रयोग

जिस मूल नक्षत्र में शिशु का जन्म हुआ हो उसके दूसरे मूल नक्षत्र में स्नान कर श्वेत वस्त्र पहन कर जातक एवं पत्नी सहित यजमान (पिता) पूजा के आसन पर पूर्वाभिमुख बैठ आचमन प्राणायाम एवं आसन शुद्धि कर हाथ में अक्षत पुष्प लेकर **ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवेत्यादि0 स्वस्त्ययन (मन्त्रों को) ॐ सुमुखश्चैकदन्तश्चेत्यादि0** मङ्गलमंत्र पढ़े। तदनन्तर प्रतिज्ञा संकल्प करे। **ॐ अद्येत्यादि देशकालौ संकीर्त्य अमुकगोत्रेऽमुकशर्मा (वर्मागुप्तो वा सपत्नीकोऽहं अस्य बालकस्य अस्याः कुमार्याः वा मूलनक्षत्र (ज्येष्ठा, आश्लेषा, मघा रेवती अश्विनी वा) तदधिकरणकामुकपादजननारिष्टनिवारणपूर्वकं तदीयायुर्बृद्ध्युत्तरपित्रादिसम्बन्धिशुभफलप्राप्त्यर्थे श्रीपरमेश्वरप्रीतये च गोमुखप्रसवपूर्वकं अमुकनक्षत्रगण्डात् शान्तिमहं करिष्ये तन्निर्विघ्नतासिद्ध्यर्थं तदङ्गत्वेन गणपत्यादिपूजनं च करिष्ये।** तदनन्तर श्री गणपति, नवग्रह, नान्दीश्राद्ध, आदि कृत्य सामान्य पूजन विधि के अनुसार करायें अथवा स्वर्ण दान करें। तत्र संकल्पः-**ॐ अद्येत्यादि अमुकगोत्रस्यात्मजस्यामुकशर्मणः मूला (ज्येष्ठा, मघा रेवती वा) नक्षत्रधिकरणकजन्माङ्गभूतकर्तव्याभ्युदयिकश्राद्धजन्य- फलसम्प्राप्त्यर्थममुं यथाशक्ति सुवर्णमग्निदैवतं यथानामगोत्रयामुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं संप्रददे।**

तदनन्तर आचार्य मण्डप से बाहर यजमान के घर के ईशान भाग में सफेद सरसों छींटे। **ॐ आपो हिष्ठेत्यादि** इस मंत्र (देंखें नित्य संध्या) से पञ्चगव्य द्वारा प्रोक्षण कर वहां चावल के आटे से अष्टदल कमल बनाकर उसके ऊपर यथाशक्ति अनाज फैलाकर उस अनाज के ऊपर नूतन बांस के सूप को रखकर उस पर तिल एवं कुश फैलाकर इसके ऊपर लाल वस्त्र फैलाकर उस पर शिशु का मुख पूर्व की ओर और पांव पश्चिम की ओर रखकर तिगुने मांगलिक सूत्र से उस शिशु को सूप के साथ लपेटकर शिशु के समीप गोमुख लाकर शिशु स्पर्श करायें। पुनः गोमुख से शिशु की उत्पत्ति का भावकर पञ्चगव्य से कुश द्वारा शिशु का मार्जन करे। तत्र मंत्र **ॐ विष्णुर्योनिं कल्पयतु त्वष्टा रूपाणि पिंशतु। आषिञ्चतु प्रजापतिर्धाता गर्भं दधातु ते।।** अथवा गवामङ्गेषु इस मंत्र से गौ के सभी अङ्गों का स्पर्श करायें। **ॐ गवामङ्गेषु तिष्ठन्ति भूवनानि चतुर्दश। यस्मात् तस्माच्छिवं मे स्यादिहलोके परत्र च।** तदनन्तर विष्णो श्रेष्ठ0 इस मंत्र से आचार्य शिशु को लेकर माता के हाथ में दे। तत्र मन्त्र-**ॐ विष्णो श्रेष्ठेन रूपेणास्यां नार्यां गवीन्यां पुमांसं पुत्रमाधेहि दशमे मासि सूतवे।** उसके बाद माता गोमुख के पास से शिशु को लाकर गाय के पूछ भाग के तरफ शिशु

को देखकर अपने पति के हाथ में दे। पिता-**ॐ अङ्गादङ्गात् सम्भवसि हृदयादधिजायसे। आत्मा वै पुत्रनामासि संजीव शरदः शतम्**।। इस मंत्र से तीन बार शिशु के मस्तक को सूंघकर माता को दे दे। तदनन्तर आचार्य **आपोहिष्ठा.** इस मंत्र द्वारा बालक को पंचगव्य से सींचे। तदनन्तर पिता-**गोमुखप्रसवाख्यकर्मणः पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु**। आचार्य-**ॐ पुण्याहं ॐ पुण्याहं इति ब्रूयात्**। उसके बाद गाय अथवा गो निष्क्रयीभूत द्रव्य संकल्पपूर्वक आचार्य के लिए देकर यथाशक्ति नवग्रह की प्रीति हेतु गो, स्वर्ण, वस्त्र, अनाज आदि दें। संकल्प-**ॐ अथ गोमुखप्रसवाख्यकर्मणः सांगतासिद्ध्यर्थं सूर्यादिनवग्रहाणां प्रीत्यर्थं चेमानि गोवस्त्रसुवर्णधान्यानि सदक्षिणानि तन्निष्क्रयीभूतानि द्रव्याणि वा यथानामगोत्राय ब्राह्मणायदातुमहमुत्सृजे**। तदनन्तर ईशान दिशा में अनाज के ऊपर कलश स्थापन विधि द्वारा वरुण कलश को स्थपित कर उस पर चन्दन, अगुरु, कुंकुम, सभी प्रकार के चन्दन एवं श्वेत सरसों छीटें। कलश के ऊपर स्वर्ण निर्मित अधिदेवता इन्द्र, प्रत्यभिदेवता जल सहित निर्ऋति प्रतिमा स्थापित कर अग्न्युत्तारण पूर्वक **ॐ असुन्वन्त यजमानमिच्छंस्तेन सेत्वामन्विहितस्करस्य। अन्यमस्मादिच्छसा-तऽइत्यानमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु**। इस मंत्र से पूजन करे। एवं आश्लेषा में सार्प, मघा में पितृ, ज्येष्ठा में इन्द्र, रेवती में पूषा, अश्विनी में अश्विनी की प्रतिमा तत्तद् मंत्रों के द्वारा अधिदेवता प्रत्यभिदेवता सहित स्थापित करे। आवाहन कर पूजन करें।

आश्लेषा मंत्र-**ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु। येऽन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः।।**

मघा मन्त्र-**ॐ उशन्तस्त्वा निधोमह्युशन्तःसमिधीमहि। उशन्नुशतऽआवह पितृन् हविषेऽअत्तवे।।**

ज्येष्ठा मन्त्र-**ॐ सयोषा इन्द्र सगणो मरुद्भिः सोमं पिब वृत्रहा शूर विद्वान्। जहि शत्रुरपमृधो नुदस्वाथाभयं कृणुहि विश्वतो नः।।**

रेवती मन्त्र-**ॐ पूषन्तव ब्रते वयं न रिष्येम कदाचन। स्तोतारस्त इह स्मसि।।**

अश्विनी मन्त्र-**ॐ यावाङ्कशा मधुमत्यश्विना सूनृतावती। तया यज्ञं मिमिक्षितम्**।। अग्न्युत्तारण एवं प्राण प्रतिष्ठा विशिष्ट पूजन विधि के अनुसार करायें। उसके चारों ओर सुपारियों एवं अक्षत पुंजों पर नक्षत्र के देवता अश्विनी आदि का आवाहन करे। **ॐ अश्विभ्यां नमः अश्विनावाहयामि स्थापयामि।।1।। ॐ यमाय0 यमं0 2। ॐ अग्नये0 अग्निं0 3।। ॐ प्रजापतये0 प्रजापतिं0 4।। ॐ सोमाय0 सोमं0 5। ॐ रुद्राय नमः रुद्रं0 6। ॐ अदितये0 7 अदितिं।**

ॐ बृहस्पतये0 बृहस्पतिं0 8 ॐ सर्पेभ्यो0 सर्पान्0 9। ॐ पितृभ्यो0 पितृन् 10 ॐ भगाय0 भगं0 11 ॐ अर्यम्णे0 अर्यमाणम् 12 ॐ सवित्रे0 सवितारं0 13। ॐ त्वष्ट्रे0 त्वष्टारम् 14 ॐ वायवे0 वायुं 15 ॐ इन्द्राग्नीभ्यां0 इन्द्राग्नीं0 16 ॐ मित्राय0 मित्रं0 17 इन्द्राय0 इन्द्रं0 18 ॐ निर्ऋतये0 निर्ऋतिं 19। ॐ अद्भ्यो0 अप:0 20। ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यो0 विश्वान् देवान्0 21। ॐ ब्रह्मणे0 ब्रह्माणम्0 22 ॐ विष्णवे विष्णुं0 23। ॐ वसुभ्यो0 वसून् 24। ॐ वरुणाय0 वरुणम्0 25। ॐ अजैकपदे0 अजैकपादं 26। ॐअहिर्बु-ध्न्याय0 अहिर्बुध्न्यम्27 ॐ पूष्णे0 पूषाणम् 28।। इत्यावाह्य ॐ मनोजूति0 इति मन्त्रेण ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ निर्ऋत्याद्यावाहितदेवताभ्यो नमः आवाहितदेवता इह सुप्रतिष्ठिता वरदा भवत इस प्रकार चन्दनादि द्वारा पूजा कर **ॐ अनया पूजया निर्ऋत्यावाहितदेवताः प्रीयन्ताम्।** मंत्र पढ़कर जल छोड़ दे। उसके बाद वरुण कलश के सीप चावल एवं गोधूम चूर्ण आदि द्वारा सफेद कमल बनाकर उसके ऊपर सप्त धान्य राशि को रखकर उसके बीच सौ छेद वाले कलश को रख उसके चारों ओर पूर्वादि दिशाओं के क्रम से चार घड़ों को कलश स्थापन विधि (देखें सामान्य पूजन विधि) के अनुसार स्थापित करे। उसमें पहले घड़े में लाल चन्दन कमल, कुष्ट, प्रियंगु, शुंठी, मुस्ता, आमलक, वच, श्वेतसर्षप, मुरामांसी अगर उशीरादि उपलब्ध वस्तुओं को छोड़ें। तदनन्तर **ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव0** इत्यादि परिशिष्ट में दिये गये रुद्राष्टाध्यायी के 5वें अध्याय के आदि से 16 मंत्र) रुद्राध्यायी को पढ़कर कलश स्पर्श करे। फूल छोड़ दे। दक्षिणकुंभ में पंचामृत, गजमद, तीर्थोदक, सप्तधान्यसुवर्णानि छोड़ दें। **ॐ आशुः शिशान0** इस बारह मंत्रों का पाठ करें (देखें परिशिष्ट /रुद्राष्टाध्यायी /तृतीय अध्याय) पश्चिमकुंभ में सप्तमृत्तिका छोड़े। **ॐ कृणुष्वाजः0** पांच मंत्रों को पढ़ें (देखें परिशिष्ट/रुद्राष्टा,) उत्तरकुंभे पंचरत्न, वट, अश्वत्थ, पलाश, प्लक्ष, उदुम्बर के पत्ते और सात कुंओं का जल छोड़ें। रक्षोहरण चार मंत्रों का जप करे। बीच के शत छिद्र वाले कलश में शत औषधियों उसके अभाव में सुलभ अच्छे वृक्षों के पल्लवों को विष्णुक्रान्ता, सहदेवी, तुलसी, शतावरी, कुश, कुंकुम को डालें। **ॐ त्र्यम्बकं** इस मंत्र का 108 बार जप करे। जप के बाद कलश का स्पर्श करे तथा अक्षत, गंध और पुष्प छोड़ें और पूर्णपात्र पर वरुणावहन कर पूजन करे, तदनन्तर अग्निस्थापन स्थान से पश्चिम दिशा में किसी तरह से ऊपर शिकहर बांधकर वहीं बांस के पात्र में कम्बल के टुकड़े को फैलाकर उसके ऊपर सौ छिद्र वाले कलश रखें। तदनन्तर उस कलश के नीचे अच्छे काठ से निर्मित पीढ़ा को रखकर उसे श्वेत वस्त्र से ढक दें। वहां पुत्र एवं पत्नी के सहित यजमान को बैठाएं। उसके बाद शिक्य (शिकहर) में स्थित कलश में धीरे-धीरे चार कुम्भों में स्थित जल को डालकर आचार्य अभिषेक मंत्र द्वारा सपत्नीक यजमान

शिशु के ऊपर जल धारा गिराये। **ॐ देवस्थ त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रिये दधामि बृहस्पतेष्ट्वा साम्राज्येनाभिसिञ्चाम्यसौ।। ॐ देवस्य त्वा0।। सरस्वत्यै वाचोयन्तु यन्त्रेणाग्नेः साम्राज्येनाभिषिंचामि ॐ देवस्य त्वा0।। अश्विनो भैषज्येन तेजसे ब्रह्मवर्चसायाभिषिंचामि सरस्वत्यै भैषज्येन वीर्यायान्नाद्यायाभिषिंचामीन्द्र-स्येन्द्रियेण बलाय श्रियै यशसेऽभिषिंचामि। ॐ योऽसौ वज्रधरो देवो महेन्द्रो गजवाहनः। मूला (मघा, ज्येष्टाऽऽश्लेषा) जातस्य शिशोर्दोषं मातापित्रोः व्यपोहतु।।1।। ॐ योऽसौ शक्तिधरो देवो हुतभुङ् मेषवाहनः। सप्तजिह्वश्च देवोऽग्निर्मूला (ज्येष्ठा, मघा, सार्प, गण्ड) दोषं व्यपोहतु।।2।। योऽसौ दण्डधरो देवो धर्मो महिषवाहनः। मूला (ज्येष्ठा, मघा, सार्प, गण्ड) जातशिशोर्दोषं व्यपोहतु यमो मम।।3।। ॐ योऽसौ खड्गधरो देवो निर्ऋतिर्राक्षसाधिपः। प्रशामयतु मूलोत्थं (ज्येष्ठोत्थं, मघोत्थं, सार्पोत्थं, गण्डोत्थं) दोषं गण्डान्तसम्भवम्।।4।। ॐ योऽसौ पाशधरो देवो वरुणश्च जलेश्वरः। नक्रवाहः प्रचेता वै मूला ज्येष्ठा, मघा, सार्प, गण्ड) दोषं व्यपोहतु।।5।। ॐ योऽसौ देवो जगत्प्राणो मारुतो मृगवाहनः। प्रशामयतु मूलोत्थं, (ज्येष्ठोत्थं, मघोत्थं, सार्पोत्थं, गण्डोत्थं) दोषं बालस्य शान्तिदः।।6।। ॐ योऽसौ निधिपतिर्देवः खड्गभृद् वाजिवाहनः। मातापित्रोः शिशोश्चैव मूला (ज्येष्ठा, मघा, सार्प, गण्ड) दोषं व्यपोहतु।।7।। ॐ योऽसौपशुपतिर्देवः पिनाकी वृषवाहनः। आश्लेषा (मघा, ज्येष्ठा, मूला गण्डा) न्तदोषान्ममाशु व्यपोहतु।।8।। ॐ विघ्नेशः क्षेत्रपो दुर्गा लोकपाला नवग्रहाः। सर्वदोषप्रशमनं सर्वे कुर्वन्तु शान्तिदाः।।9।। ॐ मूलर्क्षे (ज्येष्ठाऽऽश्लेषा, गण्ड) जातबालस्य मातृपित्रोर्धनस्य चा भ्रातृज्ञातिकुलस्थानां दोषं सर्व व्यपोहतु।।10।। ॐ पितरः सर्वभूतानां रक्षन्तु पितरः सदा। मूला (ज्येष्ठा, मघा, सार्प, गण्ड) नक्षत्रजातस्य वित्तं च ज्ञातिवान्धवान्।।11।।** एवं ज्येष्ठा आश्लेषा आदि नक्षत्रों के शान्ति में ततद् निर्धारित मंत्रों के आधार पर तत्तद् कार्य करें।

तदनन्तर यजमान शिशु एवं पत्नी के साथ शुद्ध जल से स्नान कर दूसरा वस्त्र पहन गीले कपड़े को नापित (नाई) को देकर आचमन करे उसक बाद बैठकर यजमान ही **ॐ शिरोमेश्रीर्यशः** इस मंत्र द्वारा अपने अंगों का स्पर्श करे। **तद्यथा ॐ शिरो मे श्रीरस्तु** शिर छूना चाहिए। इसी प्रकार सभी जगह समझना चाहिए। **ॐ यशो मे मुखमस्तु।** इति मुखम्। **ॐ त्विषिर्मे केशाः सन्तु। इति मस्तकस्थान् केशान्। ॐ श्मश्रूणि सन्तु इति कूर्चमुखजरोमाणि। ॐ राजा में प्राणा अमृतमस्तु इति नासिकायां प्राणान्। ॐ सम्राण्मे चक्षुरस्तु इति युगपच्चक्षुषी। ॐ विराट् मे**

श्रोत्रमस्तु। इति श्रोत्रम्। ॐ जिह्वा मे भद्रमस्तु। इति जिह्वा ॐ वाङ्मे महोऽस्तु। इति जिह्वामेव। ॐ मनो मे मन्युरस्तु। इति हृदयम्। (उदकोपस्पर्शः) ॐ स्वराणमे भामोऽस्तु। इतिभुवोर्मध्यम्। ॐ मोदाः प्रमोदाः मेऽङ्गुल्यः सन्तु। इति हस्ताङ्गुलीः पादाङ्गुलीश्च। ॐ मोदाः प्रमोदाः मेऽङ्गानिः सन्तु। इति सर्वाङ्गानि। ॐ मित्रं मे सहोऽस्तु। इति स्वशरीरगतं बलम्। ॐबाहू मे बलमिन्द्रियं स्तां। इति बाहू। ॐ आत्मा मे क्षत्रमस्तु। इति हृदयम्। (उदकोपस्पर्शनम्) ॐ उरो मे क्षत्रमस्तु। इति हृदयमेव। ॐ पृष्ठं मे राष्ट्रमस्तु। इति पृष्ठवंशम्। ॐ उदरे मे राष्ट्रमस्तु इति उदरम्। ॐ अंसौ मे राष्ट्रंस्तां। इत्यंशौ ॐ ग्रीवाश्चमे राष्ट्रं सन्तु। इति ग्रीवा। ॐ श्रोणी में राष्ट्रंस्तां कटिद्वयम्। ॐ ऊरू मे राष्ट्रंस्तां। इत्यूरू। ॐ अरत्नी मे राष्ट्रंस्तां इत्यरत्नी। ॐ जानुनी मे राष्ट्रंष्तां इति जानुनी। ॐ विशो मेऽङ्गानि सर्वत्र सन्तु। इति सर्वाङ्गानि। ॐ नाभिर्मे वित्तमस्तु। इति नाभिम्। ॐ नाभिर्मे विज्ञानमस्तु। इति नाभिमेव। ॐ पायुर्मेऽपचितिरस्तु। इतिपायुं। ॐ भसन्मेऽपचितिरस्तु। इति पायुमेव। ॐ आनन्दनन्दावाण्डौ मे स्तां। इत्यण्डौ। ॐ भगो मे यशोऽस्तु। इति लिङ्गम् ॐ सौभाग्यं मे यशोऽस्तु। इति लिङ्गमेव। ॐ जङ्घाभ्यां धर्मोऽस्मि। इति जंघे। ॐ पद्म्यां धर्मोऽस्मि। इति पादौ। ॐ विशि राजा प्रतिसर्वदेहम्।

तदनन्तर आचार्य कुशकण्डिका करे। **ॐ प्रजापतये स्वाहा0 से प्रारम्भ कर ॐ विश्ववर्म्मन् हविषा0** यहां तक होम प्रकरण के अनुसार हवन करे। **प्रधानहोम**-एक हजार आठ या एक सौ आठ या अट्ठाइस या आठ आहूति प्रदान करे।

मूलनक्षत्रहोम-**ओं असुन्वन्त मे यजमानमिच्छस्तेनस्येत्यामन्विर्हिंतस्करस्य। अन्यमस्मदिच्छ सातषाऽइन्द्र सगणो मरुद्भिः सोमं पिब वृत्रहा शूर विद्वान्। जहि शत्रूंरपमृधोनुदस्वा धा वयं कृणुहि विश्वतो नः स्वाहा।** प्रत्यधिदेवता मंत्र-**ॐ आपोहि ष्ठा मयोभुवस्तान ऊर्जे दधातन महे रणाय चक्षसे स्वाहा।** आश्लेषामन्त्र-**ॐ नमोऽस्तुसर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु। ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः स्वाहा।** अधिदेवता गुरु मन्त्र-**ॐ बृहस्पते अतियदर्यो अर्हाद्द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु यद्दीदयच्छवस ऋतं प्रजा तदसमासु द्रविणं धेहि चित्रं स्वाहा।** तत्प्रत्यधिदेवता पितृमन्त्र-**ॐ उषन्तस्त्वा निधीमह्युशन्तः समिधीमहि। उशन्नुशत आवह पितृन् हविषे अत्तवे स्वाहा।** मघा नक्षत्र मन्त्रहोम-**पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः प्रपितामहेभ्यस्वधायिभ्यः स्वधानमः अक्षन् न पितरो मीमदंत पितरोतीतृपन्तः पितरः पितरः शुन्धध्वं स्वाहा।** तदधिदेवता सर्पमन्त्र-**ॐ नमोऽस्तु सर्पेति0 स्वा0**

तत्प्रत्यधिदेवतामन्त्र-**ॐ भगं प्रणेतर्भग सत्यराधो भगेमान्धियमुदवाददन्नः भगं प्र नो जनय गोभिरश्वैर्भग प्रनृभिर्नृवन्तः श्याम स्वाहा।** ज्येष्ठानक्षत्रमन्त्रहोम-**ॐ इन्द्र आसां नेतां बृहस्पतिर्दक्षिणायज्ञः पुर एतु सोमः। देवसेनानामभि-भञ्जयन्तीनाम्मरुतो यन्त्वग्रं स्वाहा।** तदधिदेवतामन्त्र-**ॐ मित्रस्य च ऋषणीधृतो वो देवस्य सानसि। द्युम्नं चित्रश्रवस्तमं स्वाहा।** तत्प्रत्यधिदेवता मन्त्र-**ॐ असुन्वन्तम0 स्वाहा।** रेवती मन्त्र होम-**ॐ पूषन्तव व्व्रते व्ययन्न रिष्येम कदाचन स्तोतारस्त इह स्मसि स्वाहा।** अधिदेवतामन्त्र-**ॐ शिवो नामासि स्वधितिस्ते पिता नमस्तेऽस्तु मा मा हि ँ सीः। निवर्तयाम्यायुषेन्नाद्याय प्प्रजननाय रायष्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्याय स्वाहा।** प्रत्यधिदेवतामन्त्र-**ॐ यावाङ्कशा0 इत्यादि।**

अश्विनी नक्षत्र मन्त्र होम-**ॐ अश्विना तेजसा चक्षुः प्राणेन सरस्वती वीर्यम्। वाचेन्द्रो बलेनेन्द्राय दधुरिन्द्रियं स्वाहा।** तदधिदेवता मन्त्र-**ॐ पूषन्तव व्व्रते व्वयंन्न रिष्येम कदाचन। स्तोतारस्त इह स्मसि स्वाहा।** प्रत्यधिदेवतामन्त्र-**ॐयमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा धर्माय स्वाहा धर्मपित्रे स्वाहा।** इति प्रधानादिदेवताहोम।

तदनन्तर नक्षत्र देवताओं को नाम मंत्रों के द्वारा प्रत्येक को आठ बार श्रुवा के द्वारा आहूति प्रदान कर स्विष्टत्कृद् होम करे। पुनः भूः से लेकर प्रजापति पर्यन्त नव आहुति करे। उसके बाद दिक्पालों के साथ-साथ बलिदान आदि सभी क्रियाओं को करके प्रधान कुम्भ में स्थित जल को लेकर ब्राह्मण, पत्नी शिशु सहित यजमान का अभिसिञ्चन करें। तदनन्तर मंगल स्नान के बाद दक्षिणा दान का संकल्प करें। **ॐ अद्येह इदं घटं स्वर्णमूर्तिसहितं यथा नामगोत्राय0** उसके बाद कांस पात्र में स्थित घी में शिशु के मुख का अवलोकन कराना चाहिए। नए वस्त्र से आच्छादित शिशु को माता के गोद में रखकर शंख ध्वनि के साथ पिता शिशु का घी से पूर्ण छाया पात्र में मुख देखकर एवं उसकी पत्नी विधिवत् मुख देखकर छाया पात्र संकल्प पूर्वक ब्राह्मण को दे। उसके बाद आवाहित देवताओं का उत्तरपूजन, सूर्यार्घ्यदान, 27 या 10 ब्राह्मणों को भोजन आदि कृत्य करे। **आश्लेषादिगण्डान्तयोः प्रसवेऽपि इदमेवानुष्ठेयम्। इति मूलादिगण्डान्तशान्तिः।।**

कार्तिक स्त्री प्रसूता शान्ति

पुण्यदिन में स्नान किये सपत्नीक सुपुत्र यजमान पूर्वाभिमुख बैठकर ब्राह्मण द्वारा किये गये स्वस्तिवाचन के पश्चात् प्रतिज्ञा करे। तद्यथा-**ॐ तत्सदद्येत्याद्युक्त्वा ज्ञाताज्ञातकायवाङ्मनस्कृतसकलपापक्षयपूर्वक-श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्तिकामः**

सौरकार्तिकमासाधिकरणकैतत्स्वीयस्त्रीप्रसव-संसूचितैतत्कुमारै-तत्पित्राद्यरिष्टोपशमनपूर्वंक-श्रीब्रह्मप्रभृतिदेवताप्रसादाऽव्यवहितोत्तरकालिकैतद्बाल-कैतत्पित्रादिजना-धिकरणकायुःसुखसम्पद्रक्षादिसिद्ध्यर्थं श्रीब्रह्मादिपूजनरूपां कार्तिकस्त्रीप्रसूताशान्तिमहं करिष्ये। तदङ्गभूतं गणपत्यादिपूजनञ्च करिष्ये। इस प्रकार प्रतिज्ञा कर विधिपूर्वक गणेशादि सभी देवताओं की पूजा करे। पुनः पूर्व दिशा में अनाज के ऊपर कलश स्थापित कर उसके ऊपर ब्रह्मा की पूजा करें। आवाहन मंत्र-**ॐ एह्येहि सर्वामरपूज्यपाद पितामहाधोक्षज पद्म जात। चतुर्मुखध्यानरताष्टनेत्र त्वां ब्रह्ममूर्ते भगवन्नमस्ते।** आवाहन कर स्थापना करे। **ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेन आवः। सु बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च वि वः।।** इस मंत्र से ब्रह्मा की पूजा करे। पुनः वरण सामग्री लेकर-**ॐ अद्येत्यादि पूर्वप्रतिज्ञातार्थसिद्ध्यर्थं क्रियमाणकार्तिकस्वस्त्री- प्रसूताशान्त्यङ्गत्वेन ब्रह्मजज्ञानमिति मन्त्रेण यथापरिमितं जपं कारयितुमेभिर्वरणद्रव्यैरमुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणं जापकत्वेन त्वां वृणे।** इस मंत्र से वरण करे। पुनः दक्षिण दिशा में गेहूँ अन्न पर कलश रखकर श्री विष्णु भगवान की पूजा करे। **ॐ एह्येहि नारायण चक्रपाणे लक्ष्मीपते दानववंशवह्ने। सुवर्णपृष्ठासन पद्मनाभ जनार्दनस्त्वं भगवन्नमस्ते।** इस प्रकार आवाहन कर **ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदं समूढमस्यपा ꣳ सुरे स्वाहा** इस मंत्र द्वारा विष्णु की पूजा करे और वरण द्रव्य लेकर संकल्प वाक्य पूर्ववत् पढ़ें। तदनन्तर पशिचम दिशा में चावल पर कलश स्थापित कर रुद्र की पूजा करे। **ॐ एह्येहि भो शंकर शूलपाणे गंगाधर श्रीकर नीलकण्ठ, उमापते भस्मविभूषितांग महेश्वर त्वं भगवन्नमस्ते।** इस प्रकार आवाहन कर **ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतोत इषवे नमः बाहुभ्यामुत ते नमः** इस मंत्र द्वारा पाद्यादि द्वारा रुद्र की पूजा करे। पुनः वरण सामग्री लेकर पूर्ववत् संकल्प करे। पुनः उत्तर दिशा में धान के ऊपर कलश रखकर उसके ऊपर श्री सूर्य की पूजा करे। आवाहन मन्त्र-**ॐ दिवाकरं सहस्रांशुं ब्रह्माद्यैरमरैःस्तुतं। लोकनाथं जगच्चक्षुः सूर्यमावाहयाम्यहं। ॐ भूर्भुवः स्वः कलिङ्गदेशोद्भव काश्यपगोत्र श्रीसूर्य इहागच्छेत्यावाह्य स्थापयेत्। ॐ आकृष्णेन0** मंत्र से पाद्यादि द्वारा सूर्य की पूजा करे।

पुनः वरण सामग्री लेकर **ॐ अद्येत्यादि पूर्वप्रतिज्ञातार्थसिद्ध्यर्थं क्रियमाणकार्तिकस्वस्त्रीप्रसूताशान्त्यंगत्वेन ॐ आकृष्णेति मंत्रेण यथापरिमितं जपं कारयितुं एभिर्वरणद्रव्यैरमुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणं जापकत्वेन त्वामहं वृणे।**

पुनः **त्र्यम्बक0** इस मंत्र का जप ब्राह्मण द्वारा यथाशक्ति कराये।

संकल्प-**ॐ अद्येत्यादि पूर्वंप्रतिज्ञातार्थसिद्ध्यर्थं क्रियमाणकार्तिकमास-स्त्रीप्रसूताशान्त्यङ्त्वेन त्र्यम्बकमिति मन्त्रस्य लक्षं वा पञ्चाशत् सहस्त्रं अयुतं वा जपं कारयितुमेभिर्वरणद्रव्यैरमुकगोत्रान् अमुकामुकशर्मणो ब्राह्मणान्जापकत्वेन युष्मानहं वृणे।** इस प्रकार वरण करे। इस प्रकार ली गयी वरण सामग्रियों से चार ही ब्राह्मण यथादिष्ट दिशाओं में जाकर जप करें। जप के बाद बैठे हुए आचार्यों में प्रमुख आचार्य विधिवत् अग्निस्थापन, कुशकण्डिका कर हवन करे (देखें विशिष्ट देव पूजन विधि/कुशकण्डिका /होम) **ॐप्रजापतये स्वाहा इत्यारभ्य ॐउदुत्तमं वरुण पाशमित्यन्तं हुत्वा ॐ सूर्याय स्वाहा।।1।। ॐ ब्रह्मणे स्वाहा।।2।। ॐ विष्णवे स्वाहा।।3।। ॐ रुद्राय स्वाहा।।4।। ॐ शंभवे स्वाहा।।5।। ॐ ईशाय स्वाहा।।6।। ॐ पशुपतये स्वाहा।।7।। ॐ शिवाय स्वाहा।।8।। ॐ शूलिने स्वाहा ।।9।। ॐ महेश्वराय स्वाहा।।10।। ॐ ईश्वराय स्वाहा।। 11।। ॐ सर्वाय स्वापहा।।12।। ॐ ईशानाय स्वाहा।।13।। ॐ शंकराय स्वाहा।।14।। ॐ चन्द्रशेखराय स्वाहा।।15।। ॐ भूतेशाय स्वाहा।।16।। ॐ खण्डपरशवे स्वाहा।। 17।। ॐ गिरीशाय स्वाहा।।18।। ॐ मृडाय स्वाहा।।19।। ॐमृत्युंजयाय स्वाहा।।20।। ॐ कृत्तिवाससे स्वाहा।।21।। ॐ पिनाकिने स्वाहा।।22।। प्रमथाधिपाय स्वाहा।।23।। ॐ उग्राय स्वाहा।।24।। ॐ कपर्दिने स्वाहा।।25।। ॐ श्रीकण्ठाय स्वाहा।।26।। ॐ शितिकंठाय स्वाहा।।27।। ॐ कपालभृते स्वाहा।।28।। ॐ वामदेवाय स्वाहा।।29।। ॐ विरूपाक्षाय स्वाहा।।30।। ॐ त्रिलोचनाय स्वाहा।।31।। ॐ कृशानुरेतसे स्वाहा।।32।। ॐ सर्वज्ञाय स्वाहा।।33।। ॐ धूर्जटये स्वाहा।।34।। ॐ नीललोहिताय स्वाहा।।35।। ॐ स्मरहराय स्वाहा।।36।। ॐ भर्गाय स्वाहा।।37।। ॐ त्र्यम्बकाय स्वाहा।।38।। ॐ त्रिपुरान्तकाय स्वाहा।।39।। गंगाधराय स्वाहा।।40।।**

इस प्रकार **'त्र्यम्बकम्'0** मंत्र के द्वारा घी युक्त विल्वपत्र से दशांश हवन करे। उसके बाद सपत्नीक यजमान शिशु को गोद में लेकर बैठे। आचार्य वेदोक्त मंत्रों तथा पुराणोक्त मंत्रों द्वारा तीन कुश से अभिषेक करे।

मन्त्र-**सुरास्त्वामभिषिञ्चन्तु0** इत्यादि **अग्नितो मे भयं मास्तु रोगाच्च व्याधिवंधनात्। सशस्त्रविषतोयौघात् भयं नाशय मे सदा। योऽसौ पशुपतिर्देवः पिनाकी वृषवाहनः कार्तिकस्त्रीप्रसूतायाः दोषमाशु व्यपोहतु।** अभिषेक के बाद प्रार्थना-**रक्ष मां पुत्रपौत्रांश्च रक्ष मां पशुबन्धनात्। रक्ष पत्नीं पतिं चैव पितरं मातरं धनम्।।**

तदनन्तर छायापात्र दान, आवाहित देवताओं की उत्तर पूजा, सूर्यार्घ्यदान आदि कृत्य कर **प्रमादात्0** इस श्लोक को पढ़ें।

इति कार्तिकस्त्रीप्रसूताशान्ति।।

पंचम खण्ड : ज्योतिष एवं मुहूर्त

पञ्चाङ्ग विवरण एवं देखने की विधि

विभिन्न कर्मकाण्डों व्रतों एवं त्योहारों हेतु समय एवं तिथि का बड़ा महत्त्व है और समय की अनुकूलता से ही कोई क्रिया सफल होती है। इसीलिये भारतीय कर्मकाण्ड पद्धति में समय योजना के अनुसार ही कर्मकाण्डों का विधान किया गया है। दैनिक क्रियाओं में समयानुसार अनुष्ठानों, व्रतों यज्ञादि में पञ्चाङ्ग के आधार पर सभी क्रियायें संपादित की जाती हैं और अनेक विवेकाधीन कर्मों में मुहूर्त के अनुसार कार्य सम्पादित करने पर बल दिया जाता है। पञ्चाङ्ग शब्द दो शब्दों के मेल से बना है पञ्च और अंग अर्थात् काल निर्धारण के पांच प्रमुख अंग हैं–वार, तिथि, नक्षत्र योग और करण। इनमें सूर्य तथा चन्द्र की स्थिति की प्रधानता है। पञ्चाङ्ग में यह प्रत्येक मास के विवरण में प्राय: प्रारम्भ में रखे जाते हैं। इनका संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार है–

वार–दिनों के नाम को 'वार' कहते हैं, जो भारतीय पद्धति के अनुसार क्रमश: सूर्य, चन्द्र, भौम या मंगल बुध, गुरु या बृहस्पति, शुक्र तथा शनि के नाम पर सामान्यत: रविवार, चन्द्रवार। (सोमवार), मंगलवार, बुधवार, गुरुवार, शुक्रवार, शनिवार के नाम से जाने जाते हैं। इसका समय एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक होता है।

तिथि–तिथि सूर्य और चन्द्रमा के अन्तर से बनती है क्योंकि सूर्य के प्रकाश से चन्द्र की कलाओं (प्रकाशित अंशों) में अन्तर होता रहता है। इन्हें कुल 30 भागों में विभाजित किया गया है। इस प्रकार सूर्य और चन्द्र के प्रत्येक 12 अंश पर एक तिथि बढ़ती है जिन्हें क्रमश: प्रतिपदा (प्रथमा) द्वितीया आदि से लेकर अमावस्या तक कृष्णपक्ष की तथा इसी प्रकार प्रतिपदा, द्वितीया, तृतीया आदि से पूर्णिमा तक शुक्लपक्ष की 15-15 तिथियां कहीं जाती हैं। सम्पूर्ण तिथियों को मिलाकर एक चन्द्रमास होता है, जिसे पञ्चाङ्ग में अलग से चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, माघ एवं फाल्गुन नामों से अलग-अलग प्रदर्शित किया जाता है।

नक्षत्र–पूरे आकाश मण्डल को 12 राशियों के अतिरिक्त 27 नक्षत्रों में विभाजित किया गया है, जिनके नाम–अश्विनी, भरणी, कृत्तिका रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा मघा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढ़, उत्तराषाढ़, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपदा, उत्तराभाद्रपदा, तथा रेवती हैं।

अश्विनी भरणी चैव कृतिका रोहिणी तथा
मृगशीर्षस्तथाऽऽर्द्रा च पुनर्वसुरतः परम् ।1।
पुष्याश्लेषामघाः प्रोक्ताः पूर्वा चोत्तरफाल्गुनी
हस्तश्चित्रा तथा स्वाती विशाखा तदनन्तरम् ।2।
अनुराधा तथा ज्येष्ठा मूलभं च ततः परम्
पूर्वाषाढोत्तराषाढाऽभिजिच्च श्रवणं ततः ।3।
धनिष्ठा च ततो ज्ञेया शततारा ततः परम्
पूर्वाभाद्रपदा प्रोक्ता ततश्चोत्तरभाद्रकम् ।4।
रेवती चेति भानां हि नामानि कथितानि वै
सप्तविंशतिसंख्यानां सदसत्फलहेतवे ।5।

चन्द्र जिस दिन (वार) जिस नक्षत्र में स्थित होता है। उस नक्षत्र का नाम पञ्चाङ्ग में संक्षेप में अंकित किया जाता है।

योग-सूर्य और चन्द्र के स्पष्ट का योग (जोड़) ही योग कहा जाता है। वस्तुतः दोनों अंशों का योग 800 कला होता है। योग भी 27 हैं। इनके नाम निम्नलिखित हैं-विष्कुम्भ, प्रीति, आयुष्मान्, सौभाग्य, शोभन, अतिगंड, सुकर्मा, धृति, शूल, गण्ड, वृद्धि, ध्रुव, व्याघात, हर्षण, वज्र, सिद्धि, व्यतीपात, वरीयान्, परिध, शिव, सिद्धि साध्य, शुभ, शुक्ल, ब्रह्मा, ऐन्द्र और वैधृति आदि हैं।

विष्कुम्भः प्रीतिरायुष्मान् सौभाग्यः शोभनाभिधः
अतिगण्डः सुकर्माख्यो धृतिः शूलाभिधानकः।1।
गण्डो वृद्धिर्ध्रुवश्चाथ व्याघातो हर्षणह्वयः।
वज्रसिद्धिर्व्यतीपातो वरियान्परिघः शिवः।2।
सिद्धिः साध्यः शुभः शुक्लो ब्रह्मा चेन्द्रोऽथ वैधृतिः
योगानां ज्ञेयमेतेषां स्वनामासदृशं फलम्।3।

करण-सूर्य से अंशचन्द्र आगे जाता है। तब एक करण होता है। एक दिन में दो करण होते हैं। करण कुल 11 हैं इनमें से 7 चर करण होते हैं, जो महीने में आठ-आठ बार घूम कर आते हैं।

बवाह्वयं बालवकौलवाख्ये, ततो भवेत्तैतिलनामधेयम्।
गराभिधानं वणिजं च विष्टिरित्याहुरार्या करणानि सप्त।।
चतुर्दशी या शशिना विहीना तस्या विभागे शकुनिर्द्वितीये।
दर्शाद्ययोस्तच्चतुरङ्घ्रिनागो किंस्तुघ्नमाद्ये प्रतिपद्दले च ।।

चर स्थित करण चक्र

कृष्ण पक्ष			शुक्ल पक्ष		
तिथि	पूर्वार्ध	उत्तरार्ध	तिथि	पूर्वार्ध	उत्तरार्ध
1, 8	बालव	कौलव	1	किंस्तुघ्न	बव
2, 9	तैतिल	गर	2,9	बालव	कौलव
3, 10	वणिज	विष्टि	3, 10	तैतिल	गर
4, 11	बव	बालव	4, 11	वणिज	विष्टि
5, 12	कौलव	तैतिल	5, 12	बव	बालव
6, 13	गर	बणिज	6, 13	कौलव	तैतिल
7	विष्टि	बव	7, 14	गर	वणिज
14	भद्रा	शकुनि	8, 15	विष्टि	बव
30	चतुष्पद	नाग	×	×	×

इसके अतिरिक्त चार स्थिर करण होते हैं, जो महीने में एक बार आते हैं।

विशेष-भारतीय पञ्चाङ्ग में दिन का आरम्भ सूर्योदय से होता है। इसलिये सूर्योदय के समय जो वार, तिथि, योग तथा करण होते हैं, उनका नाम संक्षेप में अंकित किया जाता है उनके आगे घटि एवं पल अथवा घ. मिनट के रूप में अंत होने का समय अंकित किया जाता है। भारतीय पञ्चाङ्गों में इसके अतिरिक्त भी अनेक व्रत, पर्व संबंधी विशेष विवरण के अतिरिक्त सूर्योदय, सूर्यास्त का समय अंग्रेजी, बंगला, हिजरी फसली, सौर तथा राष्ट्रीय तिथियों का भी उल्लेख किया जाता है। साथ ही दिनमान चन्द्र का विभिन्न राशियों में प्रवेश (समय सहित) तथा विभिन्न ग्रहों का स्पष्ट, स्पष्टांश विशिष्ट तिथियों का अयनांश एवं ग्रह स्थिति बोधक चक्र दिया जाता है।

लग्न-क्षितिज के पूर्व बिन्दु पर जिस राशि का जो अंश विशिष्ट क्षण में पड़ता है, उसे लग्न कहते हैं। पञ्चाङ्गों में लग्न के रूप में राशियों की स्थिति भी दी गई रहती है। जिससे कि किसी विशिष्ट दिन को किसी भी समय के लग्न का ज्ञान ग्रहों के स्पष्ट की भांति ही किया जाता है।

पञ्चाङ्ग देखने की विधि-जिस समय के बारे में जानकारी करनी हो। सर्वप्रथम उस भारतीय मास के पृष्ठों को खोलना चाहिये। भारतीय मास के साथ सामान्यत: अंग्रेजी

मास के दिनांक की अवधि भी संबंधित मास के कृष्णपक्ष तथा शुक्ल पक्ष के लिये निर्धारित अलग-अलग पृष्ठों में दी गई होती है, जिससे यह स्पष्ट हो जाता है कि संबंधित सूचना किस भारतीय मास के संबंधित पृष्ठ से सबंधित है। पुन: वार क्रम से जिस दिनांक की तिथि के बारे में स्थिति की जानकारी करनी हो उस पंक्ति को देखा जा सकता है। उससे संबंधित पंक्ति में सूर्योदय के समय कौन सी तिथि, नक्षत्र करण, योग आदि है, वह एक ही दृष्टि में देखा जा सकता है। सूर्योदय के समय तत्समय प्रवृत्त संबंधित तिथि या नक्षत्र आदि कब तक प्रभावी रहेंगे, यह अवधि भी सामान्यत: घटि एवं पल में अथवा रूपान्तरण के उपरान्त रात्रि या दिन के घंटे मिनट में अंकित होते हैं। यदि रूपान्तरण न कियाा गया हो तो 24 घंटे = 60 घड़ी अथवा 1 घंटे = ढाई घड़ी के अनुसार सूर्योदय के अंकित समय में जोड़कर ऐसी अवधि निकाली जा सकती है, जैसे उदाहरणार्थ-संवत् 2059 (शक 1924) तदनुसार कैलेण्डर वर्ष 2002-2003 के ऋषिकेश पञ्चांग पृष्ठ-22 के द्वितीय पंक्ति को यदि हम देखें तो यह 23 सितम्बर 2002 के सूर्योदय अर्थात् 6 बजे प्रात: की स्थिति स्पष्ट करती है।

उक्त दिनांक को सोमवार द्वितीया तिथि रेवती नक्षत्र आदि स्पष्टतया अंकित है। इससे स्पष्ट है कि द्वितीय तिथि सूर्योदय से 41 घटि एक पल तक है जो पिछले दिन रविवार को प्रतिपदा के 35 घटि 49 पल पर समाप्त के वाद प्रारम्भ हुई थी। इसको भारतीय मानक के अनुसार रूपान्तरित करने पर जैसा कि इसी पञ्चांग में अंकित किया गया है। 22 सितम्बर की रात्रि 8.19 मिनट के बाद प्रारम्भ करते हुए 23 सितम्बर की तिथि 23 सितम्बर 10.25 मिनट तक प्रवृत्त माना जायेगा। इसी प्रकार उत्तरभाद्रपद के समाप्त होने के बाद रेवती नक्षत्र 22 सितम्बर रविवार रात्रि 7 बजकर 44 मिनट से प्रारम्भ होकर 23 सितम्बर सोमवार की रात्रि 10.22 मिनट तक प्रभावी माना जायेगा। अर्थात् चन्द्रमा उक्त नक्षत्र की सीमा में उक्त अवधि में संचार करेगा।

इसी प्रकार उसी पंक्ति में ध्रुव योग सूर्योदय से 59 घटी 11 पल अर्थात् रात्रि 5 बजकर 40 मिनट तक तैत्तिल करण 8 घटी 25 पल और गर करण 41 घटी 1 पल तक है। उसी पंक्ति में दि. 23 सितम्बर 2002 को ही चन्द्र राशि प्रवेश भी दर्शाया गया, जो मेष राशि में सूर्योदय के उपरान्त 40 घटी 54 पल पर प्रवेश कर रहा है। पञ्चाङ्गों में सूर्योदय एवं सूर्यास्त के अतिरिक्त सूर्योदय काल में औदयिक स्पष्ट सूर्य भी प्राय: देते हैं। प्रस्तुत प्रकरण में औदयिक सूर्य 5-5-21-8 है। अर्थात् पाँच राशियाँ पार करने के बाद छठी कन्या राशी के 5 अंश 21 कला एवं 8 विकला पर सूर्य की स्थिति सूर्योदय के समय दर्शित है। सूर्य स्पष्ट के अतिरिक्त अन्य ग्रहों का स्पष्ट अलग से दिया गया है।

23 सितम्बर कैलेण्डर वर्ष 2002 पृष्ट 22

श्रीसंवत् २०५९ शकः १९२४ याम्यायनगोलयोः शरदर्त्तुः॥

दि.म. घ.	प.																									
३०	६	१	र	३५	४९	रा	८	१९	उ. भा.	३४	२३	रा	७	४४	वृद्धि	५७	४१	रा	५	३	वा	३	२०	कौ	३५	४९
३०	२	२	चं	४१	१	रा	१०	२४	रेवती	४०	५४	रा	१०	२२	ध्रुव	५९	११	रा	५	४०	तै	८	२५	गर	४१	१
२९	५८	३	मं	४६	३	रा	१२	२५	अश्विनी	४७	१४	रा	१२	५४	व्याघात	६०	०	स	म	स्त	व	१३	३२	भ	४६	३
२९	५४	४	बु	५०	२७	रा	२	१२	भरणी	५३	०	रा	३	१३	व्याघात	०	२५	प्रा	६	११	बव	१८	१५	वा	५०	२७
२९	५१	५	गु	५३	५९	रा	३	३८	कृत्तिका	५७	५३	रा	५	११	हर्षण	१	११	प्रा	६	३०	कौ	२२	१३	तै	५३	५९
२९	४७	६	शु	५६	२२	रा	४	३६	रोहिणी	६०	०	स	म	स्त	वज्र	१	११	प्रा	६	३१	गर	२५	१०	व	५६	२२
२९	४३	७	श	५७	३२	रा	५	४	रोहिणी	१	४०	प्रा	६	४३	सिद्धि	०/५८	२०/९	प्रा	६/५	११/२७	भ	२६	५७	बव	५७	३२
२९	४०	८	र	५७	२३	रा	५	१	मृगशिर	४	१४	प्रा	७	१६	वरीयान	५५	३९	रा	४	२०	वा	२७	२७	कौ	५७	२३
२९	३६	९	चं	५५	५७	रा	४	२७	आर्द्रा	५	३१	दि	८	१६	परिघ	५१	४८	रा	२	४७	तै	२६	४०	गर	५५	५७
२९	३२	१०	मं	५३	२१	रा	३	२५	पुनर्वसु	५	३६	दि	८	१६	शिव	४७	२	रा	१२	५४	व	२४	३९	भ	५३	२१
२९	२९	११	बु	४९	४६	रा	२	०	पुष्य	४	३१	प्रा	७	५४	सिद्ध	४१	२६	रा	१०	४०	बव	२१	३३	वा	४९	४६
२९	२५	१२	गु	४५	१८	रा	१२	१४	श्लेषा	२/५७	३३/८	प्रा	७/५	८/५६	साध्य	३५	९	रा	८	११	कौ	१७	३२	तै	४५	१८
२९	२२	१३	शु	४०	८	रा	१०	११	पू. फा.	५६	१५	रा	४	३८	शुभ	२८	१६	सा	५	२६	गर	१२	४३	व	४०	८
२९	१८	१४	श	३४	२९	रा	७	५६	उ. फा.	५२	२०	रा	३	४	शुक्ल	२०	५३	दि	२	२९	भ	७	१८	श	३४	२९
२९	१४	३०	र	२८	२८	सा	५	३२	हस्त	४८	११	रा	१	२५	ब्रह्म	१३	१६	दि	११	२७	च	१	२८	ना	२८/५५	२८/२६

	योगाः	अं	फ	हि	सौ	रा	चन्द्र राशिप्रवेशः		सूर्योदय घं	मि	सूर्यास्त घं	मि	औदयिक स्पष्ट सूर्यः				क्रान्तिः उ + द −		रे अं.	− मि.
१	स्थिर	२२	१	१४	५	३१			५	५९	६	१	५	४	२२	२४	०	३०	−	९
२	मातंग	२३	२	१५	६	१	मेष	४० | ५४	६	०	६	०	५	५	२१	८	० उ	६	−	९
३	अमृत	२४	३	१६	७	२			६	०	६	०	५	६	१९	५४	० द	१७	−	१०
४	काण	२५	४	१७	८	३			६	१	५	५९	५	७	१८	४३	०	४१	−	१०
५	लुम्बक	२६	५	१८	९	४	वृष	९ | १३	६	२	५	५८	५	८	१७	३४	१	४	−	१०
६	मित्र	२७	६	१९	१०	५			६	३	५	५७	५	९	१६	२८	१	२७	−	११
७	श्रीवत्स	२८	७	२०	११	६	मिथुन	३२ | ५७	६	३	५	५७	५	१०	१५	२४	१	५१	−	११
८	सौम्य	२९	८	२१	१२	७			६	४	५	५६	५	११	१४	२२	२	१४	−	११
९	का.दं.	३०	९	२२	१३	८	कर्क	५० | ३६	६	४	५	५६	५	१२	१३	२२	२	३७	−	१२
१०	स्थिर	अ	१०	२३	१४	९			६	५	५	५५	५	१३	१२	२४	३	१	−	१२
११	मातंग	२	११	२४	१५	१०			६	६	५	५४	५	१४	११	२९	३	२४	−	१२
१२	अमृत	३	१२	२५	१६	११	सिंह	२ | ३३	६	७	५	५३	५	१५	१०	३७	३	४७	−	१३
१३	सिद्धि	४	१३	२६	१७	१२			६	८	५	५२	५	१६	९	४६	४	१०	−	१३
१४	उत्पात	५	१४	२७	१८	१३	कन्या	१० | १६	६	८	५	५२	५	१७	८	५८	४	३४	−	१३
३०	मानस	६	१५	२८	१९	१४			६	९	५	५१	५	१८	८	१२	४	५७	−	१४

उसी पृष्ठ पर आश्विनी कृष्ण 8 रविवार अर्थात् 29 सितम्बर की प्रातः के ग्रह स्पष्ट की दैनिक गति के साथ ग्रहों का स्थितचक्र (कुण्डली) भी बायीं तरफ दी गई है। इस ग्रह चक्र (कुण्डली) की स्थित की पुष्टि दैनिक स्पष्ट ग्रह जो सबसे बांये है की आठवीं पंक्ति के विवरण से की जा सकती है।

सूर्योदये दैनिकस्पष्टभौमादिग्रहाः।

ति	वा	भौमः				व॰ बुधः				गुरुः				शुक्रः				शनिः				राहुः			
१	र	४	१९	४०	५	५	३	५७	५०	३	१८	४६	५२	६	१२	४४	५२	२	४	२१	५०	१	१८	२३	१०
२	चं	४	२०	१८	१४	५	३	६	१८	३	१८	५७	५४	६	१३	१५	८	२	४	२४	६	१	१८	१९	५९
३	मं	४	२०	५६	२३	५	२	२२	११	३	१९	८	५६	६	१३	४५	२५	२	४	२६	२२	१	१८	१६	४८
४	बु	४	२१	३४	३३	५	१	५९	१०	३	१९	१९	५८	६	१४	१५	४२	२	४	२८	३७	१	१८	१३	३७
५	गु	४	२२	१२	४२	५	१	३५	५७	३	१९	३१	१	६	१४	४५	५९	२	४	३०	५३	१	१८	१०	२७
६	शु	४	२२	५०	२९	५	१	१२	४३	३	१९	४१	३७	६	१५	१६	१६	२	४	३३	९	१	१८	७	१६
७	श	४	२३	२८	११	५	०	४९	३१	३	१९	५१	१२	६	१५	४६	३३	२	४	३५	२४	१	१८	४	५
८	र	४	२४	५	५२	५	०	३९	४४	३	२०	०	४९	६	१६	१६	४९	२	४	३७	४०	१	१८	०	५४
९	चं	४	२४	४३	३४	मा	०	४८	३३	३	२०	१०	२३	६	१६	४७	६	२	४	३९	१०	१	१७	५७	४४
१०	मं	४	२५	२१	१६	५	०	५७	८	३	२०	१९	५९	६	१७	१७	२३	२	४	३९	४९	१	१७	५४	३३
११	बु	४	२५	५८	५८	५	१	५	४४	३	२०	२९	३४	६	१७	४७	४०	२	४	४०	२८	१	१७	५१	२२
१२	गु	४	२६	३६	४०	५	१	१४	१९	३	२०	३९	९	६	१८	१	४०	२	४	४१	६	१	१७	४८	११
१३	शु	४	२७	१४	२१	५	१	३८	५३	३	२०	४८	४५	व	१७	५६	३८	२	४	४१	४५	१	१७	४५	०
१४	श	४	२७	५२	४	५	२	१५	३९	३	२०	५८	२०	६	१७	४७	४३	२	४	४२	२४	१	१७	४१	५०
३०	र	४	२८	२९	४७	५	२	५२	११	३	२१	७	५५	६	१७	३८	४६	२	४	४३	३	१	१७	३८	३९

२३पं॰ आश्विनकृष्ण ८ रवौ
सूर्योदये स्पष्टग्रहाः।
द्युगणः ३५४३
अयनांशाः २३।५२।३९

सु	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
५	२	४	५	३	६	२	१	७
११	५	२४	०	२०	१६	४	१८	१८
१४	५२	५	३६	०	१६	३७	०	०
२२	१६	५२	४४	४६	४९	४०	५४	५४
५९	७६७	३७	८	९	३०	१	३	३
०	११	४२	४९ मा	३४	१४	३०	११	११

७
५ मं.
के
शु.
सू ६ बु.
४
गु.
८
चं.
३ श
९
१०
१२
रा २
११
१

सूर्योदय के समय लग्न देखने के लिये उस लग्न सारिणी आठवां स्तम्भ आठ-2 को देखने से स्पष्ट है कि प्रातः 7.27 मिनट तक कन्या लग्न है, जो ग्रह चक्र में अंक 6 में सबसे ऊपर द्योतित है। इसी प्रकार किसी भी वार या दिनांक के लिए ग्रहों की दैनिक गति के अनुसार तथा लग्न सारिणी के आंकड़ों के अनुसार प्रत्येक ग्रह की स्थिति स्पष्टांश के रूप में पञ्चांग की सहायता से निकाली जा सकती है। इसी प्रकार किसी घटना अथवा कार्य के दिन व समय (तथास्थान) के आधार पर ग्रहों की स्थिति की स्पष्ट जानकारी की जा सकती है। केवल मानक समय के अनुसार पञ्चांग के संदर्भ स्थल की दृष्टि से लग्न की स्थिति में आंशिक संशोधन वांछित होगा।

लग्न सारिणी

तिथि	१र		२चं.		३मं.		४बु.		५गु.		६शु.		७श.		८र.		९चं.		१०मं.	
लअं	घं	मि	घं	मि	घं	मि	घं	मि	घं	मि	घं	मि	घं	मि	घं	मि	घं	मि	घं	मि
कन्या	७	५३	७	४९	७	४५	७	४२	७	३८	७	३४	७	३१	७	२७	७	२३	७	२०
तुला	१०	९	१०	५	१०	१	९	५८	९	५४	९	५०	९	४७	९	४३	९	३९	९	३६
वृश्चिक	१२	२६	१२	२२	१२	१८	१२	१५	१२	११	१२	७	१२	४	१२	०	११	५६	११	५३
धनु	२	३२	२	२८	२	२४	२	२१	२	१७	२	१३	२	१०	२	६	२	२	१	५९
मकर	४	१९	४	१५	४	११	४	८	४	४	४	०	३	५७	३	५३	३	४९	३	४६
कुम्भ	५	५०	५	४६	५	४२	५	३९	५	३५	५	३१	५	२८	५	२४	५	२०	५	१७
लअं	रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि		रात्रि	
मीन	७	१८	७	१४	७	१०	७	७	७	३	६	५९	६	५६	६	५२	६	४८	६	४५
मेष	८	५५	८	५१	८	४७	८	४४	८	४०	८	३६	८	३३	८	२९	८	२५	८	२२
वृष	१०	५१	१०	४७	१०	४३	१०	४०	१०	३६	१०	३२	१०	२९	१०	२५	१०	२१	१०	१८
मिथुन	१	५	१	१	१२	५७	१२	५४	१२	५०	१२	४६	१२	४३	१२	३९	१२	३५	१२	३२
कर्क	३	२३	३	१९	३	१५	३	१२	३	८	३	४	३	१	२	५७	२	५३	२	५०
सिंह	५	३७	५	३३	५	२९	५	२६	५	२२	५	१८	५	१५	५	११	५	७	५	४

उल्लेखनीय है कि प्राय: पञ्चाङ्गों में पाश्चात्य पद्धति एवं भारतीय ज्योतिष के बीच ग्रहों की स्थित के अन्तर के स्पष्ट करने के लिए अयनांश भी दिया गया होता है। इसी पृष्ठ पर 23 अंश 52 कला 39 विकला दिया हुआ है, जिससे निरयन से सायन पद्धति में तथा सायन से निरयन पद्धति में आंकड़ों के अनुसार रूपान्तरित किया जा सकता है। लग्न तथा समय के अनुसार स्थलीय अन्तर को स्पष्ट करने के लिए पृष्ठ 40-41 पर दी गई सारिणी का उपयोग किया जा सकता है।

उत्तरप्रदेश	अक्षांश		दि.	घ.	प.	वि.
अमरोहा	२९	०४	प	०	४५	०
अयोध्या	२६	४८	प	०	७	४०
अल्मोड़ा	२९	३७	प	०	३३	२०
अलीगढ़	२७	५५	प	०	४९	०
अहरौरा	२४	५९	पू	०	०	२०
आगरा	२७	१०	प	०	४९	१०
आज़मगढ़	२६	३	पू	०	२	१०
इटावा	२६	४७	प	०	३९	४०
इलाहाबाद	२५	२८	प	०	११	०
उन्नाव	२६	३२	प	०	२५	५०
एटा	२७	३५	प	०	४४	१०
कानपुर	२६	२८	प	०	२६	४०
काशी	२५	१८	—	०	०	०
गढ़वाल	३०	१५	प	०	३५	०
गाज़ीपुर	२५	३४	पू	०	५	५०
गोंडा	२७	८	प	०	९	५०
गोरखपुर	२६	४५	पू		४	०
चुनार	२५	८	प	०	०	४०
चित्रकूट	२५	२२	प		२०	०
जालौन	२६	८	प	०	३५	१०
जौनपुर	२५	४६	प	०	२	४०
झाँसी	२५	२७	प	०	४९	५०
देहरादून	३०	१९	प	०	४९	२०
देवरिया	२६	३३	पू	०	७	०
नैनीताल	२९	२३	प	०	३५	०
प्रतापगढ़	२५	५४	प	०	१०	१०
पीलीभीत	२८	४०	प	०	३९	३०
फर्रुखाबाद	२७	२४	प	०	३३	५०
बरेली	२८	२२	प	०	३५	३०
बलिया	२५	४४	पू	०	११	५०
बस्ती	२६	४८	प	०	२	२०
बहराइच	२७	३४	प	०	१५	०
बाँदा	२५	२८	प	०	२४	४०
बाराबंकी	२६	५६	प	०	१७	५०
बिजनौर	२९	२३	प	०	४८	३०
मथुरा	२७	२८	प	०	५३	१०
मिर्ज़ापुर	२५	१०	प	०	३	५०
मुज़फ्फरनगर	२९	२८	प	०	५२	४०
मुरादाबाद	२८	५०	प	०	४९	
मेरठ	२९	१	प	०	५२	
मैनपुरी	२७	१४	प	०	३९	
रामपुर	२८	४९	प	०	३९	
रायबरेली	२६	१४	प	०	१७	
राबर्ट्सगंज	२४	४९	पू	०	०	
रुड़की	२९	५२	प	०	५२	
लखनऊ	२६	५५	प	०	२०	
ललितपुर	२४	२२	प	०	४५	
शाहजहाँपुर	२७	५४	प	०	३०	
सहारनपुर	२९	५८	प	०	५६	
सुल्तानपुर	२६	१६	प	०	८	
हमीरपुर	२५	५८	प		२८	
हरदोई	२७	२३	प	०	२८	
हरिद्वार	२९	५८	प	०	४७	
हाथरस	२७	३६	प	०	४९	
हल्द्वानी	२९	२३	प	०	३४	

नक्षत्र और राशि-पूरे आकाश मंडल को ग्रहों के भ्रमण तथा स्थिति के निर्धारण के लिए सर्वप्रथम 12 भागों में बांटा गया है जो तारामंडलों से बनी आकृतियों के अनुसार है।

इसी पूरे आकाश मंडल को एक दूसरे विभाजन क्रम में 27 भागों में विभाजित किया गया है इन्हें जैसा कि ऊपर बताया गया है। पुनः प्रत्येक नक्षत्र को चार उपविभागों में बांटा गया है, जिन्हें नक्षत्र का एक चरण कहते हैं। इस प्रकार संपूर्ण आकाश मंडल के 27 नक्षत्रों के सभी 4 चरणों को मिलाकर 27 X 4=108 छोटे-छोटे लगभग स्थिर से विभाग हैं। इस प्रकार कुल राशियों से 108 उपविभागों को वितरित करने में राशि में 9 चरण आते हैं, जिसमें दो पूरे नक्षत्र तथा एक अन्य तीसरे नक्षत्र का एक चरण आता है।

इन 108 उपविभागों के लिये 108 (चू चे, चो ला आदि) वर्ण प्रतीक निर्धारित हैं। पञ्चांग में नक्षत्रों की स्थिति के अनुसार विशेष प्रकार की घटना नक्षत्र के किस चरण में हुई, यह गणना कर निकाला जा सकता है। इसी क्रम में यदि किसी बालक का जन्म किसी दिन के जिस समय पर हुआ हो, उस समय के अनुसार नक्षत्र के चरण के अनुसार उसके नाम का प्रारम्भिक वर्ण रखने से नाम लेने मात्र से स्पष्ट हो जाता है कि उसका जन्म किस नक्षत्र के किस चरण में हुआ। तदनुसार उसकी राशि आदि स्पष्ट हो जाती है। इसे दो व्यक्तियों की मैत्री या विवाह के समय एक दूसरे से संगति बैठाने के लिए प्रायः उपयोग किया जाता है। देखें तालिका/होड़ा चक्र।

विवाह में गुण मिलान के लिए विशेष विचार-जिसकी जन्मराशि न ज्ञात हो उसके चालू नाम से विचार करना चाहिए। वर कन्या में यदि एक की जन्मराशि ज्ञात हो दूसरे की न ज्ञात हो तो दोनों के चालू नाम से विचारना चाहिये यदि दोनों का जन्म नाम ज्ञात हो तो उससे ही गुण मिलान करना श्रेष्ठ है अन्यथा दम्पत्ति के लिए हानिकारक होगा।

गुण-(1) वर्ण का गुण 1, (2) वश्य का 2, (3) तारा के 3, (4) योनि के 4, (5) मैत्री के 5, (6) गण मैत्री के 6, (7) भकूट (राशिकूट) के 7, (8) नाड़ी के 8 गुण होते हैं। सब मिलाकर 36 गुण होते हैं।

गुण मिलान-16 गुण मिलें तो निंदनीय, 20 गुण मध्यम, 36 गुण श्रेष्ठ है। प्रायः 18 गुणों से अधिक गुण शुभ माने जाते हैं। यह नियम भकूट मिलान पर है यदि भकूट (षड़ाष्टक) न मिलता हो तो 20 गुण तक अधम, 25 गुण तक मध्यम, पश्चात् 36 गुण तक श्रेष्ठ हैं।

गुण मिलान को तालिका आगे दी जा रही है।

होड़ा चक्र

राशयः	मेष	मेष	१ मे. ३ वृ.	वृष	२ वृ. २ मि.	मिथुन	३ मि. १ क.	कर्क	कर्क	सिंह	सिंह	१ सिं. ३ कं.	कन्या	२ कं. २ तु.
भानां वर्णाः	चू चे चो ला	ली लू ले लो	अ ई ऊ ए	ओ वा वी वू	वे वो का की	कू घ ङ छ	के को हा ही	हू हे हो डा	डी डू डे डो	मा मी मू मे	मो टा टी टू	टे टो पा पी	पू ष ण ठ	पे पो रा री
नक्षत्राणि	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा
वर्णाः	क्षत्रिय	क्षत्रिय	क्षत्रि १ वैश्य ३	वैश्य	वैश्य२ शूद्र२	शूद्र	शूद्र३ विप्र१	विप्र	विप्र	क्षत्रिय	क्षत्रिय	क्षत्रि१ वैश्य३	वैश्य	वैश्य२ शूद्र२
वश्यम्	चतुष्पद	चतुष्पद	चतुष्पद	चतुष्पद	चतु.२ द्विप.२	द्विपद	द्विप.३ जल.१	जलचर	जलचर	वनचर	वनचर	वन१. द्विप.३	द्विपद	द्विपद
योनिः	अश्व	गज	छाग	सर्प	सर्प	श्वान	मार्जार	छाग	मार्जार	मूषक	मूषक	गो	महिष	व्याघ्र
वैरम्	महिष	सिंह	वानर	नकुल	नकुल	मृग	मूषक	वानर	मूषक	मार्जार	मार्जार	व्याघ्र	अश्व	गो
राशीशाः	भौमः	भौमः	भौमः१ शुक्रः३	शुक्रः	शुक्रः२ बुधः२	बुधः	बुधः३ चन्द्रः१	चन्द्रः	चन्द्रः	सूर्यः	सूर्यः	सूर्यः१ बुधः३	बुधः	बुधः२ शुक्रः२
गणमैत्री	देव	मनुष्य	राक्षस	मनुष्य	देव	मनुष्य	देव	देव	राक्षस	राक्षस	मनुष्य	मनुष्य	देव	राक्षस
नाडी	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य

राशयः	तुला	३ तु. १ वृ.	वृश्चिक	वृश्चिक	धनु	धनु	१ ध. ३ म.	मकर	२ म. २ कुं.	कुम्भ	३ कुं. १ मी.	मीन	मीन
भानां वर्णाः	रू रे रो ता	ती तू ते तो	ना नी नू ने	नो या यी यू	ये यो भा भी	भू धा फा ढा	भे भो जा जी	खी खू खे खो	गा गी गू गे	गो सा सी सू	से सो दा दी	दू थ झ ञ	दे दो चा ची
नक्षत्राणि	स्वाती	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.॥ पू.षा.३॥	उ.षा.	श्रवण१॥ श्रवण२॥	धनिष्ठा	शतभिषा	पू.भा.	उ.भा.	रेवती
वर्णाः	शूद्र	शूद्र३ विप्र१	विप्र	विप्र	क्षत्रिय	क्षत्रिया॥ क्षत्रि.३॥	क्षत्रि१ वैश्य३	वैश्य	वैश्य२ शूद्र२	शूद्र	शूद्र३ विप्र१	विप्र	विप्र
वश्यम्	द्विपद	द्विपद३ कीट१	कीट	कीट	द्विपद	द्विपदा॥ चतु.३॥	चतुष्पद	चतु१॥ जल.२॥	जल.२ द्विप.२	द्विपद	द्विप.३ जल.१	जलचर	जलचर
योनिः	महिष	व्याघ्र	हरिण	हरिण	श्वान	वानर	नकुल	वानर	सिंह	अश्व	सिंह	गो	गज
वैरम्	अश्व	गो	श्वान	श्वान	मृग	छाग	सर्प	मेष	गज	महिषः	गज	व्याघ्र	सिंह
राशीशाः	शुक्रः	शुक्रः३ भौमः१	भौमः	भौमः	गुरुः	गुरुः	गुरुः१ शनिः३	शनिः	शनिः	शनिः	शनिः३ गुरुः१	गुरुः	गुरुः
गणमैत्री	देव	राक्षस	देव	राक्षस	राक्षस	मनुष्य	मनुष्य	देव	राक्षस	राक्षस	मनुष्य	मनुष्य	देव
नाडी	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य

वर्ण गुण मिलान–होडा चक्र से वर तथा कन्या का विप्र (ब्राह्मण) क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र की जानकारी करके ऊपर की पंक्ति से वर का वर्ण तथा बायीं पंक्ति से कन्या के वर्ण से गुण का अंक 1 या 0 निर्धारित करें।

वर

कन्या

वर्णः४	ब्रा.	क्ष.	वै.	शू.
ब्रा.	१	०	०	०
क्ष.	१	१	०	०
वै.	१	१	१	०
शू.	१	१	१	१

वश्य गुण मिलान–होड़ा चक्र से चतुष्पद, द्विपद, जलचर, वन्यचर एवं कीट में से वर के तथ्य कन्या के वश्य का अलग अलग निर्धारण करें तथा इस चक्र के ऊपरी पंक्ति से वर तथा बायीं पंक्ति से कन्या के वश्य के अनुसार 0, 1/2, 1 अथवा 2 अंक निर्धारित करें।

वर

कन्या

वश्य	च.	द्वि.	ज.	व.	की.
चतु.	२	१	१	०	१
द्विपद	१	२	।।	०	०
जलच.	१	।।	२	१	१
वनच	०	०	१	२	०
कीट	१	०	१	०	२

तारा (नक्षत्र) गुण का मिलान–तारा नाम 1. जन्म, 2. सम्पत, 3. विपत, 4. क्षेम, 5. प्रत्यरि, 6. साधक, 7. वध, 8. मैत्र, 9. अति मित्र कन्या के जन्म नक्षत्र से वर के जन्म नक्षत्र तक गिनकर और वर के नक्षत्र से कन्या के जन्म नक्षत्र तक गिन कर जो संख्या हो उनमें पृथक-पृथक 9 से भाग देना चाहिए। यदि शेष 3,5,7 रहे तो वर कन्या को अशुभ कारक होते है। दोनों का शुभ तारा-3गुण। शुभ अशुभ = डेढ़ गुण। अशुभ अशुभ = 0 गुण।

वर

कन्या

ता.	१	२	३	४	५	६	७	८	९
१	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
२	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
३	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
४	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
५	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
६	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
७	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
८	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
९	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३.

इस प्रकार से 1 से 9 के बीच वर तथा कन्या के तारा की संख्या का निर्धारण करके वर के लिए तालिका की सबसे ऊपरी पंक्ति तथा कन्या के लिए तालिका की बांयी पंक्ति से संबंधित संख्या को देखते हुए क्रमश 0-1 1/2 अथवा 3 का अंक निर्धारित करें।

वर

योनयः	अश्व	गज	छाग	सर्प	श्वान	मार्जार	मूषक	गौ	महिष	व्याघ्र	हरिण	वानर	नकुल	सिंह
अश्व	४	२	२	२	२	२	२	२	०	१	३	२	२	१
गज	२	४	२	२	२	२	२	२	२	१	२	३	२	०
छाग	२	३	४	२	२	२	२	३	३	१	२	०	३	१
सर्प	२	२	२	४	२	१	१	१	२	२	२	२	०	२
श्वान	२	२	२	२	४	१	१	२	२	१	०	२	१	१
मार्जार	२	२	२	१	१	४	०	२	२	१	२	२	२	१
मूषक	२	२	२	१	१	०	४	२	२	२	२	२	१	२
गौ	२	२	३	१	२	२	२	४	३	०	३	२	२	१
महिष	०	२	३	२	२	२	२	३	४	१	२	२	२	१
व्याघ्र	१	१	१	२	१	१	२	०	१	४	१	१	२	२
हरिण	३	२	२	२	०	२	२	३	२	१	४	२	२	१
वानर	२	३	०	२	२	२	२	२	२	१	२	४	२	२
नकुल	२	२	३	०	१	२	१	२	२	२	२	२	४	२
सिंह	१	०	१	२	१	१	२	१	१	२	१	२	२	४

योनि कूट गुण मिलान–होड़ा चक्र से वर तथा कन्या की योनि अर्थात् अश्व, गज छाग आदि का निर्धारण कर योनि कूट चक्र के ऊपरी पंक्ति से वर का तथा बायीं पंक्ति से कन्या की योनि के मिलान के अनुसार 0 से 4 के बीच अंक को निर्धारित करें।

वर

ग्रहाः	सू.	चं.	भौ.	बु.	गु.	शु.	श.
सूर्यः	५	५	५	४	५	०	०
चन्द्रः	५	५	४	१	४	॥	॥
भौमः	५	४	५	॥	५	३	॥
बुधः	४	१	॥	५	॥	५	४
गुरुः	५	४	५	॥	५	॥	३
शुक्रः	०	॥	२	५	॥	५	५
शनिः	०	॥	॥	४	३	५	५

ग्रह मैत्री गुण मिलान– होड़ा चक्र से वर तथा कन्या के ग्रह का अलग-अलग निर्धारण करके ग्रह मैत्री चक्र के ऊपरी पंक्ति से वर के ग्रह तथा बांयी पंक्ति से कन्या के ग्रह को चुनकर 0 से 5 के अन्तर्गत ग्रह मैत्री गुण का निर्धारण करें।

राशि कूट गुण मिलान–होड़ा चक्र से अथवा अन्यथा वर तथा कन्या की जन्म राशि मेष, वृष आदि का पहले निर्धारित करें पुनः राशि कूट चक्र से चक्र की ऊपरी पंक्ति से वर की तथा बायीं पंक्ति से कन्या की राशिके अनुसार गुणों का मिलान कर 0 या 7 अंक निर्धारित करें।

वर

मेष	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०
वृष	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७
मिथुन	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७
कर्क	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०
सिंह	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०
कन्या	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७
तुला	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०
वृश्चिक	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०
धनु	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७
मकर	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७
कुंभ	७	७	०	०	७	१	०	७	७	०	७	०
मीन	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७

गण मैत्री गुण मिलान–होडा चक्र से वर तथा कन्या का देव, मनुष्य, राक्षस में से गण का निर्धारण कर गण मैत्री चक्र से ऊपरी पंक्ति द्वारा वर के तथा बांयी पंक्ति से कन्या के गुण के अनुसार 0, 1, 5 तथा 6 में से गुण के अंक का निर्धारण करें।

वर

कन्या

गण	देवता	मनुष्य	राक्षस
देवता	६	५	१
मनुष्य	६	६	०
राक्षस	१	०	६

नाड़ी कूट गुण मिलान–होड़ा चक्र से आदि मध्य, अन्त नाड़ी में से वर तथा कन्या के लिए नाड़ी का जन्मानुसार निर्धारण करें तथा नाड़ी कूट चक्र के ऊपरी पंक्ति से कर की तथा बांयी पंक्ति से कन्या की नाड़ी के अनुसार मिलान द्वारा 0 या 8 अंक निर्धारित करें।

नाडी	आदि	मध्य	अन्त्य
आदि	०	८	८
मध्य	८	०	८
अन्त्य	८	८	०

इस प्रकार विभिन्न गुणों का मिलान कर समेकित रूप से वर कन्या के लिये मेलापक हेतु गुण का निर्धारण किया जाना चाहिये।

सभी गुणों को एक नक्षत्र मेलापक चक्र पञ्चाङ्ग में होता है यह आगे के चित्र से स्पष्ट है–

मंगली विचार-

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजेः।
कन्या भतुर्विनाशाय भर्ता पत्नी विनाशकृत्।।

जिसके लग्न में व 12, 4, 7, 8 स्थान में मंगल हो तो पति नाश, पति के हो तो स्त्री नाश करता है। इस प्रकार मंगल हो तो विवाह न करें या बहुत गुण मिलें तब करें या उसी तरह दोनों मंगली हो तभी विवाह किया जा सकता है। वर का मंगल हो तो वधू का और कन्या का हो तो वर का नाश करता है। इसे लग्न से या चंद्र से भी विचार करना चाहिए। दो या अधिक पापग्रह युक्त मंगल सप्तम या अष्टम हो तो कन्या बाल विधवा हो। तात्पर्य यह है कि 7, 8 स्थान में पापग्रह नहीं होना चाहिए। इसी प्रकार 2, 5, 4 घर में भी पाप ग्रह नहीं होना चाहिए।

मंगल 12वां पड़ा तो सप्तम को (पति या स्त्री के घर को) देखता है। यदि लग्न में हो तो 7, 8 घर दोनों को देखता है। 4 घर में हो तो सप्तम को देखता है। सप्तम हो तो 1 और 2 घर को देखता है। 8 में हो तो (उस स्थान से पति की मृत्यु का विचार होता है।) वहां से दूसरे घर को देखता है। इत्यादि कारणों से उक्त स्थानों में बैठे हुए ग्रह का पूरा विचार करना चाहिए। अष्टम घर में पाप ग्रह नहीं होना चाहिये और न यहां पाप ग्रह की दृष्टि हो।

परन्तु सप्तम में उच्च का मंगल हो या उच्च का गुरु हो तो कन्या रूपवती होगी। मंगल गुरु उच्च के या बलवान होकर स्वगृही हों तो वह स्त्री सब प्रकार से सम्पन्न होती है। बलवान शुभ ग्रह चतुर्थ में हों तो सुखी करते हैं।

जिस स्थान में मंगल के पड़ने से मांगलिक होती है वहां मंगल पूर्ण बली हो या पाप ग्रहों के साथ पड़ा हो या पाप दृष्ट हो या पाप राशि में या क्रूर नवांश में हो तो, उस कुंडली का या दूसरी कुंडली बराबर का होना चाहिये अन्यथा जिस समय शुभ ग्रह से योग करेगा अशुभ फल देगा।

यदि मंगल, अस्तंगत, शुद्ध या शुभ ग्रहों से पूर्ण दृष्ट हो और लग्नेश सप्तमेश एवं चंद्र पूर्ण वली हो तथा उक्त अपवाद प्राप्त होंगे तो विवाह करने में कोई हानि नहीं है।

जिस प्रकार मंगल का विचार किया जाता है ठीक उसी प्रकार शनि राहु आदि पाप ग्रहों का भी विचार करना चाहिए। वर की कुंडली में शुक्र पाप ग्रह के साथ हो तो कन्या अशुभ है।

मंगल का दोष परिहार-जिसके जन्म लग्न से 1, 5, 7, 8, 12 स्थान में शनि हो तो मंगल का दोष नहीं मानना चाहिए।

12, 1, 4, 7, 8 स्थानों में शनि, मंगल, राहु, केतु एवं सूर्य इनमें से कोई परस्पर एक दूसरे की कुंडली में पड़े तो मंगली का दोष नहीं मानना चाहिए।

कुंडली में 12, 1, 4, 7 स्थानों में शनि हो तो मंगली दोष कमजोर पड़ जाता है। इसी प्रकार लग्न में मेष का मंगल, धनु का व्यय में, वृश्चिक का चौथे, मकर का सप्तम, या कर्क का मंगल अष्टम हो तो विशेष दोष नहीं होता है।

बलवान गुरु शुक्र लग्न से सप्तम में या वक्री मंगल नीच का, शत्रु क्षेत्री या अस्त हो तो दोष नहीं होता है।

राशि में मैत्री हो, दोनों का एक गुण हो, गुण अधिक मिलते हों तो मंगल दोष नहीं होता है।

इसी तरह मंगल चन्द्रमा के साथ हो या केन्द्र में हो तब भी मंगल का दोष नहीं होता है।

अन्य मत से मंगल यदि पाप ग्रहों के कारण कन्या के ग्रह से कड़े हों तो वर दीर्घायु होता है। कन्या की जन्म कुण्डली में सप्तम में विशेष कर अष्टम में पाप ग्रह नहीं होना चाहिए या द्वितीय में शुभ ग्रह होना चाहिए।

एक को मंगल हो तो दूसरे को शनि या राहु अवश्य होना चाहिए। यदि कन्या की कुंडली में 3 ग्रह पूज्य हैं तो वर की कुंडली में भी 3 ही चाहिये। फिर चाहे वर के चार ही ग्रह हों पर वधू से कम न हों और वर का योग प्रबल होना चाहिये। कन्या का मंगल प्रबल हो तो वर के शनि राहु से काम नहीं चलेगा। प्रबल मंगल ही होना चाहिए।

1, 4, 7, 8, 12 घर में यदि कन्या को पूर्ण बलवान मंगल पड़ा हो तो वर को बुरा फल उत्पन्न करेगा। वर को पड़ा हो तो कन्या के लिए खराब है।

मंगल बलवान् हो या क्रूर नक्षत्र पर हो या पाप ग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो अशुभ फल अवश्य करेगा।

यदि 27 गुणों से अधिक मिलें और दोनों का एक सा मंगल हो तो कोई चिन्ता नहीं है।

यदि एक को प्रबल मंगल है और दूसरे को भी वैसा ही हो तो बराबर मिलान हुआ समझना चाहिए अन्यथा उचित मिलान नहीं हुआ समझना चाहिए।

अन्य मत है कि एक को मंगली योग और दूसरे को प्रबल शनि योग कारक हो तो काम चल जायगा। अन्य मत है कि सप्तमेश जहां हो वहां से 1, 4, 7, 8, 12वें स्थान का मंगल हो तो अनिष्ट कारक होने का भय है।

गणनागुणैक्यबोधकचक्रम्

वरस्य नक्षत्राणि

कन्यर्क्षाणि

	अ.	भ.	कृ. १	कृ. ३	रो.	मृ. २	मृ. २	आ.	पुन. ३	पुन. १	पुष्य	श्ले.	म.	पू.फा.	उ.फा. १	उ.फा. ३	ह.	चि. २	चि. २	स्वा.	वि. ३	वि. १	अनु.	ज्ये.	मू.	पू.षा. ॥	पू.षा. ३॥	उ.षा. १	उ.षा. ३	श्र. १॥	श्र. २॥	ध. २	ध. २	श.	पू.भा. ३	पू.भा. १	उ.भा.	रे.
अ.	२८	३३	२८॥	१८॥	२१॥	२२॥	२६	१७	१८	२२॥	३१॥	२७	२१	२६	१७॥	११	९	१३	२२॥	२६॥	२२॥	१९॥	२६॥	१५	१३	२६	२७	२४॥	२६	२६	२४	२१	२१	१५	१६	१४॥	२४॥	२५
भ.	३४	२८	२९	१९	२२॥	१३॥	१७	२६	२६	३०॥	२३॥	२४॥	२१	१९	२८	२१॥	१९	६	१४॥	२९॥	२२॥	१९॥	१७॥	१९॥	२०	१९	२०	२७	२८॥	२८	२६	१०	१०	२०	२४	२२॥	१६॥	२८
कृ. १	२७॥	२७॥	२८	१६	९	१५॥	१९	२०	२१	२५॥	२६॥	२३॥	१७॥	२१	२२	१५॥	१५॥	१८॥	२७॥	१५॥	१९॥	१६॥	२०॥	२६॥	२४॥	१८	१९	१४	१५॥	११॥	१०॥	२५	२५	२७	१९॥	१७॥	१९॥	११॥
कृ. ३	१८॥	१८॥	१९	२८	१९	२५॥	१६॥	१७॥	१८॥	२२	२३	२०	१९॥	२३	२४	२१	२१	२३॥	२२॥	१०॥	१४॥	२१॥	२५॥	३१॥	२०	१२॥	१३॥	९॥	१४	११	१०	२२॥	२९॥	३१	२३	२०	२२	१४
रो.	२३॥	२३॥	१०	१९	२८	३६	२७	२३॥	२३॥	२७	२८	१३	१२॥	२६॥	२८	२५	२६	२०	१९	१५॥	९॥	१६॥	३०॥	२४॥	१४	१९	२०	११॥	१७	१९	१८	२०	२६	२४॥	३०॥	२७	२६	१९
मृ. २	२३॥	१३॥	१८॥	२८॥	३४	२८	२०	२५	२३॥	२६	२०	२२	२१॥	१७॥	२५॥	२३॥	२७	१३	१२	२५॥	१७॥	२३॥	२२॥	२५॥	१५	१२	११	१८	२१	२४॥	२४॥	१३	१९	२७	२९॥	२६॥	१७	२७
मृ. २	२७	१८	२१	१८॥	२५॥	२०	२८	३३	३१॥	१९॥	१३	१५॥	२४	२०॥	२८॥	३०॥	३४	२१	१४	२७	१९॥	१४	११	१३	२३	१९	१८	२४	२०॥	२५	२५	१२	१३	२१	२३॥	२७॥	१७	२७
आ.	१९	२७	२१	१८॥	२४॥	२६	३४	२८	२५	१३	२०॥	१३॥	२३॥	२९॥	२२॥	२४॥	२४॥	२७	२०	२७	२०	१३॥	१७	४	१६	२८	२७	२७	२२॥	२२॥	२२॥	१७	२०	११	१६	१९	२७	२७
पुन. ३	१९	२६	२३	१९॥	२३॥	२४॥	३२॥	२४	२८	१६	२३	१६॥	२२॥	२७॥	२१॥	२३॥	२४॥	२५॥	१८॥	२७	२१	१३॥	२०॥	५	१३	२७	२६	२७	२२॥	२२॥	२३॥	१७॥	१८॥	११	१७	१९॥	२७॥	२८
पुन. १	२१॥	२८	२५॥	२०	२४	२५	१९	१०॥	१४॥	२८	३५	२८॥	१५॥	२०	१४॥	१७	१८	२०॥	२०	२८	२०	१९	२६	१०॥	८	२१	२०॥	२१॥	२६॥	२५	२७	२१	१२॥	७	११	१७	२५	२५॥
पुष्य.	३०॥	२१॥	२६॥	२३	२४	१७	१०	१८	२१॥	३५	२८	३०	१८॥	१४॥	२३॥	२६	१७	१२	११॥	२६	२१	२०	१९	२२	१७	११	११॥	२२॥	२६	२४	२५	१३	४॥	१४॥	१८	२४	१८	२७
अश्ले.	२५	२३॥	२२॥	१९	१२	२१	१३	१२	१५	२८॥	२८॥	२८	१५	१५॥	१७॥	२०॥	२०॥	२६	२५॥	११॥	१६॥	१५॥	२०	२६	२२॥	१६	१७॥	८॥	१२	१३	१३	२७	१८॥	१८॥	१२॥	१८॥	२०	१२
म.	२१	२१	१७॥	१८॥	११॥	१९॥	२२॥	२२॥	२१॥	१६॥	१८॥	१६	२८	३०	२६॥	१६॥	१६॥	२२॥	२५॥	११॥	१७॥	२४॥	२६॥	३४	२४	२०	२१	११॥	५॥	५॥	४॥	१८॥	२४॥	२५॥	१८॥	१८॥	१७॥	१२
पू. फा.	२७	१९	२१	२२	२५॥	१७॥	२०॥	२८॥	२७॥	२२॥	१६॥	१६॥	३०	२८	३४	२४	२२॥	८॥	११॥	२५॥	१९॥	२६॥	२४॥	२४॥	१९	१८	१९	२७	२१	१९॥	१८॥	४॥	११॥	१९॥	२४॥	२३॥	१६॥	२४
उ. फा. १	१७॥	२७	२२	२३	२७	२५॥	२८॥	२१॥	२१॥	१६॥	२५॥	१८॥	२६॥	३४	२८	१८	१६॥	१४॥	१७॥	२६॥	१७॥	२४॥	३०॥	१९॥	१०॥	२६	२७	२८	२२	२१	२०	११॥	१८॥	१२॥	१५॥	१५॥	२६॥	२४॥
उ. फा. ३	१३	२१॥	१६॥	२१	२५	२३॥	३०॥	२३॥	२३॥	१९॥	२८॥	२१॥	१७॥	२५	१९	२८	२५॥	२४॥	१६॥	२५॥	१६॥	१८	२७॥	१३	१५॥	२९॥	२८॥	२९॥	२६	२५	२५	१६॥	१६॥	१०॥	१४॥	१८	२९	२७
ह.	१०	२०	१६॥	२१	२६	२६	३३	२३॥	२३॥	१९॥	२८॥	२२	१७॥	२२॥	१७	२६	२८	२७	१९	२६॥	१७॥	१९॥	२६	१२	१४	२७	२६	२७॥	२३	२४	२४	१९	१९	९॥	१४॥	१९	२७	२७
चि. २	१३	६	१८॥	२५	२०	१२	१९	२६	२४॥	२०॥	१२॥	२६॥	२३॥	९॥	१५॥	२४॥	२७	२८	२०	१९	२६॥	२८	११	२५	२८	१४	१३	२१	१७॥	१९	१९	१८	१८	२४	१८॥	२२	२०॥	२१
चि. २	२२	१५॥	२८॥	२३॥	२०	१२	१३	२०	१८॥	२०	१२	२६	२५॥	१०	१७॥	१७॥	२०	२१	२८	२७	३४॥	२४॥	७॥	२१॥	२८	१४	१३	२१	२५॥	२७॥	२७	२६	२०	२६	२०॥	१५	४	१३
स्वा.	२७॥	२९॥	१७॥	१२॥	१६॥	२७	२७	२६	२६॥	२८	२८	१५॥	१३॥	२५॥	२५॥	२५॥	२७॥	२१	२८	२८	२०	१०	२३॥	१८॥	२३	२७	२६	१८	२२॥	२३॥	२३॥	२७	२१	२०	२५	१९॥	२०	१२॥
वि. ३	२२॥	२२॥	२०॥	१५॥	१०॥	१८॥	१९॥	२१	२१	२२॥	२१॥	१९	१७॥	१९॥	१८॥	१७॥	१८॥	२७॥	३४॥	१८	२८	१८	१७	२१॥	२८	२२	२१	१३	१७॥	१७॥	१७॥	३२॥	२६॥	२६	२२	१६॥	१३॥	५
वि. १	१६॥	१६॥	१४॥	१९॥	१४॥	२२॥	१३	१४॥	१४॥	१९	१८	१५॥	२१॥	२३॥	२१॥	१८	१९	२८	२३॥	८॥	१७	२८	२७	३१॥	२३॥	१७॥	१६॥	९॥	१२	१२	१२	२७	२७	२६॥	२२॥	२१	१८	९॥
अनु.	२४॥	१४॥	१९॥	२४॥	२७॥	२०॥	११	१६	२१॥	२६॥	१८	२१	२४॥	२०॥	२९॥	२६	२७	१२	७॥	२२॥	१७	२८	२८	३१	१६॥	१४॥	१४॥	२२	२५	२६	२६	१२	१२	२२	२४॥	२४	१८	२७
ज्ये.	१२	१८॥	२४॥	२९॥	२२॥	२२॥	१३	३	६	१०॥	२०	२६	३१	२३॥	१६॥	१३	१२	२५॥	२०॥	१६॥	२०	३१॥	३०	२८	१५	१७॥	१७॥	१७॥	२०	२०	२०	२५	२५	१९	११	९॥	२१	२१
मू.	१२	२०	२४॥	१९	१३	१४	२१	१५	१२	८॥	१७॥	२४	२५	१९	९॥	१३	१३	२६॥	२७	२१	२७	२४॥	१६॥	१६	२८	२८	२७	२५॥	१५॥	१५॥	१५॥	२१॥	२८॥	२१॥	१५॥	१६॥	२५॥	२७
पू. षा. ॥	२६	१९	१८	१२॥	१९	११	१९	२७	२७	२३॥	१३॥	१७॥	२१	१९	२५	२८॥	२७	१२	१२	२७	२०	१६॥	१८॥	१८॥	२८	२८	२७	३३	२३	२३॥	२३॥	८॥	१६॥	२३॥	३१॥	३२॥	२३॥	३२॥
पू. षा. ३॥	२७	२०	१९	१३॥	२०	१२	१८	२६	२६	२३॥	१३॥	१७॥	२१	१९	२७	२७	२६	११	११	२६	१९	१८॥	१८॥	१९॥	२७॥	२७॥	२८	३५॥	२४	२४	२३॥	८॥	१५॥	२२	२९॥	३२॥	२३॥	३२॥
उ. षा. १	२५॥	२७	१४॥	८॥	११॥	१८	२४	२६	२६	२३॥	२४॥	९॥	११॥	२७	२८	२८॥	२७॥	२०	२०	१९	१२	११॥	२५॥	१९॥	२५॥	३३	३४	२८	१८	१६	१५	१५॥	२२॥	२२॥	२८॥	३१॥	३२॥	२३॥
उ. षा. ३	२८	२९॥	१६॥	१४	१७	२२।	२०॥	२२॥	२२॥	२७	२८	१३	६॥	२२	२३	२६	२५	१७॥	२४॥	२३॥	१६॥	१४॥	२८॥	२२	१६॥	२६	२५	१९	२८	२६	२५	२५॥	१७॥	१७॥	२३॥	३०॥	३२॥	२३॥
श्र. १॥	२८	२७	१४॥	१२	१८	२७॥	२४	२१॥	२१॥	२७	२५	१५	५॥	१९॥	२०	२४	२५	१९॥	२६	२३॥	१६॥	१४	२८	२३	१७॥	२३॥	२४॥	१७	२५	२८	२७	३०	२२	१८॥	२३॥	३१॥	३०॥	२२॥
श्र. २॥	२७	२६	१३॥	१०	१७	२६	२३॥	२१	२३॥	२८	२६	१५	६॥	१८॥	२०॥	२३॥	२४॥	१८॥	२५॥	२३	१६	१४	२८	२२	१६	२३	२५॥	१५	२४	२७	२८	३०	२०॥	१८	२३	२९॥	३१॥	२४॥
ध. २	२०॥	१०॥	२६	२३॥	२०	१२	८॥	१७॥	१७॥	२२	१३	२८	१८॥	५॥	१२॥	१६	१७॥	१६॥	२४॥	२६	३०	२८	१४	२६	२१	९	९॥	१६॥	२५॥	२८	२८	२८	१८॥	२३॥	२१	२६॥	१५॥	२२॥
ध. २	२०	११	२६	३०॥	२७॥	१९	१०	२०	१९	१४	५	२०	२५॥	११॥	१९॥	१७॥	२१	१८	१९	२२	२५॥	२८	१२	२६	२९॥	१७॥	१६॥	२३॥	१८॥	२१	२१	२०	२८	३३	२८॥	१८॥	७	१४॥
श.	१५	२१	२८	३२॥	२५॥	२५	१८	१०	१०	७॥	१५	२०	२६॥	२०॥	१३॥	११॥	८॥	२६	२६	१९	२६	२६॥	२१	१९॥	२२॥	२४॥	२३॥	२३॥	१८॥	१८॥	१८॥	२५	३३	२८	१९	९	१७	१६॥
पू. भा. ३	१८	२५	२०	२४॥	३१॥	३१॥	२४॥	१७	१७	१३॥	२०॥	१४	१९॥	२५॥	१६॥	१५॥	१७॥	१८॥	१९॥	२८	२१	२१॥	२७॥	१२॥	१५॥	३१॥	३०॥	२९॥	२४॥	२५॥	२५॥	२०॥	२७॥	१९	२८	१८	२३	२०॥
पू. भा. १	१४॥	२१॥	१६॥	१९	२६	२६	२५॥	१८	१८	१८	२५॥	१८॥	१६॥	२२॥	१४॥	१६॥	१८॥	१९॥	१२॥	१९॥	१४	२१	२७	११॥	१७	३१	३१॥	३०॥	२८॥	२९॥	३०॥	२५॥	१७	७॥	१६॥	२८	३३	३०॥
उ. भा.	२४॥	१५॥	१८॥	२१	२५	१७	१६॥	२५॥	२७	२६	१९	२०	१७॥	१५॥	२५॥	२७॥	२६	९॥	५	१९॥	१२	१९	२०	२२	२४	२२	२२॥	३१॥	२९॥	२८॥	२९॥	१४॥	६	१६॥	२१॥	३३	२८	३४॥
रे.	२५	२४॥	११॥	१४	१७	२६	२५॥	२४	२६॥	२४॥	२७॥	१४	१२	२२	२२	२४	२६॥	२०॥	१३॥	११॥	५॥	१२॥	२७	२२	२७	३०॥	३०	२१	१९	२२	२२॥	२२॥	१४	१६॥	२०	२९॥	३३	२८

अन्य मत है कि गुण अधिक मिल जायें तो मंगल का भय नहीं होता है।

मंगल नीच का शत्रुक्षेत्री, अस्तगत एवं वक्री हो और बलवान शुभ ग्रह की पूर्ण दृष्टि हो तो मंगल का कोई विशेष भय नहीं होता है।

लग्न से, चंद्र से, सप्तमेश से मंगल का विचार करते हैं। आशय यह है कि जितने भी पाप ग्रह हों उनकी स्थिति पर विचार कर बलाबल तौल कर देखना चाहिए और यह भी देखना कि मंगल या उसकी जोड़ी का दूसरा पाप ग्रह किस स्थान में है। वैसा ही जब दूसरे की कुण्डली में मिले तो बराबर मिली कहना चाहिए।

विविध कार्यों के लिए मुहूर्त विचार

राशिनाम-**मेषो वृषोऽथ मिथुनं कर्कटः सिंहकन्यके।**
तुलाऽथ वृश्चिको धन्वी मकरः कुम्भीमीनकौ।।

मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुम्भ तथा मीन क्रमशः 12 राशियां होती हैं।

राशियों के स्वामी-मेष और वृश्चिक का स्वामी मंगल, वृष और तुला का स्वामी शुक्र, कन्या और मिथुन का स्वामी बुध, कर्क का स्वामी चन्द्रमा, मीन और धनु का स्वामी बृहस्पति, मकर और कुम्भ का स्वामी शनि तथा सिंह राशि का स्वामी सूर्य है।

सूती स्नान-हस्त, ज्येष्ठा, पूर्वाफाल्गुनी, स्वाती, धनिष्ठा, रेवती और अनुराधा, अश्विनी एवं ध्रुव संज्ञक नक्षत्रों (तीनों उत्तरा, उत्तरा फाल्गुनी, उत्तराषाढ़, उत्तराभाद्रपद, रोहिणी) में तथा पुरुष संज्ञक दिनों (रवि, मंगल, बृहस्पति) में और रिक्ता तिथियों को छोड़कर बालक सहित प्रसूती को स्नान करना चाहिये। ऐसा मुनियों ने कहा है।

बुधवार को स्नान करने से प्रसूता स्त्री पुत्ररहित, शुक्रवार को स्नान करने से बन्ध्या (मृतबन्ध्या), शनि को स्नान करने से मृत्यु कारक और सोमवार को स्नान करने से प्रसूता के दूध की हानि होती है। रवि, मंगल और बृहस्पति को स्नान करने से पुत्र और धनकी प्राप्ति होती है।

प्रसूति शुद्ध दिवस-बकरी, गाय, भैंस और ब्राह्मणी इनका प्रसूति होने पर और भूमिष्ठ नवीन जल दस दिनों के बाद शुद्ध हो जाता है।

नामकरण-धनिष्ठा, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा (उत्तरा फाल्गुनी, उत्तराषाढ़, उत्तराभाद्रपद,) हस्त, मृगशिरा, चित्रा, अनुराधा, स्वाती, मूल, श्रवण रेवती, ज्येष्ठा और अश्विनी इन नक्षत्रों में तथा रवि, सोम, बुध और बृहस्पति दिनों में, शुभलग्नस्थ बृहस्पति

हो और शुभग्रह 1, 4, 7, 10, 9, 5 स्थानों में हो या जन्म राशि में शुभग्रह हो, पापग्रह शेष स्थानों में हो तो नामकरण शुभद होता है।

निष्क्रमण-आर्द्रा, अधोमुखसंज्ञकनक्षत्र, सूर्य से अनुपहत नक्षत्र, इन नक्षत्रों को छोड़कर शेष नक्षत्रों में बालक का निष्क्रमण-कर्म होता है। अधोमुख संज्ञक नक्षत्र मूल आश्लेषा, कृत्तिका, विशाखा, तीनों पूर्वा, भरणी और मघा ये 9 नक्षत्र होते हैं। यथा- "मूलाहिमिश्रोग्रमधोमुखम्", मूहूर्त चिन्तामणि, नक्षत्र, प्रकरण, श्लोक सं. 9, सूर्य से अनुपहत नक्षत्र वह है-जिस नक्षत्र में सूर्य स्थित हो।

रिक्ता तिथि (4, 9, 14) को छोड़कर शेष तिथियों में तथा मंगलवार और शनिवार को छोड़कर शेष दिनों में और शुभ ग्रह से दृष्ट कुम्भ, तुला, सिंह वृश्चिक एवं कन्या लग्न में निष्क्रमण शुभ होता है। निष्क्रमण संस्कार का अर्थ नवजात शिशु को प्रथम बार घर से बाहर लाना है। यह कार्य तीसरे मास अथवा चौथे मास में किया जाता है। शुक्लपक्ष में निष्क्रमण उत्तम है।

भूमि पर बैठाना-जब पाँचवा महीना लगा हो और मङ्गल बली हो तब रिक्ता रहित तिथि में शुभ दिन में, ध्रुवसंज्ञक (तीनों उत्तरा, उत्तरा फाल्गुनी, उत्तराषाढ़, उत्तराभाद्रपद, रोहिणी), मृगशिरा ज्येष्ठा, अनुराधा और लघुसंज्ञक नक्षत्रों (हस्त, अश्विनी, पुष्य, और अभिजित्) में पहले पृथ्वी और वाराह भगवान की विधिवत् पूजा करके बालक को कटिसूत्र पहनाकर पृथ्वी पर बैठाना चाहिये।

शिशु को प्रथम बार देखना-बालक के जन्म के तीसरे माह में और यात्रा में कहे गये तिथि नक्षत्रों में रवि सोम दिन में अपने कुछ परम्परानुसार बालक को प्रथम बार देखना शुभ होता है।

दन्तोपत्ति फल-जन्म से पाँच महीने तक बालक को दाँत होना अशुभ है और छठे माह और उसके बाद दाँत निकलना शुभद होता है, परन्तु दाँत निकले हुये बालक का जन्म अशुभ होता है।

अन्नप्राशन मुहूर्त-प्रथम अन्नप्राशन के समय तीनों पूर्वा, आश्लेषा, आर्द्रा शतभिषा, भरणी और रेवती नक्षत्र, मंगल और शनि के दिन, द्वादशी, सप्तमी, रिक्ता तिथि अमावस्या, पूर्णिमा, कृष्णपक्ष की अष्टमी, संक्रांति नन्दा तिथियां मीन, मेष और वृश्चिक लग्न त्याज्य है।

उपर्युक्त निषिद्ध वार, नक्षत्र, तिथि और लग्न के अतिरिक्त अन्य वार, नक्षत्र और तिथियां शुक्लपक्ष, शुभ योग शुभ चन्द्रमा ये सभी ग्राह्य हैं। पुरुषों के लिए जन्म से छठवां या आठवां महीना और स्त्रियों के लिये पांचवां महीना ग्राह्य है।

मुण्डन मुहूर्त-पुनर्वसु, पुष्य, ज्येष्ठा, मृगशिरा, श्रवण, धनिष्ठा शतभिषा हस्त, चित्रा, स्वाती, अश्विनी और रेवती नक्षत्र शुक्ल पक्ष और उत्तरायण (मकर, कुम्भ, मेष, वृष और मिथुन) के सूर्य में वृष, कन्या, धनु, कुम्भ, मकर और मिथुन लग्न में शुभ दिन सोम, बुध, गुरु और शुक्र इन वारों में तथा शुभ योग में विद्वानों ने मुण्डन करने के लिए कहा है।

विद्यारम्भ मुहूर्त-हस्त, चित्रा, स्वाती, श्रवण, घनिष्ठा तीनों पूर्वा (पूर्वा फाल्गुनी, पूर्वाषाढ़, पूर्वाभाद्रपद) अश्विनी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मूल और रेवती नक्षत्रों में रवि, बुध, गुरु, शुक्र इन दिनों में देवोत्थान अर्थात् कार्तिकशुक्ल 11 एकादशी से आषाढ़ शुक्ल दशमी पर्यन्त मीन अथवा धनु लग्न में बालक के पाँचवें वर्ष में विद्यारम्भ कराना चाहिये। विद्यारम्भ में षष्ठी, अष्टमी तथा प्रतिपदा और रिक्ता 4।9।14 तिथियाँ वर्जित हैं।

यज्ञोपवीत उपनयन या व्रतबंध-यज्ञोपवीत जन्म से 5 या 8 वर्ष में ब्राह्मणों का 6 से 11 वर्ष में क्षत्रियों का, 8-12 वर्ष में वैश्य का यज्ञोपवीत श्रेष्ठ है। इससे दुगने काल में अर्थात् 16 वर्ष में ब्राह्मण, 22 वर्ष में क्षत्रिय, 24 वर्ष में वैश्य का मध्यम कहा गया है।

किसी ग्रंथकार ने वसन्त में ब्राह्मण, ग्रीष्म में क्षत्रिय, शरद में वैश्यों का श्रेष्ठ कहा है।

यज्ञोपवीत मुहूर्त-हस्त. अश्व, पुष्य, तीनों उत्तरा, रोह. श्ले., स्वा., पुन., श्रव., धनि, शत, मूल., मृग., रेव., चित्रा, अनु., तीनों पूर्वा, आर्द्रा इन नक्षत्रों में रवि, सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार में 2, 3, 5, 10, 11, 12 तिथियों में शुक्ल पक्ष में पंचमी तक, कृष्ण पक्ष में भी दोपहर के पूर्व यज्ञोपवीत शुभ है। लग्न से 6, 8, 12 स्थानों को छोड़कर अन्य स्थानों में शुभ ग्रह हों। 3, 6, 11 में पाप ग्रह हों तो शुभ होता है। वृष कर्क राशि में पूर्ण चन्द्र यदि लग्न में हो तो और भी शुभ है।

अन्य मत में ज्येष्ठा नक्षत्र, उत्तरायण के (मकर, कुम्भ, मीन, मेष, वृष, मिथुन) के सूर्य हो, कृष्णपक्ष में 2, 3, 5 तिथि शुभ हैं। धर्मसिन्धु में षष्ठी भी शुभ कही गयी है।

(ऊ) दोपहर बाद उपनयन वर्जित है। वृष, धनु, सिंह, कन्या और मिथुन लग्न एवं शुभ योगों में ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य तीनों वर्णों का यज्ञोपवीत होना चाहिये।

वर्जित समय-पंचमी के बाद कृष्णपक्ष में और जिस दिन सायंकाल में प्रदोष हो, अनध्याय में, शनिवार में, रात्रि में, दोपहर के बाद, जिस दिन मेघ गर्जे और गलग्रह तिथि में यज्ञोपवीत शुभ नहीं करना चाहिए।

गलग्रह तिथि-4, 7, 8, 9, 13, 14, 15, 1, 30 गलग्रह संज्ञक तिथि हैं।

अनध्याय तिथि–आषाढ़ शुक्ल 10, ज्येष्ठ शुक्ल 5, पौष शुक्ल 13, माघ शुक्ल 12, चतुर्थी, पौर्णमासी, अमावस्या, प्रतिपद, अष्टमी व सूर्य संक्रांति ये सब अनध्याय संज्ञक हैं इनमें व्रतवंध नहीं करना चाहिए।

प्रदोष-द्वादशी तिथि में आधी रात्रि के पूर्व ही यदि त्रयोदशी का योग हो तो प्रदोष है। यदि षष्ठी तिथि में 1।। प्रहर रात बीतने के पूर्व ही सप्तमी का योग हो तो वह प्रदोष है और जिस तिथि के प्रहर भर रात बीतने के पूर्व ही चौथ का योग हो तो वह प्रदोष है। उपर्युक्त समय में व्रतवंध वर्जित है।

उपनयन मुहूर्त्त में मुख्य विचारणीय बिन्दु इस प्रकार है -

(1) गुरु-शुक्र का अस्त, अधिमास, क्षयमास आदि वर्जित है।

(2) सौरमान में माघ फाल्गुन, चैत्र वैशाख और ज्येष्ठ इन पांच मासों में ही उपनयन शुभ हैं (अर्थात् सूर्य-मकर, कुंभ मीन, मेष या वृष राशि का हो)।

(3) यदि उपनयन संस्कार उपरोक्त निर्दिष्ट आयु सीमा के अन्दर हो रहा हो तो सूर्य, गुरु, चन्द्र शुद्ध हों जो इस प्रकार हैं -

(अ) बालक के जन्मराशि से सूर्य 3, 6, 10, 11 राशियों में। बृहस्पति 2, 5, 7, 9, 11वें राशि में, चन्द्रमा 3, 6, 7, 10, 11वें राशि में शुद्ध होते हैं।

(आ) जन्मराशि से सूर्य 1, 2, 5, 7, 9 में, गुरु 1, 3, 6, 10 में और चन्द्र 1, 2, 5, 9, में साधारण अर्थात् पूज्य हैं। इनकी पूजा करके दान करके उपनयन हो सकता है। जन्मराशि से 4, 8, 12,वें में सूर्य चन्द्र, गुरु तीनों वर्जित हैं।

सप्तशलाका चक्र

	कृ	रो	मृ	आ	पु	पु	श्ले	
भ								म
अ								पू
रे								उ
उ								ह
पू								चि
श								स्वा
ध								वि
	श्र	अ	उ	पू	मू	ज्ये	ऽनु	

(इ) शुभ नक्षत्र (यह नक्षत्र सप्तशलाका चक्र से वेध रहित शुद्ध हों) एक ही रेखा पर आमने-सामने होने पर वेध होता है। पापग्रह का वेध सर्वथा वर्जित (शुभग्रह का वेध आवश्यक में ग्राह्य) है।

कन्या वरण-तीनों पूर्वा, श्रवण, अनुराधा, उत्तराषाढ़, ज्येष्ठा, धनिष्ठा, स्वाती और विशाखा नक्षत्रों में अंगूर आदि फल, गन्ना, फूल तथा चावल से अंजलिबद्ध होकर शान्तिपूर्वक कन्या का वरण करना शुभ है।

मण्डपनिर्माण और उसका लक्षण-सभी प्रकार के माङ्गलिक कार्यों में (विवाह में कन्या के हाथ से) कर्ता के हाथ से 16 हाथ (मध्यम) या दस हाथ का चारों तरफ बराबर नाप का मण्डप निर्माण करना चाहिये। मण्डप में सुन्दर वेदी, चार स्तम्भ होना चाहिये। चारों दिशाओं में समान रूप से लम्बाई चौड़ाई वर्गाकार होती है। तथा कलश सुन्दर रंगों से चित्रित एवं सुशोभित होना चाहिये। मांगलिक कार्यों में द्वार, कूप, वृक्ष दीवाल खात आदि से वेध रहित वेदिका श्रेष्ठ होती है।

मण्डप निर्माण मुहूर्त-सिंह राशि से आरम्भ कर तीन राशियों सिंह, कन्या, तुला क सूर्य में स्तम्भ एवं खात का निर्माण ईशान कोण (उत्तर-पूर्व कोण) में, वृश्चिक धनु मकर के सूर्य होने पर वायु कोण (उत्तर-पश्चिम कोण) में, कुम्भ, मीन, मेष के सूर्य में नैर्ऋत्य कोण (दक्षिण-पश्चिम कोण) में वृष, मिथुन, कर्क राशि के सूर्य में अग्निकोण (दक्षिण पूर्व कोण) में शुभ होता है।

विवाह मास-मिथुन, कुम्भ, मकर, वृश्चिक, वृष और मेष इन छः राशियों में सूर्य के रहने पर विवाह शुभद होता है। विवाहादि शुभकार्यों में सौर मास ही प्रशस्त है। और सौर मास का निर्णय सूर्य की राशि संचार से विचार किया जाता है। यद्यपि कार्तिक, पौष और चैत्र मास विवाह में विहित नहीं हैं। परन्तु सूर्य जब कार्तिक चान्द्रमास में ही वृश्चिक में चले जाये तो वृश्चिक के सूर्य होने से वह माघ मास और चैत्र में मेषराशि में सूर्य के जाने से वैशाख हो जाता है। ऐसी अवस्था में कार्तिक-पौष-चैत्र में भी विवाह शुभद होता है।

विवाह के वार-प्रायः सभी दिन प्रचलित हैं। कोई वर्जित नहीं है। सोम, बुध, गुरु, शुक्र उत्तम।

विवाह तिथि-4, 8, 9, 14, 30 वर्जित है, शेष शुभ हैं। मुख्यतः कृष्णपक्ष में 14 और 30 सर्वथा वर्जित हैं। शेष ग्राह्य कर लेते हैं। शनिवार को शुक्लपक्ष की 14 हो तो शुभ मानते है-

शनैश्चर दिने प्राप्ते यदि रिक्तातिथिर्भवेत्।

तस्मिन् विवाहिता कन्या पति सम्पत्ति बर्द्धिनी।।

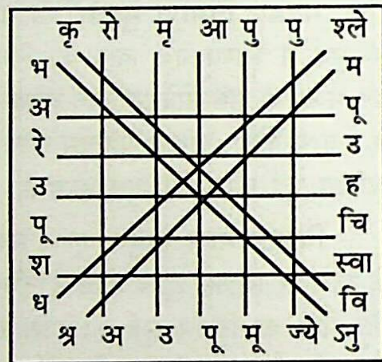
विवाह नक्षत्र-मृगशिरा रोहिणी, हस्त, मूल, अनुराधा, मघा, रेवती, स्वाती, उ.फा, उ.षा., उ.भा. शुभ हैं। किन्तु मघा का प्रथमचरणमूल का प्रथम चरण और रेवती का

चतुर्थचरण उस समय न हो।।1 सर्वमान्य हैं। ऋषि कात्यायन ने अश्वि. चित्र, श्र, घनिष्ठा को भी शुभ माना है। अतः ग्राह्य हैं। लेकिन इनमें वेधदोष न हो। वेध पंचशलाका चक्र से देखा जाता है। निम्न चक्र देखें, विवाह हेतु चयनित नक्षत्र के सामने वाले नक्षत्र में कोई पापग्रह हो तो विवाह वर्जित है। शुभ ग्रह हो तो ग्राह्य कर सकते हैं। विवरण नीचे देखे।

पंच महादोष अवश्य देखने चाहिये। जिस दिन यह पांच दोष न हों।

(अ) **युति**-अर्थात् विवाह हेतु चयनित नक्षत्र में कोई ग्रह हो तो युति दोष होता है। शुभ ग्रह तो ग्राह्य कर सकते हैं। पापग्रह हो तो विवाह वर्जित है।

(आ) **पंचशलाका चक्र में वेध** -



अश्विनी का	पूर्वाफाल्गुनी से वेध		
रोहिणी का	अभिजित से वेध		
मृगशिरा का	उत्तराभाद्रपद	"	"
मघा का	श्रवण	"	"
उत्तराफाल्गुनी का	रेवती	"	"
हस्त का	उत्तराभाद्र	"	"
चित्रा का	पूर्वाभाद्रपद	"	"
स्वाती का	शतभिषा	"	"
अनुराध का	भरणी से वेध		
मूल का	पूनर्वसु	"	"
उत्तराषाढ़ का	मृगशिरा	"	"
श्रवण का	मघा	"	"
धनिष्ठा का	अश्लेषा	"	"
उत्तराभाद्रपद का	हस्त	"	"
रेवती का	उत्तराफाल्गुनी	"	"

जैसे किसी दिन पूर्वाफाल्गुनी में कोई पापग्रह हो तो अश्विनी नक्षत्र पर उसका वेध होगा अतः अश्विनी में उस दिन विवाह शुभ नहीं होगा।

(इ) **पात दोष**-यदि किसी नक्षत्र में (उपरोक्त विवाह नक्षत्र में) हर्षण, वैधृति, साध्य, व्यतीपात, गण्ड या शूल योग समाप्त हो रहा हो तो उस नक्षत्र में पातदोष होता है। अतः उसमें विवाह वर्जित है।

(ई) **मृत्युपंचक**-किसी भी राशि में जब सूर्य के गतांश 1, 10, 19, 28 हो (अर्थात सूर्य 2, 11, 20 या 29वें अंश में चल रहा हो तो) मृत्यंपंचक दोष होता है। उस दिन विवाह वर्जित है।

(उ) **क्रान्तिसाम्य** -

	कुम्भ	मीन	मेष	
मकर				वृष
धनु				मिथुन
वृश्चिक				कर्क
	तुला	कन्या	सिंह	

इस चक्र के अनुसार सूर्य और चन्द्रमा परस्पर एक दूसरे के सामने हों तो क्रान्तिसाम्य दोष होता है। जैसे-कुंभ का सूर्य हो और तुला का चन्द्र हो। अथवा तुला का सूर्य और कुंभ का चन्द्र हो। ऐसी स्थिति में विवाह वर्जित है।

विवाह में भद्रा भी वर्जित है।

दिक्शूल विचार-शनिवार और सोमवार को पूर्व दिशा की यात्रा नहीं करनी चाहिये। इसी प्रकार बृहस्पति के दिन दक्षिण, रविवार और शुक्रवार को पश्चिम तथा मङ्गल बुध को उत्तर की यात्रा नहीं करनी चाहिये क्योंकि शनि एवं सोम की पूर्व में दिक्शूल बृहस्पति को दक्षिण तथा रवि शुक्र को पश्चिम और मंगल बुध को उत्तर दिक्शूल होता है।

विदिक्शूल विचार-बुधवार और शनिवार को ईशान कोण में, सोम-बृहस्पति को अग्निकोणमें, मङ्गल को वायव्य कोण में, रवि और शुक्र को नैर्ऋत्य कोण में दिक्शूल होता है। सम्मुख दिक्शूल यात्रा में वर्जित है।

दिक्शूल परिहार-आवश्यक कार्यवश यदि यात्रा करना ही है तो दिक्शूल की शान्ति के लिए रविवार को घृत, सोमवार को दूध, मंगलवार को गुड़ बुध को तिल, वृहस्पति को दही तथा शुक्रवार को जौ और शनिवार को उड़द खाकर यात्रा करनी चाहिये।

योगिनी विचार-योगिनी प्रतिपदा और नवमी को पूर्व दिशा में रहती है। तृतीयाऔर एकादशी को अग्निकोण, तेरस और पंचमी को दक्षिण, द्वादशी और चौथ को

नैर्ऋत्य, चतुर्दशी और छठ को पश्चिम, पूर्णिमा और सप्तमी को वायु कोण, दशमी और द्वितीया को उत्तर तथा अमावस और अष्टमी को ईशान कोण में निवास करती है।

योगिनी फल-यात्रा में वाम भाग की योगिनी सुखदायिनी, पीछे की योगिनी अभीष्ट सिद्धि देने वाली, दाहिने की धन का नाश करने वाली और सम्मुख मृत्यु देने वाली होती है। अत: यात्रा में वाम भाग तथा पीछे की योगिनी ग्राह्य है और दाहिने तथा सम्मुख की योगिनी त्याज्य है।

भद्रावास

कन्या-तुला-मकर-धन्विपु नागलोके
मेषालिवैणिकवृषेषु सुरालये स्यात्।
पाठीन-सिह घट-कर्कटकेषु मर्त्ये
चन्द्रे वदन्ति मुनयस्त्रिविधां हि विष्टिम्।।

चन्द्रमा के कन्या, तुला, धनु, मकर राशियों पर होने पर यदि भद्रा होगी तो उसका वास पाताल लोक में होता है। और चन्द्रमा के मेष, वृष, मिथुन वृश्चिक राशियों पर होने पर भद्रा होती है तो उसका वास स्वर्ग लोक में होता है। चन्द्रमा के कर्क, सिंह, कुम्भ मीन राशियों पर होने पर भद्रा होने से भद्रा का वास मृत्यु लोक में (पृथ्वी पर) होता है। इस प्रकार तीन प्रकार की भद्रा कही गयी है। भद्रा एक करणका नाम है करण का मान तिथि के आधे के समान होता है। प्रत्येक तिथि में दो करण होते हैं। भद्रा का जहां वास होता है वहीं अपना फल देती है। मनुष्यों के लिए चन्द्रमा के कर्क, सिंह, कुम्भ, मीन राशियों पर होने पर ही भद्रा यदि होती है तो अशुभ होती है।

भद्रा फल-यात्रा के समय स्वर्ग में भद्रावास हो तो शुभद होती है, पाताल में भद्रा का वास होने पर धन का लाभ और यदि मृत्यु लोक में भद्रा का वास हो तो समस्त कार्य का नाश होता है।

मृत्यु लोक में वास करते समय भद्रा सम्मुख होती है। पाताल में वास करने पर अधोमुखी होती है और स्वर्ग में भद्रा का वास होने पर वह ऊर्ध्वमुखी होती है। यात्रा के समय सम्मुख भद्रा मरणप्रदा होती है। अत: यात्रा के समय सम्मुख भद्रा त्याज्य है।

यात्रा मुहूर्त-अनुराधा, श्रवण, हस्त, मृगशिरा, अश्विनी, पुनर्वसु, पुष्य, धनिष्ठा और रेवती नक्षत्र यात्रा में शुभ हैं। उत्तरा भाद्रपदा विशाखा और आश्लेषा नक्षत्र यात्रा में अशुभ हैं।

षष्ठी, रिक्ता (4।9।14) द्वादशी और पर्व का दिन यात्रा में त्याज्य है। कन्या, मिथुन, वृष, तुला ये लग्न यात्रा में शुभ हैं। चन्द्रमा लग्न बल होने पर भी यात्रा शकुन

विचार करना चाहिये। हस्त, पुष्य, श्रवण, मृगशिरा ये नक्षत्र सभी दिशा की यात्रा के लिए शुभ हैं। पुष्य नक्षत्र इस प्रकार सभी सिद्धियों को देने वाला है जैसे विद्या के आरम्भ में गुरु।

यात्रा में शुक्रफल-यात्रा के समय शुक्र यदि दाहिने हो तो सुख का नाश करता है। सम्मुख शुक्र हो तो नेत्रों की हानि होती है या नेत्र विकार करता है। बायें और पीछे हमेशा शुभद होता है। अस्तंगत शुक्र शुभ में बाधक होता है।

वधूप्रवेश में समय का नियम-विवाह के दिन से सोलह दिन के अन्दर सम दिनों 2।4।6।8।10।12।14।16 में वधू प्रवेश शुभ होता है। विषम में 5, 7, 9वें दिनों में भी वधू प्रवेश शुभ होता है। उसके बाद प्रथम मास के (17।19।21।23।25।27।29वें) दिनों एक मास के बाद विषम (3।5।7।9।11वें) मासों में और एक वर्ष के बाद (3।5) वर्षों में वधू प्रवेश शुभ होता है। परन्तु 5वें वर्ष के बाद वर्ष मास का विचार नहीं होता अर्थात् 5वें वर्ष के बाद जब कभी शुभ-मुहूर्त देखकर वधू प्रवेश कराना चाहिये।

वधूप्रवेश मुहूर्त-रेवती, अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा धनिष्ठा, हस्त, चित्रा स्वाती, मूल, मघा, तीनों उत्तरा (उत्तरा फाल्गुनी, उत्तराषाढ, उत्तराभाद्रपद) पुष्य और अनुराधा नक्षत्रों में रिक्ता तिथि 4।9।14 को छोड़कर रवि और मङ्गलवार के अतिरिक्त अन्य दिनों में वधू प्रवेश शुभ है।

द्विरागमन शब्द का अर्थ-विवाह के बाद कन्या का पति के घर जाना वधू प्रवेश कहलाता है। उसके बाद पिता के घर से पति के घर के लिये यात्रा का नाम द्विरागमन है।

द्विरागमन में वर्ष व्यवस्था-विवाह के प्रथम वर्ष में द्विरागमन होने से धन की हानि, द्वितीय वर्ष में द्विरागमन होने से सुख का नाश, तृतीय वर्ष में भोग की प्राप्ति, चौथे वर्ष में वैर, और पांचवें वर्ष में द्विरागमन होने से सुख होता है। विवाह के आठवें वर्ष में द्विरागमन होने से कन्या के सास की मृत्यु, दसवें वर्ष में द्विरागमन होने से श्वसुर की मृत्यु तथा बारहवें वर्ष में द्विरागमन होने पर पति की मृत्यु होती है। अर्थात् प्रथम द्वितीय चतुर्थ, अष्टम, दशम एवं बारहवां वर्ष वर्ष में द्विरागमन के लिए त्याज्य हैं।

द्विरागमन के मास-वैशाख में द्विरागमन होने से कन्या सौभाग्यवती एवं अत्यन्त धनी होती है। अगहन में द्विरागमन होने से पुत्रवती होती है। फाल्गुन मास में द्विरागमन होने से पति की प्रिय एवं बन्धु बान्धवों से प्रेम करने वाली तथा पुत्रवती होती है।

अन्य महीनों में द्विरागमन होने से बन्ध्या, दुर्भगा, दरिद्रा स्वामी से वियुक्त रहने वाली उद्वेग युक्ता तथा पति से एक माह के भीतर ही बहुत बड़े-बड़े कष्ट पाने वाली होती हैं भले ही वह देवराज इन्द्र की पुत्री ही क्यों न हो।

द्विरागमनमुहूर्त-मृदु (मृगशिरा, चित्रा, रेवती, अनुराधा), ध्रुव (तीनों उत्तरा, रोहिणी) क्षिप्र (हस्त, अश्विनी, पुष्य, अभिजित), और चर (स्वाती, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा) संज्ञक, मूल नक्षत्रों में यात्रा में कहे हुये तिथि (रिक्ता 4।9। 14, षष्ठी, द्वादशी, अमावस्या और पूर्णिमा तथा सूर्य संक्रान्ति का दिन छोड़कर) तथा शुभ दिन में रवि और बृहस्पति के शुद्ध रहने पर शुक्ल पक्ष में कन्या का द्विरागमन प्रशस्त है।

द्विरागमन के बाद वधू की यात्रा-द्विरागमन के पश्चात् जब वधू पितृ गृह से तीसरी बार पति के घर जाने को होती है-उस समय के यात्रा को 'द्वयङ्ग' कहा जाता है। इस द्वयङ्ग-यात्रा में राहु का विचार होता है।

राहु यदि यात्रा की दिशा में सम्मुख पड़े तो वैधव्य-दोष तथा दक्षिण दिशा में पड़ने से पुत्र-मरण का दोष होता है। इस तृतीय यात्रा में राहु वाम भाग अथवा पृष्ठ भाग में पड़े तो नित्य शुभ अर्थात मङ्गल दायक होता है।

विशेष विचार-विवाहोपरान्त प्रथम बार पति गृह गमन को वधूप्रवेश कहा जाता है। तत्पश्चात् वधूप्रवेश के अनन्तर जब पतिगृह से वापस पिता के घर आ जाती है, और दूसरी बार पति-गृह जाती है-उस यात्रा को द्विरागमन कहा जाता है। द्विरागमन यात्रा में शुक्र का विचार किया जाता है। उस समय शुक्र का उदय रहना, वाम अथवा पृष्ठ भाग में पड़ना आदि बातों का विचार किया जाता है। द्विरागमन को ही जनसाधारण ग्रामीण भाषा में 'गवना' कहते हैं। इस द्विरागमन के पश्चात् पिता के घर वापस आकर तीसरी बार जब वधू पति-गृह जाती है उस यात्र को 'द्वयङ्ग' कहा गया है। इस द्वयङ्ग यात्रा में राहु का विचार भी अनिवार्य है। राहु की स्थिति स्पष्टार्थ नीचे चक्र दिया जा रहा है। द्वयङ्ग को ही लोक भाषा में 'दोंगा' कहा जाता है।

दोंगा का मुहूर्त-राहु के निवास की दिशा इस प्रकार होती है-मेष, वृष, मिथुन और कर्क राशि में क्रमशः पूर्व, दक्षिण, पश्चिम एवं उत्तर दिशा में राहु रहता है। इसी क्रम से इन चारों राशियों के पंचम तथा नवम् राशियों में भी पूर्ववत् पूर्वादि दिशाओं में राहु रहता है।

राहु दिशा	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
राशि	मेष सिंह धनु	वृष कन्या मकर	मिथुन तुला कुम्भ	कर्क वृश्चिक मीन

नव वधू द्वारा पाकारम्भ-मृगशिरा, तीनों उत्तरा (उत्तरा फाल्गुनी, उत्तराषाढ़, उत्तराभाद्रपदा) पुष्य, कृत्तिका, ज्येष्ठा, श्रवण, धनिष्ठा रोहिणी, विशाखा और रेवती

नक्षत्रों में शुभ तिथि में मंगल और रविवार को छोड़कर अन्य दिनों में नयी बहू के द्वारा पहले-पहल रसोई बनवाना शुभ होता है।

पुरुषों का नवीन वस्त्र धारण मुहूर्त-रोहिणी, अनुराधा, धनिष्ठा, पुष्य, विशाखा, हस्त, चित्र, तीनों उत्तरा (उत्तरा फाल्गुनी, उत्तराषाढ़, उत्तराभाद्रपदा), अश्विनी, स्वाती, पुनर्वसु, रेवती और जन्म नक्षत्र में बृहस्पति बुध और शुक्र वारों में और उत्सव आदि मांङ्गलिक कार्य के दिनों में ईश्वर और ब्राह्मण की प्रसन्नता हेतु पुरुषों को नया वस्त्र धारण करना चाहिये।

स्त्रियों का नीवन वस्त्र धारण मुहूर्त-धनिष्ठा, रेवती, हस्त से आरम्भ करके पांच नक्षत्र (हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा), और अश्विनी नक्षत्रों में वृहस्पति और शुक्र के दिन स्त्रियों को नया वस्त्र धारण करना चाहिये।

स्त्रियों का आभूषण धारण मुहूर्त-अश्विनी, रेवती, धनिष्ठा और हस्त से 5 नक्षत्रों (हस्त, चित्र, स्वाती, विशाखा, अनुराधा) में रवि मंगल, बृहस्पति तथा शुक्रवारों में स्त्रियों को लाह की चूड़ी एवं आभूषण, सुवर्ण मणि (रत्नजड़ित) मोती-मूंगा, शंख के आभूषण हाथी दांत के आभूषण तथा लाल वस्त्र आदि धारण करना चाहिये।

बीज वपन मुहूर्त-बीज बोने में राहु जिस नक्षत्र में हो उस नक्षत्र से 8 नक्षत्र बीज बोने में अशुभ, उसके बाद 3 नक्षत्र शुभ उसके बाद 1 नक्षत्र अशुभ, फिर 3 नक्षत्र शुभ, उसके बाद 1 अशुभ, फिर 3 शुभ, उसके बाद 1 अशुभ, फिर 3 शुभ, उसके बाद अशुभ, फिर और 3 शुभ और 4 अशुभ होते हैं। शुभ वाले नक्षत्र में ही बीज बोना चाहिये।

गृह निर्माण में मास शुद्धि-वैशाख, श्रावण, मार्गशीर्ष और फाल्गुन में गृहनिर्माण आरम्भ करने से पत्नी, पुत्र और धन का लाभ होता है।

तिथिपक्ष की शुद्धि-गृहारम्भ प्रतिपदा को करने से दरिद्रता, चतुर्थी को करने से धन का नाश, अष्टमी को उच्चाटन, नवमी को शस्त्राघात, अमावस्या को राजभय और चतुर्दशी को गृहारम्भ करना स्त्री के लिए हानिकारक होता है। शुक्ल पक्ष में गृहारम्भ करने से सौख्य और कृष्णपक्ष में गृहारम्भ करने से चौरभय होता है।

गृहारम्भ में नक्षत्र दिन आदि की शुद्धि-गृहारम्भ के लिए नक्षत्रादि बतलाया जा रहा है। हस्त, पुनर्वसु, मृगशीर्ष, पुष्य, स्वाती, ज्येष्ठा, अनुराधा, तीनों उत्तरा, चित्रा, आश्विनी और श्रवण इन नक्षत्रों में गृहारम्भ शुभ है। वृश्चिक और कुम्भलग्न को छोड़कर शेष सभी लग्नों में तथा रिक्ता (4/9/14) तिथि को त्याग कर शेष तिथियों में, शुक्रवार, शनिवार, बुधवार और सोमवार के दिन, चन्द्रमा के अनुकूल (शुभ) होने पर गृहारम्भ शुभ होता है। सूतिका आदि के गृह निर्माण में इसका विशेष ध्यान रखना चाहिए।

गृहप्रवेश मास-माघ मास में गृह प्रवेश करने से धन का लाभ, फाल्गुन में पुत्र और धन लाभ, चैत्र में करने से धन की हानि, वैशाख में धन-धान्य का लाभ तथा ज्येष्ठ में पशु-पुत्र का लाभ होता है। इससे अन्य महीनों में गृह-प्रवेश करने से निश्चित रूप से हानि एवं शत्रुभय होता है।

गृहप्रवेश मुहूर्त-गृहारम्भ में कहे हुये मास, दिन, पक्ष, तिथि नक्षत्रों में सौम्यायन में गृहप्रवेश शुभ है। तृण के घर में इसका विचार नहीं किया जाता उसमें कभी भी प्रवेश किया जा सकता है।

दीक्षाग्रहण मुहूर्त-आश्विन से लेकर छः मासों में (आश्विन, कार्तिक, अगहन, पौष, माघ फाल्गुन) तथा श्रावण और वैशाख में भद्रा (2/7/12), पूर्णा (5/10/14), त्रयोदशी आदि शुभ तिथियों में शुक्र, बुध, सोम और बृहस्पति वारों में, रोहिणी, तीनों उत्तरा (उत्तराषाढ, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराभाद्रपद) ज्येष्ठा, आर्द्रा स्वाती, पुष्य, विशाखा अश्विनी और श्रवण नक्षत्रों, चन्द्रबल से युक्त होकर शुभ लग्नों में मन्त्रग्रहण शुभ कहा गया है।

देवतादि प्रतिष्ठा-रोहिणी, ज्येष्ठा, हस्त, श्रवण, हस्त, स्वाती, मूल, मृगशिरा, अनुराधा, पुष्य, रेवती, आर्द्रा और तीनों उत्तरा (उत्तरा, फाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा उत्तराभाद्रपदा) नक्षत्रों में शुक्ल पक्ष के शुभ दिनों एवं शुभ तिथियों में, चन्द्रमा के बलयुक्त होने पर सभी देवताओं की प्रतिष्ठा कल्याणकारी कही गयी है।

क्षौर मुहूर्त्त-शनि, मंगल, रविवार और क्षौर के नवें दिन, सन्ध्या समय, रिक्ता तिथि (4/9/14), पर्व दिन, और रात्रि का समय इनको छोड़कर मुण्डन में कहे हुये तिथि वारों और नक्षत्रों में साधारण दाँत साफ करना, क्षौर (बाल कटाना) बनाना और नख कटाना शुभ है। अपना कल्याण चाहने वालों को बिना आसन, युद्ध और किसी यात्रा के दिन, स्नान करने के बाद, तेल लगाकर भोजनोपरान्त, दन्त क्षौर-नख क्रिया नहीं करनी चाहिये।

इसी प्रकार पौरोहित्य कर्म के लिए कुण्डली के विभिन्न भावों से ग्रहों की स्थिति के अनुसार उनके प्रभावों के उपशमन हेतु भी जानकारी आवश्यक है। इसी विस्तार भय और प्रसङ्ग की जटिलता के परिप्रेक्ष्य में सामान्य पुरोहित के लिए दिया जाना अभीष्ट नहीं है, फिर भी आवश्यकतानुसार इसे एतद् सम्बन्धी ग्रन्थ से अध्ययन किया जा सकता है।

।। इति।।

परिशिष्ट

रुद्राष्टाध्यायी

प्रथमोऽध्यायः

गणानां त्वा गणपतिं हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिं हवामहे ।
निधीनां त्वा निधिपतिं हवामहे वसो मम । आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम् ।१।।

गायत्री त्रिष्टुब्जगत्यनुष्टुप्पङ्क्त्या सह । बृहत्युष्णिहा ककुप्सूचीभिः शम्यन्तु त्वा ।। २।।

द्विपदा याश्चतुष्पदास्त्रिपदा याश्च षट्पदाः ।
विच्छन्दा याश्च सच्छन्दाः सूचीभिः शम्यन्तु त्वा ।। ३।।

सहस्तोमाः सहच्छन्दस आवृतः सहप्रमा ऋषयः सप्त दैव्याः ।
पूर्वेषां पन्थामनुदृश्य धीरा अन्वालेभिरे रथ्यो न रश्मीन् ।। ४।।

शिवसंकल्पसूक्त

यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति ।
दूरङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ।। १ ।।

येन कर्माण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः ।
यदपूर्वं यक्षमन्तः प्रजानां तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ।। २ ।।

यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ज्योतिरन्तरमृतं प्रजासु ।
यस्मान्न ऋते किं चन कर्म क्रियते तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ।। ३ ।।

येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत् परिगृहीतममृतेन सर्वम् ।
येन यज्ञस्तायते सप्तहोता तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ।। ४ ।।

यस्मिन्नृचः साम यजूंषि यस्मिन् प्रतिष्ठिता रथनाभाविवाराः ।
यस्मिंश्चित्तं सर्वमोतं प्रजानां तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ।। ५ ।।

सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान्नेनीयतेऽभीशुभिर्वाजिन इव ।
हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ।। ६ ।।

।। इति प्रथमोऽध्यायः।।

द्वितीयोऽध्यायः (पुरुषसूक्तम्)

सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् । स भूमिंꣳ सर्वतं स्पृत्वाऽत्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥ १ ॥

पुरुष एवेदꣳ सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम् । उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति ॥ २ ॥

एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः । पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि ॥ ३ ॥

त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत् पुनः । ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने अभि ॥ ४ ॥

ततो विराडजायत विराजो अधि पूरुषः । स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः ॥ ५ ॥

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम् । पशूँस्ताँश्चक्रे वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये ॥ ६ ॥

तस्माद्यज्ञात् सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे । छन्दाꣳसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत ॥ ७ ॥

तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः । गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः ॥८॥

तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रतः । तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये ॥ ९ ॥

यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन् । मुखं किमस्यासीत् किं बाहू किमूरू पादा उच्येते ॥१०॥

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः । ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्याꣳ शूद्रो अजायत ॥ ११ ॥

चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत । श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत ॥ १२ ॥

नाभ्या आसीदन्तरिक्षꣳ शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत ।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ२ अकल्पयन् ॥ १३ ॥

यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत । वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः ॥ १४ ॥

सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः । देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन् पुरुषं पशुम् ॥१५॥

यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ॥ १६ ॥

अद्भ्यः सम्भृतः पृथिव्यै रसाच्च विश्वकर्मणः समवर्तताग्रे ।
तस्य त्वष्टा विदधद्रूपमेति तन्मर्त्यस्य देवत्वमाजानमग्रे ॥ १७ ॥

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्यवर्णं तमसः परस्तात् ।
तमेव विदित्वाति मृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय ॥ १८ ॥

प्रजापतिश्चरति गर्भे अन्तरजायमानो बहुधा वि जायते ।
तस्य योनिं परि पश्यन्ति धीरास्तस्मिन् ह तस्थुर्भुवनानि विश्वा ॥ १९ ॥

यो देवेभ्य आतपति यो देवानां पुरोहितः । पूर्वो यो देवेभ्यो जातो नमो रुचाय ब्राह्मये ॥२०॥

रुचं ब्राह्मं जनयन्तो देवा अग्रे तदब्रुवन् । यस्त्वैवं ब्राह्मणो विद्यात्तस्य देवा असन् वशे ॥२१॥

श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् ।
इष्णन्निषाणामुं म इषाण सर्वलोकं म इषाण ॥ २२ ॥

॥ इतिद्वितीयोऽध्यायः ॥

अथ तृतीयोऽध्यायः

आशुः शिशानो वृषभो न भीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम् ।
संक्रन्दनोऽनिमिष एकवीरः शतꣳ सेना अजयत् साकमिन्द्रः’ ॥

संक्रन्दनेनानिमिषेण जिष्णुना युत्कारेण दुश्च्यवनेन धृष्णुना ।
तदिन्द्रेण जयत तत्सहध्वं युधो नर इषुहस्तेन वृष्णा’ ॥

स इषुहस्तैः स निषङ्गिभिर्वशी सꣳस्रष्टा स युध इन्द्रो गणेन ।
सꣳसृष्टजित्सोमपा बाहुशर्ध्युग्रधन्वा प्रतिहिताभिरस्ता’ ॥

बृहस्पते परि दीया रथेन रक्षोहाऽमित्राँ२ अपबाधमानः ।
प्रभञ्जन्त्सेनाः प्रमृणो युधा जयन्नस्माकमेध्यविता रथानाम् ॥

बलविज्ञाय स्थविरः प्रवीरः सहस्वान् वाजी सहमान उग्रः ।
अभिवीरो अभिसत्वा सहोजा जैत्रमिन्द्र रथमा तिष्ठ गोवित् ॥

गोत्रभिदं गोविदं वज्रबाहुं जयन्तमज्म प्रमृणन्तमोजसा ।
इमꣳ सजाता अनु वीरयध्वमिन्द्रꣳ सखायो अनु सꣳ रभध्वम् ॥

अभि गोत्राणि सहसा गाहमानोऽदयो वीरः शतमन्युरिन्द्रः ।
दुश्च्यवनः पृतनाषाडयुध्योऽस्माकꣳ सेना अवतु प्र युत्सु ॥

इन्द्र आसां नेता बृहस्पतिर्दक्षिणा यज्ञः पुर एतु सोमः ।
देवसेनानामभिभञ्जतीनां जयन्तीनां मरुतो यन्त्वग्रम् ॥

इन्द्रस्य वृष्णो वरुणस्य राज्ञ आदित्यानां मरुताꣳ शर्ध उग्रम् ।
महामनसां भुवनच्यवानां घोषो देवानां जयतामुदस्थात् ॥

उद्धर्षय मघवन्नायुधान्युत्सत्वनां मामकानां मनाꣳसि ।
उद्वृत्रहन् वाजिनां वाजिनान्युद्रथानां जयतां यन्तु घोषाः’ ॥

अस्माकमिन्द्रः समृतेषु ध्वजेष्वस्माकं या इषवस्ता जयन्तु ।
अस्माकं वीरा उत्तरे भवन्त्वस्माँ२ उ देवा अवता हवेषु ॥

अमीषां चित्तं प्रतिलोभयन्ती गृहाणाङ्गान्यप्वे परेहि ।
अभि प्रेहि निर्दह हृत्सु शोकैरन्धेनामित्रास्तमसा सचन्ताम् ॥

अवसृष्टा परा पत शरव्ये ब्रह्मसꣳशिते । गच्छामित्रान् प्र पद्यस्व माऽमीषां कं चनोच्छिषः ॥

प्रेता जयता नर इन्द्रो वः शर्म यच्छतु । उग्रा वः सन्तु बाहवोऽनाधृष्या यथाऽसथ ॥

असौ या सेना मरुतः परेषामभ्येति न ओजसा स्पर्धमाना ।
तां गूहत तमसाऽपव्रतेन यथाऽमी अन्यो अन्यं न जानन् ॥

यत्र बाणाः सम्पतन्ति कुमारा विशिखा इव ।
तन्न इन्द्रो बृहस्पतिरदितिः शर्म यच्छतु विश्वाहा शर्म यच्छतु ॥

मर्माणि ते वर्मणा छादयामि सोमस्त्वा राजाऽमृतेनानुवस्ताम् ।
उरोर्वरीयो वरुणस्ते कृणोतु जयन्तं त्वाऽनु देवा मदन्तु ॥

।। इति तृतीयोऽध्यायः।।

अथ चतुर्थोऽध्यायः

विभ्राड् बृहत्पिबतु सोम्यं मध्वायुर्दधद्यज्ञपतावविह्रुतम् ।
वातजूतो यो अभिरक्षति त्मना प्रजाः पुपोष पुरुधा वि राजति ॥

उदु त्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः । दृशे विश्वाय सूर्यम् ॥

येना पावक चक्षसा भुरण्यन्तं जनाँ२ अनु । त्वं वरुण पश्यसि ॥

दैव्यावध्वर्यू आ गतꣳ रथेन सूर्यत्वचा । मध्वा यज्ञꣳ समञ्जाथे ॥

तं प्रत्नथा ऽयं वेन— श्चित्रं देवानाम्× ॥

तं प्रत्नथा पूर्वथा विश्वथेमथा ज्येष्ठतातिं बर्हिषदꣳ स्वर्विदम् ।
प्रतीचीनं वृजनं दोहसे धुनिमाशुं जयन्तमनु यासु वर्धसे ।

अयं वेनश्चोदयत्पृश्निगर्भा ज्योतिर्जरायू रजसो विमाने ।
इममपाꣳ सङ्गमे सूर्यस्य शिशुं न विप्रा मतिभी रिहन्ति ।

चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः ।
आऽप्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्षꣳ सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च ॥

आ न इडाभिर्विदथे सुशस्ति विश्वानरः सविता देव एतु ।
अपि यथा युवानो मत्सथा नो विश्वं जगदभिपित्वे मनीषा ॥

यदद्य कच्च वृत्रहन्नुदगा अभि सूर्य । सर्वं तदिन्द्र ते वशे ॥

तरणिर्विश्वदर्शतो ज्योतिष्कृदसि सूर्य । विश्वमा भासि रोचनम् ॥

तत्सूर्यस्य देवत्वं तन्महित्वं मध्या कर्तोर्विततꣳ सं जभार ।
यदेदयुक्त हरितः सधस्थादाद्रात्री वासस्तनुते सिमस्मै ॥

तन्मित्रस्य वरुणस्याभिचक्षे सूर्यो रूपं कृणुते द्योरुपस्थे ।
अनन्तमन्यद्रुशदस्य पाजः कृष्णमन्यद्धरितः सं भरन्ति ॥

बण्महाँ२ असि सूर्य बडादित्य महाँ२ असि ।
महस्ते सतो महिमा पनस्यतेऽद्धा देव महाँ२ असि ॥

बद् सूर्य श्रवसा महाँ२ असि सत्रा देव महाँ२ असि ।
मह्ना देवानामसुर्यः पुरोहितो विभु ज्योतिरदाभ्यम् ॥
श्रायन्त इव सूर्यं विश्वेदिन्द्रस्य भक्षत ।
वसूनि जाते जनमान ओजसा प्रति भागं न दीधिम ॥
अद्या देवा उदिता सूर्यस्य निरंहसः पिपृता निरवद्यात् ।
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः ॥
आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च ।
हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् ॥

।। इति चतुर्थोऽध्यायः।।

अथ पञ्चमोऽध्यायः (रुद्रसूक्त)

नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः । बाहुभ्यामुत ते नमः ॥ १ ॥
या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी । तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभि चाकशीहि ॥२॥
यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे । शिवां गिरित्र तां कुरु मा हिंसीः पुरुषं जगत् ॥ ३ ॥
शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छा वदामसि । यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्मं सुमना असत् ॥ ४ ॥
अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक् ।
अहींश्च सर्वाञ्जम्भयन्त्सर्वाश्च यातुधान्योऽधराचीः परा सुव ॥ ५ ॥
असौ यस्ताम्रो अरुण उत बभ्रुः सुमङ्गलः ।
ये चैनं रुद्रा अभितो दिक्षु श्रिताः सहस्रशोऽवैषां हेड ईमहे ॥ ६ ॥
असौ योऽवसर्पति नीलग्रीवो विलोहितः । उतैनं गोपा अदृश्रन्नदृश्रन्नुदहार्यः स दृष्टो मृडयाति नः ॥७॥
नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे । अथो ये अस्य सत्वानोऽहं तेभ्योऽकरं नमः ॥ ८ ॥
प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयोरार्त्न्योर्ज्याम् । याश्च ते हस्त इषवः परा ता भगवो वप ॥ ९ ॥
विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवाँ२ उत ।
अनेशन्नस्य या इषव आभुरस्य निषङ्गधिः ॥ १० ॥
या ते हेतिर्मीढुष्टम हस्ते बभूव ते धनुः । तयाऽस्मान्विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परि भुज ॥ ११ ॥
परि ते धन्वनो हेतिरस्मान्वृणक्तु विश्वतः । अथो य इषुधिस्तवारे अस्मन्नि धेहि तम् ॥ १२ ॥
अवतत्य धनुष्ट्वं सहस्राक्ष शतेषुधे । निशीर्य शल्यानां मुखा शिवो नः सुमना भव ॥ १३ ॥
नमस्त आयुधायानातताय धृष्णवे । उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तव धन्वने ॥ १४ ॥
मा नो महान्तमुत मा नो अर्भकं मा न उक्षन्तमुत मा न उक्षितम् ।
मा नो वधीः पितरं मोत मातरं मा नः प्रियास्तन्वो रुद्र रीरिषः ॥ १५ ॥
मा नस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः ।
मा नो वीरान् रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित् त्वा हवामहे ॥ १६ ॥

नमो हिरण्यबाहवे सेनान्ये दिशां च पतये नमो नमो वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यः
पशूनां पतये नमो नमः शष्पिञ्जराय त्विषीमते पथीनां पतये नमो
नमो हरिकेशायोपवीतिने पुष्टानां पतये नमः ॥ १७ ॥

नमो बभ्लुशाय व्याधिने ऽन्नानां पतये नमो नमो भवस्य हेत्यै जगतां पतये नमो
नमो रुद्रायाततायिने क्षेत्राणां पतये नमो नमः सूतायाहन्त्यै वनानां पतये नमः ॥१८॥

नमो रोहिताय स्थपतये वृक्षाणां पतये नमो नमो भुवन्तये वारिवस्कृतायौ—
षधीनां पतये नमो नमो मन्त्रिणे वाणिजाय कक्षाणां पतये नमो
नम उच्चैर्घोषायाक्रन्दयते पत्तीनां पतये नमः ॥ १९ ॥

नमः कृत्स्नायतया धावते सत्वनां पतये नमो नमः सहमानाय निव्याधिन
आव्याधिनीनां पतये नमो नमो निषङ्गिणे ककुभाय स्तेनानां पतये नमो
नमो निचेरवे परिचरायाऽरण्यानां पतये नमः ॥ २० ॥

नमो वञ्चते परिवञ्चते स्तायूनां पतये नमो नमो निषङ्गिण इषुधिमते
तस्कराणां पतये नमो नमः सृकायिभ्यो जिघांसद्भ्यो मुष्णतां पतये नमो
नमोऽसिमद्भ्यो नक्तञ्चरद्भ्यो विकृन्तानां पतये नमः ॥ २१ ॥

नम उष्णीषिणे गिरिचराय कुलुञ्चानां पतये नमो नम इषुमद्भ्यो धन्वायिभ्यश्च वो नमो
नम आतन्वानेभ्यः प्रतिदधानेभ्यश्च वो नमो नम आयच्छद्भ्यो ऽस्यद्भ्यश्च वो नमः ।२२।

नमो विसृजद्भ्यो विध्यद्भ्यश्च वो नमो नमः स्वपद्भ्यो जाग्रद्भ्यश्च वो नमो
नमः शयानेभ्य आसीनेभ्यश्च वो नमो नमस्तिष्ठद्भ्यो धावद्भ्यश्च वो नमः ॥ २३ ॥

नमः सभाभ्यः सभापतिभ्यश्च वो नमो नमोऽश्वेभ्यो ऽश्वपतिभ्यश्च वो नमो
नम आव्याधिनीभ्यो विविध्यन्तीभ्यश्च वो नमो नम उगणाभ्य स्तृंहतीभ्यश्च वो नमः ।२४।

नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमो
नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमः ॥२५॥

नमः सेनाभ्यः सेनानिभ्यश्च वो नमो नमो रथिभ्यो अरथेभ्यश्च वो नमो
नमः क्षत्तृभ्यः संग्रहीतृभ्यश्च वो नमो नमो महद्भ्यो अर्भकेभ्यश्च वो नमः ॥ २६ ॥

नमस्तक्षभ्यो रथकारेभ्यश्च वो नमो नमः कुलालेभ्यः कर्मारेभ्यश्च वो नमो
नमो निषादेभ्यः पुञ्जिष्ठेभ्यश्च वो नमो नमः श्वनिभ्यो मृगयुभ्यश्च वो नमः ॥ २७ ॥

नमः श्वभ्यः श्वपतिभ्यश्च वो नमो नमो भवाय च रुद्राय च नमः शर्वाय च
पशुपतये च नमो नीलग्रीवाय च शितिकण्ठाय च ॥ २८ ॥

नमः कपर्दिने च व्युप्तकेशाय च नमः सहस्राक्षाय च शतधन्वने च
नमो गिरिशयाय च शिपिविष्टाय च नमो मीढुष्टमाय च—षुमते च ॥ २९ ॥

नमो ह्रस्वाय च वामनाय च नमो बृहते च वर्षीयसे च नमो वृद्धाय च
सवृधे च नमोऽग्र्याय च प्रथमाय च ॥ ३० ॥

नम आशवे चा—जिराय च नमः शीघ्र्याय च शीभ्याय च नम ऊर्म्याय चा—
वस्वन्याय च नमो नादेयाय च द्वीप्याय च ॥ ३१ ॥

नमो ज्येष्ठाय च कनिष्ठाय च नमः पूर्वजाय चापरजाय च नमो मध्यमाय चापगल्भाय च नमो जघन्याय च बुध्न्याय च ॥ ३२ ॥

नमः सोभ्याय च प्रतिसर्याय च नमो याम्याय च क्षेम्याय च नमः श्लोक्याय चावसान्याय च नम उर्वर्याय च खल्याय च ॥ ३३ ॥

नमो वन्याय च कक्ष्याय च नमः श्रवाय च प्रतिश्रवाय च नम आशुषेणाय चाशुरथाय च नमः शूराय चावभेदिने च ॥ ३४ ॥

नमो बिल्मिने च कवचिने च नमो वर्मिणे च वरूथिने च नमः श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुभ्याय चाहनन्याय च ॥ ३५ ॥

नमो धृष्णवे च प्रमृशाय च नमो निषङ्गिणे चेषुधिमते च नमस्तीक्ष्णेषवे चायुधिने च नमः स्वायुधाय च सुधन्वने च ॥ ३६ ॥

नमः स्रुत्याय च पथ्याय च नमः काट्याय च नीप्याय च नमः कुल्याय च सरस्याय च नमो नादेयाय च वैशन्ताय च ॥ ३७ ॥

नमः कूप्याय चावट्याय च नमो वीध्र्याय चातप्याय च नमो मेघ्याय च विद्युत्याय च नमो वर्ष्याय चावर्ष्याय च ॥ ३८ ॥

नमो वात्याय च रेष्म्याय च नमो वास्तव्याय च वास्तुपाय च नमः सोमाय च रुद्राय च नमस्ताम्राय चारुणाय च ॥ ३९ ॥

नमः शङ्गवे च पशुपतये च नम उग्राय च भीमाय च नमोऽग्रेवधाय च दूरेवधाय च नमो हन्त्रे च हनीयसे च नमो वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यो नमस्ताराय ॥४०॥

नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च ॥ ४१ ॥

नमः पार्याय चावार्याय च नमः प्रतरणाय चोत्तरणाय च नमस्तीर्थ्याय च कूल्याय च नमः शष्प्याय च फेन्याय च ॥ ४२ ॥

नमः सिकत्याय च प्रवाह्याय च नमः किंशिलाय च क्षयणाय च नमः कपर्दिने च पुलस्तये च नम इरिण्याय च प्रपथ्याय च ॥ ४३ ॥

नमो व्रज्याय च गोष्ठ्याय च नमस्तल्प्याय च गेह्याय च नमो हृदय्याय च निवेष्प्याय च नमः काट्याय च गह्वरेष्ठाय च ॥ ४४ ॥

नमः शुष्क्याय च हरित्याय च नमः पांसव्याय च रजस्याय च नमो लोप्याय चोलप्याय च नम ऊर्व्याय च सूर्व्याय च ॥ ४५ ॥

नमः पर्णाय च पर्णशदाय च नम उद्गुरमाणाय चाभिघ्नते च नम आखिदते च प्रखिदते च नम इषुकृद्भ्यो धनुष्कृद्भ्यश्च वो नमो नमो वः किरिकेभ्यो देवानांहृदयेभ्यो नमो विचिन्वत्केभ्यो नमो विक्षिणत्केभ्यो नम आनिर्हतेभ्यः ॥ ४६ ॥

द्रापे अन्धसस्पते दरिद्र नीललोहित ।
आसां प्रजानामेषां पशूनां मा भेर्मा रोङ्मो च नः किंचनाममत् ॥ ४७ ॥

इमा रुद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्वीराय प्र भरामहे मतीः ।
यथा शमसद् द्विपदे चतुष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामे अस्मिन्ननातुरम् ॥ ४८ ॥

या ते रुद्र शिवा तनूः शिवा विश्वाहा भेषजी । शिवा रुतस्य भेषजी तया नो मृड जीवसे ॥४९॥

परि नो रुद्रस्य हेतिर्वृणक्तु परि त्वेषस्य दुर्मतिरघायोः ।
अव स्थिरा मघवद्भ्यस्तनुष्व मीढ्वस्तोकाय तनयाय मृड ॥ ५० ॥

मीढुष्टम शिवतम शिवो नः सुमना भव ।
परमे वृक्ष आयुधं निधाय कृत्तिं वसान आ चर पिनाकं बिभ्रदा गहि ॥ ५१ ॥

विकिरिद्र विलोहित नमस्ते अस्तु भगवः । यास्ते सहस्रꣳ हेतयोऽन्यमस्मन्नि वपन्तु ताः ॥५२॥

सहस्राणि सहस्रशो बाह्वोस्तव हेतयः । तासामीशानो भगवः पराचीना मुखा कृधि ॥ ५३ ॥

असंख्याता सहस्राणि ये रुद्रा अधि भूम्याम् । तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि ॥५४॥

अस्मिन् महत्यर्णवे ऽन्तरिक्षे भवा अधि । तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि ॥५५॥

नीलग्रीवाः शितिकण्ठा दिवꣳ रुद्रा उपश्रिताः । तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि ॥५६॥

नीलग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्वा अधः क्षमाचराः । तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि ॥५७॥

ये वृक्षेषु शष्पिञ्जरा नीलग्रीवा विलोहिताः । तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि ॥५८॥

ये भूतानामधिपतयो विशिखासः कपर्दिनः । तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि ॥५९॥

ये पथां पथिरक्षय ऐलबृदा आयुर्युधः । तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि ॥६०॥

ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः । तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि ॥६१॥

येऽन्नेषु विविध्यन्ति पात्रेषु पिबतो जनान् । तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि ॥६२॥

य एतावन्तश्च भूयाꣳसश्च दिशो रुद्रा वितस्थिरे । तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि ॥६३॥

नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो ये दिवि येषां वर्षमिषवः । तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश
प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वाः । तेभ्यो नमो अस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यं द्विष्मो
यश्च नो द्वेष्टि तमेषां जम्भे दध्मः ॥ ६४ ॥

नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो येऽन्तरिक्षे येषां वात इषवः । तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश
प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वाः । तेभ्यो नमो अस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यं द्विष्मो
यश्च नो द्वेष्टि तमेषां जम्भे दध्मः ॥ ६५ ॥

नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो ये पृथिव्यां येषामन्नमिषवः । तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश
प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वाः । तेभ्यो नमो अस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यं द्विष्मो
यश्च नो द्वेष्टि तमेषां जम्भे दध्मः ॥ ६६ ॥

।। इति पञ्चमोऽध्यायः ।।

अथ षष्ठोऽध्यायः

वयꣳ सोम व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः । प्रजावन्तः सचेमहि ॥

एष ते रुद्र भागः सह स्वस्राम्बिकया तं जुषस्व स्वाहा—एष ते रुद्र भाग आखुस्ते पशुः ॥

अव रुद्रमदीमह्यव देवं त्र्यम्बकम् ।
यथा नो वस्यसस्करद्यथा नः श्रेयसस्करद्यथा नो व्यवसाययात् ॥

भेषजमसि भेषजं गवेऽश्वाय पुरुषाय भेषजम् । सुखं मेषाय मेष्यै ॥

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।
त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पतिवेदनम् । उर्वारुकमिव बन्धनादितो मुक्षीय मामुतः ॥

एतत्ते रुद्रावसं तेन परो मूजवतोऽतीहि ।
अवततधन्वा पिनाकावसः कृत्तिवासा अहिꣳसन्नः शिवोऽतीहि ॥

त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम् । यद्देवेषु त्र्यायुषं तन्नो अस्तु त्र्यायुषम् ॥

शिवो नामासि स्वधितिस्ते पिता नमस्ते अस्तु मा मा हिꣳसीः ।
नि वर्त्तयाम्यायुषेऽन्नाद्याय प्रजननाय रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्याय ॥

।। इति षष्ठोऽध्यायः ।।

अथ सप्तमोऽध्यायः

उग्रश्च भीमश्च ध्वान्तश्च धुनिश्च । सासह्वाँश्चाभियुग्वा च विक्षिपः स्वाहा ॥

अग्निꣳ हृदयेनाशनिꣳ हृदयाग्रेण पशुपतिं कृत्स्नहृदयेन भवं यक्ना ।
शर्वं मतस्नाभ्यामीशानं मन्युना महादेवमन्तःपर्शव्येनोग्रं देवं वनिष्ठुना
वसिष्ठहनुः शिङ्गीनि कोश्याभ्याम् ॥

उग्रँल्लोहितेन मित्रꣳ सौव्रत्येन रुद्रं दौर्व्रत्येनेन्द्रं प्रक्रीडेन मरुतो बलेन
साध्यान् प्रमुदा । भवस्य कण्ठ्यꣳ रुद्रस्यान्तःपार्श्व्यं महादेवस्य यकृच्—
छर्वस्य वनिष्ठुः पशुपतेः पुरीतत् ॥

लोमभ्यः स्वाहा लोमभ्यः स्वाहा त्वचे स्वाहा त्वचे स्वाहा
लोहिताय स्वाहा लोहिताय स्वाहा मेदोभ्यः स्वाहा मेदोभ्यः स्वाहा ।
माꣳसेभ्यः स्वाहा माꣳसेभ्यः स्वाहा स्नावभ्यः स्वाहा स्नावभ्यः स्वाहा
ऽस्थभ्यः स्वाहा ऽस्थभ्यः स्वाहा मज्जभ्यः स्वाहा मज्जभ्यः स्वाहा ।
रेतसे स्वाहा पायवे स्वाहा ॥

आयासाय स्वाहा प्रायासाय स्वाहा संयासाय स्वाहा वियासाय स्वाहो—द्यासाय स्वाहा ॥
शुचे स्वाहा शोचते स्वाहा शोचमानाय स्वाहा शोकाय स्वाहा ॥

तपसे स्वाहा तप्यते स्वाहा तप्यमानाय स्वाहा तप्ताय स्वाहा घर्माय स्वाहा ।
निष्कृत्यै स्वाहा प्रायश्चित्यै स्वाहा भेषजाय स्वाहा ॥

यमाय स्वाहा ऽन्तकाय स्वाहा मृत्यवे स्वाहा ।
ब्रह्मणे स्वाहा ब्रह्महत्यायै स्वाहा विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा
द्यावापृथिवीभ्याꣳ स्वाहा ॥

अथ अष्टमोऽध्याय:

वाजश्च मे प्रसवश्च मे प्रयतिश्च मे प्रसितिश्च मे धीतिश्च मे क्रतुश्च मे स्वरश्च मे श्लोकश्च मे श्रवश्च मे श्रुतिश्च मे ज्योतिश्च मे स्वश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ १ ॥

प्राणश्च मेऽपानश्च मे व्यानश्च मेऽसुश्च मे चित्तं च म आधीतं च मे वाक् च मे मनश्च मे चक्षुश्च मे श्रोत्रं च मे दक्षश्च मे बलं च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ २ ॥

ओजश्च मे सहश्च म आत्मा च मे तनूश्च मे शर्म च मे वर्म च मेऽङ्गानि च मेऽस्थीनि च मे परूंषि च मे शरीराणि च म आयुश्च मे जरा च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ ३ ॥

ज्यैष्ठ्यं च म आधिपत्यं च मे मन्युश्च मे भामश्च मेऽमश्च मेऽम्भश्च मे जेमा च मे महिमा च मे वरिमा च मे प्रथिमा च मे वर्षिमा च मे द्राघिमा च मे वृद्धं च मे वृद्धिश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥४॥

सत्यं च मे श्रद्धा च मे जगच्च मे धनं च मे विश्वं च मे महश्च मे क्रीडा च मे मोदश्च मे जातं च मे जनिष्यमाणं च मे सूक्तं च मे सुकृतं च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ ५ ॥

ऋतं च मेऽमृतं च मेऽयक्ष्मं च मेऽनामयच्च मे जीवातुश्च मे दीर्घायुत्वं च मेऽनमित्रं च मेऽभयं च मे सुखं च मे शयनं च मे सूषाश्च मे सुदिनं च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ ६ ॥

यन्ता च मे धर्ता च मे क्षेमश्च मे धृतिश्च मे विश्वं च मे महश्च मे संविच्च मे ज्ञात्रं च मे सूश्च मे प्रसूश्च मे सीरं च मे लयश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ ७ ॥

शं च मे मयश्च मे प्रियं च मेऽनुकामश्च मे कामश्च मे सौमनसश्च मे भगश्च मे द्रविणं च मे भद्रं च मे श्रेयश्च मे वसीयश्च मे यशश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ ८ ॥

ऊर्क् च मे सूनृता च मे पयश्च मे रसश्च मे घृतं च मे मधु च मे सग्धिश्च मे सपीतिश्च मे कृषिश्च मे वृष्टिश्च मे जैत्रं च म औद्भिद्यं च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ ९ ॥

रयिश्च मे रायश्च मे पुष्टं च मे पुष्टिश्च मे विभु च मे प्रभु च मे पूर्णं च मे पूर्णतरं च मे कुयवं च मेऽक्षितं च मेऽन्नं च मेऽक्षुच्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ १० ॥

वित्तं च मे वेद्यं च मे भूतं च मे भविष्यच्च मे सुगं च मे सुपथ्यं च म ऋद्धं च म ऋद्धिश्च मे क्लृप्तं च मे क्लृप्तिश्च मे मतिश्च मे सुमतिश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ ११ ॥

व्रीहयश्च मे यवाश्च मे माषाश्च मे तिलाश्च मे मुद्गाश्च मे खल्वाश्च मे प्रियङ्गवश्च मेऽणवश्च मे श्यामाकाश्च मे नीवाराश्च मे गोधूमाश्च मे मसूराश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ १२ ॥

अश्मा च मे मृत्तिका च मे गिरयश्च मे पर्वताश्च मे सिकताश्च मे वनस्पतयश्च मे हिरण्यं च मेऽयश्च मे श्यामं च मे लोहं च मे सीसं च मे त्रपु च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ १३ ॥

अग्निश्च म आपश्च मे वीरुधश्च म ओषधयश्च मे कृष्टपच्याश्च मेऽकृष्टपच्याश्च मे ग्राम्याश्च मे पशव आरण्याश्च मे वित्तं च मे वित्तिश्च मे भूतं च मे भूतिश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ १४ ॥

वसु च मे वसतिश्च मे कर्म च मे शक्तिश्च मेऽर्थश्च म एमश्च म इत्या च मे गतिश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ १५ ॥

अग्निश्च म इन्द्रश्च मे सोमश्च म इन्द्रश्च मे सविता च म इन्द्रश्च मे सरस्वती च म इन्द्रश्च मे पूषा च म इन्द्रश्च मे बृहस्पतिश्च म इन्द्रश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ १६ ॥

मित्रश्च म इन्द्रश्च मे वरुणश्च म इन्द्रश्च मे धाता च म इन्द्रश्च मे त्वष्टा च म इन्द्रश्च मे मरुतश्च म इन्द्रश्च मे विश्वे च मे देवा इन्द्रश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ १७ ॥

पृथिवी च म इन्द्रश्च मेऽन्तरिक्षं च म इन्द्रश्च मे द्यौश्च म इन्द्रश्च मे समाश्च म इन्द्रश्च मे नक्षत्राणि च म इन्द्रश्च मे दिशश्च म इन्द्रश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ १८ ॥

अꣳशुश्च मे रश्मिश्च मेऽदाभ्यश्च मेऽधिपतिश्च म उपाꣳशुश्च मेऽन्तर्यामश्च म ऐन्द्रवायवश्च मे मैत्रावरुणश्च म आश्विनश्च मे प्रतिप्रस्थानश्च मे शुक्रश्च मे मन्थी च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥१९॥

आग्रयणश्च मे वैश्वदेवश्च मे ध्रुवश्च मे वैश्वानरश्च म ऐन्द्राग्नश्च मे महावैश्वदेवश्च मे मरुत्वतीयाश्च मे निष्केवल्यश्च मे सावित्रश्च मे सारस्वतश्च मे पात्नीवतश्च मे हारियोजनश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ २० ॥

स्रुचश्च मे चमसाश्च मे वायव्यानि च मे द्रोणकलशश्च मे ग्रावाणश्च मेऽधिषवणे च मे पूतभृच्च म आधवनीयश्च मे वेदिश्च मे बर्हिश्च मेऽवभृथश्च मे स्वगाकारश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥२१॥

अग्निश्च मे घर्मश्च मेऽर्कश्च मे सूर्यश्च मे प्राणश्च मेऽश्वमेधश्च मे पृथिवी च मेऽदितिश्च मे दितिश्च मे द्यौश्च मेऽङ्गुलयः शक्वरयो दिशश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ २२ ॥

व्रतं च म ऋतवश्च मे तपश्च मे संवत्सरश्च मेऽहोरात्रे ऊर्वष्ठीवे बृहद्रथन्तरे च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥२३॥

एका च मे तिस्रश्च मे तिस्रश्च मे पञ्च च मे पञ्च च मे सप्त च मे सप्त च मे नव च मे नव च म एकादश च म एकादश च मे त्रयोदश च मे त्रयोदश च मे पञ्चदश च मे पञ्चदश च मे सप्तदश च मे सप्तदश च मे नवदश च मे नवदश च म एकविꣳशतिश्च म एकविꣳशतिश्च मे त्रयोविꣳशतिश्च मे त्रयोविꣳशतिश्च मे पञ्चविꣳशतिश्च मे पञ्चविꣳशतिश्च मे सप्तविꣳशतिश्च मे सप्तविꣳशतिश्च मे नवविꣳशतिश्च मे नवविꣳशतिश्च म एकत्रिꣳशच्च म एकत्रिꣳशच्च मे त्रयस्त्रिꣳशच्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ २४ ॥

चतस्रश्च मेऽष्टौ च मेऽष्टौ च मे द्वादश च मे द्वादश च मे षोडश च मे षोडश च मे विꣳशतिश्च मे विꣳशतिश्च मे चतुर्विꣳशतिश्च मे चतुर्विꣳशतिश्च मेऽष्टाविꣳशतिश्च मेऽष्टाविꣳशतिश्च मे द्वात्रिꣳशच्च मे द्वात्रिꣳशच्च मे षट्त्रिꣳशच्च मे षट्त्रिꣳशच्च मे चत्वारिꣳशच्च मे चत्वारिꣳशच्च मे चतुश्चत्वारिꣳशच्च मे चतुश्चत्वारिꣳशच्च मेऽष्टाचत्वारिꣳशच्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥२५॥

त्र्यविश्च मे त्र्यवी च मे दित्यवाट् च मे दित्यौही च मे पञ्चाविश्च मे पञ्चावी च मे त्रिवत्सश्च मे त्रिवत्सा च मे तुर्यवाट् च मे तुर्यौही च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ २६ ॥

पष्ठवाट् च मे पष्ठौही च म उक्षा च मे वशा च म ऋषभश्च मे वेहच्च मेऽनड्वाँश्च मे धेनुश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ २७ ॥

वाजाय स्वाहा प्रसवाय स्वाहाऽपिजाय स्वाहा क्रतवे स्वाहा वसवे स्वाहाऽहर्पतये स्वाहाऽह्ने मुग्धाय स्वाहा मुग्धाय वैनꣳशिनाय स्वाहा विनꣳशिन आन्त्यायनाय स्वाहाऽऽन्त्याय भौवनाय स्वाहा भुवनस्य पतये स्वाहाऽधिपतये स्वाहा प्रजापतये स्वाहा । इयं ते राण्मित्राय यन्ताऽसि यमन ऊर्जे त्वा वृष्ट्यै त्वा प्रजानां त्वाऽऽधिपत्याय ॥ २८ ॥

आयुर्यज्ञेन कल्पतां प्राणो यज्ञेन कल्पतां चक्षुर्यज्ञेन कल्पताꣳ श्रोत्रं यज्ञेन कल्पतां वाग्यज्ञेन कल्पतां मनो यज्ञेन कल्पतामात्मा यज्ञेन कल्पतां ब्रह्मा यज्ञेन कल्पतां ज्योतिर्यज्ञेन कल्पताꣳ स्वर्यज्ञेन कल्पतां पृष्ठं यज्ञेन कल्पतां यज्ञो यज्ञेन कल्पताम् ।

स्तोमश्च यजुश्च ऋक् च सामं च बृहच्चं रथन्तरं चं।
स्वर्देवा अगन्मामृता अमूम प्रजापतेः प्रजा अमूम वेट् स्वाहा ॥ २९ ॥

।। इति अष्टमोऽध्यायः।।

अथ शान्त्यध्यायः

ऋचं वाचं प्र पद्ये मनो यजुः प्र पद्ये सामं प्राणं प्र पद्ये चक्षुः श्रोत्रं प्र पद्ये।
वागोजः सहौजो मयि प्राणापानौ ॥ १ ॥

यन्मे छिद्रं चक्षुषो हृदयस्य मनसो वातितृण्णं बृहस्पतिर्मे तद्दधातु।
शं नो भवतु भुवनस्य यस्पतिः ॥ २ ॥

भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात् ॥ ३ ॥

कया नश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता ॥ ४ ॥

कस्त्वा सत्यो मदानां मंहिष्ठो मत्सदन्धसः। दृढा चिदारुजे वसु ॥ ५ ॥

अभी षु णः सखीनामविता जरितॄणाम्। शतं भवास्यूतिभिः ॥ ६ ॥

कया त्वं न ऊत्याभि प्र मन्दसे वृषन्। कया स्तोतृभ्य आ भर ॥ ७ ॥

इन्द्रो विश्वस्य राजति। शं नो अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे ॥ ८ ॥

शं नो मित्रः शं वरुणः शं नो भवत्वर्यमा। शं न इन्द्रो बृहस्पतिः शं नो विष्णुरुरुक्रमः ॥ ९ ॥

शं नो वातः पवतां शं नस्तपतु सूर्यः। शं नः कनिक्रदद्देवः पर्जन्यो अभि वर्षतु ॥१० ॥

अहानि शं भवन्तु नः शं रात्रीः प्रति धीयताम्।
शं न इन्द्राग्नी भवतामवोभिः शं न इन्द्रावरुणा रातहव्या।
शं न इन्द्रापूषणा वाजसातौ शमिन्द्रासोमा सुविताय शं योः ॥ ११ ॥

शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभि स्रवन्तु नः ॥ १२ ॥

स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म सप्रथाः ॥ १३ ॥

आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे ॥ १४ ॥

यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः ॥ १५ ॥

तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः ॥ १६ ॥

द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः।
वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वं
शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ॥ १७ ॥

दृते दृंह मा मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्।
मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे। मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे ॥ १८ ॥

दृते दृᳪंहं मा। ज्योक्ते सन्दृशि जीव्यासं ज्योक्ते सन्दृशि जीव्यासम् ॥ १९ ॥

नमस्ते हरसे शोचिषे नमस्ते अस्त्वर्चिषे।
अन्याँस्ते अस्मत्तपन्तु हेतयः पावको अस्मभ्यᳪं शिवो भव ॥ २० ॥

नमस्ते अस्तु विद्युते नमस्ते स्तनयित्नवे। नमस्ते भगवन्नस्तु यतः स्वः समीहसे ॥२१ ॥

यतो-यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु। शं नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः ॥ २२ ॥

सुमित्रिया न आप ओषधयः सन्तु दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः॥ २३॥

तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतᳪं शृणुयाम
शरदः शतं प्र ब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात् ॥ २४ ॥

॥ इति शान्त्यध्यायः॥

अथ स्वस्तिप्रार्थनामन्त्राः

स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥ १९ ॥

पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयो धाः।
पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम् ॥ ३६ ॥

विष्णो रराटमसि विष्णोः श्नप्त्रे स्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि।
वैष्णवमसि विष्णवे त्वा ॥ २१ ॥

अग्निर्देवता वातो देवता सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता वसवो देवता
रुद्रा देवता ऽऽदित्या देवता मरुतो देवता विश्वे देवा देवता बृहस्पतिर्देवते—
न्द्रो देवता वरुणो देवता ॥ २० ॥

ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः।। भवे भवे नातिभवे भवस्व मां भवोद्भ्वाय नमः।। वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः।। अघोरेभ्योऽथघोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः।। सर्वेभ्यः सर्व शर्वेभ्यो नमस्ते ऽअस्तु रुद्ररूपेभ्यः।। तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि।। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्।। ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानाम्।। ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे ऽअस्तु सदा शिवोऽम्।।

शिवो नामासि स्वधितिस्ते पिता नमस्ते अस्तु मा मा हिᳪंसीः।
नि वर्त्तयाम्यायुषेऽन्नाद्याय प्रजननाय रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्याय ॥६३॥

विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव। यद्भद्रं तन्न आ सुव ॥ ३ ॥

द्यौः शान्तिरन्तरिक्षᳪं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः।
वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वᳪं
शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ॥ १७ ॥

स्वस्त्ययन (स्वर सहित)

आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासो अपरीतास उद्भिदः।
देवा नो यथा सदमिद् वृधे असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवे-दिवे ॥

देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवानाᳬ रातिरभि नो निवर्तताम्।
देवानाᳬ सख्यमुपसेदिमा वयं देवा न आयुः प्रतिरन्तु जीवसे ॥

तान्पूर्वया निविदा हूमहे वयं भगं मित्रमदितिं दक्षमस्रिधम्।
अर्यमणं वरुणᳬ सोममश्विना सरस्वती नः सुभगा मयस्करत् ॥

तन्नो वातो मयोभु वातु भेषजं तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौः।
तद् ग्रावाणः सोमसुतो मयोभुवस्तदश्विना शृणुतं धिष्ण्या युवम्।

तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम्।
पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥

स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥ १९

पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभंयावानो विदथेषु जग्मयः।
अग्निजिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वे नो देवा अवसागमन्निह ॥

भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाᳬसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ॥ २१ ॥

शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम्।
पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः ॥

अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः।
विश्वे देवा अदितिः पञ्च जना अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम् ॥

द्यौः शान्तिरन्तरिक्षᳬ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः।
वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वᳬ
शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ॥ १७ ॥

अग्निसूक्तम्

(१)

९ मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । अग्निः । गायत्री ।

॥ॐ॥ अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् । होतारं रत्नधातमम् १
अग्निः पूर्वेभिर्ऋषिभि रीड्यो नूतनैरुत । स देवाँ एह वक्षति २
अग्निना रयिमश्नवत् पोषमेव दिवेदिवे । यशसं वीरवत्तमम् ३
अग्ने यं यज्ञमध्वरं विश्वतः परिभूरसि । स इद् देवेषु गच्छति ४
अग्निर्होता कविक्रतुः सत्यश्चित्रश्रवस्तमः । देवो देवेभिरा गमत् ५

यदङ्ग दाशुषे त्व मग्ने भद्रं करिष्यसि । तवेत् तत् सत्यमङ्गिरः ६
उप त्वाग्ने दिवेदिवे दोषावस्तर्धिया वयम् । नमो भरन्त एमसि ७
राजन्तमध्वराणां गोपामृतस्य दीदिविम् । वर्धमानं स्वे दमे ८
स नः पितेव सूनवे ऽग्ने सूपायनो भव । सचस्वा नः स्वस्तये ९

सवितासूक्तम्

११ हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः । १ (पादानां क्रमेण) अग्निः, मित्रावरुणौ, रात्रिः, सविता च ।
२-११ सविता । त्रिष्टुप्, १,९ जगती, ।

ह्वयाम्यग्निं प्रथमं स्वस्तये ह्वयामि मित्रावरुणाविहावसे ।
ह्वयामि रात्रीं जगतो निवेशनीं ह्वयामि देवं सवितारमूतये १
आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च ।
हिरण्ययेन सविता रथेना ऽऽ देवो याति भुवनानि पश्यन् २
याति देवः प्रवता यात्युद्वता याति शुभ्राभ्यां यजतो हरिभ्याम् ।
आ देवो याति सविता परावतो ऽप विश्वा दुरिता बाधमानः ३
अभीवृतं कृशनैर्विश्वरूपं हिरण्यशम्यं यजतो बृहन्तम् ।
आस्थाद् रथं सविता चित्रभानुः कृष्णा रजांसि तविषीं दधानः ४
वि जनाञ्छ्यावाः शितिपादो अख्यन् रथं हिरण्यप्रउगं वहन्तः ।
शश्वद् विशः सवितुर्दैव्यस्यो पस्थे विश्वा भुवनानि तस्थुः ५
तिस्रो द्यावः सवितुर्द्वा उपस्थाँ एका यमस्य भुवने विराषाट् ।
आणिं न रथ्यममृताधि तस्थु रिह ब्रवीतु य उ तच्चिकेतत् ६ [६]

वि सुपर्णो अन्तरिक्षाण्यख्यद् गभीरवेपा असुरः सुनीथः ।
क्वेदानीं सूर्यः कश्चिकेत कतमां द्यां रश्मिरस्या ततान ७
अष्टौ व्यख्यत् ककुभः पृथिव्यास् त्री धन्व योजना सप्त सिन्धून् ।
हिरण्याक्षः सविता देव आगाद् दधद्रत्ना दाशुषे वार्याणि ८ (४१.

हिरण्यपाणिः सविता विचर्षणि रुभे द्यावापृथिवी अन्तरीयते ।
अपामीवां बाधते वेति सूर्य मभि कृष्णेन रजसा द्यामृणोति.
हिरण्यहस्तो असुरः सुनीथः सुमृळीकः स्ववाँ यात्वर्वाङ् ।
अपसेधन् रक्षसो यातुधाना नस्थाद् देवः प्रतिदोषं गृणानः
ये ते पन्थाः सवितः पूर्व्यासो ऽरेणवः सुकृता अन्तरिक्षे ।
तेभिर्नो अद्य पथिभिः सुगेभी रक्षा च नो अधि च ब्रूहि देव

विष्णुसूक्तम्

६ दीर्घतमा औचथ्यः। विष्णुः। त्रिष्टुप्।

विष्णोर्नु कं वीर्याणि प्र वोचं यः पार्थिवानि विममे रजांसि।
यो अस्कभायदुत्तरं सधस्थं विचक्रमाणस्त्रेधोरुगायः

प्र तद् विष्णुः स्तवते वीर्येण मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः।
यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेष्वधिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा

प्र विष्णवे शूषमेतु मन्म गिरिक्षित उरुगायाय वृष्णे।
य इदं दीर्घं प्रयतं सधस्थमेको विममे त्रिभिरित् पदेभिः

यस्य त्री पूर्णा मधुना पदान्यक्षीयमाणा स्वधया मदन्ति।
य उ त्रिधातु पृथिवीमुत द्यामेको दाधार भुवनानि विश्वा

तदस्य प्रियमभि पाथो अश्यां नरो यत्र देवयवो मदन्ति।
उरुक्रमस्य स हि बन्धुरित्था विष्णोः पदे परमे मध्व उत्सः

ता वां वास्तून्युश्मसि गमध्यै यत्र गावो भूरिशृङ्गा अयासः।
अत्राह तदुरुगायस्य वृष्णः परमं पदमव भाति भूरि

इन्द्रसूक्तम्

१५ गृत्समद (आङ्गिरसः शौनहोत्रः पश्चाद्) भार्गवः शौनकः। इन्द्रः। त्रिष्टुप्।

यो जात एव प्रथमो मनस्वान् देवो देवान् क्रतुना पर्यभूषत्।
यस्य शुष्माद् रोदसी अभ्यसेतां नृम्णस्य मह्ना स जनास इन्द्रः १

यः पृथिवीं व्यथमानामदृंहद् यः पर्वतान् प्रकुपिताँ अरम्णात्।
यो अन्तरिक्षं विममे वरीयो यो द्यामस्तभ्नात् स जनास इन्द्रः २

यो हत्वाहिमरिणात् सप्त सिन्धून् यो गा उदाजदपधा वलस्य।
यो अश्मनोरन्तरग्निं जजान संवृक् समत्सु स जनास इन्द्रः

येनेमा विश्वा च्यवना कृतानि यो दासं वर्णमधरं गुहाकः।
श्वघ्नीव यो जिगीवाँ लक्षमाददर्यः पुष्टानि स जनास इन्द्रः

यं स्मा पृच्छन्ति कुह सेति घोरमुतेमाहुर्नैषो अस्तीत्येनम्।
सो अर्यः पुष्टीर्विज इवा मिनाति श्रदस्मै धत्त स जनास इन्द्रः

यो रध्रस्य चोदिता यः कृशस्य यो ब्रह्मणो नाधमानस्य कीरेः।
युक्तग्राव्णो योऽविता सुशिप्रः सुतसोमस्य स जनास इन्द्रः

यस्याश्वासः प्रदिशि यस्य गावो यस्य ग्रामा यस्य विश्वे रथासः।
यः सूर्यं य उषसं जजान यो अपां नेता स जनास इन्द्रः

यं क्रन्दसी संयती विह्वयेते परेऽवर उभया अमित्राः।
समानं चिद् रथमातस्थिवांसा नाना हवेते स जनास इन्द्रः

यस्मान्न ऋते विजयन्ते जनासो यं युध्यमाना अवसे हवन्ते।

यो विश्वस्य प्रतिमानं बभूव यो अच्युतच्युत् स जनास इन्द्रः
यः शश्वतो मह्येनो दधाना नमन्यमानाञ्छर्वा जघान ।
यः शर्धते नानुददाति शृध्यां यो दस्योर्हन्ता स जनास इन्द्रः

यः शम्बरं पर्वतेषु क्षियन्तं चत्वारिंश्यां शरद्यन्वविन्दत् ।
ओजायमानं यो अहिं जघान दानुं शयानं स जनास इन्द्रः
यः सप्तरश्मिर्वृषभस्तुविष्मा नवासृजत् सर्तवे सप्त सिन्धून् ।
यो रौहिणमस्फुरद् वज्रबाहु र्द्यामारोहन्तं स जनास इन्द्रः

द्यावा चिदस्मै पृथिवी नमेते शुष्माच्चिदस्य पर्वता भयन्ते ।
यः सोमपा निचितो वज्रबाहु र्यो वज्रहस्तः स जनास इन्द्रः

यः सुन्वन्तमवति यः पचन्तं यः शंसन्तं यः शशमानमूती ।
यस्य ब्रह्म वर्धनं यस्य सोमो यस्येदं राधः स जनास इन्द्रः
यः सुन्वते पचते दुध्र आ चिद् वाजं दर्दर्षि स किलासि सत्यः ।
वयं त इन्द्र विश्वह प्रियासः सुवीरासो विदथमा वदेम

उषस्सूक्तम्

७ गाथिनो विश्वामित्रः । उषाः । त्रिष्टुप् ।

उषो वाजेन वाजिनि प्रचेताः स्तोमं जुषस्व गृणतो मघोनि ।
पुराणी देवि युवतिः पुरंधि रनु व्रतं चरसि विश्ववारे
उषो देव्यमर्त्या वि भाहि चन्द्ररथा सूनृता ईरयन्ती ।
आ त्वा वहन्तु सुयमासो अश्वा हिरण्यवर्णां पृथुपाजसो ये
उषः प्रतीची भुवनानि विश्वो र्ध्वा तिष्ठस्यमृतस्य केतुः ।
समानमर्थं चरणीयमाना चक्रमिव नव्यस्या ववृत्स्व
अव स्यूमेव चिन्वती मघो न्युषा याति स्वसरस्य पत्नी ।
स्वर्जनन्ती सुभगा सुदंसा आन्ताद् दिवः पप्रथ आ पृथिव्याः
अच्छा वो देवीमुषसं विभातीं प्र वो भरध्वं नमसा सुवृक्तिम् ।

ऊर्ध्वं मधुधा दिवि पाजो अश्रेत् प्र रोचना रुरुचे रण्वसंदृक्
ऋतावरी दिवो अर्कैरबोध्या रेवती रोदसी चित्रमस्थात् ।
आयतीमग्न उषसं विभातीं वाममेषि द्रविणं भिक्षमाणः
ऋतस्य बुध्न उषसामिषण्यन् वृषा मही रोदसी आ विवेश ।
मही मित्रस्य वरुणस्य माया चन्द्रेव भानुं वि दधे पुरुत्रा

वाक्सूक्तम्

८ वागाम्भृणी । आत्मा । त्रिष्टुप्, २ जगती ।

अहं रुद्रेभिर्वसुभिश्चराम्यहमादित्यैरुत विश्वदेवैः ।
अहं मित्रावरुणोभा बिभर्म्यहमिन्द्राग्नी अहमश्विनोभा
अहं सोममाहनसं बिभर्म्यहं त्वष्टारमुत पूषणं भगम् ।
अहं दधामि द्रविणं हविष्मते सुप्राव्ये यजमानाय सुन्वते

अहं राष्ट्री संगमनी वसूनां चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम् ।
तां मा देवा व्यदधुः पुरुत्रा भूरिस्थात्रां भूर्यावेशयन्तीम्
मया सो अन्नमत्ति यो विपश्यति यः प्राणिति य ईं शृणोत्युक्तम् ।
अमन्तवो मां त उप क्षियन्ति श्रुधि श्रुत श्रद्धिवं ते वदामि
अहमेव स्वयमिदं वदामि जुष्टं देवेभिरुत मानुषेभिः ।
यं कामये तंतमुग्रं कृणोमि तं ब्रह्माणं तमृषिं तं सुमेधाम्

अहं रुद्राय धनुरा तनोमि ब्रह्मद्विषे शरवे हन्तवा उं ।
अहं जनाय समदं कृणोम्यहं द्यावापृथिवी आ विवेश
अहं सुवे पितरमस्य मूर्धन् मम योनिरप्स्वन्तः समुद्रे ।
ततो वि तिष्ठे भुवनानु विश्वोतामूं द्यां वर्ष्मणोप स्पृशामि
अहमेव वात इव प्र वाम्यारभमाणा भुवनानि विश्वा ।
परो दिवा पर एना पृथिव्यैतावती महिना सं बभूव

श्रीसूक्तम्

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्त्रजाम्। चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह।।1।। तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वँ पुरुषानहम्।।2।। अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रबोधिनीम्। श्रियं देवीमुपह्वये। श्रीर्मा देवी जुषताम्।।3।। कांसेऽस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्। पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम्।।4।। चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्। तां पद्मनेमीं शरणमहं प्रपद्येऽलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणोमि।।5।। आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः। तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः।।6।। उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह। प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे।।7।। क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्। अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात् ।।8।। गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्।।9।। मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि। पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः।।10।। कर्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भ्रम कर्दम। श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्।।11।। आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे। निचदेवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले।।12।। आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह।।13।। आर्द्रां यः करणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्। सूर्यां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह।।14।। तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं प्रभूतिं गावो दास्योऽश्वान्विन्देयं पुरुषानहम्।।15।। यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्। श्रियः पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत्।।16।। इति श्रीसूक्तम्।

लक्ष्मी सूक्त-पद्मानने पद्मऊरू पद्माक्षि पद्मसम्भवे। तन्मे भजसि पद्माक्षि येन सौख्यं लभाम्यहम्।।17।। अश्वदायी गोदायी धनदायी महाधने। धनं मे जुषतां देवी सर्वकामांश्च देहि मे।।18।। पुत्रपौत्रधनं धान्यं हस्त्यश्वादिगवेरथम्। प्रजानां भवती माता आयुष्मन्तं करोतु मे।।19।। धनमग्निर्धनं वायुर्धनं सूर्यो धनं वसुः। धनमिन्द्रो बृहस्पतिर्वरुणं धनमश्विना।।20।। वैनतेय सोमं पिब सोमं पिबतु वृत्रहा। सोमं धनस्य सोमिनो मह्यं ददातु सोमिनः।।21।। न क्रोधो न च मात्सर्यं न लोभो नाशुभा मतिः। भवन्ति कृत पुण्यानां भक्तानां श्रीसूक्तं जपेत्।।22।। सरसिजनिलये सरोजहस्ते धवलतरांशुकगन्धमाल्यशोभे। भगवति हरिबल्लभे मनोज्ञं

त्रिभुवनभूतिकरी प्रसीद मह्यम्।।23।। विष्णुपत्नीं क्षमां देवीं माधवीं माधवाप्रियाम्। विष्णोः प्रियसखीं देवीं नमाम्यच्युतवल्लभाम्।।24।। महालक्ष्मीं च विद्महे विष्णुपत्नीं च धीमहि तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात्।।25।। पद्मानने पद्मिनि पद्मपत्रे पद्मप्रिये पद्मदलायताक्षि। विश्वप्रिये विश्वमनोनुकूले त्वत्पादपद्मं हृदि सन्निधत्स्व।।26।। आनन्दः कर्दमः श्रीदश्चिक्लीत इव विश्रुताः ऋषयः श्रियः पुत्राश्च श्रीर्देवीं देवता श्रियः।।27।। श्रीर्वर्चस्वमायुष्मारोग्यमावि-धात्पवमानं महीयते। धनं धान्यं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः।।28।। ऋणरोगादिदारिद्र्यं पापक्षुदपमृत्यवः। भयशोकमनस्तापो नश्यन्तु मम सर्वदा।।29।। इति श्रीलक्ष्मी सूक्तम्।

गणपत्युपनिषत्

ॐ भद्रं कर्णेभिरिति, स्वस्ति न इति, सह नाववत्विति शान्तिपाठः।। हरिः ॐ।। ॐ नमस्ते गणपतये। त्वमेव प्रत्यक्षं तत्त्वमसि। त्वमेव केवलं कर्तासि। त्वमेव केवलं धर्तासि। त्वमेव केवलं हर्तासि। त्वमेव केवलं सर्वं खल्विदं ब्रह्मासि। त्वं साक्षादात्मासि नित्यम् ।।1।। ऋतं वच्मि। सत्यं वच्मि।। 2।। अव त्वं माम्। अव वक्तारम्। अव श्रोतारम्। अव दातारम्। अव धातारम्। अवानूचानमव शिष्यम्। अव पश्चात्तात्। अव पुरस्तात्। अवोत्तरात्तात्। अव दक्षिणात्तात्। अव चोर्ध्वात्तात्। अवाधरात्तात्। सर्वतो मा पाहि पाहि समान्तात्।।3।। त्वं वाङ्गमयस्त्वं चिन्मयः। त्वमानन्दमयस्त्वं ब्रह्ममयः। त्वं सच्चिदानन्दाद्वितीयोऽसि। त्वं प्रत्यक्षं ब्रह्मासि। त्वं ज्ञानमयो विज्ञानमयोऽसि।। 4।। सर्वं जगदिदं त्वत्तो जायते। सर्वं जगदिदं त्वत्तस्तिष्ठति। सर्वं जगदिदं त्वयिलयमेष्यति सर्वं जगदिदं त्वयि प्रत्येति। त्वं भूमिरापोऽनलोऽनिलो नभः। त्वं चत्वारि वाक्यदानि।। 5।। त्वं गुणत्रयातीतः। त्वं देहत्रयातीतः। त्वं कालत्रयातीतः। त्वं मूलाधारस्थितोऽसि नित्यम्। त्वं शक्तित्रयात्मकः। त्वां योगिनो ध्यायन्ति नित्यम्। त्वं ब्रह्मा त्वं विष्णुस्त्वं रुद्रस्त्वमिन्द्रस्त्वमग्निस्त्वं वायुस्त्वं सूर्यस्त्वं चन्द्रमास्त्वं ब्रह्मभूर्भुवः स्वरोम्।। 6।। गणादिं पूर्वमूच्चार्य वर्णादिं तदनन्तरम्। अनुस्वारः परतरः। अर्धेन्दुलसितम्। तारेण रुद्धम्। एतत्तव मनुस्वरूपम्। गकारः पूर्वरूपम्। अकारो मध्यमरूपम्। अनुस्वारश्चान्त्यरूपम्। बिन्दुरुत्तररूपम्। नादः संधानम्। संहिता सन्धिः। सैषा गणेशविद्या। गणक ऋषिः। निचृद्गायत्री छन्दः। गणपतिदेवता। ॐ ॰ गणपते नमः (इति मन्त्र) ।।7।। एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो दन्ती प्रचोदयात्।।8।।

एकदन्तं चतुर्हस्तं पाशमङ्कुशधारिणम्।
अभयं च वरदं हस्तैर्बिभ्राणंमूषकध्वजम्।

रक्तं लम्बोदरं शूर्पकर्णकं रक्तवाससम्।।
रक्तगन्धानुलिप्ताङ्गं रक्तपुष्पैः सुपूजितम्।
भक्तानुकम्पिनं देवं जगत्कारणमच्युतम्।।
आविर्भूतं च सृष्ट्यादौ प्रकृतेः पुरुषात्परम्।।
एवं ध्यायति यो नित्यं स योगी योगिनां वरः।। 9।।

नमो व्रातपतये नमो गणपतये नमः प्रमथपतये नमस्तेऽस्तु लम्बोदरायैकदन्ताय विघ्ननाशिने शिवसुताय श्रीवरदमूर्तये नमः।।10।। एतदथर्वशीरो योऽधीते स ब्रह्मभूयाय कल्पते। स सर्वतः सुखमेधते। स सर्वविघ्नैर्न बाध्यते।। स पञ्चमहापापात्प्रमुच्यते। सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति। प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति। सायंप्रातः प्रयुञ्जानो अपापो भवति। सर्वत्रधीयानोऽपविघ्नो भवति। धर्मार्थकाममोक्षं च विन्दति। इदमथर्वशीर्षमशिष्याय नदेयम्। यो यदि मोहाद्दास्यति। स पापीयान् भवति। सहस्त्रावर्तनात् यं यं काममधीते तं तमनेन साधयेत्।।11।। अनेन गणपतिमभिषिञ्चति स वाग्मी भवति।। चतुर्थ्यामनश्नन् जपति स विद्यावान्भवति।। इत्यथवर्णवाक्यम्। ब्रह्माद्याचरण विद्यात्। न बिभेति कदाचनेति।।12।। यो दूर्वाङ्कुरैर्यजति स वैश्रवणोपमो भवति। यो लाजैर्यजति स यशोवान्भवति। स मेधावान्भवति। यो मोदकसहस्त्रेण यजति स वाञ्छितफलमवाप्नोति। यः साज्यसमिद्भिर्यजति स सर्वं लभते। अष्टौ ब्राह्मणान् सम्यग्ग्राहयित्वा सूर्यवर्चस्वी भवति। सूर्यग्रहे महानद्यां प्रतिमान्निधौ वा जप्त्वा सिद्धमन्त्रो भवति। महाविघ्नात्प्रमुच्यते। महादोषात्प्रमुच्यते। महापापात्प्रमुच्यते। सर्वविद्भवति। य एवं वेद। इत्युपनिषत्।।13।। सह नाववतु। सह नौ भुनक्तु। सह वीर्यं करवावहै।। तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषावहै। भद्रं कणेभिरिति। स्वस्तिन इन्द्रो. इति शान्ति पाठः।। हरिःॐ।। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।

।।इति गणेशाथर्वशीर्षगणपत्युपनिषत् समाप्तम्।।

नारायणोपनिषत्

हरि ॐ ।। ॐ अथपुरुषो ह वै नारायणोऽकामयत प्रजाः सृजेयेति। नारायणात्प्राणो जायते मनः सर्वेन्द्रयाणि च। खं वायुर्ज्योतिरापः पृथिवी विश्वस्य धारिणी। नारायणाद् ब्रह्मा जायते। नारायणाद्रुदो जायते। नारायणादिन्द्रो जायते। नारायणत्प्रजापतिः प्रजायते। नारायणाद् द्वादशादित्या रुद्रा वसवः सर्वाणि छन्दांसि नारायणादेव समुत्पद्यन्ते। नारायणात्प्रवर्तन्ते।

नारायणे प्रलीयन्ते। एतदृग्वेदशिरोऽधीते।।1।। अथ नित्यो नारायणः। ब्रह्मा नारायणः। शिवश्च नारायणः शक्रश्च नारायणः। कालश्च नारायणः। दिशश्च नारायणः। विदिशश्च नारायणः। ऊर्ध्वं च नारायणः। अधश्च नारायणः। अन्तर्बहिश्च नारायणः। नारायण एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्। निष्कलङ्को निरञ्जनो निर्विकल्पो निराख्यातः शुद्धो देव एको नारायणो न द्वितीयोऽस्ति कश्चित्। य एवं वेद स विष्णुरेव भवति स विष्णुरेव भवति। एतद्यजुर्वेदशिरोऽधीते ।।2।। ओमित्यग्रे व्याहरेत्। नम इति पश्चात्। नारायणायेत्मुपरिष्टात् उनोमित्येकाक्षरं नम इति द्वे अक्षरे। नारायणायेति पञ्चाक्षराणि। एतद्वै नारायणस्याष्टाक्षरं पदम्। यो ह वै नारायणस्याष्टाक्षरं पदमध्येति। अनपब्रुवः सर्वमायुरेति। विन्दते प्राजापत्यं रायस्पोषं गौपत्यं ततोऽमृतत्वमश्नुते। ततोऽमृतत्वमश्नुत इति। एतत्सामवेदशिरोऽधीते।।3।।

प्रत्यगानन्दं ब्रह्मपुरुषं प्रणवस्वरूपम्। अकार उकारो मकार इति। ता अनेकधा समभवत्तदेतदोमिति। यमुक्त्वा मुच्यते योगी जन्मसंसारबन्धनात्। ॐ नमो नारायणायेति मन्त्रोपासको वैकुण्ठभुवनं गमिष्यति। तदिदं पुण्डरीकं विज्ञानघनं तस्मात्तडिदाभमात्रम्। ब्रह्मण्यो देवकीपुत्रो ब्रह्मण्यो मधुसूदनः। ब्रह्मण्यः पुण्डरीकाक्षो ब्रह्मण्यो विष्णुरच्युत इति। सर्वभूतस्थमेकं वै नारायणं कारणपुरुषकारणं परं ब्रह्मौम्। एतदथर्वशिरोऽधीते। प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति। सायमधीयाने दिवसकृतं पाप नाशयति। सायं प्रातरधीयानः पापोऽपापो भवति। मध्यन्दिनमादित्याभिमुखोऽधीयानः पञ्चमहापातकोपपातकात्प्रमुच्यते। सर्ववेदपारायणपुण्यं लभते। नारायणसायुज्यमवाप्नोति । श्रीमन्नारायणसायुज्यमवाप्नोति य एवं वेद।।5।।

।। ॐ सह नाववत्विति शान्तिः।। हरिः ॐ।। ।। इति नारायणोपनिषत्समाप्ता ।।

गायत्र्यथर्वशीर्षम्

श्री गणेशाय नमः ।। हरि ॐ ।। भद्रं कर्णेभिरिति शान्तिपाठः।

हरिॐ नमस्कृत्य भगवान् याज्ञवल्क्यः स्वयं परिपृच्छति त्वं ब्रूहि भगवन् गायत्र्या उत्पत्तिं श्रोतुमिच्छामि।।1।।

ब्रह्मोवाचः।। प्रणवेन व्याहृतयः प्रवर्तन्ते, तमसस्तु परं ज्योतिष्कः पुरुषः स्वयम्। भूर्विष्णूरिति ह ताः स्वाङ्गुल्या मथेत्।।2।। मथ्यमानात्फेनो भवति, फेनाद्बुदबुदो भवति बुद्बुदादण्डं भवति, अण्डवानात्मा भवति, आत्मन आकाशा भवति, आकाशाद्वायुर्भवति, वायोरग्निर्भवति, अग्नेरोङ्कारो भवति,

ॐकाराव्याहृतिर्भवति, व्याहृत्या गायत्री भवति, गायत्र्याः सावित्री भवति, सावित्र्याः सरस्वती भवति, तस्माल्लोकाः प्रवर्तते, चत्वारो वेदाः साङ्गाः सोपनिषदः सेतिहासास्ते सर्वे गायत्र्याः प्रवर्तन्ते यथाऽग्निर्देवानां ब्राह्मणो मनुष्याणं मेरुः शिखरिणां गङ्गा नदीनां वसन्त ऋतूनां ब्रह्मा प्रजापतीनामेवासौ मुख्यो गायत्र्या गायत्री छन्दो भवति।।3। किं भूः किं भुवः किं स्वः किं महः किं जनः किं तपः किं सत्यं किं तत् किं सवितुः किं वरेण्यं कि भर्गः किं देवस्य किं धीमहि किं धियः किं यः किं नः किं प्रचोदयात्।।4।। भूरिति भूर्लोक भुव इत्यन्तरिक्षलोकः। स्वरिति स्वर्लोको मह इति महर्लोको जन इति जनो लोकस्तप इति तपोलोकः सत्यमिति सत्यलोकः। भूर्भुवःस्वरोमिति त्रैलोक्यम्।।5।। तदसौ तेजो यत्तेजसोऽग्निर्देवता सवितुरित्यादित्यस्य वरेण्यमित्यन्नम्। अन्नमेव प्रजापतिर्भर्ग इत्यापः। आपो वै भर्ग एतावत्सर्वा देवता देवस्येन्द्रो वै देवो यद्दिवं तदिंद्रस्तस्मात्सर्वकृत् पुरुषो नाम विष्णुः।।6।। धीमहि किमध्यात्मकं तत्परमं पदमित्यध्यात्मं यो न इति पृथिवी वै यो नः प्रचोदयात् काम इमाँल्लोकान् प्रच्चावयन् यो नृशंस्योऽस्तोष्यस्तत्परमो धर्म इत्येषा गायत्री किंगोत्रा कत्यक्षरा कतिपदा कतिकुक्षिः कतिशीर्षा च।।7।। सांख्यायनसगोत्रा गायत्री चतुर्विंशत्यक्षरा त्रिपदा षट्कुक्षिः सावित्री कक्षास्त्रयः पादा भवन्ति।।8।। काऽस्याः कुक्षि कानि पंच शीर्षाणि। ऋग्वेदोऽस्याः प्रथमः पादो भवति, यजुर्वेदो द्वितीयः सामवेदस्तृतीयः पूर्वा दिक् प्रथमा कुक्षिर्भवति, दक्षिणा द्वितीया, पश्चिमा तृतीया, उदीची चतुर्था, ऊर्ध्वा पञ्चमी अधरा, षष्ठी कुक्षिः। व्याकरणमस्याः प्रथमं शीर्षं भवति, शिक्षा द्वितीयम् कल्पस्तृतीयम्, निरुक्तञ्चतुर्थं, ज्योतिषामयनं पञ्चमम्।।9।। किं लक्षणं किमु चेष्टितं किमुदाहृतं किमक्षरं दैवत्यम्।।10।। लक्षणं मीमांसा अथर्ववेदो विचेष्टितम्। छन्दोविधिरित्युदाहृतम्।11।। को वर्णः कः स्वरः। श्वेतो वर्णः षट्स्वराणि इमान्यक्षराणि दैवतानि भवन्ति। प्रातः पूर्वा भवति, गायत्री मध्यमा, सावित्री पश्चिमा, सन्ध्या सरस्वती।।12।। प्रातः सन्ध्या रक्ता, रक्तपद्मासनस्था रक्ताम्बरधरा रक्तवर्णा रक्तगन्धानुलेपना चतुर्मुखा अष्टभुजा द्विनेत्रा दण्डाक्षमालाकमण्डलुस्त्रुवधारिणी सर्वाभरणभूपिता कौमारी ब्राह्मी हंसवाहिनी ऋग्वेदसंहिता ब्रह्मदैवत्या त्रिपदा गायत्री षट्कुक्षिः पञ्चशीर्षा अग्निमुखा रुद्रशिवविष्णुहृदया ब्रह्मकवचा सांख्ययनसगोत्रा भूर्लोकव्यापिनी अग्निस्तत्त्वम्, उदात्तानुदात्तस्वरितस्वरमकार आत्मज्ञाने विनियोगः। इत्येषा गायत्री ।।13।। मध्याह्नसन्ध्या श्वेता श्वेतपद्मासनस्था श्वेताम्बरधरा श्वेतगन्धानुलेपना पञ्चमुखी दशभुजा त्रिनेत्रा शूलाक्षमाला कमण्डलुकपाल-

धारिणी सर्वाभरणभूषिता सावित्री युवती माहेश्वरी वृषमवाहिनी यजुर्वेदसंहिता रुद्रदैवत्या, त्रिपदा सावित्री षट्कुक्षि पञ्चशीर्षा अग्निमुखा रुद्रशिखा ब्रह्मकवचा भारद्वाजसगोत्रा भुवर्लोकव्यापिनी वायुस्तत्त्वम्, उदात्तानुदात्तस्वरितस्वरमकारः श्वेतवर्ण आत्मज्ञाने विनियोगः। इत्येषा सावित्री।।14।। सायंसन्ध्य कृष्णा कृष्णपद्मासनस्था कृष्णाम्बरधरा कृष्णवर्णा कृष्णगन्धानुलेपना कृष्णमाल्याम्बरधरा एकमुखी चतुर्भुजा द्विनेत्रा शङ्क्षचक्रगदापद्म-धारिणी सर्वाभरणभूषिता सरस्वती वृद्धा वैष्णवी गरुडवाहिनी सामवेदसंहिता विष्णुदैवत्या त्रिपदा षट्कुक्षिः पञ्चशीर्षा अग्निमुखा विष्णुहृदया रुद्रशिखा ब्रह्मकवचा काश्यपसगोत्रा स्वर्लोकव्यापिनी सूर्यस्तत्त्वमुदात्तानुदात्त-स्वरितमकारः कृष्णवर्णो मोक्षज्ञाने विनियोगः। इत्येषा सरस्वती।।15।। रक्ता गायत्री श्वेता सावित्री कृष्णवर्णा सरस्वती। प्रणवो नित्ययुक्तश्च व्याहृतीषु च सप्तसु।।16।। सर्वेषामेव पापानां सङ्करे समुपस्थिते। दश शतं समभ्यर्च्य गायत्री पावनी महत्।।17।। प्रह्लादोऽत्रिर्वसिष्ठश्च शुकः कण्वः पराशरः। विश्वामित्रे महातेजाः कपिलः शौ (सौ) तको महान्।।18।। याज्ञवल्क्यो भरद्वाजो जमदग्निस्तपो निधिः। गौतमो मुद्गलः श्रेष्ठो वेदव्यासश्च लोमशः।।19।। अगस्त्यः कौशिको वत्सः पुलस्त्यो माण्डुकस्तथा। दुर्वासास्तपसा श्रेष्ठो नारदः कश्यपस्तथा।। 20।। उक्तात्युक्ता तथा मध्या प्रतिष्ठान्यासु पूर्विका। गायत्र्युष्णिगनुष्टुप् च बृहती पङ्क्तिरेव च।। 21।। त्रिष्टुप् च जगती चैव तथातिजगती मता। शक्करी सातिपूर्वा यादष्ट्यत्यष्टी तथैव च। धृतिश्चातिधृतिश्चैव प्रकृतिः कृतिकाकृतिः।।22।। विकृतिः संकृतिश्चैव तथातिकृतिरुत्कृतिः। इत्येतांश्छन्दसां संज्ञाः क्रमशो वच्मि सांप्रतम्।। 23।। भूरिति छन्दो भुव इति छन्दःस्वरितो छन्दो भूभुर्वःस्वरोमिति देवी गायत्री इत्येतानि छन्दांसि प्रथममाग्नेयं द्वितीयं प्रजापत्यं तृतीयं सौम्यं चतुर्थमैशानं पञ्चममादित्यं षष्ठं बार्हस्पत्यं सप्तमं पितृदैवतव्यमष्टमं भगदैवत्यं नवममार्यमं दशमं सावित्रमेकादशं त्वाष्ट्रं द्वादशं पौष्णं त्रयोदशमैन्द्राग्नं चतुर्दशं वायव्यं पञ्चदशं वामदैवत्यं षोडशं मैत्रावरुणं सप्तदशमाङ्गिरसमष्टादशं वैश्वदेव्यमेकोनविंशं वैष्णवं विंशं वासवमेकविंशं रौद्रं द्वाविंशमाश्विनं त्रयोविंशं ब्राह्मं चतुर्विंश सावित्रम्।।24।। दीर्घान्स्वरेण संयुक्तान् बिन्दुनादसमन्वितान्। व्यापकान्विन्यसेत्पश्चाद्दशपङ्क्त्यक्षराणि च। द्रवुपुंस इति प्रत्यक्षबीजानि। प्रह्लादिनी प्रभा सत्या विश्वा भद्रा विलासिनी। प्रभावती जया कान्ता शान्ता पद्मा सरस्वती।।25।। विद्रुमस्फटिकाकारं पदमरागसमप्रभम्। इन्द्रनीलमणिप्रख्यं मौक्तिकं कुङ्कुमप्रभम्।।26।। अञ्जनाभं च गाङ्गेयं वैदुर्यं

चन्द्रसन्निभम्। हारिद्रं कृष्णदुग्धामं रविकान्तिसमं भवम्।। 27।। शुकपिच्छसमाकारं क्रमेण परिकल्पयेत्। पृथिव्यापस्तथा तेजो वायुराकाश एव च।।28।। गन्धो रसश्च रूपं च शब्दः स्पर्शत्तथैव च।। 29।। घ्राणं जिह्वा च चक्षुश्च त्वक् श्रोत्रं च तथापरम्। उपस्थपायुपादादि पाणिर्वागपि च क्रमात्।। 30।। मनो बुद्धिरहङ्कारमव्यक्त च यथाक्रमम्। सुमुखं संपुटं चैव विततं विस्तृतं तथा। एकमुखं च द्विमुखं त्रिमुखं च चतुर्मुखं।।31।। पञ्चमुखं षण्मुखं चाधोमुखं चैव व्यापकम्। अञ्जलीकं ततः प्रोक्तं मुद्रितं तु त्रयोदशम्।। 32।। शकटं यमपाशं च ग्रथितं संमुखोन्मुखम्। प्रलम्बं मुष्टिकं चैव मत्स्यः कूर्मो बराहकम्।।33।। सिंहाक्रान्तं महाक्रान्तं मुद्गरं पल्लवं तथा। एता मुद्राश्चतुर्विंशद्गायत्र्याः सुप्रतिष्ठिताः।। 34।।ॐ मूर्ध्नि संघाते ब्रह्मा विष्णुर्ललाटे रुद्रो भ्रूमध्ये चक्षुश्चन्द्रादित्यौ कर्णयोः शुक्रबृहस्पती नासिके वायुदैवत्यं प्रभातं दोषा उभे सन्ध्ये मुखमग्निर्जिह्वा सरस्वती ग्रीवा स्वध्यायाः स्तनयोर्वसवो बाह्वोर्मरुतः हृदयं पर्जन्यमाकाशमपरं नाभिरन्तरिक्षं कटिरिन्द्रियाणि जघनं प्राजापत्यं कैलासमलयौ ऊरू विश्वेदेवा जानुभ्यां जान्वोः कुशिकौ जङ्घयोरयनद्वयं सुराः पितरः पादौ पृथिवी वनस्पतिर्गुल्फौ रोमाणि मुहूर्तास्ते विग्रहाः केतुमासा ऋतवः सन्ध्याकालत्रयमाच्छादनं संवत्सरो निमिषः अहोरात्रावादित्यचन्द्रमसौ सहस्त्रपरमां देवीं शमध्यां दशापराम्। सहस्त्रनेत्रीं देवी गायत्रीं शरणमहं प्रपद्ये।।35।। तत्सवितुर्वरदाय नमः तत्प्रातरादित्याय नमः। सायमधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति।।36।। प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति। तत्सायंप्रातः प्रयुंञ्जानोऽपापो भवति। य इदं गायत्र्यथर्वशीर्ष ब्राह्मणः प्रयतः पठेत्। चत्वारो वेदा अधीता भवन्ति। सर्वेषु तीर्थेषु स्नातो भवति। सर्वेर्देवैर्ज्ञातो भवति। सर्वप्रत्यूहात्पूतो भवति।। 37।। अपेयपानात्पूतो भवति।।38।। अभक्ष्यभक्षणात्पूतो भवति। सुरापानात्पूतो भवति।। 39।। सुवर्णस्तेयात्पूतो भवति। पङ्क्तिभेदनात्पूतो भवति। पतितसंभाषणात्पूतो भवति। अनृतवचनात्पूतो भवति। गुरुतल्पगमनात्पूतो भवति। अगम्यागमनात्पूतो भवति। वृषलीगमनात्पूतो भवति।। 40।। ब्रह्महत्यायाः पूतो भवति। भ्रूणहत्यायाः पूतो भवति। वीरहत्यायाः पूतो भवति। अब्रह्मचारी सुब्रह्मचारी भवतिः।।41।। अनेनाथर्वशीर्षेणाधीतेन क्रतुशतेनेष्टं भवति। षष्टिसहस्त्रं गायत्री जप्त्वा भवति। अष्टौ ब्राह्मणान् ग्राहयेदर्थसिद्धिर्भवति। य इदं गायत्र्यथर्वशीर्षं ब्राह्मणः प्रयतः पठेत्।। स सर्वपापैः प्रमुच्यते ब्रह्मलोके महीयते ब्रह्मलोके महीयते।। 42।। हरिः ॐ।। भद्रं कर्णेभिति शान्तिपाठः।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।। इति गायत्र्याथर्वशीर्ष सम्पूर्णम्।।

नेत्रोपनिषत्

श्री गणेशाय नमः ॐ भद्रं कर्णेभिरिति शान्तिपाठः

हरिः ॐ।। अथातश्चाक्षुषीं पठितसिद्धविद्यां चक्षूरोगहरां व्याख्यास्यामो यया चक्षूरोगाः सर्वतो नश्यन्ति चक्षुषो दीप्तिर्भवति। अस्याश्चाक्षुषविद्याया अहिर्बुध्न्य ऋषिः गायत्री छन्दः। सविता देवता। चक्षूरोगनिवृत्तये जपे विनियोगः।।

ॐ चक्षुश्चक्षुश्चक्षुस्तेजः। स्थिरो भवं मां पाहि त्वरितं चक्षूरोगान् शमय शमय मम जातरूपं तेजो दर्शय दर्शय यथाहमन्धो न स्यां तथा कृपया कल्याणं कुरु कुरु।।

मम यानि यानि पूर्वजन्मोपार्जितानि चक्षुः प्रतिरोधकदुष्कृतानि तानि सर्वाणि निर्मूलय निर्मूलय।

ॐ नमश्चक्षुस्तेजोदात्रे दिव्यभास्कराय। ॐ नमः करुणाकराय अमृताय। ॐ नमो भगवते सूर्याय।।

अक्षितेजसे नमः। खेचराय नमः। महते नमः। रजसे नमः। तमसे नमः। असतो मा (मां) सद्गमय। तमसो मा (मां) ज्योतिर्गमय। मृत्योर्मा (र्माम्) अमृतं गमय। उष्णो भगवान्। शुचिरूपः हंसो भगवान्। शुचिरप्रतिरूपः। य इमां चाक्षुष्मतीं विद्यां ब्राह्मणो नित्यमधीते न तस्याक्षिरोगो भवति न तस्य कुलेऽन्धो भवति। अष्टौ ब्राह्मणान् ग्राहयित्वा विद्यासिद्धिर्भवति।।

ॐ विश्वरूपं घृणितं जातवेदसं हिरणमयं ज्योतिरूपं तपन्तं सहस्त्ररश्मिभिः शतधा वर्तमानः। पुरः प्रजातामुदयत्येष सूर्यः। ॐ नमो भगवते आदित्याय अवाग्वादिने स्वाहा।। हरिःॐ।।

ॐ भद्रं कर्णेभिरिति शान्तिपाठः।। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।

।। इति नेत्रोपनिषत्समाप्ता।।

देव्यथर्वशीर्षम्

श्रीगणेशाय नमः पूर्णमदः पूर्णमिदमित्यादि शान्ति पाठः

ॐ सर्वे वै देवा देवीमुपतस्थुः कासि त्वं महादेवीति साऽब्रवीदहं ब्रह्मस्वरूपिणी। मत्तः प्रकृतिपुरुषात्मकं जगत्। शून्यं चाशून्यं च। अहमानन्दानन्दौ। अहं विज्ञानाविज्ञाने। अहं ब्रह्माब्रह्मणी। (द्वे ब्रह्मणी वेदितव्ये।) अहं पंचभूतान्यपञ्चभूतानि। (अहं पंचतन्मात्राणि।) अहमखिलं जगत्।

वेदोऽहमवेदोऽहम्। विद्याहमविद्याहम् अजाहमनजाहम्। अधश्चोर्ध्वं च तिर्यक्चाहम्। अहं रुद्रेभिर्वसुभिश्चरामि। अहमादित्यैरुत विश्वदेवैः। अहं मित्रावरुझणावुभो विभर्मि। अहमिन्द्राग्नी अहमश्विनावुभौ। अहं सोमं त्वष्टारं भगं दधामि। अहं विष्णुमुरुक्रमम्। ब्रह्माणमुत प्रजापतिं दधामि। अहं दधामि द्रविणं हविष्मते सुप्राव्ये यजमानाय सुन्वते। अहं राष्ट्री संगमनी वसूनां चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम्। अहं सुवे पितरमस्य मूर्धन्मम योनिरप्स्वन्तः समुद्रे। य एवं वेद स देवीं संपदमाप्नोति। ते देवा अब्रुवन्।

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः। नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्।। तामग्निवर्णां तपसा ज्वलन्तीं वैरोचनीं कर्मफलेषु जुष्टाम्। दुर्गां देवीं शरणं प्रपद्यामहेऽसुरान्नाशयित्र्यै ते नमः।। देवीं वाचमजनयन्त देवास्तां विश्वरूपाः पशवो वदन्ति। सा नो मन्द्रेषमूर्जं दुहाना धेनुर्वागस्मानुपसुष्टुतैतु।। कालरात्रीं ब्रह्मस्तुतां वैष्णवीं स्कंदमातरम्। सरस्वतीमदितिं दक्षदुहितरं नमामः पावनां शिवाम्। महालक्ष्म्यै च विद्महे सर्वशक्त्यै च धीमहि। तन्नो देवी प्रचोदयात्। अदितिर्ह्यजनिष्ट दक्ष या दुहिता तव। तां देवा अन्वजायन्त भद्रा अमृतबन्धवः।। कामो योनिः कमला वज्रपाणिर्गुहा ह सा मातरिश्वाभ्रमिन्द्रः। पुनर्गुहा सकला मायया च पुरूच्यैषा विश्वमातादिविद्योम्। एषात्मशक्तिः। एषा विश्वमोहिनी पाङ्कुशधनुर्बाण-धरा। एषा श्री महाविद्या। य एवं वेद स शोकं तरति।।15।। नमस्ते भगवति मातरस्मान्पाहि सर्वतः।।16।।

सैषाऽष्टौ वसवः, सैषैकादश रुद्राः, द्वादशादित्याः, सैषा विश्वेदेवाः सोमपा असोमपाश्च, सैषा यातुधाना असुरा रक्षांसि पिशाचयक्षसिद्धाः। सैषा सत्त्वरजस्तमांसि, सैषा ब्रह्मविष्णुरुद्ररूपिणी, सैषा प्रजापतीन्द्रमनवः, सैषा ग्रहनक्षत्रज्योतिः कलाकाष्टादिविश्वरूपिणी, तामहं प्रणौमि नित्यम्। पापापहारिणीं देवीं भुक्तिमुक्तिप्रदायिनीम्।।17।। अनन्तां विजयां शुद्धां शरण्यां सर्वदा शिवाम्। वियदाकारसंयुक्तं वीतिहोत्रसमन्वितम्। अर्धेन्दुलसितं देव्या बीजं सर्वार्थसाधकम्।।18।। एवमेकाक्षरं मन्त्रं यतयः शुद्धचेतसः। ध्यायन्ति परमानन्दमया ज्ञानाम्बुराशयः।।19।। वाङ्मया ब्रह्मभूस्तस्मात् षष्ठं वक्रसमन्वितम्। सूर्यो वामश्रोत्रबिन्दुसंयुक्ताष्टतृतीयकम्। नारायणेन सम्मिश्रो वायुश्चाधारयुक् ततः। विच्चे नवार्णकोऽर्णः महदानन्ददायकः। हृत्पुण्डरीकम-ध्यस्थां प्रातःसूर्यसमप्रभाम्। पाशाङ्कुशधरां सौम्यां वरदाभयहस्तकाम्।। 21।। त्रिनेत्रां रक्तवसनां भक्तकामदुधां भजे।। 21।। भजामि त्वां महादेवीं महाभयविनाशिनि। महादुर्गप्रशमनीं महाकारुण्यरूपिणीम्।। 22।। यस्याः

स्वरूपं ब्रह्मादयो न जानन्ति तस्मादुच्यते अज्ञेया। यस्या अन्तो न लभ्यते तस्मादुच्यते अनन्ता। यस्या लक्ष्यं नोपलक्ष्यते तस्मादुच्यतेअलक्ष्या। यस्या जननं नोपलक्ष्यते तस्मादुच्यते अजा। एकैव सर्वत्र वर्तते तस्मादुच्यत एका। एकैव विश्वरूपिणी तस्मादुच्यते नैका। अत एवोच्यतेऽज्ञेयाऽनन्ताऽलक्ष्याऽजैका नैकेति।। 23।। मन्त्रणां मातृका देवी शब्दानां ज्ञानरूपिणी। ज्ञानानां चिन्मयातीता (चिन्मयानन्दा) शून्यानां शून्यसाक्षिणी।। यस्याः परतरं नास्ति सेषा दुर्गा प्रकीर्तिता।। 24।। तां दुर्गा दुर्गमां देवीं दुराचारविघातिनीम्। नमामि भवभीतोऽहं संसारार्णवतारिणीम्।। 25।। इदमथर्वशीर्षं योऽर्चां स्थापयति।

शतलक्षं जप्त्वापि नार्चासिद्धिं च विन्दति। शतमष्टोत्तरं चास्य पुरश्चर्याविधिः स्मृतः। दशवारं पठेद्यस्तु सद्यः पापैः प्रमुच्यते। महादुर्गाणि तरति महादेव्याः प्रसादतः।। 26।। सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति। प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति। सायंप्रातः प्रयुञ्जानोऽपापो भवति। निशीथे तुरीयसन्ध्यायां जप्त्वा वाक्सिद्धिर्भवति। नूतनायां प्रतिमायां जप्त्वा देवतासान्निध्यं भवति। भौमाश्विन्यां महादेवीसन्निधौ जप्त्वा महामृत्युं तरति स महामृत्युं तरति। य एवं वेद। इत्युपनिषत्।। पूर्णमदः पूर्णमित्यादि शान्ति पाठः ।। हरिः ॐ।।

इति देव्यथर्वशीर्ष सम्पूर्णम्।।

देवी सूक्तम्

श्री गणेशाय नमः
नमश्चण्डिकायै

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम् ।। 1।।
रौद्रायै नमो नित्यायै गौर्यै धात्र्यै नमो नमः ।
ज्योत्स्नायै चेन्दुरूपिण्यै सुखायै सततं नमः ।। 2।।
कल्याण्यै प्रणतां वृद्ध्यै सिद्ध्यै कुर्मो नमो नमः ।
नैर्ऋत्यै भूभृतां लक्ष्म्यै शर्वाण्यै ते नमो नमः ।। 3।।
दुर्गायै दुर्गपारायै सारायै सर्वकारिण्यै ।
ख्यात्यै तथैव कृष्णायै धूम्रायै सततं नमः ।। 4।।
अतिसौम्यातिरौद्रायै नतास्तस्यै नमो नमः ।
नमो जगत्प्रतिष्ठायै देव्यै कृत्यै नमो नमः ।। 5।।

या देवी सर्वभूतेषु विष्णुमायेति शब्दिता
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ।। 6।।
या देवी सर्वभूतेषु चेतनेत्यभिधीयते ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ।। 7।।
या देवी सर्वभूतेषु बुद्धिरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ।। 8।।
या देवी सर्वभूतेषु निद्रारूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ।। 9।।
या देवी सर्वभूतेषु क्षुधारूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ।। 10।।
या देवी सर्वभूतेषु छायारूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ।। 11।।
या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ।। 12।।
या देवी सर्वभूतेषु तृष्णारूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ।। 13।।
या देवी सर्वभूतेषु क्षान्तिरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ।। 14।।
या देवी सर्वभूतेषु जातिरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ।। 15।।
या देवी सर्वभूतेषु लज्जारूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ।। 16।।
या देवी सर्वभूतेषु शान्तिरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ।। 17।।
या देवी सर्वभूतेषु श्रद्धारूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ।। 18।।
या देवी सर्वभूतेषु कान्तिरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ।। 19।।
या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मीरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ।। 20।।
या देवी सर्वभूतेषु वृत्तिरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ।। 21।।
या देवी सर्वभूतेषु स्मृतिरूपेण संस्थिता ।

नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ।। 22 ।।
या देवी सर्वभूतेषु दयारूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ।। 23 ।।
या देवी सर्वभूतेषु तुष्टिरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ।। 24 ।।
या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ।। 25 ।।
या देवी सर्वभूतेषु भ्रान्तिरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ।। 26 ।।
इन्द्रियाणामधिष्ठात्री भूतानां चाखिलेषु या ।
भूतेषु सततं तस्यै व्याप्तिदेव्यै नमो नमः ।। 27 ।।
चितिरूपेण या कृत्स्नमेतद्व्याप्य स्थिता जगत् ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ।। 28 ।।
स्तुता सुरैः पूर्वमभीष्टसंश्रया-त्तथा सुरेन्द्रेण दिनेषु सेविता।
करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः।।29।।
या साम्प्रतं चोद्धतदैत्यतापितैरस्माभिरीशा च सुरैर्नमस्यते।
या च स्मृता तत्क्षणमेव हन्ति नः सर्वापदो भक्ति विनम्रमूर्तिभिः।।30।।

इति मार्कण्डेय पुराणान्तर्गततन्त्रोक्तम् देवीसूक्तम्।।

अन्नपूर्णास्तोत्रम्

अथध्यानम्-

सिन्दूरा-रुण-विग्रहां त्रिनयनां माणिक्य-मौलिस्फुरत्
तारानायक-शेखरां स्मितमुखीमापीन-वक्षोरुहाम्।
पाणिभ्यामलिपूर्ण-रत्नचषकं रक्तोत्पलं बिभ्रतीं
सौम्यां रत्नघटस्थ-रक्तचरणां ध्यायेत् परामम्बिकाम्।
नित्यानन्दकरी वराभयकरी सौन्दर्यरत्नाकरी
निर्धूताखिल-घोरपावनकरी प्रत्यक्षमाहेश्वरी।
प्रालेयाचल-वंशपावनकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ।।1।।

नानारत्न-विचित्र-भूषणकरी हेमाम्बराडम्बरी
मुक्ताहार-विलम्बमान-विलसद्वक्षोज-कुम्भान्तरी।
काश्मीरागुरुवासिता रुचिकरी काशीपुराधीश्वरी,
भीक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ।।2।।

योगानन्दकरी रिपुक्षयकरी धर्मार्थनिष्ठाकरी
चन्द्रार्कानल-मासमानलहरी त्रैलोक्यरक्षाकरी।
सर्वैश्वर्य-समस्तवाञ्छितकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपाव लम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ।।3।।

कैलासाचल-कन्दरालयकरी गौरी उमा शङ्करी,
कौमारी निगमार्थगोचरकरी ह्योङ्कारबीजाक्षरी।
मोक्षद्वार-कपाट-पाटनकरी काशीपुराधीश्वरी,
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ।।4।।

दृश्यादृश्य-प्रभूतवाहनकरी ब्रह्माण्डभाण्डोदरी,
लीलानाटकसूत्रभेदनकरी विज्ञानदीपाङ्कुरी।
श्रीविश्वेशमनःप्रसादनकरी काशीपुराधीश्वरी,
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी।।5।।

उर्वी सर्वजनेश्वरी भगवती माताऽन्नपूर्णेश्वरी,
वेणीनील-समान-कुन्तलहरी नित्यान्नदानेश्वरी।
सर्वानन्दकरी दशाशुभकरी काशीपुराधीश्वरी,
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी।।6।।

आदिक्षान्त-समस्तवर्णनकरी शम्भोस्त्रिभावाकरी
काश्मीरात्रिजलेश्वरी त्रिलहरी नित्याङ्कुरा शर्वरी
कामाकाङ्क्षकरी जनोदयकरी काशीपुराधीश्वरी,
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी।।7।।

देवी सर्वविचित्ररत्नरचिता दाक्षायणी सुन्दरी,
वामं स्वादु-पयोधर-प्रियकरी सौभाग्यमाहेश्वरी।
भक्ताभीष्टकरी दशाशुभकरी काशीपुराधीश्वरी,
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी।।8।।

चन्द्रार्काऽनल-कोटिकोटिसदृशी चन्द्रांशुबिम्बाधरी,
चन्द्रार्काग्नि-समान-कुन्तलहरी चन्द्रार्कवर्णेश्वरी।
माला-पुस्तक-पाश-साङ्कुशधरी काशीपुराधीश्वरी,
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी।।9।।

क्षत्रत्राणकरी महाभयकरी माता कृपासागरी,
साक्षान्मोक्षकरी सदा शिवकरी विश्वेश्वरी श्रीधरी।
दक्षाक्रन्दकरी निरामयकरी काशीपुराधीश्वरी,

भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी।।
अन्नपूर्णे सदा पूर्णे सङ्करप्रणवल्लभे !।
ज्ञान-वैराग्य-सिद्ध्यर्थं भिक्षां देहि च पार्वति।।1।।
माता च पार्वती देवी पिता देवो महेश्वरः।
बान्धवाः शिवाभक्ताश्च स्वदेशो भुवनत्रयम्।।

इति श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचितम् अन्नपूर्णास्तोत्रं सम्पूर्णम्।

अच्युताष्टकम्

अच्युतं केशवं रामनारायणं, कृष्णदामोदरं वासुदेवं हरिम् ।
श्रीधरं माधवं गोपिकावल्लभं, जानकीनायकं रामचन्द्रं भजे ।।1।।
अच्युतं केशवं सत्यभामाधवं, माधवं श्रीधरं राधिकाराधितम् ।
इन्दिरामन्दिरं चेतसा सुन्दरं, देवकीनन्दनं नन्दजं सन्दधे ।।2।।
विष्णवे जिष्णवे शङ्खिने चक्रिणे, रुक्मिणीरागिणे जानकीजानये ।
वल्लवीवल्लभायार्चितायात्मने, कंसविध्वंसिने वंशिने ते नमः ।।3।।
कृष्ण गोविन्द हे राम नारायण, श्रीपते वासुदेवाजित श्रीनिधे ।
अच्युतानन्त हे माधवाधोक्षज, द्वारकानायक द्रोपदीरक्षक ।।4।।
राक्षसक्षोभितः सीतयाशोभितो, दण्डकारण्यभूपुण्यताकारणः ।
लक्ष्मणेनान्वितो वानरैः सेवितोऽ-गस्त्यसम्पूजितो राघवः पातु माम् ।।5।।
धेनुकारिष्टकोऽनिष्टकृद्द्वेषिणां, केशिहा कंसहृद्वंशिकावादकः ।
पूतनाकोपकः सूरजाखेलनो, बालगोपालकः पातु मां सर्वदा ।।6।।
विद्युदुद्योतवत्प्रस्फुरद्वाससं, प्रावृडम्भोदवत्प्रोल्लसद्विग्रहम् ।
वन्यया मालया शोभितोरःस्थलं, लोहिताङ्घ्रिद्वयं वारिजाक्षं भजे ।।7।।
कुञ्चितैः कुन्तलैर्भ्राजमानाननं, रत्नमौलिं लसत्कुण्डलं गण्डयोः ।
हारकेयूरकं कङ्कणप्रोज्ज्वलं, किङ्किणीमञ्जुलं श्यामलं तं भजे ।।8।।
अच्युतस्याष्टकं यः पठेदिष्टदं, प्रेमतः प्रत्यहं पूरुषः सस्पृहम् ।
वृत्ततः सुन्दरं कर्तृविश्वम्भरं, तस्य वश्यो हरिर्जायते सत्वरम् ।।9।।

श्रीमदाद्यशङ्कराचार्यविरचितम्

आदित्यहृदयस्तोत्रम्

ततो युद्धपरिश्रान्तं समरे चिन्तया स्थितम् ।
रावणं चाग्रतो दृष्ट्वा युद्धाय समुपस्थितम् ।।1।।
दैवतैश्च समागम्य द्रष्टुमभ्यागतो रणम् ।
उपगम्याब्रवीद्रामगस्त्यो भगवाँस्तदा ।।2।।

राम राम महाबाहो शृणु गुह्यं सनातनम् ।
येन सर्वानरीन् वत्स! समरे विजयिष्यसे ।।3।।
आदित्यहृदयं पुण्यं सर्वशत्रुविनाशनम् ।
जयावहं जपेन्नित्यमक्षयं परमं शिवम् ।।4।।
सर्वमङ्गलमाङ्गल्यं सर्वपापप्रणाशनम् ।
चिन्ताशोकप्रशमनमायुर्वर्धनमुत्तमम् ।।5।।
रश्मिमन्तं समुद्यन्तं देवासुरनमस्कृतम् ।
पूजयस्व विवस्वन्तं भास्करं भुवनेश्वरम् ।।6।।
सर्वदेवात्मको ह्येष तेजस्वी रश्मिभावनः ।
एष देवासुरगणाँल्लोकान् पाति गभस्तिभिः ।।7।।
एष ब्रह्मा च विष्णुश्च शिवः स्कन्दः प्रजापतिः ।
महेन्द्रो धनदः कालो यमः सोमो ह्यपां पतिः ।।8।।
पितरो वसवः साध्या अश्विनौ मरुतो मनुः ।
वायुर्वह्निः प्रजाः प्राणा ऋतुकर्ता प्रभाकरः ।।9।।
आदित्यः सविता सूर्यः खगः पूषा गभस्तिमान् ।
सुवर्णसदृशो भानुः स्वर्णरेता दिवाकरः ।।10।।
हरिदश्वः सहस्त्रार्चिः सप्तसप्तिर्मरीचिमान् ।
तिमिरोन्मथनः शम्भुस्त्वष्टा मार्तण्डकोंऽशुमान् ।।11।।
हिरण्यगर्भः शिशिरस्तपनोऽहस्करो रविः ।
अग्निगर्भोऽदितेः पुत्रः शङ्खः शिशिरनाशनः ।।12।।
व्योमनाथस्तमोभेदी ऋग्यजुःसामपारगः ।
घनवृष्टिरपां मित्रो विन्ध्यवीथीप्लवङ्गमः ।।13।।
आतपी मण्डली मृत्युः पिङ्गलः सर्वतापनः ।
कविर्विश्वो महातेजा रक्तः सर्वभवोद्भवः ।।14।।
नक्षत्रग्रहताराणामधिपो विश्वभावनः ।
तेजसामपि तेजस्वी द्वादशात्मन्नमोऽस्तु ते ।।15।।
नमः पूर्वाय गिरये पश्चिमायाद्रये नमः ।
ज्योतिर्गणानां पतये दिनाधिपतये नमः ।।16।।
जयाय जयभद्राय हर्यश्वायनमो नमः ।
नमो नमः सहस्त्रांशो आदित्याय नमो नमः ।।17।।
नमः उग्राय वीराय सारङ्गाय नमो नमः ।
नमः पद्मप्रबोधाय प्रचण्डाय नमोऽस्तु ते ।।18।।
ब्रह्मेशानाच्युतेशाय सूर्यादित्यवर्चसे ।
भास्वते सर्वभक्षाय रौद्राय वपुषे नमः ।।19।।

तमोघ्नाय हिमघ्नाय शत्रुघ्नायामितात्मने ।
कृतघ्नघ्नाय देवाय ज्योतिषां पतये नमः ।।20।।
तप्तचामीकराभाय हरये विश्वकर्मणे ।
नमस्तमोऽभिनिघ्नाय रुचये लोकसाक्षिणे ।।21।।
नाशयत्येष वै भूतं तदेव सृजति प्रभुः ।
पायत्येष तपत्येष वर्षत्येष गभस्तिभिः ।।22।।
एष सुप्तेषु जागर्ति भूतेषु परिनिष्ठितः ।
एष चैवाग्निहोत्रं च फलं चैवाग्निहोत्रिणाम् ।।23।।
देवाश्च क्रतवश्चैव क्रतूनां फलमेव च ।
यानि कृत्यानि लोकेषु सर्वेषु परमप्रभुः ।।24।।
एनमापत्सु कृच्छ्रेषु कान्तारेषु भयेषु च ।
कीर्तयन् पुरुषः कश्चिन्नावसीदति राघव ।।25।।
पूजयस्वैनमेकाग्रो देवदेवं जगत्पतिम् ।
एतत्त्रिगुणितं जप्त्वा युद्धेषु विजयिष्यसि ।।26।।
अस्मिन् क्षणे महाबाहो! रावणं त्वं हनिष्यसि ।
एवमुक्त्वा ततोऽगस्त्यो जगाम स यथागतम् ।।27।।
एतच्छ्रुत्वा महातेजा नष्टशोकोऽभवत्तदा ।
धारयामास सुप्रीतो राघवः प्रयतात्मवान् ।।28।।
आदित्यं प्रेक्ष्य जप्त्वेदं परं हर्षमवाप्तवान् ।
त्रिराचम्य शुचिर्भूत्वा धनुरादाय वीर्यवान् ।।29।।
रावणं प्रेक्ष्य हृष्टात्मा जयार्थं समुपागमत् ।
सर्वयत्नेन महता वृतस्तस्य वधेऽभवत् ।।30।।
अथ रविरवदन्निरीक्ष्य रामं मुदितमनाः परमं प्रहृष्यमाणः।
निशिचरपतिसंक्षयं विदित्वा सुरगणमध्यगतो वचस्त्वरेति।।31।।

इत्यार्षे बाल्मीकीये रामायणे आदित्यहृदयस्तोत्रं सम्पूर्णम्।

श्रीरुद्राष्टकम्

नमामीशमीशान - निर्वाणरूपं, विभुं व्यापकं ब्रह्मवेदस्वरूपम्।
अजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं, चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहम् ।।1।।
निराकारमोङ्कारमूलं तुरीयं, गिरा-ग्यान-गोतीतमीशं गिरीशम् ।
करालं महाकाल-कालं कृपालं, गुणागार-संसारपारं नतोऽहम् ।।2।।
तुषाराद्रि-सङ्काश-गौरं गभीरं, मनोभूत-कोटि-प्रभा-श्री-शरीरम् ।
स्फुरन्मौलि कल्लोलिनी चारु गङ्गा, लसद्भाल-बालेन्दु कण्ठे भुजङ्गा।।3।।

चलत्कुण्डलं भ्रू सुनेत्रं विशालं, प्रसन्नाननं नीलकण्ठं दयालुम्।
मृगाधीशचर्माम्बरं मुण्डमालं, प्रियं शङ्करं सर्वनाथं भजामि।।4।।
प्रचण्डं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं, अखण्डं अजं भानुकोटिप्रकाशम्।
त्रयः शूल-निर्मूलनं शूलपाणिं, भजेऽहं भवानीपतिं भावगम्यम्।।5।।
कलातीत-कल्याण-कल्पान्तकारी, सदा सज्जनानन्ददाता पुरारी।
चिदानन्द-सन्दोह-मोहापहारी, प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी।।6।।
न यावद् उमानाथ पादारविन्दं, भजन्तीह लोके परे वा नराणाम्।
न तावत्सुखं शान्ति सन्तापनाशं, प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासम्।।7।।
न जानामि योगं जपं नैव पूजां, नतोऽहं सदा सर्वदा शम्भु तुभ्यम्।
जराजन्मदुःखौघतातप्यमानम्, प्रभो ! पाहि आपन्नमामीश शम्भो!।।8।।
रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतोषये।
ये पठन्ति नरा भक्त्या तेषां शम्भुः प्रसीदति।।9।।

इति श्रीमद्गोस्वामितुलसीदासकृतं श्रीरुद्राष्टकं सम्पूर्णम्।

शिवपञ्चाक्षरस्तोत्रम्

श्रीगणेशाय नमः

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय भस्माङ्गरागाय महेश्वराय ।
नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय तस्मै नकाराय नमः शिवाय ।।1।।
मन्दाकिनीसलिलचन्दनचर्चिताय नन्दीश्वरप्रमथनाथमहेश्वराय ।
मन्दारपुष्पबहुपुष्पसुपूजिताय तस्मै मकाराय नमः शिवाय ।।2।।
शिवाय गौरीवदनाब्जवृन्दसूर्याय दक्षाध्वरनाशकाय ।
श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय तस्मै शिकाराय नमः शिवाय ।।3।।
वसिष्ठकुम्भोद्भवगौतमार्यमुनीन्द्रदेवार्चितशेखराय ।
चन्द्रार्कवैश्वानरलोचनाय तस्मै वकाराय नमः शिवाय ।।4।।
यक्षस्वरूपाय जटाधराय पिनाकहस्ताय सनातनाय ।
दिव्याय देवाय दिगम्बराय तस्मै यकाराय नमः शिवाय ।।5।।
पञ्चाक्षरमिदं स्तोत्रं यः पठेच्छिवसन्निधौ ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते ।।6।।

इति श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचितं शिवपञ्चाक्षरस्तोत्रं सम्पूर्णम्।

कालभैरवाष्टकम्

श्रीगणेशाय नमः

देवराज-सेव्यमान-पावनाङ्घ्रिपङ्कजं
व्यालयज्ञसूत्रमिन्दुशेखरं कृपाकरम्।
नारदादि-योगिवृन्द-वन्दितं दिगम्बरं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ।।1।।
भानुकोटि-भास्वरं भवाब्धितारकं परं
नीलकण्ठमीप्सितार्थदायकं त्रिलोचनम्।
कालकालमम्बुजाक्षमक्षशूलमक्षरं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ।।2।।
शूलटङ्कपाशदण्डपाणिमादिकारणं
श्यामकायमादिदेवमक्षरं निरामयम्।
भीमविक्रमं प्रभुं विचित्रताण्डवप्रियं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ।।3।।
भुक्ति-मुक्तिदायकं प्रशस्तचारुविग्रहं
भक्तवत्सलं स्थितं समस्तलोकविग्रहम्।
विनिक्वणन्-मनोज्ञ-हेमकिङ्किणी-लसत्कटिं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ।।4।।
धर्मसेतुपालकं स्वधर्ममार्गनाशकं
कर्मपाशमोचकं सुशर्मदायकं विभुम्।
स्वर्णवर्णशेषपाश-शोभिताङ्ग-मण्डलम्
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ।।5।।
रत्नपादुका-प्रभाभिराम-पादयुग्मकं
नित्यमद्वितीयमिष्टदैवतं निरञ्जनम्।
मृत्युदर्पनाशनं करालद्रष्टमोक्षणं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ।।6।।
अट्टहास-भिन्नपद्मजाण्डकोशसन्ततिं
दृष्टिपात-नष्टपाप-जालमुग्रशासनम्।
अष्टसिद्धिदायकं कपालमालिकन्धरं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ।।7।।
भूतसङ्घनायकं विशालकीर्तिदायकं

काशिवास-लोकपुण्य-पापशोधकं विभुम्।
नीतिमार्गकोविदं पुरातनं जगत्पतिं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ।।8।।
कालभैरवाष्टकं पठन्ति ये मनोहरं
ज्ञानमुक्तिसाधनं विचित्रपुण्यवर्धनम्।
शोक-मोह-दैन्यलोभ-कोपताप-नाशनम्
प्रयान्ति कालभैरवाङ्घ्रिसन्निधिं नरा ध्रुवम्।।9।।

इति श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचितं कालभैरवाष्टकं सम्पूर्णम्।

रामरक्षास्तोत्रम्

ध्यान- ध्यायेदाजानुबाहुं धृतशरधनुषं बद्धपद्मासनस्थं
पीतं वासो वसानं नवकमलदलस्पर्धिनेत्रं प्रसन्नम्।
वामाङ्कारूढसीतामुखकमलमिलल्लोचनं नीरदाभं
नानालङ्कारदीप्तं दधतमुरुजटामण्डलं रामचन्द्रम्।।

चरितं रघुनाथस्य शतकोटिप्रविस्तरम् ।
एकैकमक्षरं पुंसां महापातकनाशनम् ।।1।।
ध्यात्वा नीलोत्पलश्यामं रामं राजीवलोचनम् ।
जानकीलक्ष्मणोपेतं जटामुकुटमण्डितम् ।।2।।
सासितूणधनुर्बाणपाणिं नक्तञ्चरान्तकम् ।
स्वलीलया जगत्रातुमाविर्भूतमजं विभुम् ।।3।।
रामरक्षां पठेत्प्राज्ञः पापघ्नीं सर्वकामदाम् ।
शिरो में राघवः पातु भालं दशरथात्मजः ।।4।।
कौसल्येयो दृशौ पातु विश्वामित्रप्रियः श्रुती ।
घ्राणं पातु मखत्राता मुखं सौमित्रिवत्सलः ।।5।।
जिह्वां विद्यानिधिः पातु कण्ठं भरतवन्दितः ।
स्कन्धौ दिव्यायुधः पातु भुजौ भग्नेशकार्मुकः ।।6।।
करौ सीतापतिः पातु हृदयं जामदग्न्यजित् ।
मध्यं पातु खरध्वंसी नाभिं जाम्बवदाश्रयः ।।7।।
सुग्रीवेशः कटी पातु सक्थिनी हनुमत्प्रभुः ।
उरू रघुत्तमः पातु रक्षःकुलविनाशकृत् ।।8।।
जानुनी सेतुकृत्पातु जङ्घे दशमुखान्तकः ।
पादौ विभीषणश्रीदः पातु रामोऽखिलं वपुः ।।9।।

एतां रामबलोपेतां रक्षां यः सुकृती पठेत् ।
स चिरायुः सुखी पुत्री विजयी विनयी भवेत् ।।10।।
पातालभूतलव्योमचारिणश्छद्मचारिणः ।
न द्रष्टुमपि शक्तास्ते रक्षितं रामनामभिः ।।11।।
रामेति रामभद्रेति रामचन्द्रेति वा स्मरन् ।
नरो न लिप्यते पापैर्भुक्तिं मुक्तिं च विन्दति ।।12।।
जगज्जैत्रैकमन्त्रेण रामनाम्नाऽभिरक्षितम् ।
यः कण्ठे धारयेत्तस्य करस्थाः सर्वसिद्धयः ।।13।।
वज्रपञ्जरनामेदं यो रामकवचं स्मरेत् ।
अव्याहताज्ञः सर्वत्र लभते जयमङ्गलम् ।।14।।
आदिष्टवान्यथा स्वप्ने रामरक्षामिमां हरः ।
तथालिखितवान्प्रातः प्रबुद्धो बुधकौशिकः ।।15।।
आरामः कल्पवृक्षाणां विरामः सकलापदाम् ।
अभिरामस्त्रिलोकानां रामः श्रीमान्स नः प्रभुः ।।16।।
तरुणौ रूपसम्पन्नौ सुकुमारौ महाबलौ ।
पुण्डरीकविशालाक्षौ चीरकृष्णाजिनाम्बरौ ।।17।।
फलमूलाशिनौ दान्तौ तापसौ ब्रह्मचारिणौ ।
पुत्रौ दशरथस्येतौ भ्रातरौ रामलक्ष्मणौ ।।18।।
शरण्यौ सर्वसत्त्वानां श्रेष्ठौ सर्वधनुष्मताम् ।
रक्षःकुलनिहन्तारौ त्रायेतां नो रघूत्तमौ ।।19।।
आत्तसज्जधनुषाविषुस्पृशावक्षयाशुगनिषङ्गसङ्गिनौ ।
रक्षणाय मम रामलक्ष्मणावग्रतः पथि सदैव गच्छताम्।। 20।।
सन्नद्धः कवची खड्गी चापबाणधरो युवा ।
गच्छ मनोरथान्नश्च रामः पातु सलक्ष्मणः ।।21।।
रामो दाशरथिः शूरो लक्ष्मणानुचरो बली ।
काकुत्स्थः पुरुषः पूर्णः कौसल्येयो रघूत्तमः ।।22।।
वेदान्तवेद्यो यज्ञेशः पुराणपुरुषोत्तमः ।
जानकीवल्लभः श्रीमानप्रमेयपराक्रमः ।।23।।
इत्येतानि जपन्नित्यं मद्भक्तः श्रद्धयान्वितः ।
अश्वमेधाधिकं पुण्यं सम्प्राप्नोति न संशयः ।।24।।
रामं दूर्वादलश्यामं पद्माक्षं पीतवाससम् ।
स्तुवन्ति नामभिर्दिव्यैर्न ते संसारिणो नराः ।।25।।

रामं लक्ष्मणपूर्वजं रघुवरं सीतापतिं सुन्दरं
काकुत्स्थं करुणार्णवं गुणनिधिं विप्रप्रियं धार्मिकम्।
राजेन्द्रं सत्यसन्धं दशरथतनयं श्यामलं शान्तिमूर्तिं
वन्दे लोकाभिरामं रघुकुलतिलकं राघवं रावणारिम्।।26।।
रामाय रामभद्राय रामचन्द्राय वेधसे।
रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः।।27।।

श्रीराम राम रघुनन्दन राम राम श्रीराम राम भरताग्रज राम राम।
श्रीराम राम रणकर्कश राम राम श्रीराम राम शरणं भव राम राम।।28।।
श्रीरामचन्द्रचरणौ मनसा स्मरामि श्रीरामचन्द्रचरणौ वचसा गृणामि।
श्रीरामचन्द्रचरणौ शिरसा नमामि श्रीरामचन्द्रचरणौ शरणं प्रपद्ये।।29।।
माता रामो मत्पिता रामचन्द्रः स्वामी रामो मत्सखा रामचन्द्रः।
सर्वस्वं मे रामचन्द्रो दयालुर्नान्यं जाने नैव जाने न जाने।।30।।

दक्षिणे लक्ष्मणो यस्य वामे च जनकात्मजा।
पुरतो मारुतिर्यस्य तं वन्दे रघुनन्दनम्।।31।।
लोकाभिरामं रणरङ्गधीरं राजीवनेत्रं रघुवंशनाथम्।
कारुण्यरुपं करुणाकरं तं श्रीरामचन्द्रं शरणं प्रपद्ये।।32।।
मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये।।33।।
कूजन्तं रामरामेति मधुरं मधुराक्षरम्।
आरुह्य कविताशाखां वन्दे वाल्मीकिकोकिलम्।।34।।
आपदामपहर्तारं दातारं सर्वसम्पदाम्।
लोकाभिरामं श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम्।।35।।
भर्जनं भवबीजानांमर्जनं सुखसम्पदाम्।
तर्जनं यमदूतानां रामरामेति गर्जनम्।।36।।
रामो राजमणिः सदा विजयते रामं रमेशं भजे
रामेणाभिहता निशाचरचमू रामाय तस्मै नमः।
रामान्नास्ति परायणं परतरं रामस्य दासोऽस्म्यहं
रामे चित्तलयः सदा भवतु मे भो राम मामुद्धर।।37।।
राम रामेति रामेति रमे रामे मनोरमे।
सहस्त्रनाम तत्तुल्यं रामनाम वरानने!।।38।।

इति श्रीबुधकौशिकमुनिविरचितं श्रीरामरक्षास्तोत्रं सम्पूर्णम्।

मधुराष्टकम्

श्रीगणेशाय नमः

अधरं मधुरं वदनं मधुरं नयनं मधुरं हसितं मधुरम् ।
हृदयं मधुरं गमनं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ।।। 1 ।।

वचनं मधुर चरितं मधुरं वसनं मधरं वलितं मधुरम् ।
चलितं मधुरं भ्रमितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ।। 2 ।।

वेणुर्मधुरो रेणुर्मधुरः पाणिर्मधुरः पादौ मधुरौ ।
नृत्यं मधुरं सख्यं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ।। 3 ।।

गीतं मधुरं पीतं मधुरं भुक्तं मधुरं सुप्तं मधुरम् ।
रूपं मधुरं तिलकं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ।। 4 ।।

करणं मधुरं तरणं मधुरं हरणं मधुरं रमणं मधुरम् ।
वमितं मधुरं शमितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ।। 5 ।।

गुञ्जा मधुरा माला मधुरा यमुना मधुरा वीची मधुरा ।
सलिलं मधुरं कमलं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ।। 6 ।।

गोपी मधुरा लीला मधुरा युक्तं मधुरं भुक्तं मधुरम्।
दृष्टं मधुरं शिष्टं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ।। 7 ।।

गोपा मधुरा गावो मधुरा यष्टिर्मधुरा सृष्टिर्मधुरा।
दलितं मधुरं फलितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ।। 8 ।।

इति श्रीवल्लभाचार्यविरचितं मधुराष्टकं सम्पूर्णम्।

पारिभाषिक-शब्दावलिः

अङ्गन्यास- शरीर के प्रत्येक अवयव का स्पर्श।

अग्निकोण- पूर्व और दक्षिण का कोण।

अग्न्युत्तारण - प्रतिमा को अग्नि से स्पर्श कराना।

अजिन - मृगचर्म से निर्मित यज्ञोपवीत।

अनुलोम- सीधा क्रम। वर्णानुसार निम्न वर्ण की कन्या से सम्पन्न विवाह अनुलोम होता है।

अपमृत्यु- अकालमृत्यु।

अपसव्य - दाहिने कन्धे पर जनेऊ/उत्तरीय को धारण करना।

अमन्त्रक- बिना मंत्र पढ़े हीं।

अवनेजन- पिण्डदान के पूर्व कुश पर दिया जाने वाला संकल्पित तिल सहित जल।

अरथी- मृतक के शव को शमशान ले जाने के लिए बाँस की विशेष शायिका।

अश्मारोहण- पत्थर पर पैर रखना।

आज्यभाग- घृत का हिस्सा (हवनीय घी)।

ईशान कोण- पूर्व और उत्तर दिशा का कोण।

उत्तरीय- गमछा (दुपट्टा) या शरीर के ऊपरी भाग में धारण किया वस्त्र।

उद कुम्भदान- जल कुम्भ का दान।

उपयमन- सात कुशाओं को बाँधकर बनाया गया कुश समूह 'जो यज्ञीय कार्य में प्रयुक्त किया जाता है।'

उपस्थान- विशेष मुद्रा में प्रणाम (दोनों हाथो से)।

ऊर्णसूत्र- ऊन का धागा।

ऋत्विक्- यज्ञ में सहायक ब्राह्मण।

ऋष्यादिन्यास- ऋषियों के स्मरण के साथ शरीर के प्रत्येक अंग का स्पर्श।

एकादशाह- मृत्यु से ग्यारहवें दिन किये जाने वाला श्राद्ध कर्म। इस दिन होने वाले पिण्डदान को उत्तम षोडशी भी कहते हैं।

कपाल-क्रिया- अर्ध दग्ध शव के कपाल का भेदन।

करन्यास- हाथ की अङ्गुलियों में देवशक्तियों का न्यास।

कर्मपात्र- वह विशेष जलपात्र जिसमें पिण्डदान आदि करने के लिए संस्कारित जल का संग्रह करते हैं।

करोद्वर्तन- देवार्चन में विशेष मुद्रा से चन्दन का दान।

क्रव्याद- अन्त्येष्टि क्रिया से जुड़ी अग्नि विशेष।

काग ग्रास- कौओं को दी जाने वाली बलि अर्थात् काग वलि।

कार्पास सूत्र- कपास (रुई) से बना धागा।

कौपीन- लंगोटी (बिना सिलाई के)।

गोग्रास- गो को दी जाने वाली बलि।

गोदान- गाय या गाय के कल्पित मूल्यका दान।

चरु- हवनीय सामग्री।

चितानल- शवदाह करने की अग्नि।

चिन्मय- चैतन्य।

छाया पात्र- घी अथवा तेल युक्त पात्र, जिसमें अपना प्रतिबिम्व देखा जाता है।

तर्पण- जल से सूक्ष्म योनियों को तृप्त करने के लिए दिया जाने वाला जल।

दशगात्र- वह क्रिया जो दश-दिन बक मृतात्मा के कल्पित सूक्ष्म शरीर के अंगों को दस भागों में निर्माण के लिए सम्पादित की जाती है।

नवग्रह समिधा- अर्क, पलाश, खैर, अपामार्ग, गूलर, पीपल, शमी, कुश, दूब की लकड़ी।

निवीती- जनेऊ को माला की भाँति गले में धारण करना।

निष्क्रयभूत- प्रतीकात्मक दान।

नीवी - कमर में बाँधी जाने वाली कुश ग्रन्थि।

नैऋत्य कोण- दक्षिण और पश्चिम दिशा का कोण।

न्यास- अपने शरीर के अंगो का विभिन्न मंत्रों से अभिमंत्रित करना तथा तद्-तद् देवताओं का विभिन्न अंगों में स्थापन।

पञ्चपल्व- पीपल, गूलर, पाकड़, बरगद और आम्र के पल्ल को पञ्चपल्ल व कहा जाता है।

पञ्चगव्य- गाय का गोबर, गोमूत्र, गोघृत, गोदुग्ध, गोदधि।

पञ्चमेवा- दाख, छुहाड़ा, बादाम, नारियल, और अखरोट।

पञ्चभूसंस्कार- हवन कुण्ड या हवन के वेदिका को जल और गोबर से की जानेवाली शुद्धि।

पञ्चामृत- गोदुग्ध, गोघृत, गोदधि, मधु, शर्करा के समूह को पंचामृत कहते हैं।

पञ्चरत्न- सोना, चाँदी, मोती, लाजावर्त और मूंगा के समूह को पञ्चरत्न कहते हैं।

पवित्री- कुश से निर्मित अनामिका में धारण की जाने वाली पैंती। इसे सामान्यत: तीन कुशाओं के आगे गांठ लगा कर बनाते हैं।

पर्युरक्षण- किसी मण्डल को चारों तरफ से (छिड़ककर) घेरकर अभिमंत्रित करने की प्रक्रिया।

परिसमूहन- कुशाओं का इकट्ठा करना।

प्रणीता- काष्ठ से बना एक विशेष प्रकार का जल पूरित यज्ञ पात्र।

प्रतिलोम- विपरीत क्रम।

प्रमातामह- परनाना।

प्रमातामही- परनानी।

परिस्तरण- कुशाओं का यज्ञ वेदिका के चारों तरफ मंत्रों से स्थापित करना।

प्रादेश मात्र- एक वित्ता (लगभग 6-7 इंच)।

पितृतीर्थ- अंगूठे और तर्जनी की मध्य भाग।

पूर्णा- शिलान्यास में पांच देवियों का प्रतीक में एक, जिसमें नन्दा, भद्रा, जया, रिक्ता तथा पूर्णा का पांच शिलाओं अथवा इटों में आवाहन कर उनकी स्थापना की जाती है।

प्रोक्षणीपात्र- लकड़ी अथवा मिट्टी का जलपूरीत यज्ञीयपात्र, जिससे अभिमंत्रित जल छिड़का जाता है।

बटुक- 10 वर्ष की अवस्था तक के ब्रह्मचारी को बटुक कहते हैं।

बहिरग्नि- बाहर की अग्नि।

ब्रह्मा- हवनीय यज्ञ की व्यवस्था का पर्यवेक्षण करने वाला।

भुग्न- खण्डित अग्रभाग वाला कुश।

मधुपर्क- कांसे के पात्र में मधु, घी, दही का मिश्रण।

मधुमय- घी, दूध, और मधु से मिश्रित पदार्थ को मधुमय कहतें हैं।

मलिन षोडशी- मृत्यु से लेकर दस दिन तक चलने वाली पवित्र होने तक 16 पिण्डदान क्रिया को मलिनषोडशी कहते हैं।

मातामह- नाना।

मातामही- नानी।

मोटक- कुश का दो गुणा भुग्न भाग।

मौञ्जी- भूज से बनी करधनी।

यज्ञोपवीत- यज्ञ का उपवीत (व्रतबन्ध) अर्थात् जनेऊ। यज्ञ यहां व्यापक अर्थ में प्रयुक्त है।

वायव्यकोण- उत्तर और पश्चिम दिशा का कोण।

विकिरपिण्ड- कुल में अग्नि से जिसका संस्कार नही किया गया है। ऐसे पितरों को दिया जाने वाला पिण्ड।

वृषोत्सर्ग- विशेष प्रकार का सांड़ छोड़ने का कर्मकाण्डीय विधान।

ब्राह्मतीर्थ- अगूठे का मूल भाग।

ब्राह्ममुहूर्त- सूर्योदय से चार घड़ी (डेढ़ घण्टे से अधिक) पूर्व का समय।

विष्टर- आसन विशेष प्रकार के कुश से बना प्रतीक आसन।

लाजाहुती- धान के लावे का हवन।

श्वान ग्रास- कुत्ते को दी जाने वाली बलि।

सप्तघृत मातृका-घृत से बनाई गई सात रेखायें जिनपर सात देवियों का आवाहन-पूजन किया जाता है।

सप्तधान्य- जौ, धान, तिल, कंगनी, मूग, चना और सावाँ।

सप्तमृद्- घुड़साल, हाथी साल, बॉवी, नदियों का संगम, तालाब, राजद्वार और गोशाला इन सात स्थानों की मिट्टी को सप्तमृद् कहते हैं।

संमार्जन- जल से पवित्र करना।

समिधा- हवन के लिए प्रयुक्त की जाने वाली यज्ञीय लकड़ी।

सव्यभाव- बाये कन्धे पर (जनेऊ को धारण करना सव्यभाव है)।

सर्वौषधि- कूठ, (जटामासी) मुरा, चन्दन, वच, कपूर, मुस्ता, दारु हल्दी।

स्त्रुवा- यज्ञीय काष्ठ से बना हवन करने का पात्र जिससे घी टपकाया जाता है।

स्विष्टकृद्होम- पूर्णाहुति से अवशिष्ट, पूर्णता के लिए दी गई आहुति।

स्थण्डिल- हवन वेदी की भूमि।

स्थालीपाक- हवन करने के लिये विशेष रूप के यज्ञ पात्र में पकाया गया अन्न।

त्रिकाष्ठ - तीन लकड़ी से बना मृतक घट (घंट) को रखने हेतु।

होता- हवन करने वाला।

उत्तर-प्रदेश-संस्कृत-संस्थानम् के प्रमुख प्रकाशन

क्र.	पुस्तक का नाम	लेखक/सम्पादक	मूल्य
1.	संस्कृत वाङ्मय का वृहद् इतिहास	प्रधान सम्पादक	
	(अट्ठारह खण्ड)	पद्मभूषण आचार्य श्री बलदेव उपाध्याय	
	वेद खण्ड (प्रथम)	सम्पादक प्रो. व्रजविहारी चौबे	320.00
	वेदाङ्ग खण्ड (द्वितीय)	सम्पादक प्रो. ओमप्रकाश पाण्डेय	300.00
	आर्पकाव्य खण्ड (तृतीय)	सम्पादक प्रो. भोलाशंकर व्यास	400.00
	काव्य खण्ड (चतुर्थ)	सम्पादक प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी	300.00
	आधुनिक संस्कृत साहित्य का इतिहास (सप्तम्)	सम्पादक प्रो. जगन्नाथ पाठक	300.00
	न्याय खण्ड (नवम्)	सम्पादक प्रो. गजानन शास्त्री मुसलगांवकर	280.00
	वेदान्त खण्ड (दशम)	सम्पादक प्रो. संगम लाल पाण्डेय	300.00
	तन्त्रागम खण्ड (एकादश)	सम्पादक प्रो. व्रजवल्लभ द्विवेदी	300.00
2.	सरल संस्कृतम्	श्री प्रयाग दत्त चतुर्वेदी	30.00
3.	स्तुतिमणि माला	संपादक आचार्य करूणापति त्रिपाठी	20.00
4.	दावानल	डॉ. श्रीनाथ हसूरकर	113.00
5.	मदीयात्मकथा	सम्पादक आचार्य करूणापति त्रिपाठी	125.00
6.	संस्कृत प्रभा	डॉ. कपिलदेव द्विवेदी	70.00
7.	पाणिनि तथा संस्कृत के अन्य-अल्पज्ञात कवियों की रचनायें	डॉ. प्रभात शास्त्री	86.00
8.	संक्षिप्त महाभारत (द्वितीय खण्ड)	संपादक एवं अनुवादक डॉ. प्रभुनाथ द्विवेदी	225.00
9.	कालिदास-ग्रन्थावली	सम्पादक-आचार्य सीताराम चतुर्वेदी	200.00
10.	कविर्जयति-वाल्मीकिः	सम्पादक-डॉ. आनन्द कुमार श्रीवास्तव	120.00
11.	परिशीलनम् पाण्मासिकी संस्कृतानुसंधान पत्रिका		10.00
12.	विद्वच्चरित पंचकम	सं.म.म. नारायणशास्त्री खिस्ते	60.00
13.	अद्वैत सिद्धिः (प्रथम भाग)	गुरु चन्द्रिका टीका	100.00
14.	अद्वैत सिद्धिः (द्वितीय भाग)	गुरु चन्द्रिका टीका	100.00
15.	अद्वैत सिद्धिः (तृतीय भाग)	गुरु चन्द्रिका टीका	80.00
16.	तन्त्र समुच्चयः (प्रथम भाग)शंकरप्रभृति विमार्शिनी आख्या विवरणाख्या-व्याख्या समेत		100.00
17.	तन्त्र समुच्चयः (द्वितीय भाग) " " " " "		100.00
18.	पंचदशी अच्युतरायमोडक एवं रामकृष्ण-व्याख्या सहित		150.00
19.	सदुक्ति कर्णामृतम् (प्रथम भाग) श्रीधरदास प्रणीतम् एवं म.म. रामावतार शर्मा सम्पादित, हिन्दी टीका-प्रो. ओम् प्रकाश पाण्डेय		120.00
20.	श्रीमद्वाल्मीकि रामायण (प्रथम भाग) श्री गोविन्दराजीय व्याख्या तिलक प्रभृति अनेक पूर्व व्याख्यान उद्धृत गोविन्दराजीय अनुक्त एवं पूर्व विपयों से समलंकृत		220.00
21.	श्रीमद्वाल्मीकि रामायण (द्वितीय भाग) पूर्व विपयों से समलंकृत		180.00
22.	श्रीमद्वाल्मीकि रामायण (तृतीय भाग) पूर्व विपयों से समलंकृत		220.00
23.	श्रीमद्वाल्मीकि रामायण (चतुर्थ भाग) पूर्व विपयों से समलंकृत		120.00
24.	मन्त्ररामायण (हिन्दी टीका)	डॉ. प्रभुनाथ द्विवेदी	75.00
25.	धातुरूप-निदर्शनम्	पं. वासुदेव द्विवेदी शास्त्री	50.00
26.	नैपधीय-चरितम् (प्रथम भाग)	नारायणी एवं मल्लिनाथ टीका सहित	125.00
27.	नैपधीय-चरितम् (द्वितीय भाग)	नारायणी एवं मल्लिनाथ टीका सहित	115.00
28.	भारतीय स्वतंत्रता संघर्प गाथा	डॉ. सत्यदेव चौधरी	40.00
29.	कथामन्दाकिनी	डॉ. ओम प्रकाश ठाकुर	60.00
30.	बालकथा कौमुदी	सम्पादक-डॉ. विश्वास	50.00
31.	बाल वाटिका	सम्पादक-डॉ. विश्वास	30.00